विदेशों के महाकाव्य

"द बुक ऑफ़ एपिक्स" की
8 कथाओं का हिंदी रूपांतर

गोपीकृष्ण

विदेशों के महाकाव्य

('दि बुक ऑफ़ एपिक' की ८ कथाओं का हिन्दी-रूपान्तर—)

गोपीकृष्ण—

प्रकाशक—

साहित्य भवन लिमिटेड, प्रयाग

हिन्दी के प्राचीन और नवीन

कथा एवं काव्य-साहित्य को

सादर—

प्रकाश—

महाकाव्य के विषय में जो भी चिन्ता हुई है वह सब सत्तरहवीं, अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दि में ही हुई है। सोलहवीं शताब्दि में 'एपिक' शब्द के उतने गम्भीर अर्थ न लगाये गये थे जितने कि बाद में! नये समालोचकों ने (विशेषतया इटली के) ग्रीक की पढ़ाई के आरम्भ के बाद 'एपिक' शब्द का एक नये ही अर्थ में प्रयोग करना शुरू किया! 'एपिक' के माने अब श्रेष्ठ-काव्य के होने लगे और पुराने लैटिन-समालोचकों की उक्तियाँ अब उतनी प्रामाणिक न रह गईं जितनी कि 'ऐरिस्टॉटिल' या अन्य यूनानी समालोचकों की! यही कारण है कि उन्हीं दिनों से 'एपिक' और 'रोमांस' इन दो शब्दों का एक अन्तर होता आ रहा है। इस छोटी-सी पुस्तक में श्री गोपीकृष्ण जी 'गोपेश' ने जो संकलन किया है उसी से हमें इसका स्पष्ट परिचय मिल जायेगा। गोपीकृष्ण जी ने केवल पाश्चात्य-महाकाव्यों का ही संकलन नहीं किया है, प्रत्युत उन्होंने प्राच्य—आदि-गाथाओं में से प्रसिद्ध ईरानी-कवि 'फ़िरदौसी' का 'शाहनामा' भी अपने ग्रंथ में रक्खा है।

इतने गम्भीर विषय पर दो-चार शब्दों में विचार भी क्या किया जा सकता है! किंतु, इतना अवश्य है कि इतने दिनों की खोज के बाद भी यूनानी-महाकाव्य के लेखक 'होमर' के विषय में बहुत-सी बातें सुस्पष्ट नहीं मालूम पड़तीं। सबको आश्चर्य यह हुआ है कि कैसे प्रभु ईसा के दस शताब्दि पूर्व किसी देश में, किसी एक कवि को कला के इतने विशुद्ध-रूप का ज्ञान हो गया और कैसे उसकी कला ने इतनी पूर्णता प्राप्त कर ली! यह भी मानना पड़ेगा कि होमर के दो महाकाव्य एक-दूसरे से बिल्कुल पृथक हैं, क्योंकि पाश्चात्य-पंडितों ने यह बात स्वीकार की है कि 'इलियड' में कवि ने एक रूप स्पष्ट कर दिखाया है और 'ऑडिसी' में बिल्कुल ही दूसरा, यहाँ तक कि कई-एक पंडितों ने तो यह भी कहा है कि 'ऑडिसी' पहिली रोमैंटिक-कविता है और काव्य के दोनों महान श्रोत एक ही हृदय से निसृत हुये हैं। परन्तु साधारण पाठकों को यह, सम्भवतः, उतना सहज-स्वीकार्य न होगा क्योंकि वे कहेंगे कि एक का विषय-केन्द्र है यूनानी और ट्रोजन के रूप में दो सभ्यताओं का संघर्ष और दूसरे का प्राणाधार है अनोखी बातों का एक अनोखा संसार, जैसे 'पॉलिफ़ेमस' की गुफ़ा का वर्णन आदि। फिर भी, सच तो यह है कि जीवन के ताने-बाने दोनों में ही एक-से मालूम पड़ते हैं, पात्र भी बहुत-कुछ एक ही हैं और चरित्र-नायक 'यूलिसीज़' या 'ऑडिसियस' तो दोनों में ही आये हैं। शायद यह कहना अनुचित न होगा कि 'एपिक' का विशेष विषय वीरता, ऐतिहासिक दृष्टिकोण, सभ्यता का सम्पूर्ण चित्र, आदर्श नर-नारी के चरित्र होने पर भी साधारण जीवन-से अधिक घनिष्ट-रूप से सम्बद्ध रहता है, किन्तु 'रोमांस' जीवन के कुछ अंशों को छूने के बाद भी अपने को साधारण जीवन से अलग ही रखता है।

'एपिक' के विषय में बहुतेरों की धारणा है कि यह है इङ्गिलश में 'बैलड्ज़' जैसे छोटे-छोटे खंड-काव्यों का एकत्रीकरण ! इसीलिये बहुत से पंडितों की धारणा है कि एपिक की सृष्टि में जब एक युग बीत जाता है तभी उसकी सामग्री एकत्रित हो सकती है। इस बीच में समाज का एक सुधार, परिष्कार और विकास होता रहता है कि एक ऐसा समय आ पहुँचता है कि समाज एक विशिष्ट व्यक्तित्व के चारों ओर सुसंगठित हो जाता है। ऐसे ही समय में यदि कोई महाकवि पृथ्वी पर अवतीर्ण हुये तो वे वह समस्त सामग्री, सुव्यवस्थित एवं सुचारु-रूप में, एक महान् कृति में स्पष्टतया संजो देते हैं। ऐसी ही कृतियाँ हैं 'इलियड' और 'ऑडिसी'।

'इनीड' के लेखक 'वरजिल' रोम के सर्वप्रथम 'एम्परर ऑगस्टस' के अमात्यों में से एक थे। उन्होंने रोम की कीर्त्तियों और रोम की सभ्यता के एक प्रतीक के रूप में 'इनीड' की सृष्टि की। यदि वास्तविक रूप से देखा जाय तो 'वरजिल' की मौलिक सृष्टि उनकी जार्जिक्स' में पाई जाती है। यह है लैटिन के ग्रामीण-दृश्य का एक चित्र। किन्तु 'वरजिल' बाद के एपिक-कवि के रूप में योरोप भर में प्रसिद्ध हुये और उनका महाकाव्य बाद के महाकाव्यों का आदर्श-रूप माना गया; यहाँ तक कि ईसाई-कवि 'दान्ते' ने जब अपना महाकाव्य रचा, जिसकी कथा-वस्तु बिल्कुल ही भिन्न है यानी है मनुष्य की आत्मा की ईश्वर तक यात्रा, तो भी उसने 'वरजिल' को अपना पथ-प्रदर्शक मानकर महाकाव्य के प्रथम और द्वितीय अंश में अर्थात् नरक और वैतरणी ('परगेटोरियो') में सभी स्थानों में अपने साथ-साथ दिखलाया है। 'दान्ते' ने 'वरजिल' को गुरु, शिक्षक और भविष्य-द्रष्टा के रूप में देखा है। पर ईसाई होने के कारण अपने काव्य के तृतीय अंश में उन्होंने दिखलाया है कि वरजिल उनसे अलग हो जाते हैं और यात्रा का अंतिम अंश वे अपनी प्रियतमा 'बियेट्रिस' के कथनानुसार उसके साथ-साथ पूरा करते है। चौथी से सोलहवीं शताब्दि के प्रारम्भ तक 'होमर'-विषयक ज्ञान कुछ नहीं-सा रहा, इसी कारण 'वरजिल' का महाकाव्य योरोप के महाकाव्यों का आधार माना गया और रहा। 'जान्सन' जैसे बहुतों को इसका खेद है क्योंकि 'होमर' की 'ऑडिसी' की बहुत ही हल्की झलक 'इनीड' में आ-पाई है। परन्तु, जैसा ऊपर कहा जा चुका है, 'दान्ते', कवि-पिता-'चासर' और 'मिल्टन' आदि 'वरजिल' को अपनी आँखों के आगे से कभी हटा न सके।

यहाँ 'निबेलउगेन' और वाल्संग नामक दो जर्मन महाकाव्य लिये गये हैं। इनके विषय में यह स्वीकार करना होगा कि ये समाज की उस अवस्था की ओर संकेत करते हैं जब समाज में प्रेम और वीरता में घनिष्ट पारस्परिक सम्पर्क स्थापित हुआ। यही नहीं प्रत्युत इनमें 'आश्चर्य' और 'रहस्य' का भी समावेश किया गया। 'आश्चर्य' का 'ऑडिसी' में अभाव नहीं है और 'इलियड' के कुछ अंशों में भी इसकी झलक मिलती है, किन्तु अब तक ये काव्य का श्रेष्ठ अंग न माना जा-सका था और 'रहस्य' को तो जर्मन कवियों ने ही पहिले-पहिल महत्वपूर्ण स्थान दिया।

बारहवीं शताब्दि में जब कि योरोप में इस्लाम का धक्का रोक दिया गया और जबकि योरोप के लड़ाकू लोग 'होलीलैंड' या पैलेस्टाइन को जीतने के लिए एक बार फिर पूर्वी देशों में आये, उस समय 'आश्चर्य' और 'रहस्य' को लेकर कितने ही नये-नये आविष्कार किये गये।

हाँ, 'रोमांस' की उत्पत्ति का कोई भी समय निश्चित-रूप से नहीं बतलाया जा सकता क्योंकि यह तो कोई एक सुस्पष्ट मनोवृत्ति है ही नहीं, परन्तु 'रोमांस' के जो दो अंग विशेष महत्वपूर्ण माने गये हैं वे हैं, 'रहस्य' और 'प्रेम'। इसीलिये तेरहवीं या चौदहवीं शताब्दि के बाद के कवि-पिता-'चासर' जैसे कवियों को एक विशेष कला-सम्बन्धी कठिनाई का सामना करना पड़ा। वे लैटिन के 'वरजिल' के महाकाव्य को अच्छी तरह जानते थे और अब उनके देश और अन्य प्रदेशों में रोमैंटिक महाकाव्यों की सृष्टि होने के कारण एक प्रश्न उनके मन में यह उठा कि वे किसको आदर्श मानें। इसी कारण 'कवि-पिता' ने 'ट्रायलस ऐंड क्रेसिडा' भी लिखी है जिसमें उन्होंने पुरानी यूनानी और लैटिन कथा सामग्रियों का उपयोग करते हुये एक रोमैंटिक-रस की सृष्टि की है! इस पर भी 'कैन्टरबरी टेल्स' उनकी श्रेष्ठ कृति मानी गई है! इसमें हर प्रकार के गल्प एक ही स्थान पर संचित किये गये हैं।

उपरोक्त कथनानुसार 'एपिक' का शुद्ध-रूप इटैलियन-समालोचकों द्वारा सोलहवीं शताब्दि में निर्धारित किया गया। इसमें अवश्य ही उनकी अपनी बहुत-सी ग़लतियाँ थीं, क्योंकि यूनानी-साहित्य पर उनका पूर्ण अधिकार न था। इंग्लिश के 'सिडनी' या 'महाकवि-स्पेंसर' जैसे सर्व प्रथम आलोचकों ने इस इटैलियन-रूप को देखा तो, किंतु इसे स्वीकार न किया। अपने पूर्ववर्त्ती इटैलियन-कवि 'ऐरिऑस्टो' और 'टैसो' को 'स्पेंसर' ने अपनी आँखों के आगे रक्खा और इसीलिये उनकी 'फ़ेयरी क्वीन' 'रोमैंटिक एपिक' कहलाती है और उनके शिष्य 'मिल्टन' द्वारा रचित 'पैराडाइज़ लॉस्ट' पहिली बार 'ग्रीक-एपिक' का शुद्ध रूप हमारे सामने उपस्थित करती है! इसके बाद ही और भी सरल होने की चेष्टा करते हुये 'मिल्टन' ने 'पैराडाइज़ रिगेंड' की रचना की! किन्तु सच तो ये है कि 'स्पेंसर' की 'फ़ेयरी क्वीन' और 'मिल्टन' की 'पैरा-डाइज़-लॉस्ट' में ही 'इंग्लिश-एपिक' का पूर्ण और शुद्ध-रूप पाया जाता है।

'एपिक' के और भी कितने ही रूप हैं। उनमें से 'शाहनामा' पाठकों के सम्मुख है। इसमें यही चिन्त्य विषय है कि कवि ने एक ईरानी-सभ्यता के क्रम-विकास पर ध्यान देने का प्रयत्न कम किया है, उसने एक वीर-वंशावली प्रस्तुत करने और उसके गुण-कीर्त्तन करने की ही चेष्टा अधिक की है। इसका कारण स्पष्ट है। तत्कालीन राजाओं के दरबारों में कवियों का एक विशेष सम्प्रदाय था, जिनका कार्य था सम्राट की सुख्याति का गुणगान करना और इसी के अन्तर्गत उनके देश, आचार-विचार, धर्म और सभ्यता के सब से अधिक महत्वपूर्ण अंगों पर बीच-बीच में दृष्टिपात करना।

कहा गया है कि 'एपिक-रचना' के लिये केवल सामग्री ही नहीं चाहिये बल्कि चाहिये समाज की एक विशिष्ट व्यवस्था और अवस्था और 'कवि' के मन में एक विशेष आन्तरिक आस्था। यही नहीं बल्कि उसकी भाषा में एक असाधारण ओजस्विता, तेजस्विता, शक्ति और गाम्भीर्य का होना भी आवश्यक हैं। बहुत से अंग्रेज़ी समालोचकों का कहना है कि फ़्रांस के साहित्य में किसी श्रेष्ठ 'एपिक' के न रचे-जाने का साफ़ कारण यह है कि वहाँ के धर्म-सम्बन्धी विरोधों की तेज़ आँधी और उसके बाद की शिथिलता, दोनों ही, साहित्य को कुछ दूसरे ही क्षेत्रों

की ओर खींच ले गईं। यदि फ्रांस के कुछ भी 'एपिक'-कवि अमर हैं तो वे अमर हैं जो रोमैंटिक-कवियों के समकालीन हैं। उदाहरण के लिये 'सॉंग ऑफ़ दि रोलां' का लेखक सामने है। इसके बाद जितनी भी 'एपिक' लिखी गईं वे 'एपिक' नाम की अधिकारिणी नहीं। उनमें वह गाम्भीर्य उचित-रूप से नहीं पाया जाता! यह कोई सर्वग्राह्य विचार नहीं है, किंतु इसमें सत्य का यह एक अंश अवश्य ही है कि 'एपिक' के लेखक के लिये समाज, धर्म और प्रतिभा तीनों की एक विशेष आवश्यकता और अपेक्षा है। इसीलिये 'एपिक' के लुप्त होने पर 'फ़ील्डिङ्ग' ने 'नॉवेल' की (उपन्यास) की सृष्टि करते हुये उसे 'कॉमिक-प्रोज़-एपिक' ('हर्षान्त-गद्यात्मक-महाकाव्य') की संज्ञा दी थी।

× ×

मुझे विशेष आह्लाद हुआ कि श्री गोपेश जी ने ऐसा विशेष कार्य-भार अपने ऊपर लिया। हमारी भाषाओं में, (हिन्दी हमारी भाषा है,) ऐसे ग्रंथों की कितनी आवश्यकता है यह बात प्रत्येक अध्यापक को अच्छी तरह ज्ञात है, किन्तु दुर्भाग्यवश यह प्रश्न अब तक हमारे मनों में ही रहा-आया और हम उसका कोई उत्तर न सोच पाये। मुझे तो, सत्य यह है कि, इस बात की ही विशेष प्रसन्नता है कि आधुनिक लेखकों ने अब ऐसे विषयों पर दृष्टिपात और विचार करना शुरू किया है और अपने साहित्य को सर्वाङ्ग सुन्दर बनाने की सतत चेष्टा आरम्भ कर दी है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि साधारण पाठक तो इस ग्रंथ को पढ़ कर उल्लसित होंगे ही, साहित्य-प्रेमी भी इसके द्वारा कुछ ऐसे नये दृष्टिकोणों का परिचय प्राप्त करेंगे, जिनसे सदैव ही हमारे साहित्य का उपकार हुआ है और आगे भी होगा।

प्रोफ़ेसर सतीश चन्द्र देव,
अध्यक्ष,
'अंग्रेज़ी विभाग',
विश्वविद्यालय, प्रयाग।

मेरी बात—

कहा जाता है कि विदेशी फूलों में सौन्दर्य होता है, सुवास नहीं ! किंतु कौन कहेगा कि उन पर प्राण निछावर करनेवाले अनगिनत रसिकों को कभी यह हसरत भी हुई होगी कि काश इनमें महक भी अपनी आँखें खोलती ! ठीक भी है, सौन्दर्य-ग्रहण के बाद किसी पार्थिव-पदार्थ के वरण की भावना...........छिः !

किन्तु जहाँ विदेशी फूलों में हम सौन्दर्य ही लक्ष्य कर सकते हैं, वहाँ हम गर्व कर सकते हैं कि हमारे देशी फूल रूप और गन्ध दोनों की बेदाग़ जवानी के जीते-जागते, हँसते-बोलते चित्र होते हैं !—मुझे भय है कि इस प्रकार 'रूप' के प्रयोग से कहीं सौन्दर्य की आत्मा चीत्कार न कर उठे !

× ×

जो भी हो, यह सही है कि हमारे महाकाव्य 'रामायण' और 'महाभारत' युगों और शताब्दियों से हमारे तन-मन-प्राण में बसे हुये हैं और इनके बलपर ही हम आज भी उजली दुनिया के सामने सीना तानकर खड़े हो सकते हैं, ये और बात है कि हमारी कमर सदियों की ग़ुलामी से झुकी हुई है, और यह भी कोई विशेष बात नहीं है कि हमारा रंग, अपेक्षाकृत, ज़रा ढका हुआ है यानी काला है !

और, यह भी सही है कि ज़मीन से आसमान को जानेवाली इन पगडंडियों पर घास जमी और इन पर सुबह डूब जानेवाले सितारों के समान शबनम के मोती चमके और भाप बने कि हम रह गये दुनिया की संस्कृति के मरघट पर एक मुश्त खाक़, और बस...!

माना कि भारतीय और विदेशी जीवन-दर्शन, चरित्र-चित्रण आदि में बहुत बड़ा अन्तर है, फिर भी बुरा क्या है कि युगों तक पंचवटी की सती सीता को पूजने के बाद हमारे मन में ट्राय में वन्दी 'हेलेन' के प्रति भी आदर और ममता जगे; और, अचरज भी क्या है कि क़यामत तक स्वर्ग की सीढ़ियों को गिनते-रहने का संकल्प करने के बाद हममें ओलिम्पस से पृथ्वी पर दृष्टि दौड़ाने की अभिलाषा भी बलवती हो उठे, गोकि बहुत साफ़ है कि मनुष्यों का देवताओं से भला भी क्या होता है और होगा, ख़ैर...!

× ×

फिर, इन अभिलाषाओं के पूरक उपादानों का अलभ्य होना और कभी-कभी हमारी अपनी विदेशी-भाषा-सम्बंधी अज्ञानता की बेबसी का सक्रिय और सशक्त हो उठना हमारे हित में कांटे ही बोता रहा हैं, ऐसा क्यों सोच लिया जाय, क्योंकि हममें से हर एक ने अन्तरिक्ष के उस विस्तार को पढ़ लेने की, सदैव ही, कोशिश की है, ऐसा कौन अधिकारपूर्वक घोषित कर सकता है !

बस !

राधारमण इन्टर कॉलेज,
प्रयाग।

अनुवादक की ओर से--

बात है पिछली जुलाई की। एक दिन कुछ यों ही बातचीत चल रही थी कि आदरणीय प्रो० रघुपति सहाय 'फ़िराक़' ने मेरा ध्यान अनुवादों की ओर आकृष्ट किया और कहा कि उपन्यासों और कहानियों के अलावा कितनी ही ऐसी चीज़ें हैं जिनका अँग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद होना अच्छा क्या, बहुत अच्छा रहेगा। इस पर मैं उत्सुक हो उठा और मैंने एक हज़ार नहीं, ऐसे एक ग्रंथ का नाम जानना चाहा। उत्तर में वे उठे और अन्दर के कमरे से एक मोटा-सा 'वॉल्यूम' उठा लाये, 'The Book of Epic'! मैंने उसे इधर देखा, उधर देखा और यह कार्य कर डालने का पक्का इरादा कर लिया।

अब किताब घर आ गई और दूसरे दिन से काम शुरू हो गया। किन्तु दो दिन अनुवाद करने के बाद ही मैंने अनुभव किया कि यह काम उतना आसान नहीं है। जितना कि लोग समझते हैं, और यह कि इस क्षेत्र के अन्तरिक्ष की सीमा-रेखा छू-आने के लिये कितना ख़ून पानी कर देना पड़ता है यह केवल वही समझ सकता है जिसने एक बार अनुवाद करने के लिये कोई पुस्तक खोलकर अपने सामने रक्खी हो और सोचा हो कि व्यर्थ में बेईमानी भी क्यों की जाये आख़िर!

ख़ैर, तो कठिनाइयाँ कई तरह की सामने आईं, जिनमें कहावतों, मुहाविरों, मिश्रित-वाक्यों और अभिव्यंजनाओं की मुश्किलें काफ़ी अहेम रहीं। बात यह कि हर भाषा का और इस नाते हर भाषा के साहित्य का अपना एक व्यक्तित्व होता है यानी यह कि हर भाषा की अपनी कहावतें होती हैं, अपने मुहाविरे होते हैं, अपनी अभिव्यंजनायें और अपनी शैलियाँ होती हैं, जिनको ज्यों का त्यों दूसरी भाषा में ढाल देना बहुत आसान नहीं है। फिर, यह कठिनाइयाँ कई गुनी हो जाती हैं जब प्रश्न अँग्रेज़ी साहित्य का आता है, क्योंकि इससे कौन इन्कार करेगा कि अँग्रेज़ी साहित्य विशेषतया समृद्ध एवं भरा-पुरा कहा ही नहीं जाता, बल्कि है भी!

हाँ, तो काम तो करना ही था, अतएव मुश्किलें आसान की गईं—कहावतों, मुहाविरों और अभिव्यंजनाओं की समस्या हल की गई। फल यह हुआ कि कहीं-कहीं कई वाक्यों को एक वाक्य में गूंथ देना पड़ा और कहीं कहीं एक ही वाक्य के लिये कई वाक्यों की रचना करनी पड़ी, किंतु ऐसा करते समय सीमाओं का ध्यान प्रतिक्षण रहा-आया और इस बात की ओर विशेष ध्यान दिया गया कि 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' न रखना हो तो भी क्या हुआ, कहीं ऐसा न हो कि या तो अनुवाद छायानुवाद हो जाये अथवा यह कि पाठक खीझ उठे और परेशान हो जाये—बात साफ़ है कि कथा-वस्तु एक विशिष्ट प्रकार की थी और हर क़दम आँख खोलकर ही आगे बढ़ाना था।

परन्तु बात यहीं ख़तम नहीं हुई ! आगे विदेशी नामों के उच्चारण का रोग सामने आया किंतु श्रद्धेय डॉक्टर पी० ई० दस्तूर यम० ए०, डी० लिट० ने सहायता दी और समस्या हल हो गई। इतना ही नहीं, प्रत्युत इस बात को विशेष महत्व दिया गया कि इटली महाकाव्य में इटली नामों के इटैलियन उच्चारण ही दिये जाते हैं और ऐसा ही सर्वत्र किया जाता है ! यहाँ यह बात देना आवश्यक है कि इन विदेशी नामों के वे उच्चारण भी दिये जा सकते थे जो साधारणतया अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं और जैसा कि सामान्य-रूप से किया जाता है, मगर 'डॉक्टर साहब' को इनका मूलरूप दिया जाना ही अधिक रुचा !

तीसरी बार पौराणिक प्रसंगों की दिक़्क़त सामने आई और वह भी किसी प्रकार हल की गई !

× ×

इस भाँति किसी प्रकार कार्य समाप्त हुआ। किन्तु, क्षोभ है कि स्थानाभाव के कारण यहाँ केवल ८ महाकाव्य ही लिये जा सके और इस प्रकार सबसे अधिक प्रचलित और लोकप्रिय कथाओं को ही इस ग्रंथ में स्थान दिया जा सका। आगे फिर कभी औरों की बात भी सोची जायेगी। इस बार जो कुछ है, जैसा कुछ है, आपके सम्मुख है !

अब कृतज्ञता- प्रकाशन का कार्य शेष है; श्रद्धेय प्रो० 'फ़िराक' ने मुझे इस ओर प्रवृत्त किया, आदरणीय डॉ० दस्तूर ने नामों के कार्य में मेरी अमूल्य सहायता की; माननीय प्रोफ़ेसर-यस० सी० देव ने बहुत व्यस्त रहने के बाद भी ग्रंथ के लिये 'प्रकाश' लिखने का समय निकाला; साहित्य-भवन-लिमिटेड के प्राण श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने इसका इतना सुन्दर प्रकाशन कर इसमें चार चांद लगाने की कोशिश की, और, इनके अतिरिक्त, मेरे-अपने कई गुरुजनों और मित्रों ने इसमें सक्रिय-रूप से उत्साह दिखलाया। मैं इन सब का हृदय से आभारी हूँ, यद्यपि इस प्रकार के शिष्टाचार और दिखावे में मेरी आस्था नहीं के बराबर है और, गोकि उनमें से कई का उल्लेख कर और उनके प्रति कृतज्ञता-प्रकट कर मैंने अपनी चर्चा की और अपना एहसान माना है, फिर भी !

अधिक क्या कहूँ !

अनुवादक—

भूमिका—

'एपिक' या महाकाव्य प्रधानतः उस वीर-रस-प्रधान काव्य-गाथा को कहते हैं जिसमें सुख-दुख, संयोग-वियोग, गीति-तत्व और कथा-तत्वादि 'श्रेष्ठ काव्य' के सभी गुणों का हृदयहारी चित्रण हो, जिसमें स्वाभाविक जीवन के मनोहारी चित्र और घात-प्रतिघात वर्णित हों और जिसमें सारे तत्वों का प्रकृत समन्वय इस कुशलता से किया गया हो कि कृति सदा के लिये अमर हो जाये ! विस्तार से सोचने पर ऐसा लगता है जैसे कि पौराणिक कथायें, जिनमें हम प्रकृति को अपने ढंग से सोचने-समझने के प्रयत्न करते रहे हैं, और महात्माओं के जीवन से सम्बन्धित कहानियाँ, जिनमें हम इतिहास को आदर्श-पथ पर ले चलने के प्रयास करते रहे हैं, महाकाव्य के मुख्य और आवश्यक अंग है ! और, चूंकि महाकाव्य किसी भी जाति-विशेष का जीता-जागता इतिहास होता है अतएव, उसमें एक बड़ी नदी की चौड़ाई, गहराई और विस्तार होना अनिवार्य है। कहा जा सकता है कि आदिकाल से ही कल्पनाशील जातियां प्रकृति और जीवन को लेकर कितने ही अनुभव करती रही हैं। ये महाकाव्य, और कुछ न होकर, इन्हीं अनुभवों के प्रथम परिणाम एवं निष्कर्ष रहे हैं और वास्तविक कवि नियमित-रूप से स्वयं एक जाति का व्यक्ति-रूप रहा है।

संसार में जितने राष्ट्र और जितने कवि हैं महाकाव्य की, सचमुच ही, उतनी ही परिभाषायें हैं और महाकाव्य रचना के उतने ही नियम हैं। इसीलिये जहाँ तक प्रस्तुत ग्रंथ का सम्बंध है, इस बात की ओर ध्यान ही नहीं दिया गया कि कोई कवि-विशेष स्वयं अपनी किस कृति को महाकाव्य मानकर महाकवि का अधिकार चाहता है, और कोई दूसरा राष्ट्र-विशेष उसी कोटि की किसी अन्य राष्ट्रीय कृति को आगे रख सकता है या नहीं, प्रत्युत इस ग्रंथ के लिये तो उसी कृति को महाकाव्य मान लिया गया जिसे किसी भी राष्ट्र ने महाकाव्य की संज्ञा दी ! कोई प्रश्न ही नहीं उठता कि वह गद्य में है अथवा पद्य में।

अतएव इस ग्रंथ में महाकाव्यों के लगभग सभी प्रकार लक्ष्य किये जा सकते हैं। इसमें वे महाकाव्य भी हैं जिसमें किसी जाति-विशेष ने अपने आराध्य-देव का गुणगान किया है, जिसमें एक चरित्रनायक, एक काल और कई भागों में विभाजित एक ही कार्य के नियम का पूर्णतया पालन हुआ है, जिनमें एक मूर्तिकार की कार्यकुशलता, सूक्ष्मदर्शिता और स्वाभिमान व्यक्त हैं, और इसमें वे महाकाव्य भी देखे जा सकते हैं जिनमें सरलतम, साधारण एवं प्रकृति-जीवन की सुन्दरतम अभिव्यक्ति की गई है। यही नहीं कि प्रस्तुत ग्रंथ में, निष्पक्ष भाव से, ईसाई और

आदिकालीन मूर्त्तिपूजकों के महाकाव्यों को ही स्थान दिया गया है, इसमें मूल-पाठ की भाषाओं के क्रम से कई राष्ट्रों के प्रतिनिधि महाकाव्यों की कथाओं का संकलन है।

अवश्य ही इन महाकाव्यों के अतिरिक्त भी और कितने ही प्राचीन महाकाव्यों के नाम गिनाये जा सकते हैं जिनमें अधिकांश बहुत लम्बे और बड़े हैं। इनमें एक तो इतना लम्बा है कि यदि प्रकाशित किया जाये तो ऐसे-ऐसे चौबीस ग्रंथों में भी शायद ही समाप्त हो! अतएव, किसी भी देश की भाषा के एक या दो या दो से अधिक महाकाव्यों की रूप-रेखा-भर देने में भी बहुत काट-छांट करनी पड़ी है, और, यद्यपि कभी-कभी ऐसा लगा है कि जैसे कितने ही पदों को उद्धृत करने का लोभ-संवरण करना आसान नहीं है, तो भी स्थानाभाव के कारण कहीं कम-से-कम उद्धरणों से सन्तोष करना पड़ा है और कहीं उद्धरणों की बात ही पी जानी पड़ी है।

अन्त में यह कहना आवश्यक है कि इस ग्रंथ का एक-मात्र उद्देश्य है किसी भी व्यस्त पाठक को इन महाकाव्यों को संक्षिप्त, स्पष्ट और आवश्यक रूप-रेखाओं से सहज में ही परिचित करा देना ताकि वह अपना अगला पथ सरलता से प्रशस्त कर सके! फिर भी, एक बार और कह देना आवश्यक है कि ये महाकाव्यों के प्रमुख उदाहरणों की अमर-कथायें हैं जो युग-युग से, समान-रूप से, काल के कंधों पर चढ़कर चलतीं रही हैं, जो संसार के महान से महान कवि को प्रेरणा देती रहीं और काव्य की प्राण-प्रतिष्ठा के प्रथम क्षण से लेकर अब तक कितने ही कलाकारों, चित्रकारों, मूर्त्तिकारों और संगीतज्ञों के उपादानों को जीवन-दान देती, सौष्ठव-प्रदान करती, सजाती और सँवारती रही हैं। और अधिक क्या!

लेखक—

(अनूदित–)

विषय		पृष्ठ

पौराणिक कथाओं का रहस्यपूर्ण प्रदेश

यूनानी महाकाव्य—

संसार के महानतम महाकाव्य 'इलियड' और 'आडिसी' का लेखक 'होमर' या 'मेलिसिजिनीज़' बतलाया जाता है। १०५० और ८५० ई० के बीच का कोई समय इसका जीवन काल कहा जाता है। ईसा के पूर्व की दूसरी शताब्दि से अब तक यह प्रश्न रहा है कि 'होमर' इन महाकाव्यों का रचयिता है अथवा पुराने कवि-चारण-गायकों को भाँति उस समय की इन प्रमुख गाथाओं का गायक-मात्र! इस समस्या को लेकर काफी वाद-विवाद भी चलता रहा है।

सम्भवतः 'इलियड' की मूल घटनायें ११०० ई० पू० के आस-पास घटीं, और ज्ञात होता है कि 'वीर गाथा युग' अथवा यूनानी साहित्य के दूसरे युग में यानी ६०० ई० पू० के अंतिम वर्षों में 'पिसिस्ट्रैटस' ने 'होमर' की कविताओं को क्रमबद्ध कर उन्हें एक रूप देने का निश्चय किया।

यह बिल्कुल सत्य और स्पष्ट है कि 'इलियड' का कथानक अपने पूर्व की गाथाओं से अनुप्राणित है अथवा, कम से कम, उनका आधार लेकर तो चला ही है, क्योंकि इस तरह के पहले प्रयास में इतनी पूर्णता और सौष्ठव असम्भव है। इसके अलावा हम इससे पूर्व के कई छोटे-बड़े वीर गाथाओं के अस्तित्व से अवगत भी हैं जो या तो लुप्त हो चुके हैं या अस्त-व्यस्त-रूप में मिलते हैं।

इन उपलब्ध गाथाओं में अधिकांश किसी न किसी प्रकार ट्राय के युद्ध से सम्बंधित हैं, अतः हम इन्हें 'ट्राजन-चक्र' भी कहते हैं। 'साइप्रस' के 'स्टैसियस' अथवा 'मिलेटस' के 'आर्सटिनस' की 'साइप्रिया' के ११ भाग इनमें प्रमुख हैं। 'जूपिटर' के 'थीटिस' से निराशाजनक प्रणय का, 'पिलियस से उसके विवाह का, सोने के सेव की रोमांचकारी कथा का, 'पेरिस' के निर्णय का, 'हेलेन' के भागने का, यूनानी सेनाओं के संगठन का और ट्राजन युद्ध के प्रथम नौ वर्षों की घटनाओं का इनमें विशेष वर्णन है। 'इलियड' में इनका अनुकरण किया गया है। कथानक 'एकीलीज़' के उत्तेजित होने की स्थिति से आरम्भ होता है और 'हेक्टर' की अन्त्येष्टि-क्रिया पर समाप्त होता है।

हम इससे ट्राजन-युद्ध की कथा के उस परिणाम पर नहीं पहुँचते जिसका आरम्भ 'आर्कटिनस' ने 'इथियोपिया' के पांच भागों में किया है। ट्राजनों की सहायता के लिये 'अमेज़न्स' की महारानी 'पैंथिसीलिया' के आगमन की चर्चा करने के बाद कवि एकीलीज़-द्वारा उसके मारे जाने का विवरण देता है और तब बदले में 'अपोलो' और 'पेरिस' के द्वारा 'एकीलीज़' के वध का वर्णन करता है। 'एकीलीज़' के कवच को लेने की इच्छा के कारण 'एजैक्स' और 'यूलिसीज़ के बीच छिड़े उत्तेजक विवाद पर इसकी समाप्ति होती है।

'लिटिल इलियड' एक दूसरा ऐसा ही ग्रंथ है जिसके रचयिता कितने ही कवि कहे जाते हैं जिनमें 'होमर' भी एक है। इसमें 'एजैक्स' के पागलपन और उसकी मृत्यु का, 'हरकुलीज' के तीरों से 'फ़िलाकटिटीज़' के आगमन का, 'पेरिस' की मृत्यु का, ट्राय में स्थापित मिनर्वा की पवित्र-मूर्ति 'पैलैडियम' की चोरी का, लकड़ी के घोड़े के नेतृत्व का और 'प्रायम' के अन्तिम क्षणों का सविस्तार वर्णन है।

'आर्कटिनस' के 'इलियान परसिस' या 'सैक ऑफ़ ट्राय' के दो भागों में हम ट्राजनों को संकल्प-विकल्प के बीच पाते हैं। वे निश्चय नहीं कर पाते कि वे लकड़ी के घोड़े को नगर में ले जाकर 'सिनॉन' और 'लेओकॉन' जैसे विद्रोहियों की अमर कथाओं की खोज करें या न करें! इसके बाद ही नगर जीतकर लूटा जाता है और स्त्रियां बन्दी बनाई जाती हैं। 'ट्रिज़नी के 'एजियाज़' की 'नॉस्टाई' या 'होमवर्ड वायेज' में एगेमेम्नान और मेनेलाउस में मतभेद होता है, अतएव जब 'एगेमेम्नान' पाप-शमन के लिये किये जानेवाले बलिदानों के हेतु जाने में विलम्ब करता है तो 'मेनेलाउस' जहाज से मिश्र के लिये चल देता है! वहां उसे रुक जाना पड़ता है। यह काव्य भी 'एगेमेम्नान' की वापसी, उसकी आश्चर्यजनक मृत्यु और उसके पुत्र के अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने की नीति-रीति पर अच्छा प्रकाश डालता है।

'नॉस्टाई' के बाद ही घटना-क्रम के विचार से 'होमर' की 'ओडिसी' तब 'साइरीन' के 'यूगामन' की 'टैलीगोनिया' के दो भाग हमारे सम्मुख आते हैं। इनके पढ़ने से पता चलता है कि कैसे 'यूलिसीज़' अपने साहस को नवीन-रूप देता है और कैसे 'थेसप्रोशिया' जाता है, जहां अपना विवाह करता है, जिसके फलस्वरूप उसके एक पुत्र होता है। इस काव्य में उसकी मौत का, उसके दो पुत्रों में हुये युद्ध का, 'टेलेमेकस' और 'सर्स' के विवाह का और 'यूलीसीज' के एक वंशधर 'टेलीगोनस' के विधवा 'पिनेलोपी' से प्रणय-परिणय का अधिक उल्लेख है।

'ओडिसी' के उत्तर भाग की कथा-वस्तु के विकास में एक अन्य यूनानी-कविता 'टेलेमा-किया' ने तो योग दिया ही है, उस पर चौदहवें लुई के राज्य-काल के 'फेनेलॉं' की एक लम्बी, फ्रांसीसी कविता 'टेलेमाक' का भी स्पष्ट और अच्छा प्रभाव है। कवि ने 'टेलेमाक' की रचना अपने एक मित्र डाफ़िन के लिए की थी।

यूनानी कविताओं की दूसरी बड़ी कड़ी 'थीबन-चक्र' कहलाती है। किसी अपरिचित कवि की 'थिबायस' भी इनमें से एक है। 'थिबायस' में 'इडिपस' की कथा का, 'थीब्ज़' के पहिले के सात राजाओं का और 'एपीगोनी' के कृत्यों का वर्णन विस्तार से किया गया है।

'इकेलिया' जैसी कविताओं का एक दूसरा चक्र भी है, जिनका सीधा सम्बन्ध 'हिरैक्लीज़' के अध्यवसाय और उसके परिश्रम से है। यह 'इकेलिया' तो कवियों, नाटककारों, चित्रकारों और शिल्पकारों के लिये सदैव ही अनमोल निधि रही है और आज भी है।

२७० ई० पू० के 'लाइकाफ्रोन' की 'एलेग्ज़ेंडर' में, 'क्विन्टिस स्मिर्नियस' की उसी तरह की एक अन्य कविता में, जो चौदह भागों में है, तथा 'इलियड' में काफ़ी घटना-साम्य है! सिकन्दर को 'एकीलीज़' का वंशधर माना गया है। वास्तव में सिकन्दर की ज़िन्दगी और उसकी मौत

ने कितने ही कवियों को कवि बनाया है; इस प्रकार की प्रेरणा के अभाव में वे शायद वैसा कुछ भी न लिख पाते ! लैटिन, यूनानी, फ्रांसीसी, जर्मन तथा अंग्रेज़ी आदि भाषाओं के कवियों ने सिकन्दर की ज़िन्दगी और उसकी मौत को आधार मानकर कितनी ही आख्यायिकायें रचीं हैं। इनमें से अधिकांश के मूल में ११० ई० पू० के 'कैलिस्थिनीज़' की वह कविता है जिसमें यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया गया है कि सिकन्दर मिश्र के देवता 'जूपिटर एमा' के प्रतिनिधि के रूप में अवतरित हुआ था या, कम-से-कम, उसके पुरोहित 'नेक्टैनिबस' से तो सम्बद्ध वह अवश्य ही था !

इस प्रकार ट्राय की कथा का अनेक कथानकों और कथोपकथनों में तो प्रयोग हुआ ही है, लैटिन में भी इसकी आवृत्तियाँ होती रही हैं। योरप के मध्य-युग में यह बड़ी प्रिय रही है। विशेषतया फ्रांस इस पर सदैव ही मुग्ध रहा है, जहाँ 'बेनुआ दि सेमुआ' के 'रोमा दि त्रुआ' और उसके 'रोमा दि एलेग्ज़ैंडर' ने तत्कालीन 'लार्ड्स' और 'लेडीज़' का आवश्यकता से अधिक अनुरंजन किया है।

ट्राय की कथा अथवा सिकन्दर की जीवन के साहसिक घटनाओं पर आधारित कृतियों के अतिरिक्त १०२२ पंक्तियों की यूनानी-भाषा की 'हेसियड' की 'थिआगनी में हमें यूनानी-धर्म कथा संक्षिप्त परिचय मिलता है ! इसमें यूनानी-देवताओं के उद्भव और उनके व्यापारों की कथायें हैं,—उसमें संसार की सृष्टि से सम्बन्धित यूनानियों के विश्वास और उनके अपने सिद्धांत भी हैं।

बाद के यूनानी-ग्रंथों में 'शील्ड आफ हेराक्लीज़' और 'योआई' अथवा 'कैटेलाग-आफ दि बियोशियन हीरोइन्स' प्रमुख हैं। इन बियोशियन वीरांगनाओं से ही उपदेवताओं और योद्धाओं का जन्म हुआ माना गया है।

१६४ ई० पू० में 'सिकन्दरिया में एपोलोनियस रोडियस' ने 'आरगोनाटिका' की रचना की। इसमें उसने सोने के लिये प्रसिद्ध भेड़ों की खोज में निकले आरगोनाटकों के नेता 'जेसन' के साहसपूर्ण कृत्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसमें काव्य के मनहर रङ्ग भरने के अथक प्रयत्न किये, किन्तु जनता पर इस कविता का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। कवि ने निराश होकर 'रोड्स' की राह ली। यहाँ उसने इसे दूसरी बार लिखकर पर्याप्त यश लाभ किया।

'बेट्राकोमियोमॉकिया' या 'मेढकों और चुहियों में युद्ध' यूनानी भाषा की हास्य-रस-प्रधान, प्रमुख लम्बी कविता है। कहा जाता है कि इसकी भी रचना होमर ने की थी, किन्तु खेद है कि इसकी कुछ पंक्तियां ही मिलती हैं, जिनसे पूरे काव्य का बहुत थोड़ा परिचय मिलता है।

'इलियड'-परिचय—

देवताओं के राजा और समुद्र की एक देवी थीटिस में प्रेम संयोग स्थापित होने के कुछ ही समय बाद जूपिटर को किसी ने बतलाया कि थीटिस से उत्पन्न पुत्र उससे कहीं अधिक महान होगा। जूपिटर ने इस भविष्य वाणी से बहुत क्षुब्ध होकर थीटिस का साथ छोड़ दिया किन्तु थीटिस को सान्त्वना देने के विचार से उसने यह निश्चय किया कि उसका विवाह थिसैली के सम्राट पिलियस से करा दिया जाय और उस विवाह-समारोह में सारे देवता भाग लें।

जूपिटर ने अपने निश्चय को कार्य रूप में परिणित किया और विवाहोत्सव चलने लगा। सहसा ही वैमनस्य की देवी ने भोज के समय एक सोने का सेव सबके सामने पेश किया। इस सेव पर लिखा था—'सुन्दरतम के लिये या सर्व-सुन्दर को'। अब प्रश्न उठा कि यह किसे दिया जाय। यह प्रश्न उठते ही इस सेव पर देवताओं की रानी जूनो, बुद्धिमता की देवी मिनर्वा और सौन्दर्य की देवी वीनस, तीनों ने अपना-अपना अधिकार बतलाया और इसे लेकर लड़ना-झगड़ना आरम्भ कर दिया!

देवताओं ने इस झगड़े में बीच-बचाव करने से आनाकानी की! फलतः झगड़ा बढ़ता ही गया। अन्त में ट्राय के राजा का बेटा पेरिस इस कार्य के लिये चुना गया कि वह बताये कि उन तीनों में कौन सर्व सुन्दरी होने के कारण उस सेव की सच्ची अधिकारिणी है!

पेरिस एक विचित्र प्राणी था। उसके जन्म के पूर्व भविष्य-वाणी हुई कि उसके कारण ही ट्रॉय का पतन होगा, अतएव यह निश्चय किया गया कि पैदा होते ही उसे पहाड़ पर ले-जाकर मार डाला जाय, और जन्म होने के बाद इसी अभिप्राय से लोग उसे पहाड़ पर ले भी गये, पर इसी समय कुछ गरड़िये उधर आ-निकले और उन्होंने उसके प्राण बचा लिये।

यह प्रसंग छिड़ा था कि इसी समय पेरिस को जूनों ने संसारिक शक्ति, मिनर्वा ने अनन्त ज्ञान, और वीनस ने अपूर्व सुन्दरी पत्नी भेंट करने का वचन दिया। पेरिस को वीनस की भेंट पसन्द आई और उसने 'सौन्दर्य का पुरस्कार' वीनस को दे दिया! अब प्रश्न आया कि वीनस अपने वचन की पूर्ति करे, अतएव उसने पेरिस से आग्रह किया कि वह पहले ट्राय जाकर उसकी प्रतीक्षा कर रहे अपने परिवार वालों से मिले और फिर यूनान जाये और जूपिटर और लीडा की पुत्री और स्पार्टा के राजा मेनेलाउस की पत्नी हेलेन को उड़ा लाये! उसने हेलेन के अपूर्व सौन्दर्य की चर्चा करते हुए पेरिस को बतलाया कि उसे देखते ही मनुष्य सिहर-उठता है, इसीलिये उसके असंख्यक प्रेमी हैं, किन्तु उसके सौतेले पिता ने इन सभी प्रेमियों से वचन ले लिया

है कि वे हेलेन को उससे दूर न ले जायेंगे और यदि कभी कोई उसका अपहरण करेगा तो उसे दुबारा पाने में वे उसकी सहायता करेंगे।.........

पेरिस ट्राय होता हुआ स्पार्टा पहुँचा। राजा कुछ समय के लिये बाहर गया हुआ था, अतएव पेरिस को हेलेन से मिलने में कुछ भी कठिनाई न हुई! थोड़े समय बाद ही उसने उसे अपने साथ छिपकर भाग निकलने पर राज़ी कर लिया और शीघ्र ही दोनों भाग निकले!

राजा लौटा और हेलेन को न पाकर बड़ा क्रुद्ध हुआ। उसने तुरन्त ही उसके तमाम प्रेमियों को बुलाया, उन्हें उनके वचन की याद दिलाई और कहा कि अब वह समय आ गया है जब सब को अपने वचन की पूर्ति करनी चाहिये! साथ ही उसने स्वयं आउलिस[1] पर सेना इकट्ठी की और उसका भाई एगेमेम्नान सेनापति बना। शीघ्र ही युद्ध आरम्भ हुआ। यह युद्ध इतना लोकप्रिय हुआ कि कितने ही ऐसे शूर भी इसमें भाग लेने को आतुर हो उठे जिन्होंने मैनेलाउस या उसके ससुर को कभी भी किसी प्रकार वचन न दिया था! ऐसे वीरों में थीटिस और पिलियस के सर्वप्रसिद्ध पुत्र एकीलीज़ का नाम विशेषतया उल्लेखनीय है।

अंत में काफ़ी इधर-उधर भटकने के बाद यूनानियों ने एशियामाइनर के समुद्री किनारों पर लंगर डाला और उसे घेर लिया। यहाँ हेलेन का पति प्रायः अपनी और साथियों की शक्ति की परीक्षा लेता और तब हर बार किले के झरोखों से हेलेन उसे झाँका करती।

लड़ाई आरम्भ हुई किन्तु दोनों ही ओर ऐसे-ऐसे योद्धा थे कि लड़ाई ९ वर्षों तक चलती रही और कोई भी पक्ष विजयी न हो सका। इतने समय में केवल दो स्त्रियाँ यूनानियों के हाथ लगीं। उन्होंने उन्हें पकड़ कर 'एगेमेम्नान' और 'एकीलीज़' को सौंपा जैसे कि वे अब तक की उनकी सहायता का पुरस्कार हों।

× × ×

ऊपर की सारी घटनाओं का वर्णन यूनान और कई अन्य देशों के वीर-काव्यों में हुआ है, किंतु वे सब अप्राप्य हैं और नाम-मात्र को ही जीवित हैं। उन अनेक काव्यों में 'इलियड' भी एक है। इस दिव्य महाकाव्य का लेखक होमर कहा जाता है। इसका आरम्भ यहीं से होता है। इसमें एगेमेम्नान के कोप और नवें वर्ष के लग भग ५० दिनों की घटनाओं का सविस्तार वर्णन है।

पर्व एक—

कवि महाकाव्य का आरम्भ बड़े मनोरंजनक ढंग से करता है। वह संगीत और काव्य की देवी की सहायता से एकीलीज़ के क्रोध का वर्णन करना चाहता है। इसके बाद वह बतलाता है कि कैसे सूर्य के देवता अपोलो का पुरोहित यूनानी खेमों में आता है और अपनी पुत्री को आज़ाद कराना चाहता है। वह देखता है कि एगेमेम्नान उसकी पुत्री के साथ बड़ा निन्दनीय

[1] एक बन्दरगाह—

व्यवहार कर रहा है, अतएव उसे इतना दुःख होता है कि वह घृणा और क्रोध में भरकर अपोलो से आग्रह करता है कि वह पृथ्वी पर प्लेग भेज दे।.........

यूनानियों को सारी बात समझते ज़रा भी देर नहीं लगती। उन्हें विश्वास हो जाता है कि जब तक बन्दी बनाई-गई पुरोहित की कन्या अपने पिता को वापिस न मिल जायेगी तब तक अनेक वीर इसी प्रकार प्लेग के शिकार होकर काल के गाल में समाते रहेंगे! अतएव राज-सभा बुलाई जाती है। सभा 'एगेमेम्नान' से बन्दी को मुक्त कर देने का अनुरोध करती है, किंतु वह उत्तर देता है कि वह एकीलीज़ की सेविका के मिलने के वायदे पर ही उसको छोड़ सकता है। उधर उसका वाक्य पूरा नहीं हो पाता कि इधर इस अनधिकारचेष्टा पर एकीलीज़ आग बबूला हो उठता है और आवेश में आकर अपनी तलवार खींच लेता है। इसी समय अदृश्य-रूप से मिनर्वा उसका हाथ पकड़ लेती है और उसे विश्वास दिलाती है कि यदि वह झगड़ा समाप्त कर देगा तो वह उसकी इच्छा पूरी करेगी। किंतु कौन सुनता है!

यद्यपि वृद्ध, यूनानी योद्धा नेस्टर शीलपूर्ण शब्दों में यह झंझट मिटा देना चाहता है तो भी दोनों योद्धा क्रोधित अवस्था में ही एक-दूसरे से अलग होते हैं। इसके बाद एगेमेम्नान वन्दिनी को मुक्तकर उसके पिता के पास भेज देने की बात सोचता है, जब कि एकीलीज़ क्षुब्ध होकर अपने खेमे में जाकर पड़-रहता है।

एगेमेम्नान के आदेशानुसार वन्दिनी मुक्त कर दी जाती है और दूत उसे उसके पिता के पास पहुँचाने के लिये तैयार होते और चल देते हैं। इसी समय दूसरे दूत आते और एकीलीज़ के खेमे में आकर उसकी सेविका एगेमेम्नान के लिये ले जाते हैं। एकीलीज़ को मिनर्वा के वचन का ध्यान है, अतएव वह उसे रोकता नहीं, किंतु प्रतिज्ञा करता है कि वह कभी भी यूनानियों की सहायता न करेगा चाहे उनका नाश ही क्यों न हो जाय! इसी समय वह समुद्र के किनारे जाता और अपनी माँ का आवाहन करता है। दूसरे ही क्षण उसकी माँ गहरे पानी से बाहर आती है! वह उससे प्रार्थना करता है कि अनेक अपराधों पर भी उसे चाहिये कि वह अपने पुत्र को सारे कुपरिणामों और संकटों से बचाये। थीटिस जानती है कि भले ही उसका पुत्र जब तक जिये यशस्वी होकर जिये, किंतु उसका जीवन-काल अधिक नहीं है, फिर भी वह उसे वचन देती है कि वह ओलिम्पस पर्वत पर जूपिटर से मिलेगी और उसके पक्ष का ज़ोरदार समर्थन करेगी।

× × ×

सहसा ही थीटिस की जूपिटर से भेंट हो जाती है! वह देवताओं के राजा से वरदान माँगती है कि जब तक उसका पुत्र यूनानियों के साथ न हो और उनकी ओरसे न लड़े तब तक वे बराबर हारते रहें। इस पर वह अनजान-सा बनकर सिर हिलाता है और कहता है—एवमस्तु!

अब जूनो और क्रोधित और ईर्ष्यालु हो उठती है, किंतु उसके पति जूपिटर को उसका यह रूप अच्छा नहीं लगता और वह उसे फटकारने पर मजबूर हो जाता है। वह इतना

उत्तेजित हो उठता है कि लगता है कि ओलिम्पस के अतिरिक्त संसार का अस्तित्व ही मिट जायगा। संकट की इसी घड़ी में जूनो का बेटा वल्कन कुछ प्याले लेकर सामने से निकलता है और इस भाँति लँगड़ाने का स्वांग करता है कि देवताओं को हँसी आ जाती है।

पर्व दो—

रात है! सब सो रहे हैं कि जूपिटर एगेमेम्नान को स्वप्न देता है और स्वप्न में प्रस्ताव करता है कि समय आ गया है, अतएव वह उठे और ट्रॉय पर हमला बोल दे। एगेमेम्नान चौंककर उठ-बैठता है और सुबह एक सभा बुलाता है। नायकगण यूनानियों की परीक्षा लेने का निश्चय करते हैं। उनका विचार है कि यूनानियों को घर जाने का आदेश दिया जाये और ज्योंहीं वे तैयारी में व्यस्त हों उन्हें लड़ने की आज्ञा दे दी जाये! यह निर्णय तुरन्त ही अमल में लाया जाता है।

कहना न होगा कि जिस क्षण वीनस को सोने का सेव मिला उसी क्षण जूनो और मिनर्वा पेरिस और ट्रॉय की शत्रु बन बैठीं, अतएव, सहसा ही, इस प्रकार वापसी के लक्षण देखकर वे भावावेश में आ जाती हैं। दूसरे ही क्षण मिनर्वा अपना रूप बदलती है और यूनानियों में सबसे अधिक कपटी और छली इथाका-नरेश, यूलिसीज़ के पास जाकर उससे अनुरोध करती है कि वह राज्य-विदूषक थरसीटीज़ को रोककर अपने साथियों को सुझाये कि उनका इस प्रकार ख़ाली-हाथों घर लौटना बड़ा लज्जास्पद है! यह बात यूलिसीज़ की समझ में आ जाती है। वह बड़ा प्रसन्न होता है और अपने साथियों को सम्बोधित कर उन्हें याद दिलाता है कि जब वे घर से चलते को तैयार हुए थे उस समय बलिवेदी के नीचे से एक सांप निकला था जिसने पास बैठी आठ गौरैयों और उनकी रक्षा में सन्नद्ध उनकी माँ को भी खा-डाला था। वह कहता है कि इसका अर्थ यह है कि वे नौ वर्षों तक व्यर्थ में ही ट्राय घेरे रहेंगे, किन्तु दसवें वर्ष विजय लाभ करेंगे, अतएव उन्हें इस प्रकार घर लौटना शोभा नहीं देता।

इस तरह यूलिसीज़ इस घटना का उल्लेख करता ही है कि नेस्टर और एगेमेम्नान देशभक्ति से ओत-प्रोत बड़े ओजपूर्ण भाषण देते हैं! फल यह होता है कि यूनानी ट्रॉय पर अंतिम बार हमला करने का संकल्प करते हैं। शीघ्र ही क्रोध और आवेश में अग्नि की गति से यूनानी सेना ट्रॉय की ओर बढ़ती है। सेना के नायकों का उल्लेख किया जाना अनावश्यक है इसलिये कि उनके नाम पहिले ही गिनाये जा चुके है।

इधर यूनानी सेना ट्राय की ओर बढ़ती है और उधर धनुष का देवता आइरिस हवा की गति से ट्राजनों को सचेत करने के लिये चल-पड़ता है। वह ट्राय के राजा प्रायम के पुत्र के रूप में महल में प्रविष्ट होता और ट्राजनों के कान खड़े कर देता है। यह समाचार पाते ही हेक्टर अपनी सेनाओं को रण के लिये तैयार होने का आदेश देता है।

इस ओर के प्रमुख योद्धाओं में पेरिस और इनीयस[1] के नाम अधिक उल्लेखनीय हैं।

पर्व तीन—

युद्ध का समय होता है और युद्ध आरम्भ होता है। दोनों सेनायें एक दूसरे की ओर बढ़ती हैं। इस समय वीरता में भरकर ट्राजन इस तरह चिल्लाते हैं जैसे कि एक स्थान से दूसरे स्थान को जाते हुये सारस। किन्तु दूसरी ओर यूनानी बिल्कुल शांत रहते हैं और उनकी शान्ति का सब पर बड़ा अच्छा प्रभाव भी पड़ता है। ...

मेनेलाउस लड़ते-लड़ते अपनी पत्नी को विचित्र ढंग से भगा लेजाने वाले 'पेरिस' के समीप आ-जाता है, उसे देखते ही पहचान लेता है और पहचानते ही उस पर हमला करने के लिये झपट पड़ता है। इस पर पेरिस भयातंकित हो-उठता है और भाग कर अपनी ट्राजन सेना में जा छिपता है।

पेरिस के इस प्रकार पीठ दिखलाकर भाग निकलने से 'हेक्टर' बड़ा क्रोधित होता है और बड़ी अशिव कामना करता है कि अच्छा होता कि 'ट्राय' के इस प्रकार अपमानित होने के पहले ही उसका भाई मर गया होता। पेरिस स्वयं जानता है कि उसका इस प्रकार भाग-निकलना बड़ा निन्दनीय रहा किन्तु इस पर भी वह हेक्टर को उत्तर देता है कि दुनिया के सब आदमी एक से ही नहीं होते; फिर भी, वह एक बार फिर रण-स्थल में जायेगा और खोया हुआ सम्मान पुनः प्राप्त करेगा, परन्तु इस बात का निश्चय हो जाना आवश्यक है कि विजयी होने पर हेलेन और सारे माल-ख़ज़ाने विजेता को मिल जायेंगे। हेक्टर पेरिस के सारे वाक्य शान्त होकर सुनता है, उनसे इतना प्रभावित होता है कि सेनाओं को आगे बढ़ने से रोक देता है और यूनानियों को द्वंद-युद्ध के लिये ललकारता है। यूनानी चुनौती स्वीकार करते हैं, परन्तु एक शर्त लगा देते हैं कि वृद्ध प्रायम स्वयं सन्धि का संकल्प करे।

इसी बीच में आइरिस राजकुमारी के वेश में ट्राजनों के महल में घुस जाता है और हेलेन से तुरन्त ही छत पर चलने का आग्रह करता है। वह कहता है कि वहाँ से युद्ध-स्थल साफ़ दिखलाई देता है, जहाँ दोनों ओर की सेनायें युद्ध करने के बजाय द्वंद-युद्ध के पहिले किये जाने वाले बलिदान में व्यस्त हैं। इस समय आइरिस उसे यह भी बतलाता है कि इस द्वंद-युद्ध का पुरस्कार और कुछ न होकर हेलेन स्वयं है।......

हेलेन एक पर्दे की व्यवस्था करती है और अपनी सेविकाओं को बुलाकर उनके साथ उस स्थान की ओर जाती है जहाँ प्रायम और उसके सभासद् नीचे मैदान पर दृष्टि गड़ाये बैठे हैं। वह वहाँ पहुँचती ही है कि सभी लोगों की दृष्टि एक क्षण के लिये उस पर गड़ जाती है। वे स्वीकार करते हैं कि हेलेन जैसी सुन्दरी को प्राप्त करने के लिये युद्ध करने में दोनों ही राष्ट्र

[1] वीनस और ऐंकाइसीज़ का पुत्र—

क्षम्य हैं। प्रायम चतुर पिता की भाँति युक्ति से बात काट देता है और कहता है कि इस युद्ध के कारण देवता हैं और इसकी सारी ज़िम्मेदारी देवताओं पर ही है।

प्रायम हेलेन को बुलाकर अपने पास बैठालता है और कुछ वीरों को पहिचानने का संकेत करता है। हेलेन उसके आदेश का पालन करती है किन्तु उसका सिर लज्जा से झुक जाता है क्योंकि उसे अपने देवर एगेमेम्नान, कपटी यूलिसीज़ और यूनान के प्राण-रक्षक ऐजैक्स आदि यूनानी सेना में नज़र आते हैं और वह उनका नाम बतलाने पर विवश हो उठती है। वह अपने जोड़ुआ भाइयों को भी खोजने के प्रयत्न करती है किन्तु खोज नहीं पाती। इतने में ही दूत आते हैं और सन्धि के प्रस्ताव के लिये प्रायम को नीचे ले जाते हैं। प्रायम प्रस्ताव कर शीघ्र ही महल में लौट आता है और द्वंद युद्ध के लिये उपयुक्त क्षेत्र की नाप-जोख और पहले हमला करनेवाले का बहुमत से चुनाव यूलिसीज़ और हेक्टर पर छोड़ देता है।

× × ×

भाग्य पेरिस का साथ देता है। वह बड़ी सजधज, बड़ी वीरता, और बड़े उत्साह से आगे बढ़ता है और शीघ्र ही मेनेलाउस की तलवार के टुकड़े टुकड़े कर डालता है। इस प्रकार मेनेलाउस शस्त्रहीन हो जाता है किन्तु और कोई चारा न देखकर विरोधी का शिरस्त्राण पकड़ कर उसे काफ़ी दूर तक घसीट ले जाता है। इस समय अपने शरणागत को संकट में देख कर वीनस स्वयं आ-उपस्थित होती है और उस शिरस्त्राण की गाँठ इस तरह काट देती है कि केवल गाँठ ही मेनेलाउस के हाथों में रह जाती है।

इसके बाद ही वीनस की प्रेरणा से पेरिस महल में जाता है और वहाँ एक गद्दे पर लेट कर आराम करने लगता है। उधर वीनस एक वृद्धा का रूप धारण कर पर्दा उठाने के बहाने महल के अन्दर जाती है और हेलेन को सूचित करती है कि पेरिस बाहरी कमरे में उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। हेलेन वीनस के इस रूप-परिवर्तन से भुलावे में नहीं पड़ती बल्कि उसे तुरन्त ही पहचान लेती है, किन्तु फिर भी उसे बहुत फटकारती है और कहती है कि उसे पेरिस को दुबारा देखने की न अभी कोई इच्छा है और न कभी भविष्य में होगी। हेलेन के इस उत्तर के बाद भी वीनस उसे अपने प्रभाव में ले आती है और इस प्रकार उस विशिष्ट कमरे में दोनों की भेंट होती है। पेरिस फिर से उसका स्नेह पाने की कामना करता है और उसे समझाता है कि मेनेलाउस की विजय का कारण उसके, अपने शौर्य का अभाव न होकर मेनेलाउस को मिनर्वा की सहायता है, अन्यथा······!

इधर यह प्रणय-संलाप चल रहा है, उधर मेनेलाउस अपने प्रतिद्वंदी को यहाँ-वहाँ ढूंढता है और न खोज-पाकर ट्राजनों को दोष लगाता है कि उन्होंने ही उसे कहीं छिपा दिया! इस पर दूसरे ही क्षण एगेमेम्नान घोषित करता है कि विजय यूनानियों की रही, अतएव अब ट्राजनों को चाहिए कि वे हेलेन को तुरन्त ही उसे सौंप दें!

पर्व चार—

यहाँ कवि पाठकों को द्वंद-स्थल से ओलिम्पस पर्वत पर ले आता है। इस बीच यहाँ सारे देवता एकत्रित रहे हैं। वे द्वंद-युद्ध के समाप्त होते ही एक दूसरे पर ताने कसने लगते और कभी यूनानियों और कभी ट्राजनों को बुरा-भला कहने लगते हैं। शीघ्र ही जूपिटर मिनर्वा को आदेश देता है कि वह पृथ्वी पर जाये और कुछ ऐसा करे कि सन्धि भंग हो जाय!

मिनर्वा धरती पर आती है, एक योद्धा का रूप धारण करती है और एक ट्राजन धनुषधारी को मेनेलाउस पर तीर चलाने को उत्तेजित करती है। ट्राजन तुरन्त ही मेनेलाउस को लक्ष्य कर तीर चलाता है और मेनेलाउस घायल हो जाता है। उसके घायल होते ही एगेमेम्नान आवेश में आ जाता है और ट्राजनों से इस सन्धि-भंग का बदला लेने के लिए चंचल हो उठता है। इधर उस ट्राजन-वीर को भड़काने के बाद मिनर्वा यूनानियों के दल में आती है और उसकी प्रेरणा से यूनानी सेना लड़ाई के मैदान की ओर कूच करती है।

युद्ध होता है। रक्त की नदी बह चलती है। घायल योद्धा पृथ्वी पर गिरते हैं और उनके गिरने की ध्वनि से उनके नीचे की धरती काँप उठती है। रथ दौड़ते हैं तो ऐसा घोर रव होता है कि बादल गरजने लगते हैं, बिजली कड़कने लगती है। यद्यपि पहले ऐसा मालूम होता है कि मैदान यूनानियों के ही हाथ रहेगा तथापि थोड़ी देर बाद ही ट्राजन भी नये उत्साह और नई लगन से लड़ाई में जुट जाते हैं। बात यों होती है कि सूर्य्य का देवता अपोलो ट्राजनों को बतलाता है कि एकीलीज़, जिससे वे सबसे अधिक डरते हैं, इस समय यूनानियों के साथ नहीं है, अतएव वे बेधड़क होकर शत्रु से लोहा ले सकते हैं।

पर्व पांच—

युद्ध की भयंकरता को देख-समझ कर मिनर्वा युद्ध के देवता मार्स को समर-स्थल से दूर ले जाती है और उसे समझाती है कि मरणशील मनुष्यों को अपना झगड़ा अपने आपही बिना किसी की सहायता के तय करना चाहिए! मार्स उसकी बात मान लेता और लड़ाई से अपना हाथ खींच लेता है।

अब अनेक द्वंद-युद्ध होते हैं, अनेक जानें जाती हैं और कितनी ही आश्चर्यजनक घटनायें घटती हैं। इसी बीच में मिनर्वा कुछ ऐसी युक्ति करती है कि यूनानी-वीर डायोमिडीज़ का घाव तुरन्त ही पुर जाता है। वह फिर लड़ाई में जुट जाता है और तब तक लड़ता रहता है जब तक कि वीनस का बेटा इनीयस एक धनुषधारी को उसकी विनाशकारी गति रोकने का आदेश नहीं देता! किन्तु यह धनुषधारी अपना काम पूरा करने के पहिले ही मार डाला जाता है। इस समय सहसा ही ऐसा प्रतीत होता है कि डायोमिडीज़ स्वयं इनीयस की जान का गाहक हो जायेगा, अतएव वीनस इनीयस को युद्ध-स्थल से बहुत दूर खींच-ले जाती है! किन्तु, वह इनीयस की रक्षा में व्यस्त है कि डायोमिडीज़ वीनस का हाथ घायल कर देता है। फल यह

होता है कि उसका पुत्र गोद से छूट गिरता है, परन्तु इसी क्षण अपोलो दौड़ कर उसके प्राण बचा लेता है।

वीनस मार्स का रथ माँगने के लिए तुरन्त ही ओलिम्पस के लिए प्रस्थान करती है। वहां पहुँचने पर वह अपनी माँ के वक्षस्थल पर सिर रख कर सिसक-सिसक कर रोती है और उससे अपने दुख और भय की चर्चा करती है। उसकी माँ उस पर ताने कसती है और उसे सलाह देती है कि वह केवल प्रणय-परिणय का आनन्द भोगे और लड़ाई दूसरे देवी-देवताओं के लिए छोड़ दे!

इधर लड़ाई के मैदान में अपना स्थान एक वीर को सौंपकर अपोलो इनीयस को ख़तरे में देखकर उसे एशियामाइनर के एक नगर परगेमस में पहुँचा देता है। वहाँ उसके घायल शरीर की मरहम-पट्टी होती है। दूसरे ही क्षण अपोलो लौट आता है और मार्स को चुनौती देता है कि वह वीनस के घाव का बदला चुकाये। बात मार्स को लग जाती है और फल स्वरूप इतना भयंकर युद्ध होता है कि उसका वर्णन करना सर्वथा असम्भव है। हाँ, हम उसकी भयंकरता का अनुभव इससे ही कर सकते हैं कि होमरिक-युद्ध भविष्य के लिये विशेषणात्मक रूढ़ि बन जाता हैं और उसके बाद जब भी कोई भयानक युद्ध होता है लोग उसे होमरिक-युद्ध कहकर पुकारते हैं।

युद्ध में मार्स और युद्ध की देवी बेलोना हेक्टर की रक्षा करते हैं, अतएव कुछ समय तक ट्राजन कुछ विजयी होते-से लगते हैं और जूनो और मिनर्वा यूनानियों की सहायता करने के लिये जागरूक हो-उठती है। दूसरे ही क्षण जूनो यूनानी युद्ध-घोषक स्टैंटर का वेश बना लेती और मार काट में यूनानियों का नेतृत्व करती है। शीघ्र ही मार्स घायल हो जाता है और अपने घाव की पीड़ा के कारण इतनी ज़ोर से चिल्लाता है कि दोनों ओर की सेनायें सिहर-उठती हैं। वह ओलिम्पस पर्वत पर पहुंचा दिया जाता है। वहाँ वह अपना घाव देख कर मिनर्वा को जी-भर कोसता है, क्योंकि उसके कारण ही उसे इस प्रकार की पीड़ा का शिकार होना पड़ा है। ...कुछ क्षणों में ही जूपिटर भी वहाँ आ-पहुंचता है और अपने पुत्र को इस स्थिति में पाकर उसकी बड़ी भर्त्सना करता है, किन्तु फिर उसे क्षमा कर उसके कष्ट-निवारण की व्यवस्था करता है। शीघ्र ही मार्स इस योग्य हो जाता है कि वह देवताओं की सभा में भाग ले सके और वहाँ बैठा नज़र आता है। ज़रा देर बाद जूनो और मिनर्वा भी यहाँ आ जाती हैं।

पर्व छः—

यहाँ ओलिम्पस पर ऊपरी घटनायें घटती रही हैं और वहाँ युद्ध-स्थल में मेनेलाउस और एगेमेम्नान टूटे हुये रथों, उड़ते-हुये घोड़ों और धूल के बादलों के बीच रणकौशल दिखलाते रहे हैं, जिनपर नेस्टर गर्व से फूलकर प्रसन्न होता रहा है।...

अन्त में युद्ध इतना भयंकर होता है कि ट्राजन हथियार डालने पर विवश हो जाते हैं, परन्तु इसी समय एक योद्धा हेक्टर और अभी-अभी समरक्षेत्र में लौटे इनीयस को आने वाले

संकटों से आगाह कर देता है। हेक्टर अपने साथियों से विचार-विनिमय करने के बाद ट्रॉय वापिस आता है और नगर की महिलाओं से अनुरोध करता है कि वे मिनर्वा को प्रसन्न कर उसका अनुग्रह प्राप्त करें! वह उन्हें विश्वास दिलाता है कि इनीयस उनके पुरुषों की रक्षा के लिये लड़ाई के मैदान में है और उन्हें उनके लिये चिन्तित होने की ज़रा भी आवश्यकता नहीं है। स्त्रियाँ उसकी बात मान लेती हैं और हेक्टर 'स्कियान-द्वार' पर युद्ध में संलग्न वीरों की माताओं, बहिनों, पुत्रियों और पत्नियों से मिलता है! वे अनेकानेक बहुमूल्य उपहारों के साथ मिनर्वा के मन्दिर की ओर जा रही हैं।

इस प्रकार इस जूलूस को रास्ते में छोड़कर हेक्टर शीघ्रता से अपने महल में आता है। यहाँ वह किसी प्रकार का विनोद अथवा विश्राम स्वीकार न कर केवल पेरिस की खोज करता है। वह देखता है कि वह हेलेन और उसकी परिचारिकाओं के साथ अपने कवच को चमकाने में जुटा-पड़ा है। हेक्टर घृणा से हिल-उठता है और पेरिस को सूचित करता है कि युद्ध बड़ी भयंकर गति से चल रहा है और ट्राय समाप्तप्राय है क्योंकि उसके बचने का कोई सहारा नज़र नहीं आ रहा। वह उसे याद दिलाता है कि इस युद्ध की आग स्वयं पेरिस ने भड़काई है और इसकी सारी ज़िम्मेदारी उस पर ही है, किन्तु लज्जा की बात है कि अब वह शत्रु का सामना न कर घोर भीरुता और कायरता का परिचय दे रहा है। पेरिस सब कुछ शान्त होकर सुनता है और स्वीकार करता है कि सचमुच ही उसने अपने कार्यों से अपनी कायरता का ही परिचय दिया है और इसलिये वह इस डाँट-फटकार और लानत का अधिकारी है। किन्तु वह उसे विश्वास दिलाना चाहता है कि वह शीघ्र ही लड़ाई में जानेवाला है, क्योंकि हेलेन ने भी उसे लज्जित कर उसके शौर्य और पराक्रम की आँखें खोल दी हैं। हेक्टर उत्तर सुनता और चुप रहता है किंतु हेलेन यह अनुभव कर बहुत दुखी होती है कि इन सारे संकटों का कारण और कोई न होकर वह स्वयं है। वह द्रवित हो उठती है और कामना करती है कि उसका सहचर कम-से-कम ऐसा प्राणी तो होता जो एक भले, समझदार और शानदार आदमी की तरह मान और अपमान का अनुभव तो कर सकता! इसी समय हेक्टर हेलेन से पेरिस को दूसरे ही क्षण रण में भेज देने का प्रस्ताव करता और उसे सूचित करता है कि वह स्वयं थोड़ी देर के लिये अपने महल में रुकेगा! इसके बाद वह अपने निवास-स्थान की ओर क़दम बढ़ाता है। वह आज अपनी पत्नी और अपने बच्चे को विशेष रूप से हृदय-लगाना चाहता है—कौन जाने कि यह आलिंगन और यह चुम्बन अंतिम आलिंगन और अंतिम चुम्बन हो।

किन्तु हेक्टर को हर ओर केवल नौकर-चाकर ही मिलते हैं! वे उसे बतलाते हैं कि स्वामिनि स्तम्भ के झरोखों से युद्ध देख रही है। वह स्तम्भ की ओर जाता और अपनी पत्नी से भेंट करता है। यहाँ उसका अपनी पत्नी ऐंड्रामैकी से सम्मिलन, उसके इस प्रकार प्राण की बाज़ी लगा कर महल में आने के लिये पत्नी की मधुर ताड़ना, पत्नी का पति को याद दिलाना कि एकीलीज़ के कारण उसके अन्य सहायक उससे बहुत दूर है, अतएव अब केवल हेक्टर पर ही उसकी रक्षा का सारा भार है, और अन्य दूसरे प्रसंग 'इलियड' के बड़े ही मनोहर और

हृदय-स्पर्शी अंश हैं।

अब 'हेक्टर' अपनी पत्नी से विदा माँगता है! वह कहता है कि उसे ऐसा लग रहा है जैसे कि 'ट्राय' ने हथियार डाल दिये हैं और वह स्वयं वन्दी का घृण्य जीवन बिता रहा है, तथापि पत्नी की रक्षा करना एक बहुत बड़ा प्रश्न है, तथापि रण में जूझकर वीरों की तरह जीना-मरना और सम्मान प्राप्त करना उसका सब से पहला कर्त्तव्य है और इसीलिये उसे तुरन्त ही लड़ने के लिये चल देना चाहिये। इतना कहने के बाद वह अपने बच्चे को लेने के लिये हाथ बढ़ाता है, किंतु वह उसके शिरस्त्राण और उसकी कल्गियाँ देखकर इस तरह डर जाता है कि उसके पास आना तो दूर रहा, उसकी ओर से मुँह फेर लेता है। हेक्टर बात समझ लेता है, शिरस्त्राण उतारकर एक किनारे रख देता है और उसे हृदय से लगाकर कामना करता है कि वह बड़ा होकर ट्राय और ट्राजनों की रक्षा करे। थोड़ी देर बाद वह उसे उसकी माँ को सौंप देता और अपनी राह लेता है।

'यह सब उसने कहा और फिर फैलाये जब अपने हाथ,
पास न आया लिपट गया शिशु माँ की छाती से अनजान,
शिरस्त्राण से डरा, क्योंकि अस्त्रों का शिशु का कैसा साथ!
काँप रहा था भय के मारे, सोच रहा था—ये हैं कौन?
कुछ रहस्य की बात नहीं थी, समझे दोनों मुस्काये,
हेक्टर ने उसको उतार रक्खा तब भय का टूटा मौन!
उसने बच्चे को दुलराया, उसको चूमा शत-शत बार,
और जोव[1] से औ देवों से लगा प्रार्थना करने एक—
जोव और हे सारे देवों, सुन लो मेरी एक पुकार—
यह मेरा सुत मुझसा ही हो वीर, ट्रॉय की शक्ति महान-
सुविख्यात नृप हो, अजेय हो, हो अनन्य वीरों में वीर-
काँपे धरती काँपे अम्बर, यह गाये जब रण के गान!
और, विजय कर लाभ सदा ही लौटे जब वह समरों से,
और धन्य अपने को समझे उसकी माँ उसको जनकर,
लोग कहें—बढ़ गया पिता से, अरे, बढ़ गया अमरों से!

'स्क्यिान-द्वार' पर पहुँचते ही हेक्टर देखता है कि वीरोचित उत्साह से जगमग करता हुआ पेरिस वहाँ उसकी प्रतीक्षा कर रहा है।

पर्व सात—

इस समय हेक्टर और पेरिस को एक साथ रण की ओर आते हुये देखकर ट्राजन

[1] जूपिटर-

बड़े प्रसन्न होते हैं। एक क्षण बाद दोनों भाई लड़ाई के मैदान में पहुंचते और लड़ाई में जुटते ही हैं कि यूनानियों के पैर उखड़ने लगते हैं। इसी बीच में अपोलो और मिनर्वा विरोधी ट्राजनों के साथ होकर उनके द्वारा यह प्रस्ताव करवाने का निश्चय करते हैं कि अब एक-एक वीर अकेले-अकेले अपने प्रतिद्वंदी से लड़े। वे ट्राजनों को इस प्रकार का प्रस्ताव करने के लिये प्रेरित करते हैं और इसके बाद स्वयं, इस संघर्ष का निरीक्षण करने के लिये, गिद्धों के रूप में एक ऊँचे पेड़ पर छिप-बैठते हैं।

हेक्टर कुछ समय के लिये युद्ध स्थगित कर यूनानियों को ललकारता है कि उनमें से जिसमें भी साहस हो आगे आये और उससे व्यक्तिगत रूप से लड़े, किन्तु शर्त यह है कि विजित का शस्त्र ही विजेता का पुरस्कार हो और वीर-गति प्राप्त करने के बाद पराजित वीर की अन्त्येष्टि क्रिया सम्मानपूर्वक की जाय। यूनानी 'हेक्टर' की चुनौती सुनते और चिंतित हो उठते हैं! वे जानते हैं कि एकीलीज़ के अतिरिक्त उनमें और कोई दूसरा ऐसा नहीं है जो हेक्टर से लोहा ले सके। इस प्रकार वे संकल्प-विकल्प में पड़े हुये हैं कि नौ वीर आगे आते हैं और इनमें ऐजैक्स हेक्टर का सामना करने के लिये चुन लिया जाता है। इस भाँति ऐजैक्स को एक अपने को विशेषतया शौर्यवान प्रमाणित करने का एक अवसर मिलता है, अतएव वह आनन्द से फूला नहीं समाता और डींगें मारता हुआ, बड़े आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ता है। किन्तु हेक्टर पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता और वह द्वंद-युद्ध आरम्भ कर देता है। कहना न होगा कि यह द्वंद-युद्ध किसी भी एक निश्चित परिणाम पर नहीं पहुँच पाता कि युद्ध-घोषक रात्रि होने की, द्वंद के प्रातःकाल तक स्थगित होने की और दोनों वीरों के बराबर उतरने की घोषणा करता है।

किन्तु ऐजैक्स अपने को विजयी समझता, अपनी विजय पर गर्व करता और एक भोज में भाग लेने के पहले इसके लिये जूपिटर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। यथासमय भोज आरम्भ होता है और यूनानी भोजन में तल्लीन हो जाते हैं। इस समय सुन्दर और उपयुक्त अवसर समझकर नेस्टर यूनानियों को सलाह देता है कि उन्हें चारों ओर मिट्टी की दीवारें उठाकर अपने ख़ेमों को सुरक्षित कर लेना चाहिये! इसी समय, दूसरी ओर, ट्राजनों में एक बहस छिड़ जाती है और एक समस्या सामने आती है कि क्या यह बुद्धिमानी न होगी कि वे सन्धि-भंग के लिये यूनानियों से क्षमा माँग ले और सारे मालख़ज़ानों के साथ हेलेन उन्हें सौंप दें!......वाद-विवाद कुछ देर तक चलता है कि पेरिस क्रोध से लाल हो-उठता है और प्रस्ताव अस्वीकार कर देता है। इस पर प्रायम सारे ट्राजनों से प्रस्ताव करता है कि लड़ाई एक निश्चित समय के लिये स्थगित कर दी जाय ताकि गत-वीरों की अन्त्येष्टि-क्रिया की जा सके।

प्रायम का यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत होता है। सबेरा होने को है कि ट्राजनों के युद्ध-घोषक एगेमेम्नान के तम्बू में जाते हैं। वे सारा प्रस्ताव ज्यों का त्यों उसके सामने रख देते हैं और कहते हैं कि ट्राजन हेलेन के अतिरिक्त कुछ भी हरजाने के रूप में भेंट कर सकते हैं।

इस पर यूनानी एक निश्चित काल के लिये युद्ध स्थगित कर देने को तैयार हो जाते हैं, किन्तु उन्हें अपनी सफलता पर इतना अधिक विश्वास है कि सारे उपहार अस्वीकार कर देते हैं।

अब दोनों पक्ष अपने-अपने मृत-वीरों के अंतिम संस्कारों की व्यवस्था करते हैं और सारे देवता ओलिम्पस से सब कुछ देखते हैं। सहसा ही उनकी दृष्टि उन चहरदिवारियों पर पड़ती है, जो कि रातों-रात यूनानी बेड़ों की सुरक्षा के लिये बनाई गई हैं। दूसरे ही क्षण समुद्र का देवता नेप्ट्यून जलनभरी आशंका से काँप उठता है कि कहीं ऐसा न हो कि उसके द्वारा ट्राय के चारों ओर बनाई गई दीवारें इन दीवारों से ढँक और छिप जायें। किन्तु जूपिटर उसे यह विश्वास दिलाकर शांत करता है कि लड़ाई समाप्त होते ही वह उन्हें रेत के नीचे दबा देगा।

पर्व आठ—

सबेरा होता है! जूपिटर सारे देवताओं को बुलाता है और उन्हें चेतावनी देता है कि यदि कोई भी देवता किसी भी पक्ष की सहायता करेगा तो उसे सदा के लिये 'टारटरस'[1] में बन्दी का जीवन बिताना पड़ेगा। इसके बाद युद्ध देखने के विचार से वह इडा[2] पर्वत पर जाता है। यहाँ दोपहर के समय वह अपने सुनहले तराज़ू निकालता है और उसके विरोधी पलड़ों पर यूनान और ट्राय के भाग्यों को रखता है। एक क्षण बाद ही बादल कड़क उठते हैं और भविष्यवाणी होती है कि इस दिन ट्राजनों की विजय रहेगी।

इसके बाद जब-जब डायोमिडीज़ ट्राजनों के नेता हेक्टर पर हमला करता है, जूपिटर का वज्र उसकी रक्षा करता है। इस प्रकार इस दैवी सहायता की जानकारी होते ही यूनानी अपना सारा साहस खो बैठते हैं और उनके दिल डर से बैठने लगते हैं, किन्तु ट्राजनों के हौसले आवश्यकता से अधिक बढ़ जाते हैं। फलतः वे यूनानियों का पीछा कर उन्हें उनकी चहारदिवारियों तक खदेड़ आते हैं और ज्योंही वे उनके पीछे छिपने लगते हैं, हेक्टर उन्हें उनसे बाहर निकलकर लड़ने के लिये ललकारता है।

× × ×

यूनानियों को इस प्रकार संकट में देखकर जूनो एगेमेम्नान के पास जाती है और उससे कहती है कि वह यूलिसीज़ के तम्बू में जाये और बहुत ऊँची आवाज़ में घोषित करे कि उनके सारे जहाज़ जलकर अब राखहुये और तब राख हुये! वह चाहती है कि यह सारी बात इस तरह कही जाये कि एकीलीज़ उसे अनसुनी न कर सके!

किन्तु एगेमेम्नान अपने मित्रों और साथियों के विनाश की कल्पना से बहुत परीशान

[1]नर्क की तलविहीन खाड़ी।

[2]एशियामाइनर में क्रीट के मध्यस्थित पहाड़—कहा जाता है कि जूपिटर इसी पहाड़ की एक गुफ़ा में पाल-पोसकर बड़ा किया गया था!

हो उठता है और इस प्रकार देवताओं से कृपा और सहायता की प्रार्थना करता है कि इसी क्षण एक गरुड़ ऊपर उड़ता नज़र आता है! वह यूनानियों की बलि-वेदी पर एक मेमना डाल देता है। इस भांति इस शकुन से यूनानियों में नये साहस और नवीन वीरता का संचार होता है। शीघ्र ही धनुषधारी ट्यूसर अपने तीर के अचूक निशानों से ट्राजनों की सेना में खलबली मचा देता है! इस नई स्थिति से हेक्टर चिन्तित हो-उठता है और कोई चारा न देखकर उसे एक चट्टान फेंककर मारता है। वह उसके नीचे दब जाता है और फिर किसी तरह जान बचाकर शीघ्रता से यूनानी ख़ेमों में भाग जाता है।

जूनो और मिनर्वा अपने शरणागतों की सहायता करने के लिये अधीर हो उठती है और उन्हें जूपिटर की इस आज्ञा का ध्यान नहीं देता कि उन्हें किसी भी पक्ष की सहायता नहीं करनी है। अतएव वे उनके त्राण के लिये जाने को तैयार होती ही हैं कि जूपिटर उन्हें रोक देता है और विश्वास दिलाता है कि जब तक एकीलीज़ का मित्र पेट्रॉक्लस वीर गति को प्राप्त नहीं होता और जब तक उसकी मौत का बदला लेने के लिये एकीलीज़ उत्तेजित होकर आगे नहीं आता तबतक यूनानी बराबर हारते रहेंगे।

आख़िर सूरज डूब जाता है, दिन समाप्त हो जाता है और दिन के साथ उस दिन का युद्ध भी! अब यूनानी अपने ख़ेमों में विश्राम करते हैं, किन्तु, ट्राजन, इस डर से कि कहीं यूनानी रातोंरात भाग न निकलें, खाई के समीप के खुले मैदान में ही सारे दिन की थकान मिटाते हैं।

पर्व नौ—

इस समय यूनानी अपने भविष्य के लिए इतने चिन्तित हैं कि एगेमेम्नान अपने तम्बू में सारे सभासदों को एकत्रित करता हैं और परामर्श करता है। इस सभा में उसका गला रुंध जाता है, उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं और वह बहुत दुखी होकर प्रस्ताव करता है कि यदि वे अपने प्राण बचाना चाहते हैं तो उन्हें आँख बचाकर निकल भागना चाहिये, क्योंकि बचाव की कोई और सूरत नज़र नहीं आती! परन्तु इस कायरता के विचार-मात्र से डायोमिडीज़ क्रोध के मारे कांपने लगता है और इस कटुता से इस प्रस्ताव का विरोध करता है कि यूनानी अंतिम रात तक लड़ाई के मैदान में डटे रहने का संकल्प करते हैं। इसके बाद ही नेस्टर के सुझाव पर एगेमेम्नान एकीलीज़ के अपमान का प्रायश्चित करने, उससे क्षमा माँगने और उसे कितने ही बहुमूल्य उपहार भेंट करने का निश्चय करता है। वह सन्देशवाहक बुलवाता और एकीलीज़ के पास सन्देश भेजता है कि यदि वह पिछली बातों को भूल कर केवल यूनानियों की सहायता करेगा तो वह उस वन्दिनी को तो उसे दे ही देगा, अपनी एक पुत्री का विवाह भी उससे कर देगा! ······ ··दूतों के साथ यूलिसीज़ तथा अन्य योद्धा भी हैं।

चाँदनी रात है! चाँदी की चादर सारे ख़ेमों पर समान-रूप से फैली हुई है कि वे सब तम्बुओं के बीच से गुज़रते हैं और उनकी निगाह एकीलीज़ पर पड़ती है। वह अपने मित्र पेट्रॉक्लस

से संगीत सुनने में तन्मय है। कुछ क्षण बाद सन्देशवाहक और दूसरे वीर उसके तम्बू में प्रवेश करते हैं। यूलिसीज़ स्वयं एगेमेम्नान का सन्देश एकीलीज़ को देता और फिर सारे देशवासियों की ओर से उससे सहयोग की माँग करता है। यही नहीं, वह उससे गम्भीर परिस्थिति पर विचार करने का व्यक्तिगत अनुरोध भी करता है। किन्तु एकीलीज़ उदासीन भाव से उत्तर देता है कि उसका क्या, वह तो किसी क्षण वहाँ से जा सकता है और जाने वाला भी है, अतएव यूनानियों को अपनी रक्षा स्वयं करनी चाहिए ! सच तो यह है कि वह एगेमेम्नान से इतना चिढ़ा हुआ है कि वह उसे क्षम्य भी नहीं मानता और क्षमा करने के इन्कार कर देता है ! यद्यपि उसका वृद्ध गुरू भी उससे आग्रह करता है कि उसे वीरता से क्रोध और घृणा पर विजयी होकर अपने मन को जीतना चाहिये, तो भी वह ज्यों का त्यों बना रहता है। उस पर इस तरह की और भी कितनी ही बातों का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता, उसमें कोई परिवर्त्तन नहीं होता, अतएव, यूलिसीज़ और ऐजैक्स आदि निराश होकर लौट पड़ते हैं !......

एकीलीज़ के तम्बू में शान्ति है। निद्रा अपने प्रभुत्व की परीक्षा ले रही है, किन्तु एगेमेम्नान के ख़ेमे में अब भी दीप जल रहा है ! लोग चिंतित और व्यग्र हैं। अंत में डायोमिडीज़ इस स्थिति से ऊब-उठता है और इस समय भी यह प्रमाणित कर-देने का संकल्प करता है कि यूनानी वीर हैं और उन्हें एकीलीज़ की सहायता की कुछ भी आवश्यकता नहीं है। .....

पर्व दस—

अधिकांश यूनानी दिन के परिश्रम से थक कर सो रहे हैं। इस समय एगेमेम्नान उठता है, मेनेलाउस से विचार-विनिमय करने के बाद नेस्टर, यूलिसीज़ और डायोमिडीज़ को जगाता है और उनसे कहता है कि वे चल कर अपनी नियुक्ति का स्थान देख लें ताकि लड़ाई के समय स्थिति समझी-समझाई रहे। वे तुरन्त ही चल पड़ते हैं। राह में नेस्टर प्रस्ताव करता है कि उनमें से किसी को जासूस बनकर ट्राजनों में जाना और उनकी सारी योजनाओं का पता लगा लाना चाहिये। यूलिसीज़ और डायोमिडीज़ उत्सुक-हृदय से इस प्रस्ताव का समर्थन करते हैं और ट्राजनों के पड़ाव की ओर बढ़ते हैं ! किन्तु उसी क्षण उनकी निगाह डोलॉन नामक एक ऐसे जासूस पर पड़ती है जो उनके, अपने भेद लेने के लिये उनकी ओर आ रहा है। अतः वे इस प्रकार छिपकर लाशों के बीच से गुजरते हैं कि जासूस उन्हें देख नहीं पाता और उनकी पकड़ में आ जाता है। वे उसे डरा-धमका कर अपने काम की सारी बातें जान लेते हैं।

इस प्रकार उन्हें रेसस[1] के घोड़ों की दिशाओं का भी पता चल जाता है। वे इस अमूल्य निधि को पाने के लिये ट्राजनों के तम्बू में घुस पड़ते हैं और सोते हुये योद्धाओं को

---

[1]नदी के देवता के बर्फ़ीले रङ्ग के घोड़े—कहा जाता है कि यह भविष्यवाणी हुई थी कि यदि ये एक बार एग्जैंथस नदी का पानी पी लेंगे और एक बार ट्राय के मैदान की घास चर लेंगे तो ट्राय का पतन असम्भव हो जायगा !

तलवार के घाट उतार देते हैं। शीघ्र ही वे इन घोड़ों पर अधिकार कर लेते हैं और इनके साथ सुरक्षित रूप से भाग भी निकलते हैं। वे जानते हैं कि मिनर्वा की कृपा और सहायता के कारण ही यह सब कुछ सम्भव हो सका है, अतएव वे उसके प्रति आदर प्रकट करते और उसका आभार स्वीकार करते हैं!

वे अपने ख़ेमों में पहुँचते हैं। यहाँ नेस्टर उनकी प्रतीक्षा करता रहा है। वह देखता है कि उसके साथी संकट और उदासी से छुटकारा ही नहीं पा गये हैं, प्रत्युत उन्होंने 'रेसस' के घोड़ों जैसी निधि भी प्राप्त कर ली है, अतः वह प्रसनता से फूला नहीं समाता और उनसे विश्राम करने का आग्रह करता है। नेस्टर जानता है कि उन्होंने जी-तोड़ परिश्रम किया है और उन्हें आराम करना चाहिये। वह नहीं चाहता कि वे इस श्रम के कारण दूसरे दिन लड़ न सकें और उनका सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाये!

पर्व ग्यारह

सबेरा होता है और जूपिटर वैमनस्य की देवी को यूनानियों को जगा-देने का आदेश देता है। देवी आदेश का पालन करती है। फलस्वरूप यूनानी उठ-बैठते हैं और जैसे ही तैयार होकर लड़ाई के मैदान में आते हैं आकाश में एक वज्र लहराने लगता है। उन्हें इसका अर्थ समझते ज़रा भी देर नहीं लगती कि जूपिटर की आज्ञा है और उन्हें तुरन्त ही युद्ध आरम्भ कर देना चाहिये!......

युद्ध आरम्भ होता है और हेक्टर की वीरता और उसके शौर्य एवं उत्साह से प्रेरणा लेकर ट्रोजन भूखे भेड़ियों की तरह अपने शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं। किन्तु इस सारे उत्साह और सारी हिम्मत के रहते हुए भी यूनानी उन्हें 'स्कियान-द्वार' तक खदेड़ देते हैं। अब ट्राजन हतोत्साहित होने लगते हैं! उन्हें इस स्थिति में देख कर जूपिटर हेक्टर को सचेत करता है कि यदि एक बार एगेमेम्नान घायल हो गया तो लड़ाई का रुख़ पलट जायेगा और यूनानियों की हार आरम्भ हो जायेगी, अतएव उसे किसी प्रकार एगेमेम्नान पर चोट करनी चाहिये। हेक्टर आश्वस्त होता है। थोड़ी ही देर में एक भाला एगेमेम्नान को लगता है और वह आहत होकर अपने तम्बू की ओर चल देता है हेक्टर इस घटना से लाभ उठाता है। वह अपने वीरों में नये सिर से जोश भरता है और वे इतने उग्र हो उठते हैं कि बदले में यूनानियों को बहुत दूर तक खदेड़ देते है। इसी क्रम में डायोमिडीज़ और यूलिसीज़ भी घायल हो जाते हैं। नेस्टर उन्हें अपने ख़ेमे में ले आता है।

इस समय एकीलीज़ एक दूर के जहाज़ के अगले हिस्से पर उदास बैठा है कि उसकी दृष्टिनेस्टर पर पड़ती है। वह उत्सुक हो उठता है और पेट्रॉक्लस से घायल वीरों के नाम मालूम कर-आने का आग्रह करता है! पेट्रॉक्लस तुरन्त ही उठ-खड़ा होता है! वह यूनानियों के बीच पहुँचता ही है कि वे उससे मृत साथियों की बहुत लम्बी-चौड़ी संख्या की चर्चा करते हैं और देश और देशवासियों के नाम पर यूनानियों की सहायता के करने के लिये एकीलीज़ को विवश करने का अनुरोध

भी ! उनका कहना है कि यदि फिर भी एकीलीज़ स्वयं युद्ध न कर सके तो अपनी सेनायें तो अपने मित्र के नेतृत्व में भेज ही दे !

पर्व बारह—

यद्यपि ट्राजन यूनानियों के तम्बुओं में घुसने के भयंकर प्रयत्न करते हैं तो भी उनके प्रयत्न विफल होते दिखलाई देते हैं। यह स्थिति तब तक चलती रहती है जब तक हेक्टर रथ से उतर कर स्वयं उस दीवाल पर हमला नहीं करता, जिसे लड़ाई के बाद ही देवता ढहा सकेंगे !...! अन्त में फाटक टूट जाते हैं और सारे ट्राजन इस कार्य के लिये हेक्टर को धन्यवाद देते हैं। शीघ्र ही वे यूनानियों के तम्बुओं में घुस पड़ते हैं। यहाँ आपस में कितने ही द्वंद-युद्ध होते हैं और दोनों ही पक्षों के कितने ही वीरों का ख़ून बहता है।

पर्व तेरह—

उंगली पकड़ कर पहुँचा पकड़ने की कहावत के अनुसार यूनानियों के तम्बुओं में प्रविष्ट हो जाने के बाद ट्राजन उनके जहाज़ों को जलाकर राख कर देने की बात सोचते हैं और इसी विचार से समुद्र-तट की ओर झपटते हैं। उनकी धारणा है कि यदि उन्होंने ऐसा कर लिया तो उनके शत्रुओं का प्राण बचाकर भाग निकलना असम्भव हो जायगा !

उधर समुद्र के देवता, नेप्च्यून के कान खड़े हो जाते हैं। वह यूनानियों के विनाश की कल्पना साकार देख कर एक पुरोहित के रूप में उनके बीच में आ पहुँचता और उन्हें स्वस्थ-चित्त होकर एक क़तार में खड़े होने का आदेश देता है। इसके बाद वह अपने राजदंड से दोनों यूनानी सरदारों को छूता है। फल यह होता है कि उनमें अपार शक्ति और साहस का संचार हो-उठता है और वे शौर्य प्रदर्शन के लिये चंचल हो उठते हैं।

'जिससे पृथ्वी काँप-काँप उठती है जब लेता है घेर,
उसने अपने राजदंड से छुआ उभय सरदारों को,
और शक्ति साहस उसने उन दोनों में भरा अपार—
उनके बाहु और पग जैसे नाच उठे सक्रिय होकर !
तब नेप्टयून शीघ्रता से उड़ चला तीव्र गति से अपनी,
जैसे किसी शिला के ऊपर से नीचे मैदानों पर
कोई बाज़ झपट कर आये देखे जो अपना आहार !
अचरज में खोये-खोये से खड़े रहे योद्धा-सरदार ! !'

अतएव अब ट्राजनों की ही विजय नहीं होती रहती बल्कि उनकी गति शिथिल पड़ जाती है। हेक्टर हार जाता है और शत्रु उसे खदेड़ देते हैं।

एक बार फिर अपने स्वजनों और अपने साथियों को संकट में देखकर पेरिस

उन्मत्त हो-उठता है और शत्रुओं को खरी-खोटी सुनाने लगता है।

पाठकों को याद होगा कि इस सारे रक्तपात की जड़ स्वयं पेरिस ही है।

पर्व चौदह—

फिर कुछ ट्राजन यूनानी ख़ेमों में घुस जाते हैं और उनमें एक अजब उदासी छा जाती है कि नेस्टर उस स्थान की ओर क़दम बढ़ाता है जहाँ घायल एगेमेम्नान यूलिसीज़ और डायोमिडीज़ बैठे हुये हैं और उत्सुक और व्यग्र-हृदय से लड़ाई का निरीक्षण कर रहे हैं। वह इस समय फिर अपनी बात दोहराता है कि वे शीघ्र ही एक दूसरे से सदा के लिए बिछुड़ने वाले हैं। किन्तु यूलिसीज और डायोमिडीज़ इस विचार को उपेक्षा और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं और अपने घावों की ज़रा भी चिन्ता न कर शत्रु को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए तैयार हो जाते हैं!

इस प्रकार यूनानियों के दुबारा साहस संचित करने से देवताओं की रानी जूनो बड़ी प्रसन्न होती हैं, परन्तु दूसरे ही क्षण आशंकित हो उठती हैं कि कहीं ऐसा न हो कि जूपिटर फिर ट्राजनों की ओर से लड़ाई में हस्तक्षेप करे! वह इस समस्या पर विचार करती है और एक क्षण बाद निद्रा के देवता एवं अपने छल छद्मपूर्ण हावों-भावों की सहायता से जूपिटर को बेहोश करने के लिए चल पड़ती है। इधर वह जूपिटर को बेहोश करना चाहती है कि उसे किसी बात का ध्यान ही न रहे और उधर निद्रा के देवता के द्वारा यूनानियों से कहला देती है कि उन्हें देवताओं के राजा की इस ग़फ़लत और बेहोशी से लाभ उठाना चाहिये!

जूनो अपने प्रयत्न में सफल होती है और उसकी कृपा से यूनानी तब तक निश्चिंत होकर भयंकर युद्ध करते हैं जब तक कि ऐजैक्स एक शिला फेंककर नहीं मारता और हेक्टर उसके नीचे दब नहीं जाता! किन्तु, इसके पहले कि ऐजैक्स और उसके साथी इस शिकार को अपने जाल में फांसे, हेक्टर के साथी उसकी प्राण-रक्षा के लिये पहुँच जाते और उसे बचा लेते हैं! वे उसे तुरन्त ही एक नदी के किनारे ले जाते हैं और उसके शीतल जल की सहायता से उसे होश में ले आते हैं।

पर्व पन्द्रह—

इस प्रकार थोड़े समय के लिए इस नेता के सहयोग और उसकी सहायता से वंचित होते ही ट्राजन फिर उस स्थान पर लौट आने के लिए मजबूर हो जाते हैं जहाँ उन्होंने एक बार अपने रथ छोड़े हैं। इस समय वे बड़े परीशान हैं और सोच नहीं पाते कि क्या करें। अंत में वे निराश हो जाते हैं और लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग-निकलने का इरादा करते हैं। किन्तु इतने ही में जूपिटर होश में आ जाता है और होश में आते ही एक पल में सारे षडयन्त्र की कल्पना कर लेता है। वह जूनो को जी भर फटकारता है, किन्तु वह सारा दोष 'नेप्च्यून के सिर मढ़ देती और उसे ही सारे जाल के लिये ज़िम्मेदार ठहराती है। जूपिटर और कोई चारा न

देखकर नेप्टयून को अपने राज्य में जाने का आदेश देता है और इसके बाद अपोलो को निर्देश करता है कि वह शीघ्रता से जाकर हेक्टर की परिचर्या कर उसे नीरोग करे।

इस समय देवताओं का राजा अपनी भविष्यवाणी एक बार फिर दोहराता है कि जब तक एकीलीज़ का कवच पहिन कर पेट्रॉक्लस युद्ध में भाग न लेगा, तब तक यूनानी बराबर हारते रहेंगे। इसके बाद वह और आगे की घटनाओं का भी उल्लेख करता है कि जब हेक्टर के पुत्र का बध करने के कारण पेट्रॉक्लस हेक्टर की तलवार से मारा जायेगा तब पेट्राक्लस की मृत्यु का बदला लेने के लिए एकीलीज़ अधीर होकर भयानक युद्ध करेगा और हेक्टर को मार डालेगा। इस प्रकार यह ट्राय का युद्ध समाप्त होगा।

+ × +

ट्राजन एक बार फिर यूनानियों को खदेड़ देते हैं। यूनानी बुरी तरह हिम्मत हार जाते हैं और हताश होकर लड़ाई त्याग देने का निश्चय करते ही हैं कि अपने वज्र-नाद से जूपिटर उनका हौंसला बढ़ाता है। इसी समय ट्राजन दुबारा यूनानियों के पड़ाव में घुस पड़ते हैं और इस स्थिति से उत्तेजित होकर पेट्रॉक्लस एकीलीज़ के तम्बू से बाहर झपट-पड़ता है। वह देखता है कि यद्यपि यूनानी धनुषधारी योद्धा ट्यूसर शत्रुओं पर एक से एक घातक तीर चलाकर अपनी कला-चातुरी का परिचय दे रहा है और यद्यपि ऐजैक्स उस शेर की भांति लड़ रहा है जिसे लोगों ने बुरी तरह घेर कर लड़ने पर विवश कर दिया है, तो भी हेक्टर और दूसरे ट्राजन भयानक ढङ्ग से आगे बढ़ते आ रहे हैं। वह यह भी लक्ष्य करता है कि ट्राजनों के हाथों में मशालें हैं, और वे उनकी सहायता से यूनानी जहाज़ों को भस्म कर देने पर कमर कसे हुए हैं।

पर्व सोलह—

पेट्रॉक्लस इस परिस्थित से बहुत बुरी तरह भयातंकित हो-उठता है। वह दौड़कर एकीलीज़ के पास जाता है और उससे लड़ाई में भाग लेने की प्रार्थना करता है। किन्तु जब वह उसकी बात मानने से इन्कार कर देता है तो वह उसका रथ उसका कवच और उसके योद्धा उससे माँगता है। एकीलीज़ अपने मित्र की दूसरी बात नहीं टालता और ये सारी चीज़ें उसे दे देता है, परन्तु, युद्ध के लिए विदा करते समय उसे आदेश देता है कि न तो वह हेक्टर का वध करे और न स्वयं ट्राय के पतन का कारण बने, क्योंकि यह दोहरा गौरव वह स्वयं प्राप्त करना चाहता है।

पेट्रॉक्लस रवाना होता है, किंतु जब तक वह अपनी देशवासियों की सहायता के लिए पहुँचे-पहुँचे तब तक अगले जहाज़ जलकर राख हो चुकते हैं। सहसा ही ट्राजनों की निगाह उस पर और उसके साथ आई हुई सेनाओं पर पड़ती है। वे उसे एकीलीज़ समझते हैं, अतएव उनमें आतंक छा जाता है और वे पीछे हटने लगते हैं। अब यूनानी सेना को मौक़ा मिलता है और वह नई शक्ति और नए उत्साह से ट्राजनों को ट्राय के प्रवेश-द्वार तक खदेड़ आती है। पेट्रॉक्लस इस समय इतने आवेश में है कि वह एकीलीज़ का आदेश भूल जाता है और हेक्टर

पर हमला करना ही चाहता है कि उसका पुत्र सरपेडन उसे द्वंद-युद्ध के लिए ललकारता है।

जूपिटर जानता है कि यह लड़ाई हेक्टर के पुत्र के लिए घातक सिद्ध होगी, अतः वह कुछ ऐसा करता है कि आसमान से पृथ्वी पर ख़ूनी ओस पड़ने लगती है। इसके बाद वह उसका शव लाने के लिए निद्रा और मृत्यु को पृथ्वी पर भेजता है और उन्हें आदेश देता है कि चूँकि वह पिता की भाँति ही उस वीर को अंतिम बार चूमना चाहता है, अतएव वे उसका शव पहले ओलिम्पस पर लायें और तब ले जाकर लीसिया* में दफनायें।......युद्ध चलता रहता है और जैसे ही सरपेडन का वध होता है, उसकी लाश के अधिकार को लेकर एक नया झगड़ा खड़ा हो जाता है। फल यह होता है कि उसका कवच यूनानियों को मिलता है और उसका शव अपोलो को। अपोलो उसे ले जाता, युद्ध के पंक को धोकर उसे विशुद्ध करता और 'निद्रा' और 'मृत्यु' को सौंप देता है।

इसी बीच में पेट्रॉक्लस नये सिरे से ट्राजनों का पीछा करता और ट्राय की प्राचीरों को ढहा देना चाहता है, किन्तु एपोलो उसे सचेत करता है कि ट्राय न उसके हाथ का शिकार होगा और न उसके मित्र के हाथ का। इसके बाद ही हेक्टर और पेट्रॉक्लस में द्वंद-युद्ध होता है। इस द्वंद के बीच में अपोलो अकस्मात् पेट्रॉक्लस का शिरस्त्राण खींच लेता और इस प्रकार विरोधी के घातक प्रहारों के लिए उसका सिर नंगा कर देता है। पेट्रॉक्लस बुरी तरह घायल हो जाता है और जान लेता है कि अब उसका बचना असम्भव है, अतएव वह घोषित करता है कि यदि देवता उसके साथ छल न करते तो वह निश्चित रूप से विजयी होता, किन्तु इसपर भी कुछ नहीं बिगड़ा है, क्योंकि उसके इस प्रकार प्राण त्यागने की बात सुनते ही एकीलीज़ उसकी मौत का बदला अवश्य लेगा। किन्तु हेक्टर उसके इन वाक्यों से पूरी तरह अप्रभावित और अछूता रहकर ऐसे असंदिग्ध वीर-शत्रु पर विजय प्राप्त करने के कारण आनन्द से फूला नहीं समाता। वह कामना करता है कि एकीलीज़ का रथ और उसके घोड़े उसे मिल जायें और इसके लिये बहुत हाथ-पैर भी मारता है, किन्तु वे उसके हाथ नहीं आते क्योंकि आटोमेडॉन नामक सारथी उन्हें लेकर भाग-निकलता है।

पर्व सत्तरह—

मेनेलाउस देखता है कि पेट्रॉक्लस परास्त होकर गिर पड़ा है, अतएव शत्रु से उसके शरीर और उसके कवच को प्राप्त करने के लिये वह आगे आता है। इसपर हेक्टर एकीलीज़ के रथ को हस्तगत करने के व्यर्थ प्रयास त्याग देता है और उसके शव पर अपना दावा जताने के लिये लौट पड़ता है। तुरन्त ही मेनेलाउस और ऐजैक्स उस पर हमला करते हैं और इस प्रकार पेट्रॉक्लस के शव को लेकर भी एक भयंकर युद्ध होता है।

सहसा ही एक बड़े ही हृदय-द्रावक दृश्य के कारण वातावरण उदास हो-उठता है। सब की निगाह एक साथ ही एकीलीज़ के घोड़ों पर पड़ती है और सब बड़े दुखी हो उठते हैं।

*यूनान का एक स्थान जहाँ सरपेडन दफ़नाया जाता है।

वे देखते हैं कि वे घोड़े बुरी तरह रो रहे हैं—शायद उन्हें पेट्रॉक्लस का उन सबकी चिन्ता करना और स्नेह से थपथपाना बार-बार याद आ रहा है।

पर्व अठारह—

उधर एकीलीज़ के तम्बू में पेट्रॉक्लस की मृत्यु का समाचार पहुँचते ही सारी बन्दी-स्त्रियाँ फूट-फूटकर विलाप करने लगती हैं! स्वयं वीर एकीलीज़ इस आघात को न सह-पाने के कारण इस बुरी तरह कराहने लगता है कि उसका हृदय-द्रावक क्रन्दन उसकी माँ थीटिस के कानों में पड़ता है और वह घबड़ा उठती है। वह समुद्र की गहराई से उभरती है, शीघ्रता से उसके पास आती है और समीप बैठकर दुःख प्रकट करती है कि उसके प्रिय पुत्र का छोटा-सा जीवन भी इस प्रकार की कष्टदायी घटनाओं से ओत-प्रोत रहा है।

एकीलीज़ अपने मित्र की मृत्यु का बदला लेने का संकल्प करता है, किन्तु थीटिस चाहती है कि वह जूनो के पुत्र वल्कन का कवच पाने पर ही युद्ध करे किन्तु यह कार्य इतनी जल्दी होना असम्भव है, अतएव वह उससे हठ करती है कि वह अपने मित्र की मृत्यु का बदला चुकाने का विचार प्रातःकाल तक के लिये स्थगित कर दे। अंत में वह उससे वचन ले लेती है और तब वल्कन से मिलकर अपने पुत्र की सहायता की भीख मांगने के लिये शीघ्रता से चल पड़ती है।

युद्ध-क्षेत्र में धुआँधार युद्ध चल रहा है। यूनानी पेट्रॉक्लस का मृत-शरीर ले जाना चाहते हैं और इस कार्य के लिये अपना सारा ज़ोर भी लगा देते हैं, किन्तु फिर भी ट्राजनों का सामना करने में अपने को असमर्थ पाते हैं। अकस्मात् जूनो सन्देश भेजती है कि इस समय एकीलीज़ को हस्तक्षेप करना ही चाहिये। एकीलीज़ तैयार हो जाता है, किन्तु कवच के अभाव और अपनी माँ को वचन दे-चुकने के कारण खाई तक ही आने का साहस करता है। फिर भी वह इतने ज़ोर से युद्ध के नारे लगाता है कि ट्राजन डरकर भाग-खड़े होते हैं। इस प्रकार युद्ध करवट बदलता है और यूनानी पेट्रॉक्लस के शरीर को अपने पड़ाव में ले आते हैं।

संध्या का समय है। सूर्यास्त हो रहा है। इस दिन का युद्ध समाप्त होता है।

अब ट्राजन रथों से घोड़ों को खोलते और उनके साज़ उन पर से उतारते हैं। इसके बाद वे इस समस्या पर विचार करने के लिये एकत्र होते हैं कि क्या यह बुद्धिमानी न होगी कि वे प्राचीरों के पीछे छिप रहें और इस प्रकार छिपकर हमला करें क्यों कि दूसरे दिन अपने मित्र की मौत के प्रतिशोध के लिये एकीलीज़ का रण-क्षेत्र में आना और युद्ध करना ध्रुव-निश्चत है। किन्तु हेक्टर उग्र होकर हठ करता है कि वे जहाँ हैं वहीं रहें, और जितना प्राप्त हो सका है उससे लाभ उठायें। अतः वे मैदान में ही डेरा डालते हैं।

इसी समय जूपिटर भविष्यवाणी करता है कि जूनो की अभिलाषा पूर्ण होगी और दूसरे दिन उसका कृपा-पात्र एकीलीज़ अवश्य ही महान विजय और यश लाभ करेगा।

इसी रात में समुद्र की देवी थीटिस वल्कन की भट्टी पर जाती है और शरणागत की लाज

रखने की दोहाई देकर दैवी लोहार से प्रार्थना करती है कि वह उसके पुत्र के लिये एक कवच बना दे। अतः यही नहीं कि वल्कन उसकी प्रार्थना स्वीकार करता है बल्कि तुरन्त ही अपने कार्यालय में जाता है और अपने सहकारी साइक्लोपीज़ की सहायता से ऐसा जी-तोड़ परिश्रम करता है कि सुबह तक एक जोड़ बहुत सुन्दर कवच बनकर तैयार हो जाता है।

पर्व उन्नीस—

भोर की देवी आरोरा समुद्र के अन्तस्तल से उभरकर ओस की बूँदों का रूप निखार भी नहीं पाती कि थीटिस आश्चर्यजनक कवच के साथ अपने पुत्र के खेमे में प्रवेश करती है। वह उसे उसी प्रकार अपने मित्र के शव पर रोता हुआ देखती है अतएव उसे समझाने का यत्न करती है और चाहती है कि वह उठे, उठकर मुँह धोये और युद्ध के लिये तैयार होकर युद्ध करे! एकीलीज़ सिर ऊपर उठाता है। कहना न होगा कि थीटिस द्वारा लाये गये कवच पर निगाह पड़ते ही उसका शौर्य इस प्रकार जाग्रत हो-उठता है कि वह वहीं अपनी प्रतिज्ञा फिर दुहराता है।

यह बात एगेमेम्नान तक पहुँचती है और वह यूनानियों को मिलनेवाली अमूल्य सहायता की बात सोचकर आनन्द से नाच उठता है। वह जाता है और बीते अपराधों के लिये एकीलीज़ से क्षमा मांगता है। वह उसे कितने ही बहुमूल्य उपहार भेंट करना चाहता है और उसके सम्मान में एक भोज देना भी, किन्तु एकीलीज़ इनकार कर देता है और कहता है कि अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करना यानी अपने मित्र पेट्रॉक्लस की मौत का बदला लेना उसका सबसे पहला कर्तव्य है।

लड़ाई में उतरने से पूर्व एकीलीज़ उन दैवी घोड़ों से वश भर सहायता की भीख मांगता है, किन्तु एग्जैंथस नामक एक दैवी घोड़ा उसे चेतावनी देता है कि यद्यपि वे सब आवश्यक रूप से उसकी रक्षा करेंगे तो भी वह क्षण दूर नहीं है जब उसे भी देवताओं के कोप का भाजन बनना होगा।.........परन्तु एग्जैंथस की इस भविष्यवाणी से सर्वथा अप्रभावित और अछूता रहकर एकीलीज़ बेधड़क रथ पर बैठ जाता है और युद्ध के लिये रवाना होता है।

'एग्जैंथस' मेरे भविष्य को तुम ऐसा बतलाते हो!
तुम्हें भला शोभा देती हैं ऐसी बातें, ऐसे कार्य!
पूर्ण ज्ञात है, मुझे ट्राय में ही मरना होगा लड़कर,
माता-पिता दूर होंगे, जब पास न होंगे कोई आर्य!
पर, मैं रुक न सकूँगा जब तक मिट न जायें ट्राजन सारे,
समरस्थल इनसे खाली हो, उड़ जायें, लग जायें पर,
कहकर एकलीज़ क्षण भर में ही रथ पर हो गया सवार
और लगाकर रण के नारे, उसने घोड़े सनकारे!'

पर्व बीस—

युद्ध का समय है। सारे देवता ओलिम्पस पर एकत्रित होते हैं! जूपिटर उन्हें सम्बोधित कर कहता है कि उसका अपना इरादा तो केवल युद्ध देखने का है किन्तु यदि वे चाहें तो युद्ध में भाग ले सकते हैं—हाँ, वे केवल यह न भूलें कि उस दिन की विजय का विशेष सम्मान एकीलीज़ को ही प्राप्त होना है। देवता अपने अधिपति का आदेश सुनते और उससे विदा होते हैं।

अब वे अपनी-अपनी प्रकृति एवं अपने-अपने झुकाव के अनुसार ट्राजनों अथवा यूनानियों की सहायता करने का निश्चय करते हैं। इसी समय जूपिटर अपने वज्र के द्वारा युद्धारम्भ का संकेत करता है।

युद्ध आरम्भ होता है! देवता लड़ाई में सक्रिय-रूप से भाग लेते हैं। इस विशेष दिन यही नहीं कि देवता भी आपस में लड़ते हैं, बल्कि अपने प्रिय पक्ष के समर्थन में कुछ लगा नहीं छोड़ते और उसके लिये उचित और अनुचित सभी कुछ करते हैं। बस, थोड़े समय में ही निश्चित हो जाता है कि केवल उनके कारण ही युद्ध के परिणाम में विलम्ब हो रहा है। अतः वे विवश होकर युद्ध से हाथ खींच लेते हैं और केवल मनुष्यों को स्वयं अपने-अपने भाग्य का निर्णय करने के लिये छोड़ देते हैं।

इस स्थान पर काव्य में व्यक्तिगत अमर्ष और विग्रह के अनेक विशद वर्णन हैं। आपसी मारपीट के पूर्व एकीलीज़ और इनीयस के दम्भपूर्ण भाषण इनमें से एक हैं। ......

\+ \+

देवता जानते हैं कि इनीयस और बड़ी सिद्धियों के लिये बना है, अतः ज्योंही वह घेरा जाता और घायल किया जाने लगता है, वे उसे लड़ाई के मैदान से खींचकर एक दूसरे सुरक्षित स्थान में ले जाते हैं। उधर इस आश्चर्यजनक ढंग से अपने विरोधी एवं शत्रु से वंचित किये जाने के कारण एकीलीज़ उस हेक्टर से युद्ध करने को चंचल हो उठता है जो कि अब तक उसकी निगाह से बचता रहा है। किन्तु इस समय, यह देखकर कि उसका एक भाई यूनानी मुष्टिकाओं के द्वारा गिरा दिया गया है, हेक्टर भी जोश में आ जाता है और एकीलीज़ का बहादुरी से सामना करता है।

किन्तु अभी हेक्टर की मृत्यु के क्षण दूर हैं इसीलिये देवता इन दोनों योद्धाओं को अलग कर देते हैं। इस पर भी उन दोनों के हृदय में एक दूसरे के लिये इतनी घृणा और इतना क्रोध है कि एक की झलक पाते ही दूसरा लड़ने के लिये झपट-पड़ता है।......

पर्व इक्कीस—

अब ट्राजन यूनानियों के सामने नहीं ठहर पाते और इग्जैंथस नदी के किनारे भाग जाते हैं। उन्हें नदी में पैठता देखकर एकीलीज़ भी उनके पीछे-पीछे पानी में उतर जाता है और प्रमुख शत्रु-वीरों को मार डालने के बाद अपने मित्र की समाधि पर बलि देने के लिये एक

दर्जन सैनिकों को बन्दी बना लेता है। दूसरी ओर, यह सुनकर कि एकीलीज़ ने एक किशोर ट्राजन पर भी दया नहीं की और उल्टा उसका हृदय लाशों से पाट दिया, नदी का देवता सहसा ही एकीलीज़ से युद्ध करने के लिये आ-उपस्थित होता है। परन्तु एकीलीज़ इस समय वीरता से इतना उन्मत्त, उत्तप्त और दूसरों के प्रति इतना अविचारशील है कि वह स्वयं देवता का भी कोई विचार नहीं करता और उससे लड़ने को तैयार हो जाता है।

युद्ध छिड़ता है। एकीलीज़ अपने अदम्य साहस और अपनी अपूर्व वीरता का परिचय देता है, किन्तु फिर भी नदी का देवता बली प्रमाणित होता है। वह एकीलीज़ को समुद्र में डुबो ही देना चाहता है कि मिनर्वा और नेप्ट्यून आ जाते और उसे बचा लेते हैं। इस प्रकार उसकी प्राण-रक्षा कर लेने के बाद वे उसे शांत करते और विश्वास दिलाते हैं कि हेक्टर शीघ्र ही निर्जीव होकर उसके चरणों में लोटेगा और यह कि वह चिन्ता न करे, आगे से नदी के पानी का सामना करने के लिये वल्कन बुलाया गया है, जो आ भी रहा है!

'उसकी गति से अधिक उष्ण हो
उबल पड़ी वह चंचल सरिता सुन्दर सरिता;
और बुलबले उष्ण असंख्यक
दीख पड़े, ज्यों सूखी लकड़ी से
जलते चूल्हे के ऊपर बड़ी पतीली में
पकता हो मधुर सुअर का गोश्त,
खूब उबलता हो औ पानी की
बूँदें हों ऊपर-नीचे, बाहर-भीतर!
उसने अपना बढ़ना रोका, रोकी निज गति,
क्योंकि आ गया वल्कन सहसा,
बनकर सबल सहायक उसका,
शक्ति भयंकर, ज्वाला लेकर,
नदी हो गई धधकी भट्टी!'

उधर प्रायम ट्राय की चहरदिवारियों से बड़ी उत्सुकता से उस दिन के युद्ध का निरीक्षण करता है। अकस्मात् वह देखता है कि एकीलीज़ की सेना उसकी अपनी भागती हुई सेना का पीछा कर रही है, अतएव वह आज्ञा देता है कि क़िले के फाटक अविलम्ब खोल दिये जायें ताकि भागे हुये सैनिक अन्दर आ-सकें! इतना ही नहीं, वह यह भी आदेश देता है कि उनके अन्दर आते ही फाटक होशियारी से बन्द कर दिये जायें ताकि ट्राजनों के सहारे शत्रु भी अन्दर न घुस आयें!......

इस कार्य में ट्राजनों की सहायता करने के लिये, बिल्कुल हेक्टर-जैसा रूप बनाकर एपोलो एकीलीज़ को व्यस्त और क़िले के सिंहद्वार से दूर रखता है। फल यह होता है कि यहाँ एकीलीज़ इस भाँति फँसा रहता है और वहाँ सारी ट्राजन सेना क़िले में पहुँच जाती है।

पर्व बाइस—

इस प्रकार एकीलीज़ अपने अनजाने में दिखावटी हेक्टर से भिड़ा रहता है कि इसी बीच में वास्तविक हेक्टर द्वार के पीछे छिपा दिया जाता है। किन्तु सहसा ही उसे वास्तविकता का ज्ञान होता है। वह क्रोध के मारे आपे से बाहर हो जाता है और द्वार की ओर लपककर हेक्टर को ललकारता है। इस समय हेक्टर के माता-पिता चाहते हैं कि वह उसी प्रकार दीवालों के पीछे छिपा रहकर अपनी प्राण रक्षा कर ले, लेकिन वह एक युवा-वीर है, अतएव इस प्रकार का कापुरुषता और कायरताभरा प्रस्ताव अस्वीकार कर देता है। फिर भी सामना होते ही जैसे ही उसकी निगाह एकीलीज़ की आँखों पर पड़ती है, वह उसकी आग से इस तरह और इतना डर जाता है कि न चाहने पर भी भाग खड़े होने पर विवश हो जाता है! वह तुरंत ही घूम-पड़ता है और निकल-भागने का प्रयत्न करता है, किन्तु एकीलीज़ उसके मन की बात समझ लेता है और उसका पीछा करता है। इस समय दोनों में केवल नाम-मात्र की दूरी रहती है। एकीलीज़ हेक्टर को कितने ही ताने मारता है।

ये दोनों वीर पास के एक छोटे दुर्ग का चक्कर काटते हैं। देवता यह सब कुछ देखते हैं। थोड़ी देर बाद देवताओं को ज्ञात होता है कि अब वे गिनतीके कुछ क्षणों के लिये भी हेक्टर की मौत टाल नहीं सकते! फिर भी वे चाहते हैं कि वह जब भी मरे वीरों की भाँति लड़ता हुआ मरे, अतएव वे अपोलों को पृथ्वी पर भेजते हैं!

अपोलो हेक्टर को लड़ने के लिये प्रेरित कर स्वयं उसके-अपने एक भाई के रूप में उसकी सहायता करना चाहता है। इस प्रकार सहयोग और शक्ति प्राप्त कर हेक्टर एकीलीज़ का सामना करने के लिये घूम पड़ता है, किन्तु इस बार उससे गुंथ जाने के पूर्व वह निश्चित कर लेना चाहता है कि विजयी विजित के शव का आवश्यक-रूप से समादर करेगा। किन्तु एकीलीज़ उसकी एक नहीं सुनता!..........द्वंद-युद्ध आरम्भ होता है और मिनर्वा इसका समर्थन कर बड़ी योग्यता से एकीलीज़ की सहायता करती है! दूसरी ओर हेक्टर को पूर्ण विश्वास है कि उसका अपना शस्त्र बेकार होते ही उसका (एपोलो-रूपी बनावटी) भाई उसे अपना शस्त्र दे देगा, परन्तु होता ऐसा नहीं। समय आते ही अपोलो उसकी ओर से मुँह मोड़ लेता है और इस प्रकार हेक्टर (देवता-अपोलो के द्वारा) बुरी तरह तरह छला जाता है।

कहना न होगा कि ज्योंही हेक्टर इस प्रकार निरस्त्र होता है एकीलीज़ उस पर प्राण-घातक प्रहार करता है और चिल्लाकर घोषित करता है कि वह शीघ्र ही गिद्धों और भेड़ियों का शिकार होगा! इस पर हेक्टर अपने विजेता को जी भर कोसता है और भविष्य-वाणी करता है कि उसकी भी ख़ैर नहीं है क्योंकि वह भी निकट भविष्य में ही पेरिस के द्वारा मार डाला जायेगा! इसके बाद वह अपना दम तोड़ देता है।

अब एकीलीज़ उसकी एड़ियों को रथ में बाँधता और रथ पर सवार होकर चल देता है। दृश्य बड़ा कारुणिक हो-उठता है क्योंकि हेक्टर का सर्व प्रतिष्ठित और प्रशस्त

मस्तक इस समय धूल में लोट रहा है, धूल खा रहा है !

× × ×

इधर हेक्टर की पत्नी ऐंड्रामैकी अपने पति की प्रतीक्षा करती और उसकी वापसी के के लिये तैयार होती रही है। वह एकाएक घोर-हाहाकार सुनकर चौंक उठती है और इस करुण-क्रंदन का कारण जानने के लिये परकोटे की ओर झपटती है। वह बिल्कुल ठीक समय से वहाँ पहुँच जाती है और देखती है कि उसका पति हेक्टर ही इस बुरी तरह घसीटा जा रहा है। फलतः वह इस दयनीय दृश्य को सहन नहीं कर पाती और बेहोश हो जाती है, किन्तु शीघ्र ही होश में आने पर अपने अभाग्य पर सिर धुनती है, अपने पुत्र के मंद-भाग्य की कल्पना कर उस पर बुरी तरह आँसू बहाती है और विलाप करती है कि वह अपने प्रिय-पति को अपने हाथों से दफ़ना भी न सकेगी!

पर्व तेइस—

एकीलीज़ तम्बू में पहुँच कर अपने शिकार को पेट्रॉक्लस के शव के चारों ओर घसीटता और अपने मित्र की लाश को इस प्रकार सम्बोधित करता है जैसे कि वह जीवित हो! वह उसे विश्वास दिलाता है कि उसकी चिता पर १२ ट्राजनों की बलि दी जायेगी और उसके प्राण-घातक की लाश कुत्तों के सामने डाल दी जायेगी!

अब वह हेक्टर की लाश को एक कोने में फेंक देता है और पेट्रॉक्लस की अन्त्येष्टि-क्रिया की व्यवस्था के लिये यूनानियों को अपने तम्बू में एकत्र करता है! कितनी ही देर तक परामर्श चलता रहता है और तब बातचीत समाप्त होने पर यूनानी विदा होते हैं और एकीलीज़ को अकेला छोड़ देते हैं। वह बराबर अपने मित्र की मधुर-स्मृति को आँसुओं से नह-लाता रहता है कि इसी रात में पेट्रॉक्लस की आत्मा उससे मिलने आती और उसे सावधान करती है कि वह भी शीघ्र ही संसार से विदा होगा। वह आत्मा अंतिम-संस्कारों के विषय में भी कुछ भविष्य-वाणी करती है!

एकीलीज़ को इस स्वप्न से यह विश्वास हो जाता है कि मनुष्य के शरीर का अन्त भले ही हो जाये, किन्तु उसकी आत्मा का अन्त नहीं होता, वह अमर है! इस नवीन धारणा से उसे शांति प्राप्त होती है, और इसी से प्रेरणा प्राप्त कर वह सुबह अपने साथियों को जगाकर उनसे समुद्र के किनारे एक चिता तैयार करने को कहता है। वह वहाँ अपने मित्र की आत्मा के सन्तोष के लिये असंख्यक बंदी-शत्रुओं का बलिदान करना चाहता है! .....उसका यह वाक्य पूरा नहीं हो पाता कि उसे ध्यान हो आता है और वह एक बार फिर सब के सामने घोषित करता है कि हेक्टर का शरीर कुत्तों का शिकार होगा! किन्तु यह सब कहते-सुनते समय उसे ज़रा भी पता नहीं है कि वीनस रक्षक के रूप में प्रतिपल उस शव के साथ है और उसे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई जा सकती!

× × ×

इस स्थान पर कवि चिता के निर्माण और उसके धधक उठने के बड़े सुन्दर विवरण देता है। वह बड़ी कुशल तूलिका से चिता की लपटों और उनके उठते ही उल्टी हवाओं के चलने के चित्र खींचता है और लिखता है कि जैसे ही चिता जली और उंची-ऊंची लपटें उठीं, वैसे ही विरोधी हवायें चल पड़ीं। वह दी-गई बलियों और उस समय के खेलों की भी विशेष चर्चा करता है। अन्त में बड़ी चातुरी से वह एक ऐसे घड़े में एकीलीज़-द्वारा पेट्रॉक्लस के फूलों के रक्खे जाने का वर्णन करता है, जिसमें थोड़े समय बाद ही उसके-अपने फूलों का भी पहुँच जाना भी ध्रुव निश्चित है।

पर्व चौबीस—

इस समय, जब कि दिन के कठिन अध्यवसाय और परिश्रम के बाद अधिकांश यूनानी विश्राम कर रहे हैं, एकीलीज़ अपने तम्बू में भोर तक विलाप करता रहता है। प्रातःकाल वह अपने आँसू पोंछता, घोड़ों को रथ में जोतना और फिर हेक्टर की लाश को पेट्रोक्लस की याद-गाह के चारों ओर घसीटता है। उसे इस समय तक इस चीज़ का ज्ञान नहीं है कि हेक्टर को सब प्रकार की क्षतियों से बचाने के लिए ही वीनस और अपोलो उसके साथ हैं।

× × ×

इस प्रकार पेट्राक्लस की मृत्यु के बाद ११ दिन तक यह सब चलता रहता है किन्तु बारहवें दिन ट्राजनों की ओर से देवता हस्तक्षेप करते हैं। वे आयरिस को प्रायम के पास भेजते हैं। आयरिस प्रायम को एकीलीज़ के तम्बू का रास्ता बतलाता है और उसे विश्वास दिलाता है कि असम्भव है कि वह एकीलीज़ से प्रार्थना करे और वह उसके पुत्र का शव उसे न दे दे अर्थात् वह उसे उसके पुत्र का शव अवश्य ही दे देगा! इसके बाद कोई नहीं देख पाता और धनुष का देवता शोक-विह्वल पिता को एकीलीज़ के तम्बू में ले आता है।

एकीलीज़ को देखते ही प्रायम उसके चरणों पर गिर पड़ता है और इतने मर्मस्पर्शी शब्दों में उससे अपने पुत्र हेक्टर का शव माँगता है कि यूनानी-योद्धा भी द्रवित हो उठता है और उसकी आंखों से भी आँसू की धारा बहने लगती है। वह प्रायम की प्रार्थना प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता है और कहता है कि यद्यपि हेक्टर मार डाला गया है तो भी उसे सुख देने को उसके कई पुत्र उसके सामने हैं और इस अर्थ में वह उसके पिता गिलियस से कहीं अधिक भाग्य-वान और सुखी है, क्योंकि वह स्वयं अपने पिता का एक-मात्र पुत्र है।

'एकीलीज़ के अन्तरतम में जगी पिता की याद मधुरतम,
वृद्ध पुरुष प्रायम को उसने हाथ पकड़ कर पास बिठाया।
जागीं युग-युग की स्मृतियाँ ज्यों, दोनों द्रवित हुए औ रोये—
द्रवित हो गया कण-कण वन का, तृण-तृण वन का
सुनकर उस रोने का स्वर!······

× × ×

आयरिस अब भी निर्देशन का कार्य करता है। उसके नेतृत्व में ही प्रायम अपने पुत्र का शव ट्राय में वापस लाता है। यहाँ हेक्टर की माँ, उसकी पत्नी और दूसरी ट्राजन-स्त्रियाँ बड़ा ही हृदय-विदारक विलाप करती हैं!

शीघ्र ही एक चिता सजाई जाती है और हेक्टर की अन्त्येष्टि क्रिया के वर्णन के साथ इलियड का अन्त होता है!

२—'ऑडिसी'—

पर्व एक—

होमर के दूसरे प्रसिद्ध महाकाव्य 'ऑडिसी' का घटना-काल ४२ दिन है। मंगलाचरण के बाद कवि यूलिसीज़ के साहसिक-व्यापारों का वर्णन करता है।

ट्राय जीता जा चुका है। लगभग दस वर्ष बीत चुकने पर एक दिन देवता ओलिम्पस-पर्वत से नीचे धरती पर दृष्टि दौड़ाते हैं। वे देखते हैं कि अपनी सेना के बचे हुए लोगों में विशिष्ट और प्रमुख यूलिसीज़ कैलिप्सो-द्वीप की एक नदी के किनारे खड़ा है। अकस्मात् जूपिटर दूसरे यूनानियों के भाग्य और उनके भविष्य का उल्लेख करता है और फिर, जैसे न्यायाधीश बनकर, फैसला सुनाता है कि यूलिसीज़ शीघ्र ही अपने द्वीप ईथाका को लौट जायेगा, जहाँ उसकी पत्नी को उसके अनेक प्रेमी घेर रहे और परिशान कर रहे हैं!

इस निर्णयात्मक होनी को चरितार्थ करने के विचार से मिनर्वा तुरन्त ही वे सोने के खड़ाऊँ पहनती है, जिन्हें पहिन लेने के बाद किसी को भी पृथ्वी और समुद्र अर्थात् जल और थल पर समान-गति प्राप्त हो जाती है। वह ईथाका जाती है और वहां जाकर देखती है कि ईथाका के स्वामी यूलिसीज़ का धन पानी की तरह बह रहा है और उसका पुत्र टेलेमैकस इसके कारण बड़ा दुखी है। यहां मिनर्वा का बड़ा अतिथि सत्कार होता है और उसकी टेलेमैकस से भेंट होती है। दोनों में बातचीत होती है और बातचीत के सिलसिले में मिनर्वा उससे आग्रह करती है कि वह नेस्टर और मेनेलाउस के दरबारों में जाये और अपने पिता की ज़िन्दगी-मौत का पता लगाये! टेलेमैकस देवी की सलाह पर चल देने का निश्चय करता और उससे उस निश्चय की बात कहता ही है कि उसे कुछ कोलाहल सुनाई पड़ता है! बात यह है कि बाहर की ओर पिनेलोपी (यूलिसीज़ की पत्नी) के प्रेमियों का चारण अपने उस काव्य का पाठ कर रहा है जिसमें उन सारे कष्टों का वर्णन है जो कि ट्राय से लौटती बार यूनानी सेना-नायकों को भोगने पड़े हैं। यह काव्य बड़ी सरलता से से पिनेलोपी का हृदय अपनी ओर आकर्षित कर लेता है, किन्तु वह चारण को आदेश देती है कि वह अपना काव्य-पाठ समाप्त करे, और फिर कभी इस प्रकार के गीतों से उसके संतापों को बढ़ाने का कारण न बने।

इस समय पहली बार टेलेमैकस एक अधिकारी के रूप में हमारे सामने आता है। वह बड़े ही अधिकारपूर्ण शब्दों में अपनी माँ से कहता है कि वह वहाँ से तुरन्त ही चली जाये

और अन्दर जाकर अपने पति की सुरक्षा के लिये देवताओं से प्रार्थना करे ! इसके बाद ही वह उन प्रेमियों को जाने का आदेश देता है और कहता है कि यदि वे इस पर भी अड़े रहेंगे तो वह देवताओं से उन्हें दंड देने की प्रार्थना करेगा। इन प्रेमियों को ये शब्द बड़े कटु लगते हैं यानी उनपर इनका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है और वे रात में तब तक ऊधम मचाते रहते हैं जब तक कि टेलेमैकस स्वयं विश्राम करने और अपनी कल्पित यात्रा के स्वप्न देखने के लिये अपने शयनागार में नहीं चला जाता !

पर्व दो—

प्रातः काल टेलेमैकस उठता और बाज़ार में जाता है। यहाँ लोक-सभा में वह इन प्रेमियों की शिकायत और उनकी भर्त्सना करता है और घोषित करता है कि वह शीघ्र ही अपने पिता की खोज में जानेवाला है। उसकी इस शिकायत, भर्त्सना और धमकी के उत्तर में प्रेमीगण इस सारी गड़बड़ी का दोष पिनेलोपी के सिर मढ़ देते हैं। वे कहते हैं कि उसने ही उन्हें अपने माया-जाल में फंसाने की कोशिश की और वायदा किया कि जैसे हो वह अपने ससुर के लिये कफ़न बिन चुकेगी, उनमें से किसी एक को अपना पति चुन लेगी। किन्तु, बजाय इसके कि यह कार्य जल्दी से जल्दी समाप्त कर देती वह उन्हें केवल मूर्ख ही बनाती रही है, हर दिन बुना हुआ रात को उधेड़ती रही है और इस प्रकार तीन वर्ष बीत गये हैं।

फिर भी वे टेलेमैकस को सलाह देते हैं कि वह अपनी माँ को अपने नाना के यहाँ भेज दे, पर वह क्रोध और घृणा से भरकर उनकी राय अस्वीकार कर देता है। वह देवताओं से प्रार्थना करता है कि उनके इस अनाचार के लिये वे उसे दंड दें। सभा समाप्त होती है ! उसी क्षण दो बाज़ आसमान में उड़ते दिखलाई देते हैं ! वे देखनेवालों में से किसी एक की आँखें निकाल लेते हैं और यह साबित हो जाता है कि देवताओं ने टेलेमैकस की प्रार्थना अनसुनी नहीं की ! इसी बीच में एक बूढ़ा आदमी शकुन देखकर यह बतलाता है कि यूलिसीज़ शीघ्र ही लौटने वाला है, अतएव जो लोग उसके क्रोध का शिकार नहीं बनना चाहते उन्हें अपने सद्व्यवहार से अपनी स्वामि-भक्ति का परिचय देना चाहिये।

सभा विसर्जित होते ही टेलेमैकस समुद्र के किनारे जाता है। वहाँ मिनर्वा उसके शिक्षक मेंटर के रूप में उससे मिलती है। वह उसे आदेश देती है कि वह चुपचाप यात्रा की तैयारी कर ! अतएव वह महल में लौट आता है। यहां प्रेमीगण एक नये भोज की तैयारी कर रहे हैं। वह उनके आयोजन में किसी प्रकार की दिलचस्पी नहीं लेता बल्कि अपनी धाय यूरीक्लिया की खोज करता है और उसे जहाज़ का प्रबन्ध सौंपने के बाद निर्देश करता है कि उसके जाने के १२ दिन बाद तक उसकी माँ को उसके जाने की सूचना न मिले ! इधर टेलेमैकस के रूप में मिनर्वा सारा शहर छान डालती है और इस परिश्रम के कारण सूरज डूबने के समय तक एक जहाज़ तैयार हो जाता है। वह महल में लौट आती है और उन प्रेमियों की चेतन शक्ति को इस प्रकार गहरी नींद से जकड़ देती है कि कोई देख नहीं पाता और टेलेमैकस अपने शिक्षक

मेंटर के साथ जहाज़ पर सवार हो जाता है। जहाज़ तुरत ही रवाना होता है और रात भर लहरों पर तेज़ी से बढ़ता रहता है !

पर्व तीन—

दूसरे दिन सूर्योदय के समय टेलेमैकस यूनान के एक शहर पाइलॉस में पहुँचता है। वह देखता है कि नेस्टर और उसके साथी समुद्र के किनारे बलिदान में व्यस्त हैं और एक भोज की व्यवस्था हो रही है। भोज में भाग लेने वाले पचासों की संख्या में मेज़ के चारों ओर इकट्ठा हो रहे हैं और कराह रहे हैं जैसे कि वे सब बलि दिये गये नौ बैलों के बोझ से अलग-अलग दबे जा रहे हों। टेलेमैकस उनके पास जाता है और उनमें घुलमिल कर उन्हें अपना नाम और अपना काम बतलाता है। उत्तर में नेस्टर, पेटॉक्लस और एकीलीज़ के मारे जाने का उल्लेख करता है और कहता है कि ट्रॉय के पतन के बाद यूनानी सेना अपने-अपने स्थानों के लिये चल पड़ी। किंतु उसी क्षण देवताओं ने यह निश्चय किया कि उन्हें बिना कल्याणकारी बलि दिये अपने-अपने घरों को नहीं लौटना चाहिये ! अतएव, आधी सेना तो पीछे रह गई, किन्तु आधी चल पड़ी। आने वाली सेना में वह स्वयं और यूलिसीज़ था। वह तो सीधे लौट आया; किन्तु यूलिसीज़ देवताओं के क्रोध-शांति के लिये लौट पड़ा और अदृश्य हो गया। अब जब से वह लौटा है स्वयं बड़ा दुखी है, क्योंकि यहाँ आने पर उसे पता चला है कि, उसकी कुलटा भाभी क्लिटेमनेस्ट्रॉ और उसके प्रेमी इजिस्थस ने माइसीनी पहुँचने पर उसके भाई एगेमेम्नॉन का वध कर डाला। हाँ, यह अवश्य ही उसके सन्तोष का विषय है कि उसका अत्यधिक भाग्यशाली भाई मेनेलाउस शीघ्र ही अपने घर लौटा है, यद्यपि उल्टी हवाओं के कारण उसे भी मिश्र में रुकना पड़ा है।

नेस्टर सारी कथायें विस्तार में बतलाता रहता है कि शाम हो जाती है, अतएव वह टेलेमैकस को रात में अपने महल में आराम करने को निमन्त्रित करता है। वह सबेरे उसे स्पार्टा पहुँचा देने का बचन देता है और कहता है कि वहाँ वह मैनेलाउस से मिलकर अपने सारे सवालों के जवाब पा सकेगा। इस पर टेलेमैकस का शिक्षक मेंटर उससे अनुरोध करता है कि वह नेस्टर का निमन्त्रण स्वीकार कर ले और स्वयं रुके, किन्तु उसे न रोके; क्योंकि वह वहाँ ठहरना नहीं चाहता और अपने जहाज़ पर लौट जाना चाहता है।......अतएव वह शीघ्र ही अदृश्य हो जाता है। इस प्रकार सारे उपस्थित जन उसके दैवी व्यक्तित्व से परिचित हो जाते हैं। इसके बाद एक शानदार भोज होता है। भोज के बाद अतिथि रात भर विश्राम करता है और विश्राम के बाद दूसरे दिन एक पवित्र बलिदान में भाग लेता है।

पर्व चार—

टेलेमैकस सुबह एक रथ पर चतुरता से सवार होकर तीव्र गति से स्पार्टा की ओर बढ़ता है। नेस्टर का एक पुत्र पथ-प्रदर्शक के रूप में उसके साथ है ! वह शीघ्र ही स्पार्टा पहुँच जाता है और देखता है कि मैनेलाउस अपने एक पुत्र और अपनी एक पुत्री के विवाह में व्यस्त

है ! फिर भी, उसे इन आगन्तुकों की सूचना दी जाती है। सूचना पाते ही वह अपने परिचारकों को आदेश देता है कि अतिथियों को किसी प्रकार का कष्ट न होने पाये।

शीघ्र ही, जब अतिथि खान-पान के बाद ताज़े हो चुकते हैं, वह उन्हें बुलाता है, उनके आगमन का प्रयोजन पूछता है और कहता है कि सात वर्ष तक इधर-उधर भटकते रहने के बाद वह अब घर आ-गया है, परन्तु उसे अपने मित्र और साथी यूलिसीज़ के विषय में प्रायः उत्कंठा होती रही है कि आख़िर उसका क्या हुआ ! यूलिसीज़ का नाम सुनते ही टेलेमैकस की आँखों से आँसू बहने लगते है। सहसा ही हेलेन भी आ-पहुँचती है। वह देखती है कि एक अजनबी की आकृति यूलिसीज़ से आवश्यकता से अधिक मिलती-जुलती है, जैसे कि एक यूलिसीज़ का वह दूसरा व्यक्तित्व हो, अतएव वह आश्चर्य से अवाक् रह जाती है। शीघ्र ही टेलेमैकस अपना परिचय देता है और परिचय के बाद उसके साथ वे दोनों भी बीते दिनों की स्मृति में आकुल होते और आँसू बहाते हैं। कुछ समय के बाद हेलेन उठती हैं और मदिरा में चिन्ता-पीड़ा-हारी द्रव्य मिला देती है। सब इस पेय के पान के बाद तुरन्त ही अपनी-अपनी पीड़ाओं को भूल जाते हैं ! अब फिर कुछ बातचीत चलती है और हेलेन बतलाती है कि कैसे एक बार भिखारी के रूप में यूलिसीज़ ट्राय में घुसा और कैसे उसने उसे देखते ही पहिचान लिया, किंतु उसके अतिरिक्त कोई दूसरा सन्देह भी न कर सका। इस घटना के उल्लेख से मेनेलाउस की स्मृति में, सहसा ही, वह क्षण सजीव हो-उठता है, जब यूलिसीज़ ने उसे और दूसरे यूनानियों को लकड़ी के घोड़े में नियन्त्रित कर रक्खा था और हेलेन ने उनकी पत्नियों की तरह बोलने का प्रयत्न करते हुये उसके चारों ओर चक्कर लगाये थे !

सब उस चिन्ता और पीड़ा-हारी द्रव्य से सुख लाभ करते हैं और विश्राम करने के लिये उठ-खड़े होते हैं ! दूसरे दिन सवेरे सोकर उठने पर टेलेमैकस मैनेलाउस से अपने पिता के विषय में कुछ पूछ-तांछ करता है। उत्तर में मेनेलाउस कहता है कि राह में फ़ैरस-द्वीप पर जब उसने मछलियों को गिन कर समुद्र के एक देवता प्रॉटियस को आश्चर्य में डाल दिया तो देवता ने उसे तीन निम्नलिखित बातें बताईं : १. वह मिश्र में बलिदानों से देवताओं का क्रोध शान्त करने के बाद ही अपने घर पहुँच सकता है, २. उसका भाई याइसीनी में मार डाला गया, और, ३. उसके बचे हुये साथियों में प्रमुख यूलिसीज़ कैलिप्सो नामक प्रेतात्मा के द्वारा एक द्वीप में रोक लिया गया है और उसके पास वहाँ से भाग निकलने के कोई भी साधन नहीं हैं ! इन तीन बातों का उल्लेख करने के बाद मेनेलाउस टेलेमैकस को बतलाता है कि उस देवता ने स्वयं उसे वचन दिया कि वह कभी न मरेगा, और हेलेन के पति और जूपिटर के दामाद के रूप में इलीशियन फ़ील्ड्ज़[1] में चिरन्तन आनन्द का भोग करेगा। इसके बाद वह उन सारे बलिदानों का वर्णन करता है जो उसे स्पार्टा पहुँचने के लिये करने पड़े, और तब उस युवक से आग्रह करता है कि वह उसके साथ ही रहे। किन्तु, वह अपने विचार पर दृढ़ है कि उसे जल्द-से-जल्द अपने घर लौट जाना चाहिये।

नर्क में हेड्ज़ नामक पुण्य-आत्माओं का निवास-स्थान

उधर यूलिसीज़ के महल में पिनेलोपी के प्रेमीगण भाँति भाँति के कुतूहलों से अपना मनोरंजन कर रहे हैं कि उन्हें टेलेमैकस के यात्रा पर चले जाने की सूचना मिलती है ! अतएव यह पूरी तरह समझ लेने के बाद कि यदि वह मर जाता है तो उनमें से कोई एक भाग्यशाली प्रेमी ही यूलिसीज़ की सारी सम्पति का उत्तराधिकारी होगा, वे यह निश्चय करते हैं कि बन्दरगाह की सुरक्षा और यथासमय लौटने पर टेलेमैकस को मार डालने के लिये एक जहाज़ के साथ कुछ विश्वस्त वीरों को शीघ्रातिशीघ्र रवाना कर दिया जाय ! यह सारा षडयन्त्र एक नौकर के कानों में पड़ जाता है। वह तुरत ही पिनेलोपी के पास जाता है और उसे सब कुछ बतला देता है। वह सारा षडयन्त्र सुनने के बाद बहुत व्याकुल हो-उठती है, अपने हाथ पैर नोचने लगती है और उस धाय को बहुत बुरा-भला कहती है जिसने उसके पुत्र की यात्रा की तैयारी में उसकी बड़ी सहायता की। धाय सबकुछ चुपचाप सुन लेती है और समझाती है कि उसे इस तरह व्याकुल न हो कर देवताओं से प्रार्थना करनी चाहिये कि उसका पुत्र सकुशल घर लौट आये ! पिनेलोपी उसके इस सुझाव से प्रभावित होती है और एक निवारक-बलि की व्यवस्था करती है। यह इधर इस प्रकार व्यस्त है और उधर उसके प्रेमीगण अपने एक साथी ऐनटीनस के संरक्षण में एक जहाज रवाना कर देते हैं। वह बन्दरगाह में उस युवक के आगमन की प्रतीक्षा करता है।

बलि और प्रार्थना के बाद ही पिनेलोपी गहरी नींद में सो जाती है और एक स्वप्न देखती है। स्वप्न में उसकी बहन उसे विश्वास दिलाती है कि उसका पुत्र शीघ्र ही सकुशल लौटेगा और उससे मिलेगा। हाँ, यूलिसीज़ के विषय में वह भी उसे किसी प्रकार की कोई सूचना नहीं देती।

पर्व पाँच—

उषा की देवी ऑरोरा देवताओं और मनुष्यों को दिवस के आगमन की सूचना देती ही है कि जूपिटर ओलिम्पस पर अपने मन्त्रियों की एक सभा बुलाता है। इस सभा में मिनर्वा यूलिसीज़ का पक्ष ग्रहण करती है। वह कहती है कि जिस प्रकार भी हो, यूलिसीज़ को अपने घर लौटने की अनुमति दे दी जाय और उसके पुत्र की षडयन्त्रकारियों से रक्षा की जाय। अंत में जूपिटर सहमत हो जाता है। वह देवदूत मरकरी को बुलाता है, और उसे आदेश देता है कि वह जाय और कैलिप्सो से कहे कि यद्यपि उसकी इच्छा नहीं है तो भी वह अपने अतिथि को जाने की अनुमति दे दे और सारे आवश्यक साधनों की व्यवस्था कर दे ताकि वह वहाँ से अपने देश तक आराम से जा सके। देवदूत तुरन्त ही सोने के खड़ाऊँ पहन लेता है और कैलिप्सो के द्वीप ऑजीजिया की ओर उड़-चलता है। वह शीघ्र ही वहाँ पहुँचकर उस प्रेतात्मा की आश्चर्यजनक गुफ़ा में घुसकर उसे जूपिटर का सन्देश सुना देता है। कैलिप्सो नहीं चाहती कि यूलिसीज़ उसके द्वीप से निकल सके किन्तु उसमें यह भी साहस नहीं है कि वह जूपिटर की इच्छा और उसके आदेश का विरोध करे। अतएव वह यूलिसीज़ को इधर-उधर खोजती है। वह देखती है कि वह एक ऊंचे टीले पर खड़ा होकर आँसू भरी आँखों से अपने देश की दिशा में कुछ पढ़ने का प्रयत्न कर रहा है। कैलिप्सो दयार्द्र हो उठती है और उसे वचन देती है कि वह उसे सारा सामान

देगी जिससे वह लट्ठों की एक डोंगी बना ले। यह डोंगी उसे देवताओं के अनुग्रह से उसके द्वीप ईथाका तक पहुँचा देगी।

यूलिसीज़ आनन्द के मारे फूला नहीं समाता। वह बहुत दिनों के बाद भरपेट भोजन और जी-भर विश्राम करता है। इस तरह एक रात आराम करने पर वह दूसरे दिन सबेरे बीस पेड़ काट डालता है और शीघ्र ही एक डोंगी तैयार कर लेता है! कैलिप्सो उस डोंगी में सभी आवश्यक सामान रख देती है और वह उस द्वीप से विदा होता है।

सत्तरह दिन तक तारों के सहारे चलने के बाद वह फ़ियैशिया-द्वीप के समीप पहुँचता ही है कि नेप्टयून सावधान हो-उठता है क्योंकि वह जानता है कि उसके शत्रु का बचकर निकल-भागना सम्भव है! अतएव वह अपने त्रिशूल से उस पर प्रहार करता है। इस त्रिशूल के एक प्रहार से ही समुद्र में तूफ़ान आ जाता है और उससे टकराकर यूलिसीज़ की डोंगी टुकड़े टुकड़े हो जाती है। यूलिसीज़ का हृदय इस भय से बैठने-सा लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि वह समुद्र में विलीन हो जाये, परन्तु इसी समय समुद्र की अप्सरा लिउकोथिया उसे एक प्राण-रक्षक रूमाल देती है और साथ ही यह आदेश भी कि जब वह सकुशल धरती पर पहुँच जाये तो उसे फिर समुद्र की लहरों को सौंप दे! यूलिसीज़ उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। अब वह इस रूमाल के कारण लहरों पर लहराता चलता है, पानी में डूबता नहीं, किन्तु,

'एक विशाल लहर ने फेंका यूलिसीज़ को तट की ओर,
तट कि घिरा था जो पहाड़ियों से भीषण ऊँची-ऊँची!
खाल न रह जाती शरीर पर यहाँ हड्डियाँ होती चूर,
यदि न मिनर्वा के कारण यह भाव हृदय में जग जाता—
आगे बढ़े शक्ति-साहस से और शिला को फिर लें थाम!
यही किया उसने, फिर उससे चिपट गया वह ताक़त भर!
बहुत कड़े हाथों से उसने पकड़ी शिला रगड़ से, पर,
छिले हाथ, कट गई खाल, दो एक दांत भी टूट गये,
पीड़ा से रो-उठा, किन्तु वह एक बार इस तरह बचा!
और, वेग लहरों का उसने सहन किया फिर कुछ क्षण तक!
किन्तु, दूसरी तेज़ लहर ने उसे घसीटा, ज्यों बिल से
कोई मछुआ बुद्धि-शक्ति से ले घसीट पशु 'कटिल' कभी,
जो कि मुलायम होता है, ख़ुद रक्षा करता है अपनी,
कभी कभी जिसके ऊपर रहते हैं पत्थर के ढेले!
कैसे भला टिके रहते फिर उस पत्थर पर उसके हाथ!
छूटे, बहा तुरत वह, पहुँचा शीघ्र बीच में सागर के!
किन्तु मिनर्वा ने चिन्ता की मन में जगा विचार नया-
क्यों न शक्ति कर ले संचित औ, बहे साथ उन लहरों के

जो कि बीच से उठकर प्रायः कहीं किनारे लगती है !
बस फिर क्या था, बहा और वह आया बहकर सरिता में,
जिसके सुन्दर जल को उसने तैर-तैर कर पार किया !'

इस प्रकार वह ऐसी भीषण विपत्तियों में जीकर धरती पाता और किनारे पर पहुँच जाता है। वह तुरन्त ही समुद्री अप्सरा का रुमाल पानी में बहा देता है, मुरझाई पत्तियों में अपने को छिपा लेता है और गहरी नींद में सो जाता है।

पर्व छः—

इसी समय जबकि यूलिसीज़ इस प्रकार गहरी नींद में है, मिनर्वा फ़िग्रैशिया के राजा ऐलसिनस की बेटी नउसिकाश्रा को स्वप्न देती है कि वह उठे, स्वयं अपने वस्त्र धो डाले और अपने विवाह के लिये तैयार हो ! राजकुमारी तुरन्त ही जग जाती है और निर्देश करती है कि खच्चरों के द्वारा खींचे जाने वाले रथ पर रखकर उसके सारे कपड़े धोने के स्थान पर पहुँचा दिये जायें। इसके बाद ही वह अपनी सखियों से विदा होती और समुद्र की ओर चल पड़ती है।

कपड़े धुल जाते और सूखने के लिये फैला दिये जाते हैं, किन्तु राजकुमारी और उसके साथ की कुमारियां तब तक गेंद खेलती रहती हैं जब तक कि उनके क्रीड़ा-शब्द के कारण यूलिसीज़ जाग नहीं जाता, और अपने नंगे शरीर को सघन पत्तियोंवाली शाखों के पीछे छिपा नहीं लेता ! जैसा कि स्पष्ट भी है, राजकुमारी को यह समझते देर नहीं लगती कि वह किसी समुद्री दुर्घटना से त्रस्त, किसी प्रकार बचा हुआ एक निरीह प्राणी है जिसे सहायता की आवश्यकता है। राजकुमारी स्वभावतः दयालु है, अतएव वह उसे कपड़े देती है और साथ ही यह आदेश भी कि वह उसके रथ के पीछे-पीछे नगर में प्रवेश करे और फिर वहां उसकी प्रतीक्षा करे। वह कहती है कि महल में पहुंचते ही वह उसे अपने माता-पिता से मिलाने की की व्यवस्था करेगी। वह यह नहीं चाहती कि वह अज्ञात व्यक्ति के साथ-साथ नगर में प्रवेश करे और इस प्रकार लोगों को उसके बारे में काना-फूसी करने का अवसर मिले।

पर्व सात—

राजकुमारी महल में लौट आती है और उसके कपड़े रथ से उतारे जाते हैं। यूलिसीज़ उसके रथ के पीछे-पीछे चलने की कोशिश करता किन्तु पिछड़ जाता है। इस समय मिनर्वा उसे रास्ता बतलाती है और रास्ता ही नहीं बतलाती उसका पथ-प्रदर्शन भी करती है। इस प्रकार वह नगर में और फिर महल में प्रविष्ट हो जाता है, किन्तु उसे कोई देख नहीं पाता ! उसे लोग केवल तब देख पाते हैं जब वह नाउसिकाश्रा के आदेश का पालन करने के विचार से उसकी माँ के सम्मुख उपस्थित होता है और चाहता है कि वह उसकी सहायता करे। राजा और रानी, दोनों ही, उससे प्रभावित होते हैं और प्रसन्न होकर उसे आश्रय देने का वचन देते हैं, किन्तु भोजन करते समय वह अपने को समुद्री-दुर्घटना का शिकार, एक अभागा नाविक बतलाता है और चाहता है कि उसे केवल उसके घर भेज दिया जाये ! वह भोजन समाप्त करता है। सहसा

हीं रानी की निगाह उसके कपड़ों पर पड़ती है जो उन्हें पहिचान लेती है और यूलिसीज़ से प्रश्न करती है कि वे उसे कैसे और कहां से मिले ! वह सारी कथा जान लेने पर बड़ी सन्तुष्ट और बड़ी प्रसन्न होती है, क्यों कि वह अनुभव करती है कि उसकी पुत्री बड़ी दयालु, दानशील और विवेक-सम्पन्न है। राजा और रानी विश्राम करने के लिये प्रस्थान करने के पहले एक बार फिर उस यात्री को वचन देते हैं कि वे उसे शरण तो देंगे ही, उसकी हर प्रकार रक्षा भी करेंगे !

पर्व आठ—

दूसरे दिन राजा अपने अतिथि को जन साधारण की एक सभा में ले जाता है वहाँ मिनर्वा ने उस स्थान के लोगों को पहले से ही बुला रक्खा है। राजा ऐलसिनस अपना आसन ग्रहण करता है और सभा में सर्व साधारण को यह सूचना देता है कि एक अज्ञात उनकी सहायता का इच्छुक है। इसके बाद वह प्रस्ताव करता है कि एक भोज हो जिसमें राज्य का अंधा-चारण डिमॉडोकस अपने गानों से सब का मनोरंजन करे, तत्पश्चात अतिथि को अनेकानेक उपहार भेंट किये जायें, और इस प्रकार उसे विदा दी जाये ! प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत होता है।

भोज की व्यवस्था होती है। भोज आरम्भ होता ही है कि चारण अपना गाना आरम्भ करता है, जिसमें यूलिसीज़ और एकीलीज़ में हुये एक द्वंद का वर्णन है। यूलिसीज़ चुपचाप गाना सुनता रहता है किन्तु इस गाने के स्वर से उसके हृदय के सारे घाव हरे हो-उठते हैं, सारा सुखमय अतीत उसके सम्मुख इतना सजीव और स्पष्ट हो उठता है कि उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं, और उन्हें छिपाने के लिये वह अपने लबादे को सिर के ऊपर खींच लेता है ! राजा इस भावुकता को देखकर चारण को गीत समाप्त करने का आदेश देता है और प्रस्ताव करता है कि अब दूसरे खेल-तमाशे हों ! आज्ञा का पालन किया जाता है और दौड़, कुश्ती और चक्र आदि में अपने कौशल का प्रदर्शन करने के बाद प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले यूलिसीज़ का मज़ाक बनाते और उसे चुनौती देते हैं कि वह भी शक्ति और चातुरी के खेलों में भाग लेकर अपने कौशल और अपनी प्रवीणता का परिचय दे। यूलिसीज़ उनके तीखे व्यंग्यों से आहत हो जाता है और उत्तेजित हो-उठता है। वह चक्र को उनके सब से दूर के लक्ष्य से बहुत दूर फेंक देता है और कहता है कि यद्यपि इधर उसे अभ्यास नहीं रहा है, फिर भी वह शक्ति के खेलों में भी उनमें से किसी का भी सामना करने से नहीं डरता, केवल यह कि किन्हीं कारणों से वह दौड़ और नाच की प्रतियोगिताओं में ही भाग लेने में असमर्थ है ! अतएव उसका पौरुष और क्षमा प्रकट हो उठते हैं और हीनता की स्पष्ट स्वीकारोक्ति दूसरी पंक्ति में नज़र आती है ! किन्तु हीन-दल व्यर्थ की आलोचना करने से अब भी बाज़ नहीं आता ! इस बीच में नवयुवक-दल नाचता रहता है और तब तक नाचता रहता है जब तक कि चारण एक दूसरा ऐसा गीत आरम्भ नहीं करता, जिसमें बतलाया गया है कि वल्कन ने कैसे एक दुश्चरित्रा पत्नी को दंड दिया !

इसके बाद सारे फ़ियैशिया के निवासी उस अजनबी यूलिसीज़ को विविध उपहार भेंट करते हैं। इस समय यद्यपि वह अनुभव करता है कि वह बहुत बड़ा आदमी है, फिर भी नउसिकाया को विश्वास दिलाता है कि वह उसके उपकारों को कभी न भूलेगा और उसका चिरऋणी रहेगा क्योंकि उसने ही उसकी सहायता पहिले-पहल की है।

उत्सव समाप्त होता है। एक बार चारण फिर मुखरित होता है। इस बार वह गाता है कि ट्राय के युद्ध के सिलसिले में यूलिसीज़ ने एक लकड़ी के घोड़े की व्यवस्था की जिसे पीछे लौटते समय यूनानी समुद्र-तट पर छोड़ आये। इसके बाद वह गाता है कि युक्ति सफल हुई। यूनानियों ने लकड़ी के घोड़े से बाहर निकलने की व्यवस्था की और स्वयं बाहर निकलने के बाद उन्होंने अपने साथियों के लिये भी द्वार खोल दिये। इसके बाद इस समय, जब कि दस वर्ष की लम्बी अवधि के बाद ट्राजन सारी आशंकाओं और चिन्ताओं से मुक्त होकर लॉरेल्स[१] पर, जैसे, घोड़े बेचकर सो रहे थे, यूनानी विजयोल्लास में मदोन्मत्त ट्राय में घुस पड़े। इस प्रकार ट्राय का पतन का आरम्भ हुआ।

इस सफल अन्धे चारण के इस प्रकार गाने से यूलिसीज़ एक बार फिर द्रवित हो उठता है, उसकी आँखों से आँसू बह चलते हैं और आँसू की बड़ी-बड़ी बूँदें उसकी पलकों से उसके गालों पर इस प्रकार चू पड़ती हैं, जैसे कि नगर के सिंह-द्वार पर शत्रु-सैनिक एकत्रित हों और कोई पत्नी अपने वीर-पति को लड़ने के लिये जाने-देने के पहले उसका आलिंगन करे और द्रवित हो उठे! वह इसी स्थिति में बहुत देर तक पड़ा-रहता है, किन्तु उसकी स्थिति से कोई और अवगत नहीं है, केवल राजा से ही उसकी यह दशा अनजानी नहीं रहती, क्योंकि वह उसके पास ही बैठा है। राजा तुरत ही नगर के प्रमुख नाविकों और राजकुमारों को सम्बोधित करता है और कहता है गायक को रोक देना चाहिये, क्योंकि वह जो कुछ गा रहा है वह सब के लिये समान-रूप से आनन्द-दायक नहीं है—गायक ने भोजारम्भ के समय पहली बार स्वर भरे और यह अज्ञात विचलित हो उठा! वह तब से अब तक सन्तप्त है, आहें भर रहा है, कराह रहा है जैसे कि उसका शोक समाप्त ही न होगा, उसके विषाद का अन्त ही नहीं।

राजा उत्सुक हो उठता है। उसे शंका होती है कि हो-न-हो उसके अतिथि का कोई सम्बन्धी अवश्य ही ट्राय के युद्ध में मारा गया है, जिसकी स्मृति-मात्र उसे असह्य है। अन्त में वह उससे प्रार्थना करता है कि वह स्वयं इस सारे रहस्य पर प्रकाश डाले।

पर्व नौ—

इस प्रकार अपनी कथा कहने के आग्रह में यूलिसीज़ पहिले अपना परिचय देता है और अपने द्वीप का वर्णन करता है। इसके बाद वह विस्तार में बतलाता है कि कब और कैसे

[१] कल्प-वृक्ष।

ट्राय का पतन एवं विनाश पूर्ण हुआ और वह स्वयं और उसके साथी ट्राय के तटों से चले ! वह आगे कहता है कि उन्हें अनुकूल हवायें मिलीं और वे सब थ्रेन्स के शहर इस्मारस पहुँचे ! इसे उन्होंने जीत लिया। किन्तु बजाय इसके कि वे लूट के माल के साथ तुरन्त अपनी राह लेते, जैसा कि उसका आग्रह था, वे सब वहां रुके रहे और अन्त में अपनी आशा के विपरीत शत्रु को वहां पाकर हक्का-बक्का हो गये, किन्तु उनसे किसी प्रकार जान बचाकर निकल-भागे ! फिर, वे एक तूफ़ान के कारण कई दिनों तक त्रस्त रहने के बाद कमल-भोजी देश के समीप आ-पहुँचे ! यह एक अद्‌भुत देश था। यहाँ के लोग एक प्रकार के निद्रावाहक कमल की कलियाँ और उसके फूलों को खाकर जीवित रहते थे ! अतएव यहां पहुँचने पर उसने नगर की स्थिति समझ-आने के लिये तीन व्यक्ति भेजे। वह बहुत देर तक उनकी प्रतीक्षा करता रहा किन्तु वे न लौटे। तब चिन्ता होने के कारण वह स्वयं उन्हें खोजने के लिये निकल पड़ा। उसने उन्हें खोज निकाला किन्तु देखा कि उन्होंने भी उसी कमल की कलियाँ खा ली थीं वे भी बेहोश थे, और उन्हें अपनी महत्वा महत्त्वाकांक्षा अथवा अपनी मातृभूमि का कुछ भी ध्यान न था। वह उन्हें किसी प्रकार जहाज़ तक लाया, उसने उन्हें जहाज़ में जकड़ा और आदेश दिया कि वह विनाशकारी तट तुरन्त ही छोड़ दिया जाय, तीव्र गति से आगे बढ़ा जाय और रास्ते में कहीं रुकने के नाम भी न लिया जाय!

वे चल पड़े और शीघ्र ही वल्कन के सहकारी साइक्लोपीज़ के द्वीप के समीप पहुंचे। यहां नया भोजन और ताज़ा पानी लेने के विचार से उन्होंने पास के एक द्वीप के किनारे लंगर डाला। तुरन्त ही उसकी निजी इच्छा हुई कि वह पहले साइक्लोपीज़ से भेंट करे और तब आगे बढ़े। अब वह सबसे बहादुर बारह वीरों और सुस्वादु मदिरा से भरी खाल की एक बोतल साथ लेकर साइक्लोपीज़ के सहकारी पॉलिफ़ेमस से मिलने के लिये चल पड़ा ! उसने उसकी गुफ़ा खोजी और उस दैत्य की गुफ़ा में अपने साथियों के साथ घुसने के बाद उसने आग जलाई। वे सब उस आग को घेर कर बैठ गये और 'पॉलिफ़ेमस' की प्रतीक्षा करने लगे ! वह यहाँ घी-मक्खन आदि का व्यापार करता था और शीघ्र ही लौटने वाला था। उन्हें बहुत देर तक राह नहीं देखनी पड़ी कि एक आँख वाला वह दैत्य अपने पशु-समूह सहित अन्दर आया और उसने एक ऐसी चट्टान से उस गुफ़ा का मुंह बन्द कर दिया जिसे और कोई उसके स्थान से टस से मस न कर सकता था। इसके बाद ही वह अपनी भेड़ों को दुहने और पनीर बनाने में व्यस्त हो गया ! उसने उन की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। वह अपना सारा काम-काज करता रहा और अन्त में भोजन करते समय उसने उन सबको देखा ! उन्होंने बहुत विनम्रता से यदि कुछ त्रुटि हुई हो तो उसके लिये क्षमा-याचना की। दैत्य ने बहुत कर्कश शब्दों में प्रश्न किया कि क्या वे कुल उतने ही आदमी हैं। उसे उत्तर मिला और उसने उसके (यूलिसीज़) शब्दों पर विश्वास कर लिया कि वे समुद्र की एक दुर्घटना से ग्रस्त और त्रस्त लोग हैं। इसके बाद वह कुछ न बोला किन्तु शयन

[1]गोल आँखोंवाली राक्षसी जाति के गरड़िये जो आदमियों को खा जाते थे और जूपिटर से भी न डरते थे !

करने के लिये लेटने से पहले उसने उनमें से दो को पकड़ा और खा डाला। वह सो गया। इस समय जब कि वह उन शेष व्यक्तियों की दया पर पूर्णतया आश्रित था, उसने उसे मार डालने का पक्का इरादा किया, किन्तु वह अपने संकल्प पर दृढ़ न रह सका, क्योंकि वह और उसके सारे साथी मिलकर भी गुफ़ा के मुख पर रक्खी उस चट्टान को उसकी जगह से हिला न सकते थे, अतः उन सब का बाहर निकलना असम्भव था ! अब इस विवशता के कारण ये उसी असहायावस्था में रात काटने पर मजबूर हो गये !

सुबह हुई। दैत्य उठा। उसने फिर अपनी भेड़ें दुहीं और एक बार फिर दो यूनानियों को निगल डाला। इसके बाद उसने बड़ी सरलता से चट्टान को लुढ़काकर एक किनारे कर दिया और अपने पशुओं के साथ बाहर निकल जाने पर उसे फिर यथास्थान रख दिया। इस तरह दिन में भी उसे और उसके आठ साथियों को गुफ़ा में बन्दी का जीवन बिताना पड़ा !

दिन बड़ा था। उसने (यूलिसीज़ ने) उस लम्बे दिन में एक छोटे जैतून को छीलकर नोकदार बनाया, उसे आग में कड़ा किया और अपने साथी निश्चित किये जो उसकी योजना की सफलता के लिये आवश्यक थे ! शाम हुई। पॉलिफ़ेमस आया। उसने पिछली शाम की भाँति ही अपना घरेलू कार्य समाप्त किया और फिर उनमें से दो यूनानियों का आहार करने के बाद उसके द्वारा प्रेषित मदिरा का पान किया। वह उसके स्वाद से बहुत सन्तुष्ट हुआ और उस ने वायदा किया कि यदि मदिरा देनेवाला उसे अपना नाम बता देगा तो वह उसे पुरस्कृत भी करेगा। दैत्य पीता गया और नशे में चूर होकर सोने से पहिले यह जानने पर कि उसका नाम 'नोमैन' (कोई आदमी नहीं) है, वायदा किया कि वह सबको खाने के बाद ही उसे खायेगा। इसके बाद वह सो गया। इस समय उसने और उसके चार साथियों ने उस नोकदार जैतून को बहुत देर तक आग में डाल रक्खा और जब वह बिल्कुल आग की तरह दहकने लगा तो उन्होंने उसे आग में से निकाल लिया। वह और उसके साथी चारों ओर इकट्ठे हुये। इस समय जाने किस देवता ने उन्हें शक्ति-दान दिया और यह कि वह स्वयं भी उन्हें हिम्मत बंधाता रहा, अन्यथा सम्भव था कि वे डर कर उसका साथ देने से इन्कार ही न करते वरन् उसे त्याग भी देते इस समय वह स्वयं अगले सिरे पर था और उसके साथी उसके पीछे ! उन सब ने पूरी शक्ति लगाई और उस चमकते, दहकते, तेज़ जैतून को उस दैत्यकी आँख में घुसेड़ दिया। चारों ओर से रक्त बह चला। लपट की तेज़ी के कारण उसकी पलकें और भवें भस्म हो गईं। आँख की ज्योति जाती रही और वह दर्द से बुरी तरह चीत्कार कर उठा।

उसकी चीत्कार से उसके साथी 'साइक्लोपीज़' जाग उठे। वे दौड़कर आये और उसकी गुफ़ा के चारों ओर चक्कर लगाकर उन्होंने उसकी इस चीत्कार का अर्थ जानना चाहा ! किन्तु, वह लगातार एक ही उत्तर देता रहा कि उसे नोमैन मार रहा है, आहत कर रहा है। वे इससे कुछ न समझे किन्तु उसने (यूलिसीज़) और उसके साथियों ने इससे लाभ उठाया। उन्होंने चिल्लाकर कहा कि अचरज है कि वे समझ नहीं पा रहे हैं कि देवता उसके दुष्कर्मों के लिए उसे सज़ा दे रहे हैं। 'साइक्लोपीज़' ने सब कुछ सुना, उसे उसके भाग्य पर

छोड़ दिया और अपनी राह ली !

सबेरा हुआ। पॉलिफ़ेमस कराहते हुए उठा, उसने चट्टान सरका कर एक तरफ कर दी और उसके पास ही हाथ फैलाकर खड़ा हो गया, क्योंकि उसे आशा थी कि वन्दी भागेंगे और इस तरह वह उन्हें पकड़ सकेगा। किन्तु उसने (यूलिसीज़ ने) अपने को और अपने साथियों को भेड़ों के पेटों से बाँध लिया। इस प्रकार वे सब के सब भेड़ों के घने ऊन में चिपट कर भेड़ों के साथ ही गुफ़ा के बाहर निकल आये। दैत्य अंधा था, अतएव यह देखने के लिए कि उसकी भेड़ों पर अजनबी तो नहीं सवार थे, उसने अपनी सारी भेड़ों की पीठ पर हाथ फेरा। उसने स्पर्श से अपना प्रिय भेड़ा पहिचान लिया और उसकी धीमी चाल से अनुमान किया कि इस प्रकार, असाधारणतया, धीरे-धीरे चलकर वह उसके घावों के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहा है। इस तरह सब भेड़ों के साथ उसका प्रिय भेड़ा भी बाहर निकला। दरवाज़े की ओर उसका मुख था। वह अपने ऊन और उन सबके बोझसे दबा जारहा था, और अन्त में आगे न बढ़ सका, रुक गया। उसे इस प्रकार रुकता पाकर दैत्य ने अचरज किया कि ऐसी क्या नई बात है कि आज वह भेड़ा सबके बाद बाहर निकल रहा है, ऐसा तो पहिले कभी नहीं हुआ। वह तो हमेशा ही सारी भेड़ों के आगे रहता था, शक्ति से कूद-कूद कर सबके आगे दौड़ता चलता था, सबसे आगे के पंक्ति में रहकर चरागाहों की हरी हरी घास चरता था, छलांगे भरता सबसे पहले पानी पीने के लिये पानी के सोतों पर पहुँचाता था और संध्या के समय सबसे पहिले गुफ़ा को लौटता था। वह सर मारता था, किन्तु उसकी समझ में न आता था कि इस दिन ही क्यों उसका प्रिय भेड़ा हर मामले में सबके पीछे है। उसे विश्वास हो गया कि सचमुच ही वह अपने स्वामी के आँख के लिए संतप्त है, जिसे एक हत्यारे ने फोड़ दिया और जिसके लिए उस व्यक्ति ('यूलिसीज) और उसके साथियों ने उसे इतनी शराब पिलाई कि वह बेहोश हो गया। सहसा ही उसे लगा जैसे कि उसके शत्रु सुरक्षित नहीं हैं और उसने तुरन्त ही चाहा कि उसका प्रिय भेड़ा उसकी इस धारणा का समर्थन करे ! उसकी कामना थी कि वह भेड़ा उसकी धारणा का समर्थन ही न करे प्रत्युत उनके छिपने के स्थान का पता भी दे ! यही नहीं, बल्कि वह यह भी चाहता था कि इस प्रकार पता पाने पर वह स्वयं जाकर उन्हें खोजे, उनके दिमाग इस तरह पृथ्वी पर घंटों रगड़े कि वे सब कुत्तों की मौत मरें और इस तरह वह उस पीड़ा और उस यातना को बदला लेकर, जिसके लिये कोई 'नोमैन' जिम्मेदार था, वह सन्तोष की सांस ले।

किन्तु ऊपर लिखी युक्ति से गुफ़ा से बाहर आने पर उसने ('यूलिसीज़) अपने और अपने साथियों के बन्धन काटे। इसके बाद वह उस दैत्य की भेड़ों को हांक कर अपने बेड़े तक ले गया, जिसे उसने एक खाड़ी में छिपा रक्खा था ! इस तरह पॉलिफ़ेमस के स्थान से बहुत दूर आने पर उसने चिल्लाकर ताने भरी ऊंची आवाज़ में अपना वास्तविक नाम बताया और उसे अपने और अपने साथियों के बचकर भाग निकलने से अवगत कर दिया। दैत्य बड़ा क्रोधित हुआ। वह बड़ी ज़ोर से गरजा और फिर आई हुई आवाज़ की दिशा में चट्टानें फेंक-फेंक कर मारने लगा। अन्तमें उसने घोर सन्ताप से शपथ ली और ललकार कर कहा कि उसका पिता

नेप्ट्यून उनसे अवश्य ही इस अनीति का बदला लेगा !

पर्व दस—

यूलिसीज़ की कथा क्रम से चल रही है ! वह कहताहै कि साइक्लोपीज़ के द्वीप से चल कर उसने हवा के देवता इओलस से भेंट की। उसने उसका और उसके साथियों का बड़ा सत्कार किया। मित्रता के प्रमाण-स्वरूप, और इस विचार से भी प्रेरित होकर कि यूलिसीज़ अपने देश पहुंच जाये, उसने वायदा किया कि वह विरोधी हवाओं को बंदी कर देगा और ऐसी ही हवाओं को गतिशील होने देगा जो उसे उसके देश पहुँचने में सहायक ही न होंगी, प्रत्युत शीघ्रातिशीघ्र उसे उसके देश पहुँचा भी देंगी ! इओलस ने सारी तेज़ हवायें और अंधड़ एक खाल के थैले में बन्द कर दिये और उसे आदेश दिया कि वह थैला किसी भांति खुलने न पाये। इओलस से बिदा होने के बाद उसने उस थैले की इतनी चिन्ता की और रक्षा की कि उसके साथियों को सन्देह हुआ और उन्होंने सोचा कि वह थैला अवश्य ही बहुमूल्य रत्नों से भरा हुआ है। नौ दिन और नौ रात तक वह स्वयं पतवारों पर सचेत न रहा कि कहीं कुछ ऐसा न हो कि उनकी गति अवरुद्ध हो जाय, किन्तु दसवें दिन जब उसके निवास-स्थान ईथाका का तट साफ़ झलकने लगा, उसकी पलकें छप गई ! इस समय उसके साथियों ने आपस में मन्त्रणा करनी शुरू की कि जब उन सबने भी उसके बराबर ही कष्ट सहन किये हैं तो उसे क्या अधिकार है कि ट्राय की लूट के सारे ख़ज़ाने और इओलस से मिले हुये सारे बहुमूल्य उपहारों को वह केवल अपनी सम्पत्ति समझे। अतएव उन्होंने निश्चित किया की उस थैले के तमाम जवाहिरातों पर वे अपना अधिकार प्राप्त करेंगे। इस निश्चय के बाद ही उन्होंने थैला खोल दिया। थैले के खुलते ही उल्टी हवायें जो उसमें बन्द थीं एक भीषण गर्जन के साथ निकल भागीं और उसी क्षण भयंकर तूफ़ान आ गया। बेड़ा विरोधी हवाओं और तूफ़ान का सामना न कर सका और उसमें पड़कर वेग से विरोधी दिशायें में बहने लगा। इस संकट के आते ही वे सब घोर हाहाकार और विलाप करने लगे, क्योंकि उन्होंने यह भी अनुभव किया कि वे एक बार फिर अपने पूर्वजों की भूमि से बहुत दूर बहे जा रहे थे। उनके इस रोने-चिल्लाने से वह जाग उठा। नींद टूटते ही वह संकल्प-विकल्प में पड़ गया। उसके सम्मुख दो विचार आये—एक तो यह कि वह जहाज़से कूद कर जान दे दे और, दूसरा यह कि वह अपने साथियों के साथ रहे और धैर्य धारण करे। दूसरा विचार उसे अधिक पसन्द आया। वह अपने लबादे में लिपटा हुआ शांति और धैर्य से जहाज़ पर बैठा रहा और उसके साथी अपनी करनी पर रोते पछताते और अपने भविष्य की कल्पना से कराहते रहे। बेड़ा तेज़ी से हवाओं के साथ उल्टी दिशा में बढ़ता रहा, बढ़ता रहा। अन्त में वह फिर इओलस के द्वीप पर आ लगा !

इओलस ने छिन्न-भिन्न पालों के सहित यूलिसीज़ के बड़े को लौटते देखा और उसे विश्वास हो गया कि हो-न-हो उन्होंने अपने किसी कार्य से अनिवार्य-रूप से किसी देवता को कुपित कर दिया और उसने ही क्रोध में उस बेड़े को अपने राज्य से इतनी दूर, पीछे की ओर बहा दिया।

इस प्रकार सात दिन तक वे सब बड़े परिश्रम से बेड़ा खेते रहे। आठवें दिन उनके बेड़े को एक बन्दरगाह मिला जो 'लिस्ट्रिगोनियन' (मनुष्य मांस-भक्षी राक्षसों) का बन्दरगाह था। इन राक्षसों के पंजों से कुछ ही प्राणी बच सके। अपने इस प्रकार बिछुड़-गये मित्रों के भाग्यों पर दुःख प्रकट करते हुये उन्होंने फिर सर्स के द्वीप पर लंगर डाला। यहाँ अपने कुछ साथियों के साथ यूलिसीज़, जहाज़ पर ही रहा किन्तु शेष साथी अन्न-पानी की तलाश में निकल पड़े। अन्यलोगों ने दूर पर एक अच्छा सा मकान देखा। ये समीप गये और इन्हें पता लगा कि वह सर्स नामक एक जादूगरनी का निवास स्थान था। वह जादूगरनी इन सबके आगमन से अवगत थी अतएव उसने एक दावत और स्वादिष्ट पेय की व्यवस्था पहिले से ही कर रखी थी। इन सबके वहाँ पहुँचने पर उसने एक को छोड़कर सबको अपनी मधुर आवाज़ से मोहित और वशीभूत कर लिया और उन्हें अपने महल में गद्दों पर बैठाया! उसके आदेश से उनके सामने पनीर और अन्य खाद्य-वस्तुओं के साथ मदिरा और अन्य मादक और घातक पदार्थ लाये गये। उन्होंने जी भर खाया-पिया। फल यह हुआ कि थोड़ी ही देर बाद उन्हें अपने घरबार और अपने देश की कुछ भी सुधि न रही! अब घृणा से उसने अपना जादू का डंडा उनपर फिराया और कहा कि वे सब उन पशुओं बदल जायें जिनसे अधिक-से-अधिक उनकी शक्लें मिलती हों! एक क्षण के बाद ही वे सुअर हो गये और उनके समूह ने उस जादूगरनी को घेर लिया। उनके सिर, उनकी आवाज़ और उनके बाल बिलकुल सुअरों के-से थे किन्तु उन्हें कुछ देर पहले की अपनी माननीय स्थिति का अब भी पूरा ज्ञान था। इस प्रकार वंदी बन जाने पर वे बड़े संतप्त हुये। एक क्षण बाद ही सर्स ने उनके सामने जैतून के फल और वे सब चीजें डाल दी जिन्हें सुअर बड़े चाव से खाते हैं!

इस आमूल-परिवर्तन से उस समूह का बचा हुआ व्यक्ति बुरी तरह डर गया। वह दौड़कर जहाज़ पर आया और उसने यूलिसीज़ से प्रार्थना की कि वह वह स्थान जल्द-से-जल्द छोड़ दे। किन्तु यूलिसीज़ ने अपने साथियों को उस स्थिति में छोड़कर जाने से इन्कार कर दिया! उल्टा वह उस जादूगरनी के निवास-स्थान की खोज में निकल पड़ा। उसे राह में एक दूसरे वेष में देवदूत मरकरी मिला। उसने उसे एक जड़ी तो दी ही, जो उसके सब साथियों को उन पेय पदार्थों के दुष्प्रभावों से मुक्त कर सकती थी, उसे उसके साथियों की मुक्ति की युक्ति भी बतलाई!

उसने मरकारी के सारे आदेशों का अक्षरशः पालन किया। वह सर्स के महल में पहुँच गया! उसके सामने भी नाश्ता रक्खा गया और उसने कुछ जलपान किया भी, किन्तु जब सर्स ने उस पर भी अपना जादू का डंडा फिराना चाहा तो उसने उसे धमकाया कि यदि वह उसके सब के साथियों को उनकी मानवीय स्थिति में उसे तुरन्त ही न सौंप देगी तो वह उसे मार डालेगा! भयातंकित सर्स ने उसकी इच्छा की पूर्ति तो की ही, वह उससे इतनी प्रभावित भी हुई कि उसने उसे और उसके साथियों को पूरे एक साल तक अपने अतिथि के रूप में अपने यहां रक्खा! साल भर बीत जाने के बाद उसके (यूलिसीज़) साथियों ने उससे घर लौटने का आग्रह किया, अतएव उसने सर्स से कहा कि उसे अपने साथियों

के लिये अब जल्दी-से-जल्दी वह स्थान छोड़ देना चाहिये और अपने देश की ओर प्रस्थान करना चाहिये। सर्स ने फिर भी रोकना चाहा, किन्तु उसने अपनी विवशताओं का उल्लेख किया और कहा कि अब उसका अधिक रुक सकना असम्भव है! अन्त में सर्स ने अनिच्छा रहते हुये भी अपनी अनुमति दे दी, किन्तु आग्रह किया कि वह पहिले काले-सागर के उत्तर के भू-भाग सिमेरियन-समुद्र-तट पर जाये और भविष्य-दर्शी अंधे टाइरिसियस से अपने भविष्य का ज्ञान प्राप्त करे! उसे सर्स का यह प्रस्ताव अजीब लगा और इस तरह की यात्रा की कल्पना-मात्र से वह बड़ा हैरान हो उटा, किन्तु उसने उसे राह बतलाई और युक्ति भी! इस तरह वह शीघ्र ही उस स्थान के लिये साहस से चल पड़ा!

वायु अनुकूल थी। उसका बेड़ा बढ़ता रहा और शीघ्र ही अनन्त-रात्रि के देश में पहुँच गया! वहां लंगर डालने के बाद उसने एक खाई खोदी, सर्स से प्राप्त हुई तमाम दुष्आत्माओं का वध किया और फिर नंगी तलवार लेकर एक ऊंचे टीले पर दृढ़ता से खड़े होकर प्रेतों के समूह की प्रतीक्षा करनी आरम्भ कर दी! शीघ्र ही प्रेतों का दल पास आया। उसने उन प्रेतों में से एक को पहचाना भी। वह प्रेत किसी एक ऐसे प्राणी का था जो किसी विषेश दुर्घटना के कारण सर्स के द्वीप पर मर गया था! वह समुचित दाह क्रिया की याचना कर रहा था! शीघ्र ही टाइरिसियस का प्रेत उसके सम्मुख आया, और उसने सर्स के आदेशानुसार ही उसे दुष्आत्माओं का थोड़ा-सा ख़ून पीने की अनुमति दे दी! इस रक्त-पान के बाद प्रेत ने भविष्य-वाणी की कि यदि वह ट्रिनाक्रिया के द्वीप पर सूर्य्य के पशुओं का समादर करेगा तो वह अपने साथियों-सहित सही-सलामत अपने देश पहुँच जायेगा, यद्यपि राह में नेप्च्यून की बदला लेने की इच्छा के कारण उसे कुछ कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ेगा! भविष्य-वक्ता की बात यहीं नहीं रुकी, बल्कि उसने यह भी कहा कि जो भी उस पर और उसके साथियों पर आक्रमण करेगा उसका नाश होगा। इस तरह वह किसी प्रकार किसी मृत्यु से बच कर अपने देश पहुँच जायेगा। वहां वह अपनी पत्नी के उद्धत प्रेमियों का वध करेगा, और तब कहीं चैन की साँस ले सकेगा।

इतना कहने के बाद प्रेत ने थोड़ा दम लिया, और फिर कहना आरम्भ किया कि इतना सब कर चुकने पर वह फिर देशाटन् करेगा। इस बार वह एक ऐसे स्थान पर जा लगेगा, जहाँ उसके हाथ के पतवार को एक ऐसा पंखा समझ लिया जायेगा जिसके द्वारा अनाज से भूसा अलग करने का काम लिया जाता है। यहाँ उसे कल्याणकर बलि देनी होगी! अन्त में वह अपने स्थान को लौट आयेगा, शान्त वृद्धावस्था को प्राप्त होगा और फिर अपने स्वजनों के बीच में प्राण-त्याग करेगा।

टाइरिसियस की भविष्य-वाणी समाप्त हुई और वह उससे अलग हुआ। किन्तु इसके बाद ही उसने टाइरिसियस की माँ से भेंट की और तब उसने उन स्त्रियों से बातचीत की जो देवताओं और प्रसिद्ध वीरों की सन्तानों के जन्म के लिये प्रसिद्ध थीं!

पर्व ग्यारह–

फ़िर्यैशिया के निवासी यह सारी कथा इतने दत्तचित्त होकर सुनते हैं मानो वे साँस ही न ले रहे हों। इस बीच में, एकाएक, यूलिसीज़ कुछ क्षण के लिये रुकता है और राजा इस विराम का कारण जानने के लिये उत्सुक हो उठता है। वह उससे अनुरोध करता है कि वह अपनी कथा पूरी करे! अतः यूलिसीज़ फिर आरम्भ करता है और एगेमेम्नान के प्रेत से अपनी भेंट का वर्णन करता है! एगेमेम्नान को उसके ट्रॉय से लौटने के बाद उसकी पत्नी और उसकी पत्नी के प्रेमी ने मार डाला था! वह कहता है कि एगेमेम्नान ने उससे अपने पुत्र की कुछ खोज-खबर लेनी चाहिये, किन्तु उसने उत्तर में खेद प्रकट किया कि वह उसके विषय में बिल्कुल अनजान है! इसके बाद ही उसकी निगाह एकीलीज़ पर पड़ी! वह मृतात्माओं का अधिपति होने के बावजूद भी बड़ा दुखी था! उसने बहुत विदग्ध होकर उससे कहा कि अच्छा होता कि इन आत्माओं का राजा होने के बजाय वह एक दीन, हीन साधारण मज़दूर होता! अतएव एकीलीज़ को आश्वासन देने के विचार से उसने उसके पुत्र की बड़ी प्रशंसा की और रण क्षेत्र में प्रदर्शित उसके शौर्य की बहुत बढ़ा-चढ़ा कर चर्चा! उसने उससे कहा कि ट्राय के लिये जाने के लिये छिड़े युद्ध में वह होश-हवास खोकर लड़ा और लकड़ी के घोड़े में बन्दी योद्धाओं में वह भी एक था। इस बातचीत के बाद ही एकीलीज़ की आत्मा अदृश्य हो गई। फिर कितने ही प्रेत उसके सम्मुख आये। केवल ऐजैक्स का प्रेत ही उसके सम्मुख नहीं आया! वह भूला न था और उसके हृदय में रह रह कर यह बात खटक-उठती थी कि यह वही यूलिसीज़ है जिसने रण-क्षेत्र में एकीलीज़ का कवच जीत लिया था। शीघ्र ही वे सब प्रेत ग़ायब हो गये।

यहाँ इन प्रेतात्माओं के अतिरिक्त उसने नर्क के निकृष्ट प्रदेशों (हेड्ज़) के न्यायाधीशों को भी देखा और पाताल में स्थित तलहीन टारटरस नामक खाड़ी के अपराधियों को भी। किन्तु जब उस राष्ट्र के असंख्यक मृत-प्राणियों ने उसे घेर लिया तो वह डर गया और जी छोड़कर अपने जहाज़ की ओर भागा। जहाज़ पर पहुँचकर व्यवस्थित होते ही उसे पता भी न लगा कि कब उसका जहाज़ सर्स के समुद्र-तट पर जा-लगा।

पर्व बारह–

इस बार इस द्वीप में उसने अपने मृत साथियों को दफ़नाया, सर्स से अपनी हेड्ज़-यात्रा का वृतान्त बतलाया और उससे विदा चाही। सर्स ने सहर्ष उसे अनुमति दे दी किन्तु सावधान किया कि उसे राह में समुद्री परियाँ मिलेंगी जो अपने मधुर कंठ की सहायता से अपने शिकार फँसाती हैं, भयानक चट्टानें मिलेंगी, सिल्ला नामक एक समुद्री-राक्षसी मिलेगी, मेसेनियन[1] खाड़ी

[1] यूनान के मेसेनिया नामक पश्चिमी प्रदेश की खाड़ी–

के दोनों तटों पर कैरिब्डिस नामक भंवर मिलेगी और ट्रिनाक्रिया[१] में सूर्य्य के ढ़ोर मिलेंगे। उसने ये सारे संकट गिनाने के बाद उसे रास्ते भी बताये जिनसे वह सारी मुसीबतों से बच सकता था और उसे कुछ भी हानि न पहुँच सकती थी।

प्रातःकाल वह सर्स से विदा हुआ। शीघ्र ही उसका बेड़ा साइरेंस नामक समुद्री-परियों के स्थान के समीप पहुँचा। उसने तुरन्त ही अपने साथियों को आदेश दिया कि वे उसकी मुखाकृतियों और भंगिमाओं की तनिक भी चिन्ता न कर उसके कानों को मोम भरकर बहरा कर दें और उसे मस्तूल से बांध दें। उसके आदेश का पालन किया गया और इस प्रकार बहरा बनकर वह उन परियों के आश्चर्यजनक मधुर गाने की अवज्ञा करता रहा। जब वह उनके स्थान से काफ़ी दूर निकल आया और उनकी आवाज़ दूरी में खो गई तो उसने अपने साथियों को इशारा किया। उन्होंने उसे खोल दिया और उसके कानो से मोम निकाल दी।

किन्तु इसी समय कुछ ऐसा हुआ कि उसकी हिम्मत न हुई कि वह अपने साथियों से कैरिब्डिस नामक भंवर की चर्चा करे और उन्हें उस भयानक ख़तरे से आगाह करे, या उन्हें सिल्ला नामक राक्षसी के विषय में कुछ भी बताये। अतएव उसने केवल अपने को पूरी तरह शस्त्रों से सजा लिया! इस प्रकार वह स्वयं उस राक्षसी का सामना करने को तैयार हो गया। जहाज़ और क़रीब आया और उस राक्षसी ने बिना इसकी चिन्ता किये ही कि उसने उसका सामना करने की बड़ी-बड़ी तैयारियां कर रक्खी हैं उसके जहाज़ पर से छः आदमियों को नीचे खींच लिया! वे फिर दुबारा दिखलाई न पड़े। वह आगे बढ़ा! वह नहीं चाहता था कि वह सूर्य्य के ढोरों के प्रदेश ट्रिनाक्रिया में रुके क्योंकि वह डरता था कि उसके साथी नहीं सूर्य्य के ढोर चुरा न लें! फिर भी चूँकि उसके साथी विश्राम करना चाहते थे इसलिये उसे वहाँ रुकना पड़ा। इसी बीच में उल्टी हवायें बहने लगीं, और वे इतने दिनों तक बहती रहीं कि यूनानियों ने उनके साथ जो कुछ था सब खा डाला। इसके बाद तो यह हालत हुई कि वे जंगली जानवरों और मछलियों का शिकार करके अपने गोश्त के बरतनों को भरने की लाख कोशिश करते, किंतु फिर भी वे भूखे ही रहते। इसी बीच में एक दिन किसी आवश्यक कार्य से उसे बाहर जाना पड़ा। उसके भूखे साथियों को मौक़ा मिला। उन्हें अपने संकल्पों का कुछ भी ध्यान नहीं रहा। उन्होंने आवेश में आकर कुछ ढोरों का वध कर डाला! वे मरने के बाद भी इस तरह चलते-फिरते थे जैसे कि वे जी रहे हों। किन्तु आश्चर्य तो यह है कि इस तरह अलौकिक चमत्कारों से भी उन पर कोई अनुचित प्रभाव नहीं पड़ा, वे ज़रा भी नहीं डरे! उन्होंने भरपेट भोजन किया! किन्तु छः दिन बाद जब वे जहाज़ पर सवार हुये तो ऐसे ज़ोर का तूफ़ान आया कि उसके (यूलिसीज़ के) अतिरिक्त शेष सब समुद्र में डूब गये। वह अपने टूटे-फूटे जहाज़ के मस्तूल से चिपट गया। इसके बाद ही उसे किसी तरह पता चला कि इस समय वह कैरिब्डिस नामक भंवर और उस ख़ूख़ार राक्षसी के प्रदेशों से गुज़र रहा है। अतएव वह एक अंजीर के पेड़ की बहुत नीचे तक लटकी हुई डालियों से

[१] भूमध्य-सागर का एक द्वीप-

लिपट गया और इस प्रकार उन संकटों से बाल-बाल बचा। तत्पश्चात् नौ दिन तक समुद्र की लहरें उसे जी भर उछालतीं और उससे खेल-करती रहीं। अन्त में वह कैलिप्सो के द्वीप ऑजिजियै के तट पर जा लगा! वहाँ से वह सीधा फ़िऐशिया आ पहुँचा और इस समय राज्य-सभा में उपस्थित है!

पर्व तेरह—

यूलिसीज़ इस प्रकार अपने पिछले दस वर्षों के भ्रमण की कथा समाप्त करता है। इसके बाद कितनी ही और बातें होती हैं। तब राजा उसे भोज देता है। राजा भोज के बाद उसे कितने ही मूल्यवान उपहार भेंट करता है और उसे जहाज़ पर भेजकर उसके घर पहुँचने की सारी आवश्यक व्यवस्था कर देता है।

जहाज़ रवाना होता है और यूलिसीज़ जहाज़ के अगले भाग में निश्चिंत होकर सो जाता है। कुछ समय के बाद जहाज़ एक अत्यन्त सुरक्षित इथाकन-खाड़ी में पहुँचता है। यहाँ फ़िऐशिया के मल्लाह सुप्त यूलिसीज़ और सारे माल-ख़ज़ानों को ज्यों का त्यों छोड़ देते हैं और अपने देश की राह लेते हैं। वे यहाँ तक आने कष्ट सहन करने के लिये धन्यवाद की भी अपेक्षा नहीं करते। वे सब अपने बन्दरगाह के समीप आ जाते हैं और अपने बन्दरगाह में घुसने की कोशिश करते ही हैं कि नेप्ट्यून उनके जहाज़ को लक्ष्य कर अपना त्रिशूल फेंककर मारता है! वह इन मल्लाहों को भी अपना शत्रु समझता है क्योंकि इन्होंने ही उसे घर पहुँचने में मदद दी है। इस प्रकार उनका जहाज़ एक समतल चट्टान की शक्ल में बदल जाता है! कहना न होगा कि हम आज भी उसे इस चट्टान के रूप में देख सकते हैं।

इधर इसी बीच में यूलिसीज़ जाग जाता है और सारी स्थिति समझकर अपनी सारी सम्पत्ति एक गुफ़ा में छिपा देता है। शीघ्र ही छद्म वेश में मिनर्वा उससे मिलती है। वह उससे आग्रह करती है और उत्तर में वह अपना एक विलक्षण लेखा देता है, जिसे वह बड़े ध्यान से सुनती है। इसके बाद ही वह उसे अपना परिचय देती है और उसे विश्वास दिलाती है कि उसकी पत्नी सर्वप्रकारेण स्वामिभक्त है, उस पर किसी प्रकार का भी सन्देह करना पाप है! वह उसकी पत्नी के प्रेमियों का भी उल्लेख करती है और कहती है कि उन्हें किसी की भी चिन्ता नहीं है—वे निश्चय कर चुके हैं कि जैसे ही टेलेमैकस लौटे उसे मार डाला जाये अतएव वे उसकी प्रतीक्षा में हैं। अन्त में वह उसे सलाह देती है कि वह एक बूढ़े भिखारी का रूप धारण करे, इस वेश में पहिले अपने सुअरों के पुराने रखवाले से मिले और, बाद में, जब समय आ जाये तो अपने असली रूप में अपनी उपस्थिति की घोषणा कर दे!

पर्व चौदह—

यूलिसीज़ के रूप परिवर्त्तन में मिनर्वा उसकी सहायता करती है। वह शीघ्र ही एक दीन भिखारी हो जाता है और सुअरों के बूढ़े रखवाले से भेंट करता है। वह अपने

उत्तमोत्तम सुअर उसके सामने पेश करता है और शिकायत सी करता है कि लालची प्रेमीगण उसके सुअरों को प्रायः चुरा ले जाते हैं ! वह बहुत सुखी होता है जब यूलिसीज़ बतलाता है कि उसने कुछ समय पूर्व ही उसके स्वामी को देखा है, और वह शीघ्र ही लौटने वाला है। इस प्रकार की कितनी ही दूसरी बातें और यूलिसीज़ का बनावटी वर्णन विश्राम के समय तक उन दोनों का पर्याप्त मनोरंजन करते हैं ! विश्राम के समय के वह सुअरों का उदार एवं दानी रखवाला उसे अपना सबसे अच्छा लबादा ओढ़ा देता है।

पर्व पंद्रह—

इधर मिनर्वा वेग से स्पार्टा पहुँती है। उसकी कामना से सुप्त टेलेमैकस के हृदय में एक तीव्र भावना जगती है कि वह बिना कुछ भी देर किये अपने देश को चला जाय ! वह उसके सामने साकार होती है। वह उसे प्रेमियों के षड़यन्त्र से आगाह करती है, युक्ति बतलाती है ताकि वह अपनी रक्षा कर सके और उसे समझाती है कि लौटते समय वह केवल उस स्त्री पर विश्वास करे जिसके चरित्र के विषय में उसे पूरी जानकारी हो, अन्य किसी स्त्री पर नहीं। इस प्रकार के आदेश के बाद वह अदृश्य हो जाती है।

प्रातः काल टेलेमैकस बलि देता है, मेनेलाउस और हेलेन से विदाई के उपहार प्राप्त करता है और चल पड़ता है। इस समय कुछ बड़े मंगल-सूचक शकुन होते हैं, अतएव वह प्रसन्न हो उठता है। वह नेस्टर से मिलने की अधिक चिन्ता नहीं करता, चलता रहता है और मिनर्वा के आदेशानुसार सुअरों के उस रखवाले की झोपड़ी के पास ही अपना जहाज़ रोकता है ! वह उतर जाता है और आदेश देता है कि जहाज़ जाकर अपने बन्दरगाह में लंगर डाले।

पर्व सोलह—

इस समय सुअरों का रखवाला यूलिसीज़ के लिये नाश्ता तैयार करने में व्यस्त है। इसी क्षण यूलिसीज़ उसे एक मित्र के आगमन की सूचना देता है ! वह आनेवाले व्यक्ति को मित्र समझता है क्यों कि रखवाले के कुत्ते सेवक की भांति उसका स्वागत कर रहे हैं, भूक नहीं रहे हैं ! एक क्षण बाद ही टेलेमैकस कुटिया में आता है। रखवाला उसका बड़ा स्वागत करता है और चाहता है कि भोजन की मेज़ पर वह सम्मानित अतिथि का स्थान ग्रहण करे ! किन्तु टेलेमैकस आग्रह करता है कि उसके बजाय यह सम्मान उस बूढ़े को दिया जाय ! वह उससे वायदा करता है कि वह ज्योंही अपनी सम्पत्ति का स्वामी होगा, उसे वस्त्रादि तो भेंट करेगा ही, उसके आश्रय की भी व्यवस्था कर देगा ! इसके बाद वह रखवाले से कहता है कि वह उसकी मां को उसके सकुशल लौट आने की सूचना दे दे और उसकी ओर से प्रार्थना करे कि वह उसके बाबा लैर्टीज़ को भी उसके लौटने का समाचार भेज दे।

यह रखवाला जाता है कि मिनर्वा यूलिसीज़ को अधिक शक्ति और मनोहर चितवनें प्रदान करने के बाद उसे प्रेरित करती है कि वह अपने पुत्र को अपनी जानकारी कराये और

उसकी सलाह से अपनी पत्नी के प्रेमियों के विनाश की योजना बनाये। टेलेमैकस आश्चर्य से अवाक् हो उठता है और प्रसन्नता से फूला नहीं समाता, जब उसे यह ज्ञात होता है कि वह भिखारी प्रसिद्ध, तेजवान योद्धा तो है ही, उसका पिता भी है। आनन्द के प्रथम क्षण समाप्त हो जाते हैं। अब पिता बात-बात में अपने पुत्र को सलाह देता है कि वह शीघ्रातिशीघ्र घर वापस लौट जाय, अपनी माँ के प्रेमियों से इस प्रकार की मीठी-मीठी बातें करे कि सन्देह उनसे कोसों दूर रहे और इस प्रकार अवसर निकाल वह सारे शस्त्र भोज के कमरे से हटा दे और उसकी प्रतीक्षा करे—वह बहुत ही शीघ्र एक भिखारी के रूप में वहाँ पहुँच जायेगा!

जिस समय पिता और पुत्र इस प्रकार विचार-विनिमय कर रहे हैं, टेलेमैकस का जहाज़ बन्दरगाह पर पहुँचता है, किन्तु टेलेमैकस को उसमें न पाकर उसके प्राण-घातक खेद प्रकट करते हैं कि उनका शिकार किसी प्रकार हाथ से निकल गया। यों भी उनका साहस नहीं था कि वे उस पर हमला करते क्योंकि ऐसा करने पर पिनेलोपी का रुष्ट और प्रतिकूल हो जाना स्वाभाविक था, किन्तु अब वे भविष्य के लिये भी अपनी प्रेमिका को वचन देते हैं कि वे सदैव ही उसके पुत्र को अपना मित्र समझेंगे!

इसी बीच स्वामिनि को सन्देश देकर सुअरों का रखवाला अपनी कुटिया में लौट आता है। वह टेलेमैकस और उस भिखारी के साथ वह संध्या बिताता है किन्तु, उसे कुछ भी सन्देह नहीं होता कि वह भिखारी, भिखारी नहीं है, प्रत्युत उसका स्वामी है!

पर्व सत्तरह—

दूसरे दिन सूर्योदय होते-होते टेलेमैकस शीघ्रता से अपने महल की ओर चल पड़ता है। दोपहर को रखवाला इसी महल का रास्ता उस अनजान भिखारी यूलिसीज़ को दिखलाता है!

महल में टेलेमैकस की माँ उसका आलिंगन करती है। वह थोड़ी देर तक अपनी माँ से कितनी ही बातें करता रहता है, किन्तु इसके बाद ही उससे आग्रह करता है कि वह कमरे में जाकर मुँह धो डाले ताकि चेहरे से आँसुओं के चिह्न मिट जाय! इधर, वह एक यात्री से मिलने और उसका स्वागत करने के लिये बाज़ार की ओर चल पड़ता है। वह वहाँ पहुँचता है और समुचित अतिथि-सत्कार प्रदर्शित करके उसके स्वागत का कार्य समाप्त करता है। शीघ्र ही वह फिर महल में वापस आता है और माँ से विस्तार में अपनी यात्रा की चर्चा करता है।

इधर जब टेलेमैकस इस प्रकार व्यस्त है, प्रेमीगण बुरी तरह ऊधम मचा रहे हैं और एक भोज का क्रम चल रहा है, उधर यूलिसीज़ के चरण वेग से बढ़ रहे हैं और वह शीघ्र ही महल में प्रवेश करता है! कोई उसे देख नहीं पाता, किन्तु जैसे ही वह आँगन में आता है, उसका पुराना शिकारी कुत्ता ऐरगस उसे पहचान लेता है, प्रेम से दुम हिलाने लगता है और चाहता है कि किसी प्रकार उसके पास पहुँच जाये, किन्तु वह ऐसा नहीं कर पाता क्योंकि एक तो जंजीर से बँधा हुआ है, दूसरे रोगग्रस्त और मरणासन्न है! यूलिसीज़ की निगाह उस पर अटक जाती है! वह देखता है कि कुत्ते की आँख से एक आँसू टपका और उसने उसे बड़ी होशियारी से छिपा

लिया। वह अपने स्वामी के इस आगमन के कारण इतना आह्लादित है कि जैसे अब वह इस सुख का भार न सम्हाल सकेगा और मर जायेगा !

इस समय यूलिसीज़ पक्का और पूरा भिखारी प्रतीत होता है। वह विनम्रता से मेज़ों का चक्कर लगाता है। टेलेमैकस उससे दयापूर्ण व्यवहार करता है, किन्तु अन्य प्रेमीगण उसका अपमान करते हैं, यहाँ तक कि ऐनटीनस उसे मारने के लिये तिपाई हाथ में उठा लेता है। इस प्रकार साधारण अतिथि-सत्कार के नियमों का उल्लंघन और उनकी अवज्ञा के कारण महल में अशान्ति छा जाती है! पिनेलोपी के हृदय में, सहसा ही, इन सब के प्रति इतना अनादर जग-जाता है कि वह उस भिखारी से बातचीत करने को उत्सुक हो-उठती है। उसे जाने क्यों लगता है जैसे कि वह उसके अनुपस्थित पति के विषय में कुछ-न-कुछ अवश्य ही जानता है !

पर्व अठारह—

इसी बीच में यूलिसीज़ नगर के विलासी, युवक आइरस से झगड़ जाता है ! वह उसे लड़ने को ललकारता है। यूलिसीज़ अपने वस्त्र उतार कर अलग रख देता है। इस पर उसके सुगठित शरीर को देखकर ही उसका प्रतिद्वंद्वी इतना त्रस्त हो उठता है कि लड़ने से आनाकानी करता है और अपनी चुनौती वापस ले लेता है। किन्तु, प्रेमीगण उसे लड़ने को बाध्य करते हैं और वह लड़ता है ! फलतः यूलिसीज़ उसे पूरी तरह हरा देता है। एकत्रित जन भिखारी यूलिसीज़ की शक्ति से बड़े प्रभावित होते हैं और उसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं ! वे उत्सुक होकर उससे सैकड़ों प्रश्न करते हैं और उनके सारे प्रश्नों के उत्तर में वह एक ऐसी कहानी कहता है जिससे सत्यता की अपेक्षा सबल और कुशल कल्पना शक्ति का ही अधिक परिचय मिलता है !

दूसरी ओर इसी बीच में पिनेलोपी विश्राम के लिये लेटी रहती है कि मिनर्वा नींद में ही जैसे उसे एक बार फिर जवान बना देती है। उसमें बीसों साल पहले के सौन्दर्य और आकर्षण एक बार फिर आंख खोल देते हैं ! थोड़े समय के बाद वह उठती है, अपने पुत्र टेलेमैकस को बुलवाती है और उसकी भर्त्सना करती है कि उसके रहते उसकी पिता की छत के नीचे इस प्रकार किसी अज्ञात अतिथि का अपमान हो गया ! वह शान्त होती है और फिर कहती है कि वह अपना भविष्य साफ़ देख रही है। यह स्पष्ट है कि उसका पति मर चुका है, अतएव बुरा क्या है यदि उन तमाम प्रेमियों में से वह एक को चुन ले और पति-रूप में स्वीकार कर ले। उसका यह विचार दृढ़ हो चुका है अतएव उनकी दानशीलता की परीक्षा लेने के लिये उसने उनसे विविध प्रकार के उपहार भेंट करने का आग्रह किया है। उन्होंने संकेत पाते ही अनेकानेक उपहार भेंट किये हैं, और कर रहे है। वह उन्हें जोड़ती रही है और जोड़ रही है और इस प्रकार उसके भंडार की अभिवृद्धि होती रही है और हो रही है ! दूसरे ही क्षण उसे लगता है जैसे कि कोई आ रहा है और वह चुप हो जाती है।

टेलेमैकस प्रेमीगणों की ओर आता है और देखता है कि इस सम्भावना पर कि अब उनकी इतने दिनों की प्रणय-परीक्षा समाप्त होगी और सफलता उन्हें हृदय लगायेगी, वे फूले

नहीं समाते और प्रसन्नता में गाते और नाचते है। वह उन्हें गम्भीर होकर सलाह देता है कि अब उन्हें यह नाटक समाप्त करना चाहिये और अपने-अपने घरों को लौट जाना चाहिये।

पर्व उन्नीसं—

प्रेमीगण अपने-अपने घरों को चल देते है। उनके जाने के बाद 'यूलिसीज़' शस्त्रों को हटाने के कार्य में टेलेमैकस की सहायता करता है और वह स्वामिभक्ता दाई घोड़े पर सवार होकर पहरेदारी करता है कि कहीं ऐसा न हो कि कोई महल की स्त्री उधर आ निकले ! इस प्रकार रहस्य पूर्ण ढंग से मिनर्वा, के सहयोग से पिता और पुत्र शस्त्र हटाने का कार्य सम्पन्न करते हैं। और आग के पास तापने के विचार से बैठ जाते हैं !

पिनेलोपी आती है और उससे प्रश्न करती है कि वह कब और कैसे यूलिसीज़ से मिला ! इस बार वह अज्ञात यूलिसीज़ का इतना सही वर्णन करता है कि वह उससे विशेषकर प्रभावित होती है और उस पर दया दिखलाने के विचार से दाई को आदेश देती है कि वह आये और उसके पैर धोये ! दाई आती है और पैर धोने का घरेलू कार्य चलता रहता है कि पिनेलोपी ऊंघने लगती है। उसी क्षण दाई को एक धक्का सा लगता है। उसे अच्छी तरह याद है कि उसके स्वामी के पैर में एक घाव का चिन्ह था, और इस समय जब की वह अपनी हथेली उसके पैर पर फिरा रही है, वह स्पर्श में वैसे ही एक घाव के चिन्ह का अनुभव करती है। इस भावना के आते ही, कि यह भिखारी और कोई नहीं, बस उसका स्वामी है, उसके हाथ से पैर छूट जाता है। पैर के गिरने की ध्वनि होती है और पानी के बरतन के एक किनारे पर पैर के आघात से बरतन का थोड़ा पानी छलक जाता है। वह भावावेश में रोने लगती है। उसके हृदय और बुद्धि में हर्ष और शोक का अंधड़ आ जाता है। उसकी आँखें भर जाती हैं और उसके मुँह से शब्द नहीं निकलते ! वह बड़े प्रयत्न के बाद स्नेह भरे स्वर में यूलिसीज़ से प्रश्न करती है कि क्या वही, और कोई न होकर, उसका स्वामी, उसका बच्चा, उसका प्यारा [1]ऑडीसियस है। किन्तु शीघ्र ही वह उसे शान्त रहने का संकेत करता है कि उसकी उपस्थिति की जानकारी और लोगों को न हो सके ! बेचारी पिनेलोपी ऊँघकर सो जाती है। उसे क्या पता कि यूलिसीज़ उसके पास ही बैठा है और उसे दाई ने पहचान भी लिया है, किन्तु यह आदेश मिल चुका है कि वह जानकर भी अनजान बनी रहे !

पिनेलोपी सोकर उठती है और फिर यह कह कर बात चलाती है कि उसने स्वप्न में देखा है कि उसके सारे प्रेमी मर गये हैं। फिर भी उसकी धारणा है कि सपने दो तरह के होते हैं—एक तो वे जो निद्रा के देवता 'सोमनस' के महल के सींग वाले फाटक से दुनिया में आते और सच होते हैं, दूसरे वे जो धोखा देनेवाले झूठे और छलिया होते हैं और एक हाथी के दांत

[1] यूलिसीज़ को ही ऑडियस कहते हैं। यही कारण है कि इस महाकाव्य का नाम ऑडिसी है

वाले फाटक से होकर निकलते हैं !

पिनेलोपी, तत्काल ही, इन वाक्यों के बाद चुप हो जाती है। वह उठती है और जाकर देखती है कि अतिथि-भिखारी के विश्राम की समुचित व्यवस्था है। इसके बाद वह वहाँ से चली जाती है और, जैसा कि नित्य प्रति का कार्यक्रम हो गया है, अपने भूले प्राणपति के लिए सारी रात विलाप करती है !

पर्व बीस—

यूलिसीज़ अपने स्थान से उठता है और दालान के अगले हिस्से में प्रेमियों के खाने के लिये लाये-गये जानवरों की खालों पर लेट रहता है ! वह देखता है कि कितनी ही सेविकायें चुपचाप महल से बाहर निकलती हैं। ये स्त्रियाँ कब से पर-पुरुषों से प्रेम करतीं रहीं हैं और इनका रहस्य कोई भी नहीं जान सका है !

इसके बाद ऑडीसियस को नींद आ जाती है और मिनर्वा उससे सपने में मिलती है ! वह उसके शरीर में नई शक्ति और नई हिम्मत भर देती है !

सबेरा होता है ! टेलेमैकस यूलिसीज़ को जगाता है और उसके जगने के थोड़ी देर बाद ही एक बार फिर सभी प्रेमी उस घर पर हमला बोल देते हैं ! वे अपने ही हाथों अपने भोजन के लिये लाये गये पशुओं का वध करते हैं, एक बार फिर उस भिखारी-वेष में यूलिसीज़ के साथ दुर्व्यवहार करते और अपनी दुष्ट-प्रकृति का परिचय देते हैं और टेलेमैकस पर भी व्यंग्य कसते हैं किन्तु ऐसा लगता है कि उस पर उनके वाक्यों का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता !

पर्व इक्कीस—

इसी बीच में मिनर्वा पिनेलोपी के पास जाती है। वह उसे समझाती है कि वह अपने प्रेमियों से प्रस्ताव करे कि वे यूलिसीज़ के धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ायें और फिर इस तरह तीर चलायें कि वह बारह छल्लों के बीच से निकल जाये। पिनेलोपी मिनर्वा की सीख के अनुसार काम करने के विचार से अपनी सखियों के साथ, जिनके हाथों में धनुष प्रत्यंचा और वाण हैं, भोजन के बड़े कमरे में प्रवेश करती है। वह प्रस्ताव करती है और उसके प्रेमीगण उसकी उस चुनौती को स्वीकार करते हैं ! पहले ऐनटीनस धनुष को झुकाने में अपना सारा बल लग देता है और फिर बारी-बारी से उसके सभी साथी असफल होते हैं।

इधर लोग इस तरह लगे हैं और उधर वह सुअरों का रखवाला, जो इस बीच बराबर उस कमरे में रहा है, अपने एक साथी के साथ एकाएक कमरे के बाहर चला जाता है। पीछे यूलिसीज़ भी इन दोनों का अनुसरण करता है। उसे उन दोनों की स्वामि-भक्ति पर पूर्ण विश्वास है। अब वह उन्हें पैर के घाव का चिन्ह दिखाकर अपने सही रूप का परिचय देता है और उन्हें उनके कर्त्तव्य का ध्यान दिला कर कर्त्तव्य पूर्ति की युक्ति भी बतलाता है। इसके बाद वह तुरन्त ही कमरे में लौट आता है और चुपचाप देखता रहता है कि वे सब धनुष झुकाने में बुरी तरह व्यस्त हैं ! अन्त में जब अन्तिम व्यक्ति भी कोशिश करने के बाद असफल रहता है तो वह

आगे आता है और कहता है कि अब वह भी प्रयत्न करेगा ! उसके इस दुस्साहस पर सारे उपस्थित जन उसका उपहास करते हैं, किन्तु उनका मुंह खुला का खुला ही रह जाता है जब वे देखते हैं कि यह दुर्दशाग्रस्त भिखारी प्रत्यंचा पर तीर ही नहीं चढ़ा देता प्रत्युत तीर चलाता भी है जो बारहों छल्लों के बीच से होकर निकल जाता है ।

स्वामि-भक्त सेवक कमरे के फाटकों की चौकसी पर तैनात रहते है कि टेलेमैकस भी अपने पिता की ओर आता है और कहता है कि वह भी उस प्रतियोगिता में भाग लेगा !

पर्व बाईस—

दूसरे ही क्षण यूलिसीज़ अपने, भिखारी के, कपड़े उतार कर एक किनारे रख देता है । इस समय वह बहुत गम्भीर दिखाई पड़ता है जैसे कि कुछ गहन समस्याओं और योजनाओं में लीन हो ! वह एकाएक मुड़ता है और धनुष और तीर से भरे तरकस के साथ एक पत्थर की देहली के पास जा-खड़ा होता है । वह अपने तरकस के सारे तीखे तीर अपने पैरों के पास ज़मीन पर फेंक देता है और फिर प्रेमियों को सम्बोधित कर कहता है कि यह अरुचिकर प्रतियोगिता तो समाप्त हो गई किन्तु अब वह कुछ अद्भुत कौशल प्रदर्शित करेगा, यानी यह कि अब वह ऐसे लक्ष्य पर तीर चलायेगा जिस पर कभी किसी धनुषधारी ने तीर न चलाया हो और उसे विश्वास है कि अपोलो की कृपा से वह उसमें सफल भी होगा !

इतना कह कर वह धनुषबाण उठा लेता है और ऐनटीनस को लक्ष्य कर एक घातक बाण चलाता है । ऐन्टीनस का ध्यान इस समय दूसरी ओर है । सोने का मधु-पात्र उसके ओठों से लगा है । अतएव इस समय उसकी बुद्धि में मौत का कोई भी विचार नहीं है, उसके हृदय में मृत्यु सम्बन्धी कोई भी भय नहीं है, और कौन विश्वास करेगा कि इतनी भीड़-भाड़ और दावत के बीच में कोई उसके प्राण-हरण की बात भी सोच सकता है ! अतएव, कोई प्रश्न ही नहीं उठता कि दूसरा व्यक्ति कितना बली, कितना उद्धत और कितना साहसी है । फिर भी, ऑडीसियस का तीर बड़ा सधा हुआ है, वह ऐनटीनस के कण्ठ में लगता है । बाण का फल सीधे चुभता हुआ गले के पार हो जाता है । बस, उसके हाथ से मधुपात्र छूट-गिरता है, वह लड़-खड़ा कर एक ओर को ढह-पड़ता है और उसकी नाक से गहरे रंग के रक्त की लाल धार बह-चलती है !

इस दुर्घटना के साथ ही शेष सारे प्रेमी सचेत हो उठते है और चारों ओर दृष्टि दौड़ा कर शस्त्र और बच कर भाग निकलने के दूसरे साधनों की खोज करते हैं ! अब अन्त में उन्हें पता चलता है कि वे बहुत बुरी तरह घिरे हुये हैं !

शीघ्र ही एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा प्रेमी यूलिसीज़ के बाण का शिकार होता है । इसी समय, यह देख कर कि उसके तरकस में इतने तीर नहीं हैं कि, वह अपने सारे विरोधियों का संहार कर सके, वह टेलेमैकस को अस्त्रशाला से नये अस्त्र लाने का आदेश देता है !

टेलेमैकस जाता है, किन्तु शीघ्रता के कारण उसे दरवाजे बन्द कर देने का ध्यान नहीं रहता, अतएव, जब तक वह लौटे-लौटे, यह प्रेमी समुदाय भी कुछ शस्त्र एकत्रित कर लेता है। इस प्रकार अब कमरे में तब तक संग्राम चलता है जब तक कि वे सब-के-सब समाप्त नहीं हो जाते !

अब सारे द्वार खोल दिये जाते हैं। उसी क्षण यह निश्चय होता है कि उन सारी की सारी विश्वासघातिनी दासियों को फाँसी दे दी जाय। किन्तु इसके पूर्व उन्हें आदेश दिया जाता है कि वे उन तमाम लाशों को कमरे के बाहर उठा ले जायें और कमरा पवित्र करें।

पर्व तेईस—

इस बीच में दाई को एक सुयोग मिलता है और वह उससे लाभ उठाती है। वह पहले अपने स्वामी के तमाम स्वामिभक्त प्रिजजनों और अन्त में सोई-पिनेलोपी को स्वामी के सही-सलामत घर लौट आने की सूचना देती है। वह स्वामिनि को बतलाती है कि उसने उसके पैर के घाव का निशान देखकर इस बात की पूरी तरह पुष्टि करली है कि वह व्यक्ति और कोई न होकर उसका स्वामी ही है। किन्तु पिनेलोपी इतनी सरलता से उस शुभ समाचार पर विश्वास नहीं कर पाती और कल्पना करती है कि कोई देवता आया था जिसने उसके तमाम प्रेमियों का संहार किया है ! अतः वह जाती है और अपने पुत्र को बधाई देती है कि उसका उन सबसे पीछा छूटा जो उसके धन पर अपनी आँखें गड़ाये हुये थे ! किन्तु प्रसन्न हो, उठने के बजाय टेलेमैकस उसकी बड़ी भर्त्सना करता है और प्रश्न करता है कि क्यों ऐसा हुआ कि वह इतने दिनों के बाद प्रवास से लौटे हुये अपने पति और उसके पिता के हृदय से तुरन्त ही नहीं लग गई ! उत्तर में पिनेलोपी कहती है कि वह पहले से बहुत बदल गया है और वह उसे पहिचानने में असमर्थ है, अतः उसका परम सौभाग्य होगा यदि किसी भाँति यह प्रमाणित कर दिया जाये कि वह अपरिचित व्यक्ति और कोई नहीं, केवल उसका पति यूलिसीज़ है।

इस पर यूलिसीज़ सलाह देता है कि सब अपने को पवित्र करें, नये वस्त्र धारण करें और एक भोज में भाग लें, जिसमें वृद्ध, पुराना चरण मधुर-मधुर गीत सुनाये ! व्यवस्था होती है ! इस बीच में वह दाई यूलिसीज़ के साथ-साथ उसकी सेवा में रहती है। सहसा ही मिनर्वा यूलिसीज़ को इतना तेज प्रदान करती हैं कि जब वह दूसरी बार सामने आता है तो जैसे किसी तेजस्वी देवता की भांति खिल उठता है।

भोज समाप्त होता है। अब पिनेलोपी का यह आदेश सुनकर, कि उसकी सेज उस कमरे से हटा कर बरसाती में लगा दी जाय, यूलिसीज़ उसे उलाहना देता है कि उसने अपने पति को नहीं पहचाना ! इसके बाद ही वह उससे पूछता है कि वह पेड़ किसने काट डाला जोकि अपनी जगह बरसाती का एक खम्भा मालूम होता था। इस पेड़ की बात पिनेलोपी और शय्या-परिचारक को छोड़ कर कोई नहीं जानता था ! ..अब सपने को सत्य समझकर वह अपने पति के गले से लिपट जाती है और अबतक न पहचान पाने के लिये उससे बार-बार क्षमा मांगती है।

अब दम्पति परस्पर मिलकर बड़े आह्लादित होते हैं। किन्तु इस सुखद प्रवाह के सम्मुख जैसे एक विशाल शिला आ जाती है! यूलिसीज़ पत्नी से अपने संकल्प की चर्चा करता है कि वह शीघ्र ही फिर यात्रा पर चला जायेगा और फिर तब तक भ्रमण करता रहेगा जब तक कि उस बूढ़े टिरैसियस की भविष्य-वाणी पूरी न होगी। फिर भी वह चांदी की रात कब बीत जाती है, पति पत्नी में कोई भी नहीं जान पाता! सारी रात यूलिसीज़ पिनेलोपी को और पिनेलोपी यूलिसीज़ को पिछले वर्षों की प्रमुख घटनाओं से परिचित कराते हैं कि कब क्या हुआ।

भोर होता है और यूलिसीज़ अपने पुत्र के साथ अपने पिता लैरटीज़ के दर्शनार्थ उसके निवास-स्थान पर जाता है।

पर्व चौबीस—

देवदूत मरकरी का कर्त्तव्य आत्माओं को नर्क के निकृष्ट प्रदेशों (हेडीज़) में पहुँचाना है। उसे अपने पदाधिकार और अपनी ज़िम्मेदारियों का ध्यान प्रतिपल रहता है, अतएव इस समय वह यूलिसीज़ के महल में प्रवेश करता है और अपना डंडा चारों ओर घुमाते हुये प्रेमियों के प्रेतों को आवाज़ देता है। वे सब अपने कुकर्मों पर क्षुब्ध हैं और बड़ा प्रायश्चित करते हैं, किन्तु मरकरी उन्हें नर्क के उन निचले, निकृष्ट प्रदेशों में ले ही जाता है! इस प्रदेश का अध्यक्ष सिलेनियन हरमीज़[1] है। वह अन्य मृतात्माओं के प्रेतों के साथ प्रेमियों के प्रेतों को भी उपस्थित होने की आज्ञा देता है। उसके हाथ में एक सोने का दण्ड है। यह उसे कितने ही प्रेतों की आँख में ठूंस कर उन्हें सुला देता है और दूसरे कितने ही लोगों को उसी के द्वारा नींद से जगा देता है—सब कुछ केवल उसकी इच्छा पर निर्भर है। वह उन सब को भी उस दण्ड से छूता है। वे जगते हैं और इस तरह क्रन्दन करते हैं जैसे कि एक बड़ी अंधियारी रहस्यपूर्ण गुफ़ा में एक चट्टान से नीचे की ओर लटके हुये चमगादड़ अपने एक साथी के छूटकर नीचे गिर पड़ने पर इधर-उधर पर फड़फड़ाते और चीख़ते हैं। अतएव क्रन्दन करती हुई आत्मायें इकट्ठी होकर उसका अनुकरण करती हैं और उसके पीछे-पीछे चलती हैं। वे नम और ऊबड़-खाबड़ रास्तों से गुज़रती हैं और समुद्र की तेज़ धारा, सफ़ेद चट्टान के प्रवेश-द्वार, सूर्य्य के सिंह-द्वारों, स्वप्नदेश के छाया प्रदेशों और कितने ही अन्धकारपूर्ण रास्तों में वह उनके—मार्ग का नियन्त्रण करता है। इस प्रकार शीघ्र ही वे प्रेत मुर्दों की दुनिया के उस भाग में आ जाते हैं, जहाँ वे आत्मायें रहती हैं जिनके परिश्रमपूर्ण जीवन का कष्टकाल समाप्त हो चुका है। यहाँ ध्यान न देने पर भी वे देखते हैं कि ऐजैक्स एकीलीज़ से बड़े प्रभावपूर्ण शब्दों में अपनी अन्त्येष्टि-क्रिया का वर्णन कर रहा है। उसका कथन है कि कभी भी, किसी

[1] माया का पुत्र, जिसके पैर में और सिर में पर है, जिसके हाथ में एक डंडा है, जिसे ताड़ के पेड़ और कुछ मक्खियाँ बहुत प्रिय है और जो सौभाग्य, वाणिज्य-व्यवसाय और लड़कों का देवता है।

की भी अन्त्येष्टि-क्रिया इतने ठाट-बाट से सम्पन्न नहीं हुई ! सहसा ही एकीलीज़ के प्रश्न के उत्तर में वह यूलिसीज़ की धनुष-सम्बन्धी घटना की चर्चा करता है और कहता है कि पिनेलोपी ने अपने प्रेमियों के सारे षड्यन्त्रों का सदैव ही बड़ी धीरता से विरोध किया है !

× × ×

इधर इसी बीच में यूलिसीज़ अपने पिता के खेतों में आ पहुँचता है। वह देखता है कि उसका पिता पेड़ों में व्यस्त है। पहले वह उसे अपना वास्तविक परिचय नहीं देता, और अपने को उस पर्यटक यूलिसीज़ का मित्र बतलाता है, किन्तु इस पर भी आग्रह करता है कि वह तैयार हो और अपने महल में लौट चले। पिनेलोपी की भाँति ही लैरटीज़ भी कुछ समझ नहीं पाता। किन्तु तुरन्त ही यूलिसीज़ कुछ पेड़ों को विशेषतया पहिचान कर उनकी ओर इशारा करता है और कहता है कि ये वही पेड़ हैं जो उसने उसे उसके बचपन में दिये थे। यही नहीं वह उसे अपने पैर के घाव का निशान भी दिखलाता है। अब वृद्ध पिता को कुछ समझने को बाक़ी नहीं रह जाता, उसे विश्वास हो जाता है कि वह उसके पुत्र का मित्र नहीं, प्रत्युत उसका पुत्र यूलिसीज़ ही है, अतएव उसके घुटने ढीले पड़ जाते हैं और उसका हृदय द्रवित हो-उठता है ! वह उसे अपने हृदय से लगाने के लिये अपने बाहु पसार देता है और प्रसन्नता का वेग न सम्हाल सकने के कारण मूर्छित होकर गिरने लगता है ! यूलिसीज़ लपक कर उसे सहारा देता है। इस प्रकार पिता लैरटीज़ कितने ही वर्षों से संकट-ग्रस्त, देवता-सदृश, अपने पुत्र यूलिसीज़ के गले से चिपट जाता और स्नेहाश्रु बहाता है !

अन्त में इस पुनर्मिलन के उपलक्ष्य में एक दावत होती है, जिसमें सारे इथाकर-निवासी भाग लेते और अपने स्वामी के लौटने पर प्रसन्नता प्रकट करते हैं ! इसी बीच में प्रेमियों के कुछ मित्र अपने मित्रों के मारे जाने की बात सुनते हैं और पिता और पुत्र को मार कर अपने मित्रों के वध का बदला लेने का इरादा करते हैं। किन्तु मिनर्वा और जूपिटर की माया के कारण इस समय यह पिता-पुत्र ऐसे अजेय सिद्ध होते हैं कि उन पर नज़र पड़ते ही हमला करने वालों के छक्के छूट जाते हैं और वे सुलह करने पर विवश हो जाते हैं। इस प्रकार इथाका में फिर सुख और शान्ति के दिन लौट आते हैं।

यही 'ऑडिसी' का अन्त है।

———

३—लैटिन महाकाव्य—

लैटिन-साहित्य का मूल उद्गम यूनानी-साहित्य है। लैटिन-साहित्य यूनानी साहित्य का चिर-ऋणी रहेगा। उसके सर्वश्रेष्ठ महाकव्यों में अधिकांश या तो यूनानी रचनाओं के अनुवाद हैं या उनसे अनुप्राणित। उदाहरण के लिये 'इलियड' और 'ऑडिसी' के अनेक अनुवाद हमारे सामने हैं, जिनमें प्रथम प्रमुख और प्रसिद्ध अनुवाद रोमन-नाटकीय काव्य एवं रोमन-महाकाव्य के पिता 'लिवियस ऐंड्रानिकस' का है। इसका जन्म-काल दूसरी या तीसरी शताब्दि ई० पू० कहा जाता है! इसने अड़तीस पर्वों के एक दूसरे इतने ही अधिकारी महाकाव्य की भी रचना की थी जिसमें रोमन-इतिहास को पद्य-बद्ध करने का प्रयत्न किया था, किन्तु दुःख है कि वह अप्राप्य है।

एक शताब्दी के बाद एक दूसरे कवि 'निवियस' ने 'साइप्रियन इलियड' की रचना की और प्रथम प्यूनिक-युद्ध विषयक 'बेलम प्यूनिकम' नामक एक वीर काव्य की भी, जिसके कुछ अंश ही मिलते हैं। इसके बाद हमारे युग के पहिले की दूसरी शताब्दी में ईनियस ने देशभक्ति से प्रेरित होकर 'अनल्स' के १८ पर्वों में रोम की उत्पत्ति के गीत गाये। परन्तु इस कविता के भी कुछ ही भाग शेष हैं। इसी समय 'होस्टियस' ने 'इस्ट्रिया' शीर्षक महाकाव्य की रचना की लेकिन वह भी नष्ट हो गया। 'ल्यूक्रीशियश' की ऑन दी नेचर ऑफ़ थिंग्स, महाकाव्य इस क्रम में आता है। यह ज्योतिष-ज्ञान प्रधान, भौतिक महाकाव्य का एक अच्छा उदाहरण समझा जाता है।

जहां तक महाकवियों का प्रश्न है ऑगस्टन-युग' इस सम्बंध में विशेषतया भाग्यशाली और सम्पन्न युग कहा जा सकता है! 'ऐरगोनॉटिका' का अनुवादकर्त्ता और जूलियस सीज़र पर एक लम्बी कविता का लेखक 'प्यूवलियस टेरेनटियस वॉरो', 'ल्यूसियस वारियस रूफ़स' जिसकी प्रायः सभी कवितायें खो चुकी हैं, और सबसे महान 'वरजिन', 'इनीड' जिसकी महानतम अंतिम कृति है, और दूसरी कई अन्य महान आत्मायें इसी युग की विभूति हैं। इस सर्व श्रेष्ठ लैटिन काव्य 'इनीड' के बाद ल्यूकन की 'फ़ारसेलिया' उल्लेखनीय है! इसमें कवि ने 'सीज़र' और 'पॉम्पी' की पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा का वर्णन किया है। उसके समकालीन 'स्टैटियस' ने थिबैस और अधूरी 'एकीलीज़'— में सर्वयुग-सम्मानित 'थीब्ज़ चक्र', और 'ट्राय-चक्र', को अपना आधार माना है। इसी युग में 'सिलयस इटालियस' ने दूसरे प्यूनिक-युद्ध पर एक लम्बा काव्य लिखा और 'वलैरियस फ्लैकस' ने 'ऐरगोनाटिका' का अनुवाद किया।

हमारे यूग की दूसरी शताब्दी में 'क्विंटियस करटियस' ने सिकन्दर पर एक महाकाव्य

लिखा और तीसरी शताब्दी में 'जूवेंकस' ने ईसा के जीवन को विषय मानकर प्रथम ईसाई-महाकाव्य की रचना की! यद्यपि तब तक ईसाई-धर्म इटली में पूर्णतया स्थापित हो चुका था तो भी पांचवीं शताब्दि में क्लाडिएनस ने अपने काव्य में दैत्यों के युद्ध और 'परसिफ़ोनी'[१] के अपहरण आदि का वर्णन किया और एक बार फिर जैसे पीछे लौटकर यूनानी-पौराणिक-कथा से लाभ उठाया।

इस समय के बाद से फिर जैसे रोमन-साहित्य का अस्तित्व ही नहीं रहा, क्योंकि इसके बाद का कोई भी महाकाव्य ऐसा नहीं है जिसका उल्लेख किया जा सके, यद्यपि ऐसा कहना तो अन्याय होगा कि मध्यकालीन कवियों ने महाकाव्य रचना के कोई प्रयास ही नहीं किये, प्रत्युत यह कि उन्होंने कई प्रयत्न किये, यह और बात है कि वे असफल रहे।

———

[१] जूपिटर की पुत्री जिसका अपहरण हेडीज़ ने किया था और जिसने बाद में हेडीज़ की पत्नी बनना भी स्वीकार कर लिया था।

ट्राय से भागते समय 'इनियस' और उसका पिता

'इनीड'–इनीयस की कथा–

पर्व एक–

हमें अपनी इस अभिलाषा की सूचना देने के बाद कि वह रोमनों के वीर पूर्वजों की वीर-गाथाओं का गुणगान करना चाहता है, आरम्भ में कवि बतलाता है कि धधकते हुए ट्राय से इनीयस के बच-निकलने के सात साल बाद अफ्रीका के तट से दूर समुद्र में एक भयंकर तूफ़ान आता है और उसका बेड़ा ख़तरे में पड़ जाता है। ऐसा लगता है जैसे कि जहाज़ पृथ्वी और स्वर्ग-नर्क की दूरी का अन्दाज़ लगा रहा है और तूफ़ान उससे कह रहा है कि वह उसे एक क्षण भी देने को तैयार नहीं है, प्रत्युत उसे अब नष्ट करता है और तब नष्ट करता है। यह तूफ़ान [1]जूनों के आग्रह पर इओलस[2] के झगड़ालू लड़कों के द्वारा उठाया गया है! किन्तु ऊपर के विप्लव से व्याकुल होकर और इनीयस की प्रार्थनाओं से द्रवित होकर समुद्र का देवता नेप्च्यून समुद्र-तल से उभरता और ऊपर आता है। वह क्रोधित होकर हवाओं को आज्ञा देता है कि वे अपनी गुफ़ाओं की राह लें, और समुद्री-परियों और मछली के आकार के अन्य समुद्री उपदेवताओं को बुलाकर उन्हें आदेश देता है कि वे इनीयस की सहायता और उसकी रक्षा करें। इसके बाद इनीयस के सात जहाज़ एक शीघ्र ही सुरक्षित खाड़ी में शरण ग्रहण करते और लंगर डालते हैं। वह अपने मित्र [3]एकेटीज़ के साथ धरती पर उतरता है और पड़ाव डालने के लिये ठीक स्थान की खोज में निकल पड़ता है। इस प्रकार इधर-उधर भटकते हुए ये दोनों मित्र अपने और अपने साथियों के लिए बारह बारहसिंगों का शिकार करते हैं! वे लौटते है, भोजन करने की व्यवस्था होती है और भोजन करने के लिए बैठते ही हैं कि इनीयस अपने साथियों को प्रसन्न और उत्साहित करने के विचार से उन्हें विश्वास दिलाता है कि उन जैसे वीरों की सन्तानों का महान शक्तिशाली और पराक्रमी होना निश्चित है!

---

[1]जूपिटर की पत्नी। [2]थिसैली का राजा जिसे जूपिटर ने हवा पर अनुशासन करने का अधिकार दे दिया था! [3]रोमनों को पूर्वजों का चरित्र-नायक जिसने पहिले तो ट्राजन युद्ध में भाग नहीं लिया, किन्तु जब एकीलीज़ ईडा पर्वत पर हमला किया तो उसने भी उससे लोहा लिया– ऐंकाइसीज़ का पुत्र।

सौन्दर्य की देवी वीनस अपने पुत्र इनीयस को ट्राजनों के विषय में ऐसी भविष्यवाणी करते देखकर बड़ी चिंतित हो उठती है। वह उसी क्षण शीघ्र ओलिम्पस पर्वत पर जाकर जूपिटर को उसके इस वचन की याद दिलाती है कि वह ट्राजन-जाति के इन प्रतिनिधियों की भरसक रक्षा करेगा। जूपिटर चूमकर यह विश्वास दिलाता है कि थोड़ा इधर-उधर भटकने और कुछ संकटों का सामना करने के बाद इनीयस इटली पहुंच जायेगा, जहाँ वह अल्बा-लॉंगा नामक नगर की नींव डालेगा। देवताओं का राजा अपने इस वाक्य को पूरा करने के बाद उस वीर के वंश के भविष्य का पूरा चित्र वीनस के सामने रख देता है और कहता है कि इस वीर की मृत्यु के लगभग तीन सौ साल बाद युद्ध के देवता मार्स से इसके वंश की 'वेस्टल इलिया' के जोड़ुआ लड़के होंगे। इन जोड़ुआ लड़कों में से एक 'रोमलस' रोमनामक नगर बसायेगा। रोम के वीर अपनी वीरता और अपने पराक्रम के लिए सदैव ही प्रसिद्ध रहेंगे। यहाँ जन्म लेकर सीज़र संसार को गौरव प्रदान करेगा—उसकी विजयों की सीमायें महासागर होंगे और उसके यश की परिधि होगा आकाश !

इस प्रकार वीनस की शंकाओं का समाधान करने के बाद जूपिटर देवदूत मरकरी को आदेश देता है कि वह कारथेज जाये और महारानी डिडो से मिलकर उससे कहे कि वह इन ट्राजन अतिथियों का समुचित समादर करे !… …

× × ×

इनीयस सारी रात आकाश या तारे गिनता रहता है ! उसे नींद नहीं आती। सबेरा होते ही वह उठता है और अपने मित्र के साथ अन्वेषण के लिए चल पड़ता है। जङ्गल में अकस्मात् उसकी भेंट उसकी देवी माता से होती है। वह इस समय 'फ़ोयनीशिया' के प्राचीन नगर 'टायर' की शिकारिन के रूप में हैं। वह उसे पहिचान नहीं पाता और उसे कोई देवी समझकर उससे बहुत से प्रश्न करता है। उत्तर में देवी उसे सूचित करती है कि उसने डिडो के राज्य में डेरा डाल रक्खा है। यह डिडो कभी टायर की महारानी थी, जो एक स्वप्न में यह देखने-सुनने पर कि उसका पति उसके भाई के द्वारा मार डाला गया और वह उसकी जीवन-समाप्ति के लिये भी षड़यन्त्र रच रहा है, अपने कुछ मित्रों और धन के साथ टायर से भाग आई है ! इसे बहुत युक्ति करने पर अफ़्रीका के इस भाग में शरण मिल गई है ! यहाँ उसने बीरसा या कारथेज नामक नगर बसा लिया है ! इनीयस इतनी सूचनाओं के बदले में उस अपरिचित शिकारिन को अपना नाम बताता है और यह भी कि एक तूफ़ान के कारण उसके सारे जहाज़ अस्त-व्यस्त ही नहीं हो गये, प्रत्युत एक दूसरे से बिछुड़ भी गये हैं केवल सात ही बचे हैं जो उस स्थान के समीप ही लंगर डाले-पड़े हैं। जहाज़ की बात मुँह से निकलते ही वह अपने साथियों के लिये, उसी क्षण उत्सुक हो उठता है, किन्तु वीनस उसकी उत्सुकता को शान्त करने के लिये उसका ध्यान सिर पर उड़ते हुये बारह हंसों की ओर आकर्षित करती है और कहती है कि ये इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि उसके जहाज़ सकुशल हैं।

बात चीत इतनी देर तक चलती रहती है फिर भी इनीयस के मन में एक बार भी यह विचार नहीं आता कि वह शिकारिन और कोई न होकर उसकी माँ वीनस है ! किन्तु जैसे

ही वह उससे विदा होने को घूमती है, वह उसे पहचान लेता है और चाहता है कि वह उसे चूम ले, परन्तु वह एक क्षण में ही अदृश्य हो जाती है।

अब दोनों ट्राजन वीनस द्वारा बताई-गई दिशा में बढ़ते हैं और शीघ्र ही कारथेज नगर में आ पहुँचते हैं। इसके सौन्दर्य से इनकी आंखों में चकाचौंध पैदा हो जाती है। वे देखते हैं कि नगर निवासी बड़े अध्यवसायी और परिश्रमी हैं, यही कारण है कि इतने थोड़े समय में ही नगर ने इतनी उन्नति कर ली है। नगर के बीचों बीच मन्दिर है, जिसके पीतल के फाटक ट्राय के युद्ध के दृश्यों से सुसज्जित हैं। इनकी निगाह इस मन्दिर पर पड़ती है कि एक दैवी नीहार उन्हें दूसरों की आँखों से ओझल कर देता है और वे भरी आंखों से घंटों तक विगत पराक्रम के उन स्मृति-चिन्हों को घूरते रहते हैं। यह स्थित तब तक रही-ही आती है जब तक कि डिडो स्वयं उधर से नहीं गुज़रती !

डिडो राज-दरबार में जाकर सिंहासन पर आसन ग्रहण करती है और आदेश देती है कि कुछ शीघ्र ही पकड़े गये बन्दी उसके सम्मुख उपस्थित किये जायें। वे लाये जाते हैं। इनीयस इनमें अपने लुप्त जहाज़ के कुछ नायकों को देखता है ! वह उन्हें बड़ी सरलता से पहिचान लेता हैं और खुशी से उसकी बाछें खिल उठती हैं। वह सुनकर भी अनसुना कर देता है। वे सब रो-रो कर महारानी से तूफ़ान का वर्णन करते हैं। उनका कहना है कि उस तूफ़ान ने उनका नेता उनसे छीन लिया। किन्तु वह हर्ष से फूला नहीं समाता जब देखता है कि उनकी सारी गाथा सुनने के बाद महारानी उनसे बहुत प्रभावित होती है और आदेश देती है कि उनके विश्राम और उनकी सुविधाओं की ओर विशेषध्यान दिया जाय और उनके नेता की खोज की जाय।

उपयुक्त समय आने पर उनके बीच का छिपानेवाला बादल छंट जाता है और तब उसी क्षण डिडो अनुभव करती है कि उसके दरबार में कोई दो अपरिचित उपस्थित है। वीनस चाहती है कि इनीयस पर महरानी का अनुग्रह हो, अतएव इस समय वह उसे विशेष सौन्दर्य एवं आकर्षण प्रदान करती है। महरानी के द्वारा बुलाये जाने पर इनीयस आगे बढ़ता है, अपना परिचय देता है और महरानी के प्रति समुचित समादर प्रदर्शित करने के बाद अपने बिछुड़े हुये साथियों को हृदय से लगाता है। महारानी ऐसे वीर को अपने राज्य में पाकर बड़े गर्व और हर्ष का अनुभव करती है और सम्मानार्थ उसे एक भोज में निमन्त्रित करती है। इनीयस महारानी का निमन्त्रण प्रसन्नता से स्वीकार करता है। वह अपने मित्र एकेटीज़ से आग्रह करता है कि वह तट पर जाकर सबको सूचित करदे कि वह और उसके दूसरे साथी सकुशल हैं। इसके बाद वह उससे यह अनुरोध भी करता है कि वह उसके पुत्र यूलस अथवा ऐसकैनियस को उसके पास भेज दे।

वीनस अपने पुत्र को विशेष रूप एवं आकर्षण प्रदान करने के बाद भी यह विश्वस्त रूप से कहने में असमर्थ है कि वह महारानी अपनी ओर आकर्षित कर ही लेगा। अतएव, इस

चीज को पूरी तरह समझ लेने के लिए ही ऐसकैनियस के स्थान पर वह अपने पुत्र क्युपिड[1] को उसके पास भेज देती है और उसके पुत्र को अपने एक प्रिय विश्राम स्थल में भेजने की व्यवस्था कर देती है।

क्यूपिड ट्राजन-कुमार के रूप में इनीयस के पास पहुँचता है। भोज चल रहा है। डिडो उसे लपक कर बड़े प्यार से अपने बाहुओं में कस लेती है और बड़े लाड़ से गोदी में बैठा-लकर उससे इस तरह बातें करती है जैसे कि वह स्वयं उसकी माँ हो। सहसा ही उसके विगत पति की मधुर स्मृतियाँ एक-एक कर धूमिल पड़ने लगती हैं, और उनके स्थान पर उसके मन में प्रबल इच्छा उठती है कि जिस तरह भी हो वह इनीयस को अपना पति बना ले।

पर्व दो—

बहुत आग्रह किये जाने पर इनीयस ट्राय के पतन से सम्बंधित कुछ चर्चा और अपनी आत्म-कथा आरम्भ करता है! सारे उपस्थित समुदाय की आँखें उसपर टिक जाती हैं। वह बहुत मनोरंजक ढंग से वर्णन करता है कि यूनानियों ने लकड़ी के एक बहुत बड़े घोड़े की व्यवस्था की। उनके सबसे बहादुर सेना-नायक उसके अन्दर छिप गये और शेष सेना ने अपने जहाज़ों के पाल खोल दिये जैसे कि वे अपने घरों की ओर की प्रस्थान कर रहे हों। किन्तु वास्तविकता यह नहीं थी, उनके जहाज़ों ने वहाँ से चलकर पास के एक द्वीप के पीछे लंगर डाल दिये। इनके बाद वे प्रतीक्षा करते रहे कि उन्हें सूचना मिले और वे ट्रॉय को जीतने के लिये लौट पड़े। उधर ट्राजनों ने यह सोचकर कि शत्रु विदा हो चुके हैं बड़ी प्रसन्नता का अनुभव किया। वे सब शीघ्रता से समुद्र-तट पर आये। यहाँ उन्हें लकड़ी का एक बहुत बड़ा घोड़ा मिला, जिसे वे उछलते-कूदते अपने नगर की ओर घसीट-ले-चले जैसे कि वह उनकी विजय का पुरस्कार हो। परन्तु सहसा ही उनके पुरोहित लेओकून ने घोड़े पर भाले का प्रयोग करने पर अनुभव किया कि वह खोखला है। उसने ट्राजनों से कहा कि घोड़ा खोखला है और उसके अन्दर शत्रुओं का छिप रहना असम्भव नहीं है अतएव उन्हें उसे छोड़कर भाग जाना चाहिये। इसपर इस अप्रत्याशित वीरतापूर्ण कार्य और शुभ लक्षणों के अभाव में ट्राजन बहुत बुरी तरह डर गये, किन्तु शीघ्र ही पास के दल-दल में एक भागा-हुआ यूनानी उनके हाथ लग गया, जिसे उन्होंने विवश किया कि वह उस घोड़े का रहस्य और उसका प्रयोजन बतलाये। यह भागा-हुआ यूनानी सिनन था। उसने पहिले तो बहाना किया कि यूनानियों ने उसके साथ बड़ा अन्याय किया है, किन्तु बाद में जैसे भेद खोल दिया कि यदि वे घोड़े को अपने नगर में ले जायेंगे तो उनके सुरक्षित शत्रु बड़े ख़तरे में पड़ जायेंगे, क्योंकि वह घोड़ा समुद्र के देवता नेप्टयून को उपहार-स्वरूप अर्पित किया गया और इसीलिये इस किनारे छोड़ भी दिया गया था।

इसे सुनने के बाद ट्राजन यूनानियों के विनाश की कल्पना और सम्भावना मात्र से

---

[1] कामदेव।

झूम उठे और अब उस घोड़े को शहर के भीतर ले जाने के लिये पहले से भी अधिक उत्सुक हो-उठे। उन्हें चिन्ता न थी। नगर की एक आध दीवारें गिर जातीं तो गिर जातीं, ढह जातीं तो ढह जातीं किन्तु घोड़े का नगर के अन्दर पहुंचना आवश्यक था। इसी बीच में भीड़ के एक-भाग ने पुरोहित लेओकून को घेर लिया! वह सर्वसाधारण नगर निवासियों की ओर से त्राण के लिये ईश्वर को धन्यवाद देने जा रहा था। परन्तु वह जब अपने दो पुत्रों के साथ बलिवेदी पर खड़ा हुआ तो दो बड़े-बड़े सांप नीचे से निकले जो उस पुरोहित और उसके दोनों पुत्रों के चारों ओर कुँडली मार कर बैठ गये। शीघ्र ही उन्होंने उन्हें बुरी तरह अपने बन्धन में जकड़ लिया। पिता और पुत्र ने बड़ी शक्ति लगाई और अपने को मुक्त करने के बहुत प्रयत्न किये, किन्तु सब व्यर्थ! शीघ्र ही उनका शरीर रक्त-रंजित हो गया, और उन्होंने चिल्ला-चिल्ला कर आसमान के उन देवताओं की दुहाई देनी आरम्भ कर दी जो कभी भी किसी के भी दुःख-सुख की ओर ध्यान नहीं देते। इस दुर्घटना से ट्राजनों ने तुरन्त ही यह नतीजा निकाला कि पुरोहित को उस घोड़े पर उस प्रकार हमला करने के लिये दंड मिल रहा था। तबतक घोड़ा नगर के अन्दर प्रवेश कर रहा था, अतएव भविष्य-द्रष्टा, राजकुमारी केसॉन्ड्रा ने उन्हें आनेवाले संकटों से सचेत करने के बाद उनसे शहर के अन्दर न घुसने का अनुरोध किया। लेकिन किसी ने उसकी सलाह को अधिक महत्व नहीं दिया और घोड़ा शहर में पहुँच गया।

इतने में शाम हो गई और थोड़ी ही देर में रात ने सारे शहर पर एक काली चादर डाल दी। इस रात को दस वर्ष के बाद पहले दिन लोग बिस्तरे पर लेटे और लेटते ही गहरी नींद में सो गये, कंडे हो गये। इसमें आश्चर्य की कोई बात न थी और ऐसा होना स्वाभाविक ही था क्योंकि पिछले दस वर्षों में उन्होंने जी-तोड़ परिश्रम करने के बाद एक दिन भी विश्राम न किया था। अतएव आधी रात होने पर सिनन वहाँ आ पहुँचा। उसने लकड़ी के घोड़े के द्वार खोल दिये और यूनानी बाहर निकल आये! इसी बीच में बिना किसी प्रकार के शोर-गुल के उनके पास के द्वीप पर टिके अन्य साथी भी उनसे आकर मिल गये और सहसा ही, उस अरक्षित शहर पर पूरी तरह छा गये, जिसकी रक्षा का नगर-निवासियों ने कोई भी प्रबन्ध न कर रक्खा था।

इस प्रकार इनीयस डिडो से सविस्तार अपनी अशान्त निद्रा का वर्णन करता है और आगे कहता है कि जब वह इस प्रकार घोड़े बेचकर सो रहा था तो मृत हेक्टर की आत्मा ने उसे स्वप्न देकर आदेश दिया कि वह शीघ्र उठे और अपने परिवार के साथ भाग-निकले क्योंकि इधर वह सो रहा था और उधर यूनानियों ने पूरी तरह ट्राय पर कब्ज़ा कर लिया है। इसी समय ज़ोर की तालियों की आवाज़ ने उसे जगा दिया और जगने पर उसने अनुभव किया कि उसने स्वप्न में जो कुछ सुना था वह पूर्णतया सत्य था! अब क्या था, उसके पैर के नीचे से धरती खसक गई, फिर भी वह धैर्य से राजा की शरीर-रक्षा के लिये शीघ्रता से शाही-महल की ओर चल पड़ा। राह में उसने और उसके साथियों ने मरे-पड़े यूनानियों के कवच उनके शरीर से उतारे और उन्हें स्वयं धारण किया ताकि वे सरलता से महल तक पहुँच जायें, रास्ते में कोई बाधा न आये। इस प्रकार वे वहाँ पहुँचे और ऐसे समय पर पहुँचे जब कि एकीलीज़ के छोटे

लड़के ने शाही कमरे में घुस कर उसके सब से छोटे पुत्र को मार डालने के बाद बूढ़े बादशाह प्रायम का भी वध कर डाला था—, वे वहाँ पहुँचे और तब पहुँचे जब कि यूनानी ट्राजन स्त्रियों को बुरी तरह घसीट रहे थे और बन्दी बना रहे थे, और वे असहाय होकर दया और कृपा की भीख माँग रही थीं; और वे वहाँ पहुँचे और तब पहुँचे जब कि केसॉन्ड्रा पागलों की-सी अवस्था में यूनानियों को श्राप दे रही थी कि जब वे वापस लौटें तो या तो उन्हें समुद्र निगल ले, अथवा उन्हें ऐसी कठिनाइयों का सामना करना पड़े कि उनका अस्तित्व ही न रह जाये !

'अरे ज़रा देखो तो इन प्रायम के स्वजनों को
और, उधर देखो, उसके लहराते केश पकड़ कर,
केसॉन्ड्रा को वे घसीटते हैं किस निर्दयता से !
उसकी खोई-खोई आँखें गड़ी हुई हैं अम्बर पर,
जैसे माँग न्याय की करती हों वे, स्वर्ग न सुनता हो !
उसकी आँखें, हाय भला क्या करतीं जब कि ज़ंजीरों ने ।
'औ', रस्सों ने बुरी तरह से उसके हाथ जकड़ डाले—
हाथ, गोकि वे कोमल,
ला सकते हैं स्वर्ग धरा पर,
उनमें इतनी ताक़त है !'

इतनी कथा कह चुकने के बाद इनीयस सहसा ही, एक क्षण के लिये रुकता है और फिर गद्गद्-कण्ठ से कथा आरम्भ करता है कि प्रायम के शरीरान्त और स्त्रियों की उस दुर्दशा ने उसे उसके पिता, पुत्र और उसकी पत्नी की याद दिलाई और वह अपने निवास-स्थान की ओर तेज़ी से बढ़ चला ! जब वह इस प्रकार तेज़ी से अपने पैर बढा था, उसकी माँ ने उसकी आँखों से नश्वरता का पर्दा हटा दिया। उसने देखा कि समुद्र का देवता नेप्ट्यून, विवेक की देवी मिनर्वा और यूनानी देवताओं की महारानी आदि बड़े शक्ति और बड़े परिश्रम से ट्राय के विनाश में यूनानियों की सहायता कर रहे हैं। इसके बाद ही उसकी माँ वीनस ने उसे चेतावनी दी और आदेश भी कि अभी समय है, वह शीघ्रता से अपने घर जाये और घर पहुँच कर अपनी और अपने स्वजनों की रक्षा करे। इस पर उसने और शीघ्रता की और घर पहुँच कर अपने पिता एंकाइसीज़ से घर छोड़कर भाग-चलने का प्रस्ताव किया। पहले तो बूढ़ा टालमटोल करता रहा, किन्तु जब उसने अपने पौत्र के सिर पर एक चमकदार, लाल लपट लहराती देखी तो यह अनुमान किया कि देवता उसकी जाति के पक्ष-ग्रहण करने का निश्चय कर चुके हैं, अतएव वह शीघ्र ही घर छोड़ने पर राज़ी हो गया ! किन्तु वह बड़ा कमज़ोर था और मुश्किल से तेज़ी से चल सकता था, अतएव इनीयस ने उससे पारिवारिक देवताओं को मनाने का आग्रह किया और उसे अपनी पीठ पर लादा। इसके बाद उसने अपने पुत्र का हाथ अपने हाथ में लिया, पत्नी और नौकरों से कहा कि वे उसके पीछे पीछे आयें, और सामने पथ पर तेज़ क़दम बढ़ाये ! इस प्रकार बोझ से दबा-दबा वह किसी प्रकार समुद्र के किनारे के जीर्ण मन्दिर के पास पहुँचा। यहाँ पहुँचने पर

उसे मालूम हुआ कि सारे स्वजन उसके साथ है, किन्तु उसकी पत्नी पीछे रह गई है इसलिये वह बहुत चिन्तित और उत्सुक हो उठा ! थोड़ी देर बाद उसने अपने पद-चिह्नों का अनुकरण कर पीछे लौटना आरम्भ किया। इस भाँति वह थोड़ी ही दूर आया होगा कि उसे एक प्रेतात्मा मिली। उसने उसके आगे बढ़ने में आपत्ति की और कहा कि व्यर्थ है, वह उन ज़िन्दा लोगों में अपनी पत्नी को न खोजे, बल्कि शीघ्रता से [1]हेस्पीरिया की ओर क़दम बढ़ाये। वहाँ एक नई पत्नी और एक नवीन परिवार उसकी प्रतीक्षा में (इनीयस) है !

'अब जब कि आँसुओं से उसके वे गाल गये थे भीग,
और आ रही थीं ओठों तक जाने कितनी बातें,
वह प्रेतात्मा) अदृश्य हो रात हुई !
तीन बार कोशिश की, वह मिल जाती और लिपट जाता,
पर तीनों ही बार किया उपहास व्यर्थ की छाया ने,
उसने पूछा प्रश्न कि वह थी हवा याकि निद्रा की ज्योति ?'

तत्पश्चात वह कुछ देर तक गुमसुम खड़ा रहा और अपनी पत्नी और अपने परिवार विषयक भविष्य वाणियों पर विचार करता रहा, किन्तु शीघ्र ही, यह सोच कर कि उस प्रेतात्मा ने जो कुछ कहा है, सच ही है, तट पर लौट आया, जहाँ उसके साथी उसकी प्रतीक्षा में थे। यहाँ पहुँच कर उसने शीघ्र ही तट छोड़ने की तैयारी की।

पर्व तीन—

इनीयस उसी प्रकार तन्मय हो कर, अपनी कथा कहता रहता है कि ट्राय के समुद्र तट को छोड़ने के थोड़े ही समय बाद उसके बेड़े ने काले-सागर की सीमाओं के समीप के थ्रेस नामक प्रदेश के समुद्र-तट पर लंगर डाला। यहाँ वह एक बलिदान की तैयारी करते समय बुरी तरह डर गया क्योंकि उसने देखा कि उसके द्वारा अभी अभी काटे-गये पेड़ों की जड़ों से ख़ून बह रहा है ! शीघ्र ही पाताल से एक ध्वनि हुई, जिसने उसके भय का निराकरण किया और उसे उस दृश्य का रहस्य समझाया कि एक बार इस प्रदेश के निवासियों ने एक ट्राजन को लूटा और उसे भालों से मार डाला। कहना न होगा कि इस ट्राजन के हृदय में हुये घावों से ये पेड़ उग आये !

फिर भी, वह नहीं चाहता था कि वह ऐसे भयानक पड़ोस में रहे अतएव उसने जहाज़ों के पाल चढ़वा दिये और सूर्य्य के देवता अपोलो के प्रिय प्रदेश डेलॉस की ओर रुख़ किया ! वह यहाँ पहुंचा और उसके वहाँ की धरती पर क़दम रखते ही एक आकाश-वाणी हुई कि वह केवल उस प्रदेश में बस सकेगा, जहाँ से उसके पूर्वज आये थे। उसके वृद्ध पिता ने इसका मतलब यह लगाया कि उसे भूमध्य-सागर के एक द्वीप क्रीट की ओर बढ़ना चाहिये, अतएव सारे जहाज उसी दिशा में चल पड़े ! परन्तु वे थोड़ी ही मंज़िल तय कर पाये होंगे कि उसके (इनीयस के)

[1]इटली का पुराना नाम

परिवारिक देवताओं ने उसे सूचित किया कि उसका अंतिम लक्ष्य हेस्पीरिया ही होना चाहिये ! जहाज़ आगे बढ़े कि एक तूफ़ान आ गया। उसने तीन दिन तक इस तूफ़ान का बड़ी वीरता से सामना किया। इसके बाद ही उसे हारपीज़ नामक उन भयंकर और आश्चर्यजनक राक्षसों के प्रदेश का तट मिला, जिनका आधा शरीर स्त्रियों का था और शेष आधा चिड़ियों का, और जो भोजन परोसे जाने के बाद ही हर बार सारा का सारा भोजन अपवित्र कर देते थे। उनके इस कृत्य पर उसे बड़ा क्रोध आया। उसने उन पर हमला किया और तब उन सब ने भविष्य-वाणी की कि जब वह भूख से व्याकुल होकर अपने पास के बैठे सारे साथियों को खा डालेगा तभी उसे उसका निश्चित-स्थान मिलेगा !

वह यहाँ बड़ा व्याकुल रहा, किन्तु उसने किसी प्रकार मुक्ति लाभ की ! दुबारा उसका जहाज़ एपीरस के तट पर रुका। यहाँ एकीलीज़ के लड़के के मर जाने के कारण हेलेनस नामक एक ट्राजन राज्य करता था। यद्यपि अब हेक्टर की पत्नी, विधवा-रूप में भी, उसी प्रदेश की रानी मान ली गई थी जहाँ कभी उसे शत्रुओं ने वन्दी कर रक्खा था, तथापि वह हेक्टर के लिये बड़ी दुखी रहती थी और भाग कर आये हुये लोगों का बड़ा स्वागत-सत्कार करती थी, क्योंकि वह जानती थी कि उसके जन्म-काल में वे सब हेक्टर से सम्बंधित और परिचित रहे हैं। अतएव उसका भी (इनीयस का भी) बड़ा अतिथि-सत्कार हुआ, विदाई के समय की बलि के अवसर पर हेलेनस ने भविष्य-वाणी कि बहुत समय तक इधर-उधर भटकते रहने के बाद वे अतिथिगण इटली में स्थायी-रूप से बसेंगे और ऐसे स्थान पर बसेंगे जहाँ वे एक मादा-सुअर को एक साथ तीस बच्चों को स्तन-पान कराते पायेंगे। इसके बाद उसने उसे (इनीयस को) कैरिब्डिस नामक भंवर और सिल्ला नामक राक्षसी के अदृश्य ख़तरों से सावधान किया और आग्रह किया कि यदि हो सके तो वह [1]क्यूमियन सिबिल से मिल कर उससे सहायता की याचना करे !

इस प्रकार वह वहाँ थोड़े समय तक अपने साथियों के साथ, जैसे अपने स्वजनों के बीच रहकर, स्वस्थ चित्त होता और शक्ति-संचय करता रहा। इसके बाद उसने फिर से यात्रा का श्री गणेश किया। अब उसके साथी तारों के सहारे जहाज़ खेते रहे और पूर्वी अथवा दक्षिणी इटली के किसी भी समुद्र-तट पर जहाज़ों को रोकने की भावना को सभी प्रकार टालते रहे क्योंकि दोनों ही प्रदेशों में यूनानियों का निवास था। शीघ्र ही कैरिब्डिउस नामक भंवर और सिल्ला के संकटों से वे अछूते रहकर पार हो गये। उसी समय उसकी नज़र एटना पर्वत पर पड़ी, जिससे धुआँ निकल रहा था ! इस दृश्य पहिले तो उन्हें अचरज हुआ, किन्तु फिर वे भयभीत हो उठे। अब उन्हें एक यूनानी मिला जो कि यूलीसीज के साथ साइक्लोपीज़ नामक दैत्यों की गुफ़ा से प्राण बचा कर भागा था, परन्तु जो किसी जहाज़ की व्यवस्था न कर सका था। उन्होंने उसे अपने जहाज़ में शरण दी !

अंत में अपने साथियों को विश्राम कर लेने-देने के लिये वह सिसिली के एक नगर

[1]क्यूमिया की चार बुद्धिमान भविष्य-द्रष्टा स्त्रियों में से एक

ड्रिपानम पर ठहरा। यहाँ, सहसा ही, उसके पिता का स्वर्गवास हो गया! यहीं उसने उसे बड़ी धूमधाम से दफ़ना भी दिया। शीघ्र ही वह उस नगर से चल पड़ा और चलने के थोड़े समय बाद ही उसके जहाज़ों को फिर एक भयंकर तूफ़ान का सामना करना पड़ा! इसी तूफ़ान ने उसे महारानी डिडो के राज्य के उस तट पर ला पटका है।

इस तरह इनीयस की कहानी समाप्त होती है। इस बीच में सब ओर के लोग उसे तन्मय होकर सुनते रहते हैं और इस समय ज्योंही कहानी समाप्त होती है, वे सब दैव और उसके रहस्यों को लेकर एक अद्भुत उधेड़-बुन आरम्भ कर देते हैं! इनीयस कहानी कहते-कहते थक गया है और उसे विश्राम की बड़ी आवश्यकता है, अतएव वह उठता है, महारानी की अनुमति लेता है और विश्राम-कक्ष की ओर क़दम बढ़ाता है!

पर्व चार:—

इस समय इनीयस गहरी नींद के दुलार का अनुभव कर रहा है, किन्तु डिडो अपने शयनागार में अपनी नवजात कामना के रस में डूब-उतरा रही है, फलतः एक क्षण को भी पलक नहीं झपका पाती और इसी स्थिति में सारी रात बीत जाती है।

वह सबेरे उठती है, अपनी बहन अन्ना को जगाती है, उससे अपनी मानसिक संघर्ष की चर्चा करती है और चाहती है कि वह इस सम्बन्ध में उसे सलाह दे! उत्तर में, यही नहीं कि अन्ना अपनी बहिन को फिर से विवाह कर-लेने के लिये प्रोत्साहित करती है प्रत्युत, प्रार्थना में भी उसका साथ देती है! यह सौन्दर्य की देवी वीनस कृपापूर्वक सुन लेती है, जैसे कि वह उसके लिये सब कुछ करने को तैयार है। किन्तु दूसरे ही क्षण देवताओं की रानी जूनो हस्तक्षेप करती है और वीनस को आगाह करती है कि एक-न-एक दिन ट्राजनों और कारथेज के निवासियों का एक-दूसरे का शत्रु हो जाना ध्रुव निश्चित है। फिर भी, वह राज़ी हो जाती है और विवाह की देवी होने के नाते अनुमति दे देती है कि उस दिन के आखेट में इनीयस और डिडो का संयोग करा दिया जाये!

इस प्रसंग के बाद हमें कविता में सूर्योदय के, शिकार की तैयारियों के आँखों में चकाचौंध पैदा कर देने वाले रानी के व्यक्तित्व के, और बनावटी यूलस के शिकार-सम्बन्धी साहसिक-कृत्यों के हृदयहारी वर्णन मिलते हैं! परन्तु हम आगे पढ़ते हैं कि दोपहर के समय, सहसा ही बादल गरजने लगते हैं और ज़ोर के आँधी-पानी के कारण उनके इस आखेट की यात्रा के आनन्द में बड़ा विघ्न पड़ता है, अतएव इस आँधी-पानी से घबड़ाकर इनीयस और डिडो एक गुफ़ा में शरण ग्रहण करते हैं और कहा जाता है कि यहीं उन दोनों का समागम होता है। किन्तु सौ मुँहवाली यश की देवी जैसे क्रोधित होकर डंके की चोट पर कहना चाहती है कि इतना सब कुछ इतनी सरलता से, इतनी जल्दी नहीं हो जाना चाहिये! इस पर नगर के नायकगण बड़े क्रोधित और उत्तेजित हो-उठते हैं कि यदि इन सारे कुकृत्यों के लिए इस समय ट्राजनों को क्षमा कर दिया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब कारथेज को अपनी इस भूल के

पश्चाताप करना होगा, सिर-धुनना होगा ! इनमें से एक नायक जूपिटर से प्रार्थना करता है कि किसी प्रकार कारथेज का अहित न हो ! जूपिटर उसकी प्रार्थना सुनता है और देवदूत मरकरी को इस सन्देश और चेतावनी के साथ इनीयस के पास भेजता है कि उसका निवास-स्थान इटली में निश्चित हो चुका है, अफ्रीका के समुद्री-तट पर नहीं, अतएव उसे शीघ्रातिशीघ्र वह स्थान छोड़ देना चाहिये और अपनी मंज़िल की ओर क़दम बढ़ाना चाहिये !

इस प्रकार उस स्थान को जल्दी-से-जल्दी छोड़ देने की दैवी आज्ञा पाने पर इनीयस उसके उल्लंघन करने का साहस तो नहीं करता, परन्तु, इस डर से कि उसे डिडो के सामने अपराधी बनना होगा और इस आशंका से कि वह कहीं डिडो के आँसुओं से द्रवित होकर अपना निश्चय न बदल दे, किसी से बिना चर्चा किये, चुपचाप खिसक जाने का विचार करता है और उसकी तैयारी भी आरम्भ कर देता है। परन्तु किसी-न-किसी प्रकार डिडो को उसकी इस तैयारी की जानकारी हो जाती है। वह तुरन्त ही उसके पास आती है और बहुत ही अधिक उग्र होकर पूछती है कि क्या इतनी दूर तक ले आने और इतने आश्वासन देने के बाद वह उसे इस प्रकार त्यागने की बात सोच सकता है और क्या उसने संयत मन से इस स्थिति पर विचार कर लिया है ? डिडो इस प्रश्न से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाती, प्रत्युत इस प्रकार के विचार के लिये वह उसकी बड़ी भर्त्सना भी करती है। किन्तु इनीयस के मन में जूपिटर के वाक्य बुरी तरह नाच रहे हैं इसलिये उस पर डिडो के कटु और मधुर वाक्यों का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। वह बहुत कड़े शब्दों में उत्तर देता है कि जब-जब बात चली है, उसने सदैव ही उसे साफ़ बतला दिया है कि उसका निश्चित निवास-स्थान इटली है, अन्य कोई प्रदेश नहीं। इतना कहकर वह यात्रा की तैयारियों के लिये शीघ्रता से समुद्र-तट की ओर चल पड़ता है और डिडो अपने किये पर सिर धुनती और बुरी तरह अधीर हो—उठती है। थोड़ी देर बाद किसी प्रकार धैर्य धारण कर वह अपनी बहन से इनीयस को रोकने की प्रार्थना करती है, किन्तु वह उससे कुछ भी कहने-सुनने को तैयार नहीं होती ! अतएव डिडो आज्ञा देती है कि एक चिता सजाई जाये और जब वह चिता तैयार हो जाती है तो वह इनीयस के द्वारा इस्तेमाल की हुई सारी चीज़ें चिता पर रख देती है।

रात होती है। निद्रा का अंधकार छा जाता है ! देवता इनीयस को स्वप्न में निर्देश करते हैं कि उसे टायर देश की महारानी डिडो से अंतिम बार मिलने की बात भी अपने मन में न लानी चाहिये, प्रत्युत तुरन्त ही वह तट छोड़ देना चाहिये ! इनीयस उठ पड़ता है, और घोर संकल्प-विकल्प में पड़ जाता है ! फिर भी, वह इस आज्ञा का पालन करने के विचार से अपनी तलवार से वह रस्सा काट देता है जिसने अब तक उसके जहाज़ का सम्बन्ध कारथेज के स्थल से जोड़ रक्खा है। इस प्रकार उसका पोत चल पड़ता है। दूसरे जहाज़ उसका अनुकरण करते हैं और उसके पोत के अधिक-से-अधिक निकट रहना चाहते हैं !

दूसरे दिन भोर में ही डिडो महल की दीवार से भरी आँखों से समुद्र पर दृष्टि दौड़ाती है और देखती है कि इनीयस और उसके जहाज़ अब दृष्टि से ओझल हैं, केवल उनके पाल ही

धूमिल, लहराती हुई, छोटी-छोटी रेखाओं की तरह दिखाई पड़ते हैं ! उसे इतना संताप होता है कि वह बौखलाकर तुरन्त ही अपने लम्बे सुनहले बाल कतर डालती है और देवताओं से प्रार्थना करती है कि वे इनीयस को, उसे इस स्थिति में इस पुरुषता से छोड़ देने के लिये, अवश्य ही दंड दें ! इसके बाद वह आत्म-हत्या के विचार से अपने ही हाथ से छुरी भोंक कर धधकती चिता के बीच में दम तोड़ देती है ! कारथेज के निवासी ऐसे दुःखान्त के सन्देह में भी न थे, अतएव वे वेदना के इस कौतुक को अचरज और क्षोभ से अवाक् होकर देखते हैं, किन्तु डिडो की बहिन इतना घोर विलाप करती है, कि मानों आकाश को पृथ्वी पर पटक देना चाहती है।

विवाह की देवी जूनो यह हृदय विदारक दृश्य आकाश से अपलक देखती है और धनुष के देवता आइरिस को पृथ्वी पर जाकर डिडो के सिर से बालों का एक गुच्छा काट लेने का आदेश देती है, क्योंकि कुछ ऐसा है कि इस रहस्यपूर्ण क्रिया के बाद ही आत्मा शरीर से छूट सकती है। आइरिस तुरन्त ही आज्ञा-पालन के लिये तैयार होता होता है और कहता है कि वह बालों के उस गुच्छे को डिस नामक शैतान के पास ले जायेगा, और इस प्रकार डिडो अपने पार्थिव शरीर से मुक्ति पा जायेगी। इतना कहने के बाद वह पृथ्वी पर आता है और डिडो के सिर से बालों का एक गुच्छा काट लेता है। धीरे-धीरे डिडो के उसके शरीर की उष्णता लुप्त हो जाती है, शरीर शीतल हो जाता है और प्राण वायु में मिल जाता है।

पर्व पाँच—

इनीयस के पोत आगे बढ़ते रहते रहते हैं। किन्तु वह सहसा ही कारथेज के समुद्री-तट से धुआँ—उठता देखकर घोर भय और शंका से हिल उठता है और उसकी यह व्यग्रता कई गुनी हो उठती है जब आकाश में एक क्षण में ही घोर घटायें घिर आती हैं। उसकी इस चिन्तित मुद्रा से चिन्तित होकर उसका ऋतु-विशेषज्ञ चालक पेलिन्यूरस उसे सलाह देता है कि उन्हें शीघ्रता करनी चाहिये और ड्रिपानम के बन्दरगाह में शरण ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि पूर्वी आकाश में गहरे कालों बादलों की सघनता बढ़ती जा रही है, और कुछ उत्पात, होना निश्चित है। इनीयस को उसकी सलाह पसन्द आती है और वह और उसके अन्य साथी एक वर्ष बाद ड्रिपानम के बन्दर में एक बार फिर शरण लेते हैं। यहाँ वे इनीयस के मृत-पिता के प्रति सम्मान-प्रदर्शन के विचार से एक बलिदान की व्यवस्था करते हैं और बलिदान के बाद अग्नि-दाह-विषयक खेलों में भाग लेते हैं।

यहीं पर कविता में विस्तार से वर्णन किया गया है कि वे सब समुद्री दौड़, साधारण दौड़, घुड़दौड़ और रथदौड़ की प्रतियोगिताओं में भाग लेते और इनाम जीतते हैं। तुमुल युद्ध और धनुष-विद्या के प्रदर्शनों और उनकी प्रतियोगिताओं की भी चर्चा इन वर्णनों में मिलती है।

× ×

अब जब कि इधर ट्राजन मित्र इन आनन्दोत्सवों में प्रेमपूर्वक भाग ले रहे हैं, उधर जूनो के निर्देशन में ट्राजन-पत्नियाँ उनके जहाज़ों में आग लगा देती हैं। वे उनके इस प्रकार घूमते-

रहने और भटकते-रहने से, जो कि उनका एक स्वभाव बन गया है, ऊब गई हैं। उनकी धारणा है कि न वे जहाज़ रहेंगे और न वे रोज़ यात्रा करेंगे। किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिलती क्योंकि एक ट्राजन-योद्धा की निगाह जहाज़ों से उठते-हुये धुयें पर पड़ती है। यह योद्धा अपने अन्य साथियों को तुरन्त ही सावधान कर देता है। एक क्षण बाद ही सारे ट्राजन गिरते-पड़ते अपने झुलसते-हुए जहाज़ों पर पहुँच जाते हैं। इनीयस हाथ बांध कर इतने सच्चे हृदय से देवताओं से अग्नि शांति की प्रार्थना करता है कि तुरन्त ही आकाश में एक काला बादल घिर आता है और उससे इतना पानी बरसता है कि सारी आग बुझ जाती है। फिर भी चार जहाज़ इस बुरी तरह विनष्ट हो जाते हैं कि मरम्मत के बाद भी उनका काम के योग्य हो जाना सम्भव नहीं है।

अतएव यह देखकर कि सारी सेना बचे हुये जहाज़ों में न आ सकेगी इनीयस अपने साथियों को भारी हृदय से सम्बोधित करता है कि जो लोग उसके सौभाग्यों-दुर्भाग्यों में हिस्सा बटाने को तैयार न हों यानी भली बुरी सभी प्रकार की परिस्थितियों में उसका साथ देने का तैयार न हों, वे वहीं बस जायें, शेष उसके साथ बचे हुये जहाज़ों पर सवार हों और जहाज़ों के पाल चढ़ा दें।

किन्तु, इसके पहले कि इनीयस उस स्थान से रवाना हो, उसके पिता की आत्मा उसके सामने आती है और उसे आज्ञा देती है कि इटली के लैटियम नामक प्रदेश में सदा के लिये बसने के पहले वह नेपिल्स के पास की एवरनस नामक झील के रास्ते से 'हेड्ज़' (नर्क के निकृष्ट प्रदेश) में आये, यहाँ पहुँचकर पुण्यात्माओं-के निवास स्थान इलीशियन फ़ील्डज़ में उसे खोजे और उसे खोजने के बाद अपनी जाति के भविष्य के विषय में जो कुछ वह कहे ध्यान लगाकर सुने! इतना कहकर वह अदृश्य हो जाती है।

दूसरे दिन इनीयस चलने की तैयारी करता है। इस समय उसकी माँ वीनस समुद्र के देवता नेप्ट्यून से इतनी सफलता से अपने पुत्र की रक्षा के लिए प्रार्थना करती है कि वह 'टोल' के रूप में केवल एक प्राण की ही बलि लेने का वचन दे देता है—

'एक प्राण-दान ही चाहिये लहर को!
एक शीश है बहुत, एक शीश हो अलग,
वह बचा सकेगा,
शेष व्यक्तियों को!'

पर्व छः—

इनीयस अपने पोतों के पाल चढ़वा देता है और थोड़े ही समय बाद वे उस क्यूमियन सिबिल के द्वीप पर जा लगते हैं। यहाँ इनीयस उस राक्षसी की गुफ़ा का पता लगाता और शीघ्र ही उसे खोज भी लेता है। यह एक विचित्र गुफ़ा है। इसके द्वार पर पीतल के फाटक हैं, जिनपर डिडलस नामक उस चिड़िया-रूपी मनुष्य की कहानी अंकित है जिसने क्रीट द्वीप के समीप के लैबीरिन्थ जैसे संकटपूर्ण स्थान से किसी तरह अपने प्राण बचाये थे और जैसे स्वयं आभार बनकर धीरे-धीरे बलिवेदी पर अपने पर फैला दिये थे। इस राक्षसी और इस गुफ़ा के विषय में हम एक कहानी

और सुनते हैं कि इस राक्षसी ने अपनी भविष्यवाणियों को जैतून की पत्तियों पर लिखकर उन्हें एक निश्चित क्रम से गुफ़ा में रख छोड़ा था, किन्तु एक दिन द्वार खुला रह गया और हवा के एक तेज़ झोंके ने आकर उन्हें इस प्रकार उलट-पलट दिया, इस तरह क्रमहीन कर दिया कि उस गुफ़ा के दर्शनार्थियों के लिये वे अब एक रहस्य एवं एक समस्या बनकर रह गयी थीं! इनका समझ पाना सर्व-साधारण के वश की बात नहीं थी। इनीयस ने भी यह कथा सुन रक्खी थी, और जब उसके सामने भी अस्त-व्यस्त भविष्य-वाणियों का वह रहस्यपूर्ण संसार आया तो उसने उस राक्षसी की बड़ी गम्भीर स्तुति की और उससे प्रार्थना की कि वह उसे इस प्रकार जैतून की पत्तियों की भविष्यवाणियों के द्वारा आकुल न करे, बल्कि स्वयं, कुछ बताने का कष्ट करे। राक्षसी उसकी प्रार्थना से प्रभावित होती है और तुरन्त ही उसका प्रेत उसके सम्मुख उपस्थित होता है। वह भविष्यवाणी करता है कि समुद्र और स्थल पर अनेकानेक संकटों का सामना करने के बाद और इटली की टाइबर नामक नदी को रक्त से लाल करने के बाद ही वह अपने शत्रुओं पर विजय पा सकेगा और अंत में एक नव-पत्नी के साथ लैटियम में के लिए बस जायेगा! प्रेत इतना कह कर एक सांस लेता है और फिर कहता है कि उसे अपनी सारी सफलाओं के लिये यूनानी सहायता का आभार स्वीकार करना पड़ेगा!

इनीयस आनेवाले संकटों की कल्पना से तनिक भी भयभीत अथवा विचलित नहीं होता, प्रत्युत वह उस राक्षसी के प्रार्थना करता है कि वह उसे हेडीज़ (पाताल) का रास्ता बतला दे और हो सके तो उसे वहाँ पहुँचा दे, ताकि वह अपने पिता के आदेशानुसार उससे वहाँ भेंट कर सके! इस प्रार्थना के उत्तर में वह उसे कोरा जवाब दे देती है कि वह उसे वहाँ पहुँचाने में तब तक असमर्थ है जब तक कि वह उसे एक सोने की डाल नहीं देता, जो कि उन प्रदेशों में चाभी का काम देगी, और जब तक कि वह अपने मित्र के शव के प्रति समुचित सम्मान प्रदर्शित नहीं करता! इनीयस उसकी दोनों अजब और रहस्यपूर्ण शर्तें सुनता है और आश्चर्य में पड़ जाता है, किन्तु शीघ्र ही जब वह अपने जहाज़ पर वापिस आता है तो देखता है कि उसका एक नाविक साथी मार डाला गया है। इनीयस तुरन्त ही उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया की व्यवस्था करता है। इसके थोड़े समय बाद वह टहलते-टहलते पड़ोस के एक जङ्गल में बहुत दूर निकल जाता है। यहाँ उसकी माँ की प्रिय-चिड़िया, बत्तखें उसे मिल जाती हैं, जो उसे एक ऐसे स्थान का रास्ता ही नहीं बतलातीं प्रत्युत उसे उस स्थान पर पहुँचा भी देती हैं जहाँ के पेड़ों की डालें सोने की है! वह ऐसी एक डाल प्राप्त करता है और ले-जाकर उस राक्षसी को देता है!

× ×

इस प्रकार इनीयस उस राक्षसी को उस आश्चर्यजनक शस्त्र से सुसज्जित कर एवरनस झील के रास्ते से उस अन्धकारमय, उदास गुफ़ा में प्रविष्ट होता है जो कि हेडीज़ का प्रमुख प्रवेश-द्वार है! इसके बाद वह अपने रहस्यपूर्व पथ-प्रदर्शक के उड़ते हुए कदमों के पीछे पीछे चलकर और रात्रि के प्रदेश से गुज़रकर शीघ्र ही बिछुड़ी हुई आत्माओं के प्रदेश की सीमा पर पहुँचता है! यहाँ उसे असंख्यक प्रेतात्मायें दिखाई पड़ती हैं। यद्यपि वह स्वयं तुरन्त ही

'कैरन'[1] की युगों-पुरानी टूटी-फूटी नौका पर बैठकर नदी पार कर लेता है तथापि उसकी निगाह उन सैकड़ों आत्माओं पर पड़ती है! वे पिछले सैकड़ों वर्षों से प्रार्थना और प्रतीक्षा करती रही हैं, किन्तु उस पार नहीं पहुँच सकी हैं चूंकि उनके पास उतराई देने के लिये कुछ भी नहीं है। इनमें एक व्यक्ति, इनीयस को भली-भाँति जाना-समझा मालूम होता है। यह है कुछ समय पहिले डूब कर मर-गया उसके पोत का चालक! यह चालक उसके समीप आता है और उससे अपनी मृत्यु का वर्णन करता है और कहता है कि अब बड़े आदर और सम्मान के साथ उसके अंतिम संस्कारों की व्यवस्था हो रही है! बात समाप्त होती है!

इनीयस हेड्ज़ के प्रवेश-द्वार पर आता है और यह देखकर कि एक तीन सिर का सरबिरस नामक कुत्ता पहरेदारी कर रहा है आश्चर्यचकित हो उठता है। यही नहीं वह ऐसे कितने ही दृश्यों के बीच से निकलता है! अंत में वह अपनी पर्थ-प्रदर्शिका के साथ उस स्थान पर पहुँता है, जहाँ हेड्ज़ का न्यायधीश माइनास आनेवाली आत्माओं के अपराध सुनता और अपने फैसले देता है। यहाँ इनीयस उस प्रदेश का भी निरीक्षण करता है, जहाँ किसी के प्रेम में मर जाने वाली आत्मायें एक साथ रक्खी जाती है। इन प्रेतात्माओं में उसे डिडो की आत्मा भी दिखलाई पड़ती है। वह द्रवित हो उठता है और उसके समीप जाता है, किन्तु वह क्रोध के मारे मुँह फेर लेती है। वह आगे बढ़ता है और हेड्ज़ के उस भाग में आ निकलता है जहाँ असंख्यक मृत योद्धा टिके हैं! इसमें उसकी दृष्टि वीर हेक्टर, चालाक, यूनानी धनुषधारी ट्यूसर और कितने ही दूसरे शूरवीरों पर पड़ती है, जिन्होंने ट्राय के युद्ध में भाग लिया है! वह उनसे मिलता है और थोड़ी देर तक आपस में बातचीत होती है। तत्पश्चात् उस पथ-प्रदर्शिक के साथ वह नीचे उतरता है और पाताल की टारटरस नामक खाड़ी के समीप से गुज़रता है। यहाँ वह सरसरी नज़र से उन तमाम भीषण अपराधियों को देख जाता है, जो कि कितने ही गुरुतम अपराधों के कारण यहाँ पड़े-सड़ रहे हैं! इसके बाद ही वह इलीशियन-फ़ील्डज़ की ओर आता है, जहाँ वे अनुकरणीय मृत-प्राणी रहते हैं जो कि अपने स्वदेश के लिये लड़ते-लड़ते प्राण-त्याग करते हैं। यहाँ वह अपने पिता के विषय में पूँछताछ करता है। तुरन्त ही इन दोनों मिलनार्थियों को एक शान्तघाटी का रास्ता बतला दिया जाता है, जहाँ जाने पर वे देखते हैं कि वृद्ध ट्राजन एंकाइसीज़ बहुत आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रहा है और उन आत्माओं पर विचार करने में व्यस्त है जो अजन्मी हैं, परन्तु जिनके विषय में यह निश्चित-रूप से कहा जा सकता है कि वे कई स्थितियाँ से धीरे-धीरे गुज़र कर एक-न-एक दिन संसार में अवश्य ही आयेंगी! एंकाइसीज़ अपने वंशधरों की अक्षुण्यता और उनकी उत्पत्ति के लिये व्यग्र है, अतएव वह उनमें से कुछ में प्राण डाल देता है।

सहसा ही एंकाइसीज़ की निगाह इनीयस पर पड़ती है। वह स्नेह से कातर हो उठता

[1] आत्माओं को एकेरोंम नामक नदी के पार उतारनेवाला निषाद—

है और उसे हृदय लगाने की कोशिश करता है, किन्तु पुत्र उसके हाथ नहीं आता और पिता को बड़ी निराशा होती है ! हम भूले न होंगे, इसी प्रकार एंकाइसीज़ ने एक बार और ड्रिपानम में उसे हृदय लगाने का व्यर्थ का प्रयत्न किया था ! फिर भी एंकाइसीज़ उसे जीवन-मृत्यु और अमरत्व से सम्बन्धित कितनी ही बातें बतलाता है। इसके बाद वह आगामी एक हज़ार वर्षों के रोम के इतिहास की प्रमुख-प्रमुख घटनाओं का एक संक्षिप्त वर्णन अपने पुत्र के सम्मुख रखता है; जिसमें रोम के संस्थापक रोमलस के काल से लेकर दुनिया के प्रमुख युवराज और सम्राट आगेस्टस तक के समय के उल्लेखनीय व्यक्ति का विधिवत् अकन है।

इनीयस को अपने कुल के सदस्यों के प्रताप यश और उनके जीवन के उतार-चढ़ाव के वर्णनों को सुनने-समझने में काफ़ी समय लग जाता है। किन्तु जैसे ही वे समाप्त होते हैं, साइबील इस भयानक नर्क-प्रदेश से बाहर निकलने के एक रास्ते से उसे तुरन्त ही एक बार फिर पृथ्वी पर ले आती है। वह इस समय बहुत प्रसन्न दिखलाई पड़ता है, चूँकि उसने अपना काम बड़ी सफलतापूर्वक किया है।

अपनी जाति और अपने परिवार के भविष्य की जानकारी से उसे बड़ा प्रोत्साहन मिलता है वह जहाज़ पर लौट आता है। इस समय वह अपने घर पहुँचने के लिये बहुत उत्सुक है, अतएव तुरन्त ही पाल चढ़वा देता है और अपनी मंज़िल के लिये चल पड़ता है !

पर्व सात-

शीघ्र ही इनीयस इटली के पश्चिमी समुद्री किनारे से होकर गुज़रता है। वह सर्स के द्वीप से आगे आ चुका है और अनुकुल हवाओं के सहारे तेज़ धारावाली टाइबर[१] नदी के वृत्त पर बड़ी तेज़ी से बढ़ रहा है। इस बार चलने के बाद वह अब तक कहीं नहीं रुका है, अतएव एक तट पर उतरता ही है कि गीत-काव्य की अधिष्ठात्री इरैटो उसके सम्मुख उपस्थित होकर उन लैटिनों का इतिहास गाती है जिनका प्रतिनिधि पास के प्रदेश का राजा लैटिनस है और जिनका दावा है कि वे सीधे सैटर्न (शनि) से पृथ्वी पर अवतरित हुये हैं ! यह लैटिनस वह व्यक्ति है जो टरनस[२] को अपनी पुत्री ब्याह देने का वचन दे चुका है, किन्तु जो अपना निश्चय बदल देता है, क्योंकि इन ट्राजनों के इस प्रकार इस तट पर उतरने के कारण कुछ घटनायें घटती हैं, कुछ शकुन होते हैं, जिनका उसके लिये स्पष्ट आदेश है कि वह अपनी पुत्री को तब तक क्वाँरी रक्खे, जब तक कि कोई ऐसा अपरिचित आकर स्वयं उसका हाथ अपने हाथ में न ले-ले जिसकी सन्तान का पराक्रमी और यशस्वी होना निश्चित हो !

इरैटो का गीत समाप्त हो जाता है। ट्राजन भूखे हैं अतएव वे माँस का भोजन

[१] इटली की ब्यूग्यूलस नामक एक नदी।

[२] इटली के राष्ट्र का राजकुमार।

आरम्भ करते हैं, जो कि उनमें से प्रत्येक को गेहूँ की टिकियाँ पर रखकर दिया गया है। किशोर यूलस लोभवश जल्दी से अपने हिस्से का मांस जैसे निगल लेता है और तब बच्चों की भाँति कहता है कि उसने अधिक भूखे होने के कारण मांस के साथ वह गेहूँ की टिकिया भी खाली जिस पर उसे मांस मिला था! इन महत्वपूर्ण शब्दों को सुनते ही उसका पिता प्रसन्नता से चिल्ला उठता है कि वे अपनी निश्चित मंज़िल पर आ गये क्योंकि राह में मिली हारपीज़ की भय उत्पन्न करनेवाली भविष्य-वाणी सत्य प्रमाणित हो गई है, पूर्ण हो गई है!

'वह चिल्लाया—वाह-वाह, लो, हमें मिल गया पुण्य स्थल,
जो कि नियति के निश्चय से जाने कब से मेरा ही था!
अरे साथियों, देखो, ट्राजन-देव-देवियाँ सच्चे हैं,
जो कुछ भी वे बता चुके हैं, है हम सब का भाग्य वहीं,
बहुत दिनों हम भटक चुके हैं, अब न यात्रा का लें नाम,
ओ, यही है अपना देश, ओ यही है अपना धाम!"

थोड़े समय बाद ही ट्राजन अन्वेषण का कार्य आरम्भ करते हैं और शीघ्र ही लैटिनस की राजधानी खोज लेते हैं। वे वहां सौ मनुष्यों का एक दूत-दल भेजते हैं, जिसकी वहाँ बड़ी आवभगत होती है। लैटिनस उस दल की पूरी बातें सुन लेने के बाद कहता है कि एक उसकी जाति के लोग वहीं और जा बस थे, और इतना कहने के बाद वह उसे दल को विश्वास दिलाता है कि देवताओं की आज्ञानुसार वह अपनी पुत्री का विवाह किसी विदेशी से ही करेगा, अतएव उसे प्रसन्नता होगा यदि उसकी पुत्री लैविनिया और इनीयस का सम्मिलन हो जाये। दल राज़ी हो जाता है जैसे कि शीघ्र ही विवाह-कार्य भी सम्पन्न हो जायेगा!

किन्तु विवाह की देवी रानी जूनो, जो नियति के निर्णयों को बदल देने में असमर्थ है, प्रयत्न करती है कि यदि विवाह की बातचीत सदा के लिये समाप्त न हो जाये तो कम-से-कम थोड़े दिनों के लिए स्थगित तो हो ही जाये! उसके प्रयास से कन्या की माता क्रोध के मारे आपे से बाहर हो जाती है और अपनी पुत्री को लेकर जङ्गलों में भाग जाती है।

जूनो अपनी शक्ति और चातुर्य के इस एक प्रदर्शन से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाती-प्रत्युत वह वैमनस्य की देवी को टरनस के पास यह पूछने के लिये भेजती है कि क्या लैविनिया को एक कर अपनी पत्नी बनाने का संकल्प कर लेने के बाद वह उसे इतनी शीलता से किसी दूसरे अपरचित की पत्नी बन जाने देगा! उसका यह प्रश्न उस जैसे क्रोधी व्यक्ति को किसी के विरुद्ध के भड़काने के लिए, काफ़ी है, अतएव वह गरम हो उठता है और युद्ध के लिए कमर कस कर तैयार हो जाता है। किन्तु चूंकि कोई बहाना नहीं मिलता, अतएव वैमनस्य की देवी की आज्ञा से प्रतिकार की एक देवी यूलस को प्रेरित करती है और वह एक गरड़िये की सिल्विया नामक पत्नी के पालतू बारहसिंगे को घायल कर देता है। इस गंवारू स्त्री के संताप से उसके भाई इतने उत्तेजित हो उठते हैं कि ट्राजनों पर टूट पड़ते हैं। ट्राजन आवश्यक-रूप से अपनी रक्षा करते हैं और इस प्रकार संघर्ष आरम्भ हो जाता है।

इतनी सफलता से शांति भङ्ग करने के बाद वैमनस्य की देवी शीघ्रता से जूनो के पास आती है। जूनो देखती है कि लैटिनस निश्चय कर चुका है कि न वह इनीयस की ओर से और न टरनस की ओर से लड़ेगा! इस निश्चय के कारण वह प्रसन्न भी है। अतएव वह अपने हाथ से जैनस[1] के मन्दिर के फाटक खोलती है और उसे लड़ाई में भाग लेने पर विवश कर देती है।

इस स्थान पर कवि उन विभिन्न योद्धाओं के नाम गिनाता है जिनका किसी भी पक्ष में अपने शौर्य से यश लाभ-करना सम्भव अथवा निश्चित है। वह इस लम्बी तालिका में ट्यूट्यूल्स के सिर मौर मेज़ेंटियस, उसके पुत्र लॉशस और [2]वाल्शियन-महिला कैमिला का विशेष उल्लेख करता है, जो शान्तिमय प्रणय-परिणय के जीवन की अपेक्षा सैन्य-जीवन की हलचल अधिक पसन्द करती है।

पर्व सात—

ज्यों ही टरनस को उसके अनेकानेक मित्रों की सहायता प्राप्त हो जाती है, इनीयस भी कुछ मित्रों की प्राप्ति और उनके योग के लिये उत्सुक हो उठता है। वह एटरूरिया के उस राजा इवैंडर से सहायता मांगने के लिये चल पड़ता है, जो कि हिले एक यूनानी था। वह रास्ते में देखता है कि टाइबर नदी के किनारे एक स्थान पर एक सुअरी ३० बच्चों को एक साथ दूध पिला रही है। वह उसे देवताओं के नाम पर बलिदान कर देता है, क्योंकि उसका वहाँ पाये जाने का मतलब है कि भविष्य में उसकी राजधानी उसी स्थान पर बसाई जायेगी! इस कार्य के बाद वह अपनी राह लेता है और शीघ्र ही 'एटरूरिया पहुँचाता है। तुरन्त ही यहाँ के शक्तिशाली निवासियों का एक बहुत बड़ा समूह उसे वचन देता है कि उस दल का प्रत्येक व्यक्ति राजपुत्र पैलैस के संरक्षण में उसके लिये जान देने को तैयार है!

इनीयस आश्वस्त होता है। वह कुछ समय बाद ही हरकुलीस की एक विजय के सम्मान में दिये-गये एक प्रीति भोज में भाग लेता है और भोजनोपरान्त सो जाता है कि उसकी माँ वीनस अपने लोहार-पति के आग्रह करती है कि वह के लिये एक जोड़ नवीन कवच तैयार कर रहे।

सबेरा होता है और इवैंडर कहानियों से अपने अतिथि का मनोरंजन करता है उसका पुत्र अपनी तैयारियों में व्यस्त है और शीघ्र ही पूरा तैयार हो जाता है। अब इनीयस वहाँ से विदा होता है क्योंकि विशेष रूप से तैयार कराया-गया कवच उसे देते समय उसकी माँ उसे सचेत करती है कि उसकी सेना ख़तरे में है।

---

[1] दो सिरवाला लैटिनों के देवता, जिसके मन्दिर के द्वार खुल जाने का अर्थ है शांति का अंत!

[2] उस जाति की सदस्या जो पहिले सिरिस नदी के किनारे रहते थे, किन्तु जो बाद में लैटियम में आ बसे

काव्य का यह भाग रोम के आगामी इतिहास के कई दृश्यों से विशेषतया सुसज्जित है। इसमें मादा-भेड़िये के अपने जोड़ुआ बच्चों को स्तन-पान कराने की परम्परागत कहानी का, सेबाइन्स[1] के अपहरण का, काकलीज़ क्रिओलिया और मैनलियस के वीरतापूर्ण कृत्यों का और युद्धों और दूसरे उत्सवों का हृदय हारी वर्णन है।

पर्व नौ—

इसी बीच में इधर युद्ध-क्षेत्र में टरनस के आज्ञाकारी सैनिक ट्रोजनों के तम्बू को घेर लेते हैं और इनीयस के जहाज़ों में आग लगा देते हैं। किन्तु नियति यह निश्चित कर चुकी है कि वे कभी भी विनष्ट न किये जा सकेंगे अतएव जब तक लपटें उन्हें छुये-छुये, वे लहरों के स्नेह-सिक्त अंचल में मुँह छिपा लेते हैं समुद्र में डूब जाते हैं, और एक क्षण बाद ही ज्यों ही समुद्री परियाँ, इनीयस को यह बताने के लिये कि उसके साथी ख़तरे में हैं, पानी में डूबकी लगाती हैं, वे लहरों पर लहराने लगते हैं। इस आश्चर्यजनक दृश्य से शत्रु आतंकित हो उठते हैं परन्तु शीघ्र ही टरनस ओजपूर्ण शब्दों में उन्हें प्रोत्साहित करता है कि इसके माने तो यह हैं नियति उनके ही पक्ष में है। इतना सुनते ही उसके साथी आवेश में आ जाते हैं और इस तरह आपा खोकर विदेशी ट्राजनों पर हमला करते हैं कि उनके छक्के छूट जाते हैं। वे ट्राजन-युवक नीसस और यूरियैलस के इस प्रस्ताव का हृदय से समर्थन करते हैं कि उन सबको आँख बचाकर रण-क्षेत्र से भाग निकलना चाहिये और इनीयस से मिलकर उससे कहना चाहिये कि वह तुरन्त ही उस स्थान से भाग-चले।

रात को यह दोनों ट्राजन-वीर चुपचाप अपने तम्बुओं से निकलते हैं और बहादुरी से सोतेहुये दुश्मनों के बीच से गुज़रते हैं। वे रास्ते में कितने ही वीरों पर वार करते हैं और मृत्यु को उन्हें जगाने के लिए छोड़कर शीघ्र ही शत्रुओं के पड़ाव के पार हो जाते हैं। वे एक जंगल में घुसते हैं जहाँ वाल्शियन लोगों की एक टुकड़ी उनका पीछा करती है, और उन्हें घेरकर यूरियैलस को मार डालती है। पहले तो बचा हुआ नीसस अपने बच निकलने की व्यवस्था कर लेता किन्तु शीघ्र ही अपने साथी को बचाने के विचार से लौटता है और मार डाला जाता है। इस प्रकार दो वीरों को मार वॉल्शियन-सैनिक उन दोनों के शीश्र अपने भालों में छेदकर अपने पक्ष के तम्बुओं में ले जाते हैं। इन दोनों शीशों के कारण ही दूसरे दिन भयंकर युद्ध होता है।

अंत में किसी भाँति यूरियैलस की माँ को पता चलता है कि उसका पुत्र अब इस दुनिया में नहीं है और वह बड़े हृदय-द्रावक शब्दों में अपने पुत्र के लिये विलाप करती है।

'इसीलिये मैं रही भटकती क्या पृथ्वी पर सागर पर ?
अरे शत्रुओं, अगर जानते हो तुम माँ की ममता को,

---

[1] मध्य इटली की प्राचीनतम शक्तिशाली जाति जो अपनी सरलता और सदाचरण के लिये विशेषतया प्रसिद्ध थी।

मुझपर चलने दो तुम अपने तीखे भालों के तूफ़ान।
अरे, व्यर्थ का शोर मचानेवालों, मुझ पर दया करो,
मुझे झोंक दो और डुबा दो किसी झील में फ़ौरन तुम।
अरे नहीं, तो सम्भव है, मैं धरती पर दूँ पटक अभी,
औ, हों चूर चूर क्षण भर में जीवन-माला के मोती,
या खारे आँसू का जीवन दे अपना दम तोड़ अभी!,

× × ×

इस विशिष्ट दिन के सारे वीरतापूर्ण कार्यों का विवेचन और वर्णन करने के लिये तो बहुत अधिक स्थान चाहिये और समय भी, परन्तु फिर भी......! यद्यपि मार्स अपार शक्ति-दान देकर इनीयस के पक्ष को प्रोत्साहित करता है, तथापि प्रत्यक्ष रूप से तो ऐसा लगता है जैसे कि उनकी पराजय स्पष्टतया निश्चित है। थोड़े समय तक यह स्थिति चलती रहती है कि जूपिटर टरनस की सेना को आज्ञा देता है कि वह युद्ध के मैदान को छोड़कर लौट आये।

पर्व दस—

शीघ्र ही ओलिम्पस पर्वत पर जूपिटर अपने सहकारियों की एक सभा बुलाता है और कहता है कि उनमें से कोई भी, किसी भी पक्ष के बीच में न पड़े, क्योंकि उसकी इच्छा है कि देवताओं की दैवी सहायता के बिना ही इस लड़ाई का फ़ैसला हो। जूपिटर के इस प्रतिबन्ध पर वीनस बहुत असन्तुष्ट और व्यग्र हो उठती है और विरोध करती है कि जब एक बार उसने वचन दे दिया है कि उसका पुत्र इटली में एक नया राज्य स्थापित करेगा तो उसकी सहायता करना उसका कर्त्तव्य हो जाता है और वह उसकी सहायता आवश्यक-रूप से करेगी। उधर विवाह की देवी जूनो उतनी ही शक्ति और उतने ही प्रभावोत्पादक ढंग से अपना तर्क सम्मुख रखती है कि हेलेन को भगाकर ट्राजनों ने गुरू अपराध किया है, जिसके लिये उन्हें अभी और सज़ा मिलनी चाहिये। इस पर जूपिटर दोनों ही देवियों को शान्त करता है, एक बार फिर अपनी आज्ञा दोहराता है कि देवताओं को इस लड़ाई से अलग रहना है, और सभा विसर्जित करता है।

कविता के दृश्यों में परिवर्तन होता है और एक बार फिर पृथ्वी सामने आती है जहाँ ट्राजन बुरी तरह, चारों ओर से शत्रुओं से घिरे हुये हैं और कामना करते हैं कि इनीयस शीघ्रातिशीघ्र लौट आये।

× × ×

इनीयस एटरूरिया से लौट रहा है—राह में उसकी भेंट समुद्री-परियों से होती है। वे उसे सलाह देती हैं कि अपने पुत्र की प्राण-रक्षा करने के लिये उसे शीघ्रातिशीघ्र रण-क्षेत्र में पहुँच जाना चाहिये। इस प्रकार अंतिम बार सचेत किये जाने पर वह बहुत तेज़ क़दम बढ़ाता है, बहुत जल्दी रण-क्षेत्र में दिखलाई पड़ता है और युद्ध में सक्रिय भाग लेता है।

लड़ाई में वीरता के कितने ही कृत्य आते हैं, और शत्रु-पक्ष के टरनस, मेज़ेन्टियस और

लॉसस सब से बहादुर प्रमाणित होते हैं, यद्यपि ट्राजनों में भी इनीयस, पैलैस और यूलस हैं जो पराक्रम में किसी प्रकार भी उनसे उतीस नहीं ठहरते। इस समय कई मनोरंजक चातुर्यपूर्ण द्वंद्व-युद्ध भी होते हैं, जिनमें टरनस और पैलैस के बीच हुआ द्वंद्व-युद्ध विशेषतया उल्लेखनीय है। इसी द्वंद्व-युद्ध में उसके अपार शौर्य और साहस के होते हुये भी एटरूरिया के राजकुमार की जीवन-लीला समाप्त हो जाती है। टरनस उसका कवच उतार लेता है और इसके बाद उसकी लाश ट्राजनों को दे देता है। ट्राजन लाश पाते और बड़े दुखी होते हैं कि उनकी सहायता करते-करते ही वह अपने जीवन से हाथ धो बैठा। इसपर इनीयस संकल्प करता है कि वह उसकी मृत्यु का बदला लेगा और क्रोधित होकर शत्रुओं पर इतने ज़ोर का हमला करता है कि लगता है कि अब टरनस का अंतिम क्षण दूर नहीं है। परन्तु एक बार फिर जूनो इतने प्रभावपूर्ण शब्दों में उसका पक्ष ग्रहण करती और उसकी वक़ालत करती है कि नियति उसे और थोड़ा जीवन दान देने पर विवश हो जाती है यद्यपि नियति के अपने निश्चय और निर्णय के अनुसार आज का दिन ही उसके जीवन का अंतिम दिन है।

जूनो चाहती है कि टरनस इनीयस के घातक प्रहारों से बच सके अतएव वह एक माया रचती है। टरनस को ऐसा लगता है जैसे कि उसका शत्रु जहाज़ पर सवार होकर भागा जा रहा है, अतएव वह उसका पीछा करने के लिये चल पड़ता है। जूनो जहाज़ के बन्धन खोल देती है और वह तुरन्त ही टाइबर की तेज़ धारा के साथ-साथ बहने लगता है। इस समय, सहसा ही, टरनस को अपनी सीमाओं का ज्ञान होता है। वह अनुभव करता है कि उसके साथ चालाकी खेली गई है। अतएव वह परीशान हो-उठता है और धमकी देता है कि वह आत्म-हत्या कर लेगा किन्तु जूनो उसे नियंत्रित करती है। थोड़े समय के बाद ही उसकी सहायता से वह किनारे लग जाता है और एक बार फिर युद्ध में भाग लेता है।

किन्तु उधर युद्ध-क्षेत्र में इस प्रकार अपने एक-मात्र विशिष्ट शत्रु से वंचित किये जाने पर इनीयस बौखला उठता है और लड़ाई के विशाल मैदान को लाशों से पाट देता है। वह मेज़ेंटियस को घायल करने के बाद लॉसस को मार डालता है। मेज़ेंटियस अपने पुत्र को इस प्रकार अपनी आँखों के आगे मरते देखकर इतना उत्तेजित हो उठता है कि अपने सारे साथियों के द्वारा रोके जाने पर भी अपना गला इनीयस के सामने कर देता है। इनीयस उसी स्थान पर वार करता और उसे वहीं मार डालता है। मरते समय मेज़ेंटियस इनीयस से एक वरदान माँगता है:-

'यदि न बात हो विशेष,
औ, विनष्ट शत्रु भी विजयी शत्रु-दल से
माँग सके भीख एक,
दो मुझे दान एक—
भीख एक—
जहाँ मृत-पुत्र की उपस्थिति हो प्रतिक्षण,
सुख मुझे दे सके मेरा पुत्र प्रतिपल,

वहीं मुझे एक क़ब्र, मुझे दो एक क़ब्र,
केवल एक......एक क़ब्र !

पर्व ग्यारह—

इनीयस अपने मृत-शत्रुओं के प्रति सम्मान प्रकट करता है। वह अपने साथियों की अन्त्येष्टि-क्रिया के लिये जाने से पहिले पैलेस की लाश को सुसज्जित करवाता और एटरूरिया भेजवा देता है। इसके बाद वह टरनस के राजदूतों से बारह दिन की सुलह के लिये बातचीत करता है। इस प्रकार लड़ाई बारह दिन के लिये समाप्त हो जाती है।

इस १२ दिन के समय में दोनों पक्ष अपने-अपने मृत-वीरों के दाह-संस्कार का राजसी आयोजन करते हैं। इनमें पैलेस का शरीर सब से अधिक ठाठ-बाट से अग्नि को समर्पित किया जाता है।

इस आकांक्षा से कि अब और अधिक व्यर्थ रक्त न बहे, लैटिनस एक सन्धि का प्रस्ताव करता है। सन्धि की शर्तें इनीयस तो मान लेता है पर टरनस क्रोधित होकर अस्वीकार कर देता है, क्योंकि उसे उसकी वह पत्नी इस समय भी नहीं मिल रही, जिसके लिये कि उसे कभी वचन दिया जा चुका है। अतएव, लड़ाई फिर आरम्भ होती है।

इस बार के युद्ध के शौर्य-प्रदर्शन का सीधा सम्बन्ध वीरांगना कैमिला से है। कहा जाता है कि जब यह बच्ची थी और इसके पिता का पीछा उसके शत्रु कर रहे थे, इसके पिता ने इसे अपने भाले की मूँठ में बाँधकर नदी की उस धारा के पार फेंक दिया था, जिसे वह उसको गोद में लेकर पार करने में असमर्थ था। इस प्रकार शत्रुओं से प्राण बचाकर उसने उसे युद्ध-कला की ऐसी शिक्षा दी थी कि वह उस कला में सर्व तरह से पारंगन हो गई थी ! इस समय वही कैमिला ऐसे कमाल दिखलाती है कि मालूम होता है कि वह शत्रुओं को तहस-नहस करके ही दम लेगी ! वह अपनी अंतिम सांस तक किसी भी वीर-से-वीर योद्धा की भाँति लड़ती है, किन्तु केवल अंत में दम तोड़ते समय टरनस से सहायता के लिये प्रार्थना करना चाहती है। वह दूतों के द्वारा सन्देश भेजती है कि अब शत्रुओं को सदा के लिये शहर से निकाल बाहर कर देने के लिये उसकी सहायता की आवश्यकता है.........! बात पूरी नहीं हो पाती कि वह दम तोड़ देती है !

पर्व बारह—

इस समय लैटिनस बार-बार दोहराता और ज़ोरदार शब्दों में कहता कि वह अपनी पुत्री लैविनिया का विवाह किसी अपरिचित से ही करेगा, टरनस से नहीं, क्योंकि एक तो देवताओं की आज्ञा है, दूसरे उससे इस आशय की कई बार, कई व्यक्तियों-द्वारा, प्रार्थनायें की गई हैं, जिनमें स्वयं पुत्री की मां अमाटा की प्रार्थना भी एक है।

लैटिनस की इस घोषणा पर भी टरनस शान्त नहीं होता, अतएव और युद्ध होता है और इनीयस की एक जांघ घायल हो जाती है। तुरन्त ही मरहम-पट्टी की व्यवस्था होती है, परन्तु उसे कुछ भी लाभ नहीं होता और उसके घाव से खून बहता ही रहता है। सहसा ही वीनस उस पानी में, जिससे उसका घाव धोया जा रहा है, एक जड़ी डाल देती है और इस प्रकार आश्चर्यजनक ढंग से उसे अच्छा कर देती है।

इनीयस एक बार फिर लड़ाई में जुट जाता है और फिर इतनी भयंकर मारकाट होती है कि लैविनिया सहित अमाटा महल में लौट आती और आत्मा-हत्या कर लेती है। इस समय जूनो अपने शरणार्थी की सहायता करना चाहती है, किन्तु जूपिटर आड़े आ जाता है। फिर भी अपनी पत्नी के आग्रह पर वह यह मान लेता है कि उनकी भाषा के सहित ट्राय के निवासियों के नाम लैटिन नामों में घुलमिल कर एक हो जायें और उनका अपना अलग से कोई अस्तित्व न रहे! वह यह भी मान लेता है कि लैटियम[1] जिस प्रकार चाहें उन्नति करें, केवल यह कि सम्भ्रान्त अलबन[2] राजा ही उन पर राज्य करें!

× × ×

अंत समीप है। अपने महत्वपूर्ण क्षणों में दोनों वीर डींगें मार रहे हैं, एक दूसरे को कहनी-अनकहनी सुना रहे हैं कि एक चिड़िया टरनस के समीप आती है और उसे सचेत करती है कि उसकी मृत्यु समीप है। इसके बाद ही उसकी बहन ल्यूटरना उसे धोखा देती है और उसका साथ छोड़कर चली जाती है। इनीयस उसे खाड़ी तक खदेड़ आता है। इस समय तक टरनस के पास कोई शस्त्र नहीं रह जाता अतएव वह एक चट्टान नचाकर इनीयस पर फेंकता है। वह इस चट्टान से अपनी रक्षा करने के बाद टरनस पर इस तरह प्रहार करता है कि वह बहुत बुरी तरह घायल हो जाता है और यह निश्चित हो जाता है कि उसका बचना असम्भव है।

अंत में टरनस बड़े दमनीय स्वरों में कृपा की भीख मांखता है। परन्तु इसी समय इनीयस की निगाह टरनस की पेटी पर पड़ जाती है, जोकि वास्तव में पैलेस की है। अतएव इस प्रकार वह फिर उत्तेजित हो उठता है और क्रोधित होकर उस पेटी को ही उससे छीन नहीं लेता, प्रत्युत उस पर ऐसा प्रहार भी करता है कि वह दम तोड़ देता है।

इस प्रकार 'इनीड' समाप्त होता है!

[1] इटली का प्रान्त [2] लैटिनस का राज्य।

स्कैंडिनेवियन महाकाव्य—

१००० ई० पू० में विभाजित होकर पूर्वी उत्तरी और पश्चिमी उत्तरी बनने के पहले स्कैंडिनेविया की विभिन्न बोलियाँ केवल एक भाषा के रूप में प्रचलित थीं किन्तु इस विभाजन के बाद डेनमार्क और स्वेडेन की बोलियाँ पूर्वी उत्तरी के अन्तर्गत हो गईं और आइसलैंड और नार्वे की पश्चिमी उत्तरी के अन्तर्गत !

+ + +

स्वेडेन को अपने २०० वीर-काव्यों पर गर्व है और सही भी है कि वह इन्हें लेकर संसार के सामने बड़ी-बड़ी बातें करे ! ये सभी एक चौथी और छटीं शताब्दि में रच गये हैं और इनके कथानक अंशतः पौराणिक हैं और अंशतः विशुद्ध ऐतिहासिक। परन्तु बाइबिल का अनुवादकर्त्ता डेनमार्क-निवासी वह पहिला व्यक्ति था जिसने फ्रांस के 'शालमाँन' और 'आजियर' नामक महाकाव्यों का अपने देशवासियों से परिचय ही नहीं कराया, प्रत्युत उनका परिष्कार भी किया ! १५५५ में रिनार्ड दि फ़ॉक्स, का फ्रेंच से और 'हाइम्ज़क्रिंगला' का आइसलैंडिक से डेनिश में अनुवाद हुआ किन्तु एरींबो द्वारा 'हेग्ज़मेरोन' या प्रथम वास्तविक 'डेनिश महाकाव्य' १६४१ में रचा गया !

१६ वीं शताब्दि में 'पेलूदल मिलर' ने डेनिश में कितने ही महाकाव्य रचे, किंतु उनका उसके देश के बाहर प्रचार न हो सका ! यों कहा जा सकता है कि इस समय की स्वेडिश कितने ही महाकाव्यों का जीता जागता प्रमाण है, जो सारे-के-सारे ईसाई धर्म के देश में प्रवेश होते ही विनष्ट हो गये ! यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि मध्य-युगों में सम्राज्ञी यूफ़ीमेया (१३०३-१२) के दरबार में किसी राज कवि ने स्वेडिशमें 'यूफ़ीमेयाविज़र' नामक वीर-काव्य की रचना की थी, स्वेडिशमें किंतु स्वेडेन का महानतम महाकाव्य टेग्नर कृत 'फ़िथजोफ़्ससागा' है। इसका रचना-काल १८४६ है। इसमें एक प्राचीन योद्धा के साहसिक कार्यों और उसकी दरबारदारी का वर्णन किया गया है। इसी लेखक की 'लीजेन्ड्ज़ ऑफ़ दि मिडिल एजेज़' नामक दूसरी रचना में भी वे सारी घटनाएँ ज्यों की त्यों मिलती हैं।

× ×

कितने ही राजनैतिक कारणों से १२ वीं और १३ शताब्दि में कितने ही सम्भ्रान्त परिवार नार्वे से स्वेडन में जा-बसे और उन्हें भौगोलिक तटस्थता और लम्बी शरद् ऋतुओं के कारण अपने मनोरंजन के साधन स्वयं ही सोचने और जुटाने पड़े। इस प्रकार कहानी और

कविता का उनके जीवन में प्रवेश ही नहीं हुआ बल्कि वे उनके लिये जीवन की एक आवश्यकता बन गई और जब-तब ही छोटे बड़े, बच्चे-बूढ़े एक साथ बैठ कर काव्य-माधुरी से जीवन-लाभ करने लगे। इस प्रकार यहाँ अधिक महत्वपूर्ण और मूल्यवान मौखिक साहित्य ने जन्म लिया। शीघ्र ही इसका भी अधिकांश बिला गया, तथापि सदियों की विस्मृति के बाद १६४३ में भाग्यवशात् आइसलैंड के निवासियों ने 'एल्डर एड्डा' की खोज की जिसका रचना काल ११ वीं सदी कहा जाता है। 'एल्डर एड्डा' का रचयिता सेमंट दि वाइज़ है! यह पौराणिक एवं वीरतापूर्ण विषयों पर रची गई २३ कविताओं का एक संग्रह है। 'स्नोर्रीस्टरल्यूसन' का 'यंगर एड्डा' नामक एक ऐसा ही दूसरा ग्रंथ गद्य में भी मिलता है जिसमें धार्मिक कथाओं को विशेष महत्व दिया गया है! इसी 'स्नोरों' ने हाइम्ज़क्रिंगला नामक अपने दूसरे ग्रंथ में कितनी ही वीरतापूर्ण कथाओं का संकलन भी किया है।

इसी प्रकार के लम्बी पुरानी स्कैंडिनेवियन कथानक जो सागाज़ कहलाते हैं कम-ज़्यादा पूर्ण-रूप में आज भी सुरक्षित हैं। इनके तीन विभाग किये जा सकते हैं :—ऐतिहासिक कथानक, जैसे 'एगिल्ज़सागा' 'आयरबिगिइयासागा' 'लैक्सडेलासागा' और 'हाइम्ज़क्रिंगला' आदि; २ पौराणिक-कथानक जैसे 'ग्रेटिस' और 'वाल्संगा सागा' आदि-'वैगनर' के नाटकों और 'निबेलउंगेनलीड' की कथा का मूल-स्रोत-प्रोत 'वोल्संगा-सागा' इनमें सर्वश्रेष्ट है जिसका मॉरिस ने अंग्रेज़ी भाषा में सफल, कुशल और आश्चर्यजनक अनुवाद भी किया है; ३ श्रृंगारिक-कथानक अथवा प्रेमपूर्ण महाकाव्य, अनुवाद, अथवा सभी प्रतिकाव्य जो लैटिन, फ्रेंच अथवा जर्मन महाकाव्यों और प्रेमाख्यानों पर आधारित हैं और सिकन्दर शालमॉन और परसीवल आदि जिनके चरित्र नायक हैं इस वर्ग में 'गुनलॉग्ज़ सागा' इस वर्ग में सर्व प्रिय और सर्व सुन्दर है।

\+ \+

नार्वे के साहित्य का सीधा सम्बंध ८०० के आगी नामक सुप्रसिद्ध चारण से है। इसकी प्रमुख रचना 'रागनाज़ ड्रापा' है जिसमें 'रागनार लॉडब्रॉग' के जीवन और उसकी साहसिक घटनाओं का मनोहारी वर्णन है। 'स्वॉरों स्टरल्यूसन' ने अपनी 'स्वॉरॉर एड्डा' में इसी रचना का सहारा लिया है। 'एल्डर एड्डा' की अधिकांश कवितायें और की हाउसलंग अथवा एक प्रसिद्ध योद्धा का वर्णन आदि मूल-रूप में नार्वे साहित्य की ही देन हैं।

× ×

कहना न होगा कि तेरहवीं शताब्दि के डेनिश-साहित्य में सागाज को विशेष स्थान प्राप्त हुआ और 'थिड्रेक्ससागा' (१२५०), या डिट्रिक वॉनबेर्न के जीवन से सम्बंधित कथा 'कारलामेग्नाज़सागा' या शालमॉन की कथा, बारलॉम्ज़ आकर्यासाफाट्स' और हेब्रिड भाषा की 'बरलाय' या योसाफार, आदि को इस समय विशेष लोकप्रियता मिली।

इस साहित्य के अतिरिक्त नार्वे में जन-कथाओं अथवा लोक-कथाओं का भी समृद्ध कोष है। इनमें गद्यात्मक महाकाव्य के सभी गुण मिलते हैं। 'आर्सवियर्नसेन' ने इनको एकत्रित कर कई पीढ़ियों का सामान-रूप से मनोरंजन किया है।

'वॉल्संगा-सागा'—

यह महाकाव्य 'एड्डा' के दूसरे भाग में है और इसकी कथा-वस्तु इस प्रकार है :— वॉल्संग नार्वे के देवराज ऑडिन का सीधा वंशज है। वह शाह-बलूत के पेड़ नीचे अपने रहने का घर बनाता है ! फल यह होता है कि उस विशाल वृक्ष की पत्तियाँ उसे बुरी तरह घेर कर ढक लेती हैं। कुछ समय बाद जब उसकी पुत्री का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध गोथों[1] के राजा सिगियर के साथ सम्पन्न होता है तो अतिथियों की भीड़ को चीरता हुआ, सहसा, एक काना अपरिचित आगे आता है और बिना दायें-बायें देखे अपनी अनमोल तलवार से उस बलूत के तने में गहराई तक घुसेड़ देता है। यही नहीं, वह यह भी घोषित करता है कि उस तलवार को उस पेड़ से खींच लेने वाला उस तलवार का स्वामी तो होगा ही, प्रत्येक युद्ध में विजयी भी होगा ! इसके बाद वह उत्सुक निगाहों से उपस्थित मंडली की ओर देखता है कि अब कोई आगे आये और पौरुष की परीक्षा दे।

यद्यपि वॉल्संग यह जानता है कि उनकी मण्डली में उपस्थित यह अज्ञात काना कोई और न होकर स्वयं ऑडिन ही है, तथापि वह वर से आग्रह करता है कि वह आगे बढ़े। वर उसके अनुरोध की रक्षा में असफल हो जाता है। उसे असफल होता देखकर वॉल्संग स्वयं उस दैवी तलवार को तने से खींच लेने में ऐड़ी-चोटी का पसीना एक कर देता है, किन्तु सब व्यर्थ ! अतएव अब वह अपने दस पुत्रों को संकेत करता है ! उसके नौ पुत्रों के हारकर बैठ रहने के बाद दसवाँ पुत्र ज़ीग्मंड उस परीक्षा में सफल होता है और एक झटके में ही तलवार को तने से खींच लेता है।.........

× ×

वर सिगियर चाहता है कि वह अपना पुरस्कार उसके हाथ बेंच दे किन्तु ज़ीग्मंड दृढ़ता से इन्कार कर देता है और कहता है कि वह उसे किसी को भी न दे सकेगा ! इस पर गोथ सिगियर उससे बहुत नाराज़ हो जाता है और दूसरे दिन उसी हालत में विदा होने की तैयारी करता है। उसकी पत्नी सिगनी सब कुछ भली भाँति समझ कर अपने पिता और भाइयों

---

[1] एक असभ्य जर्मन-जाति जिसने तीसरी से पाँचवीं शताब्दी तक पूर्वी और पश्चिमी राज्यों पर हमले किये !

को सचेत करती है कि उसका पति अपने अपमान का बदला लेने के लिये व्याकुल ही नहीं है, उसके लिये योजनायें भी बना चुका है। किन्तु वॉल्संग और उसके पुत्र सिगनी की बात कान नहीं करते और गोथ के दुबारा आने और भेंट करने के वचन पर सरलता से विश्वास कर लेते हैं !

× ×

वर्षों बाद वॉल्संग अपने पुत्रों के साथ अपनी पुत्री से भेंट करने के लिये अपने दामाद के राज्य में जाता है। यहाँ एक बार फिर सिगनी वॉल्संग को सावधान करती है कि निकट भविष्य में ही उसका पति कुछ-न-कुछ गुल खिलाने वाला है, किन्तु वह इस बार भी उसकी बात इस कान से सुनता और उस कान से निकाल देता है। फलतः उसका दामाद, जो कि मन ही मन उसकी और उसके पुत्रों के प्राण का गाहक बन-बैठा है, बड़ी चतुरता से उन्हें उस स्थान पर ले जाता है जो कि पहले से ही उनके लिये तैयार किया गया है। यहाँ वॉल्संग और उसके पुत्र ज़बरदस्ती पकड़े जाते और एक किनारे के जंगल के एक गिरे हुये पेड़ में कसकर जकड़ दिये जाते हैं। यही नहीं, बल्कि हर रात एक भूखा जंगली भेड़िया आता है और उनमें से एक को चीर-खाता है।

× ×

सिगनी सब कुछ जानती है, किन्तु निर्दय पति की निगरानी के कारण इन अभागों की कुछ भी सहायता नहीं कर पाती, किन्तु जब सारे लोग उस जंगली जीव द्वारा साफ हो जाते हैं और केवल ज़ीग्मंड ही बच रहता है तो वह चिन्तित हो उठती है और अपने एक सेवक को उसके मुँह में शहद के लेप कर देने का आदेश देती है। उसके आदेश का पालन होता है। आज भी नित्य की भाँति ही जंगली जानवर आता है, किन्तु आज मधु की सुगन्धि से आकर्षित होकर अंतिम वॉल्संग का मुँह चाटने लगता है। इसी बीच में मौक़ा पाकर ज़ीग्मंड उसकी जीभ अपने दाँतों से कसकर दबा लेता है और फिर उससे तब तक लड़ता रहता है जब तक कि बन्धन टूट नहीं जाते और वह स्वतन्त्र नहीं हो जाता।

दूसरे दिन, सदा की भाँति ही, सिगियर अपने दूत को भेजकर बन्दियों का समाचार जानना चाहता है। दूत जाता है और लौटकर उसे सूचित करता है कि पेड़ से जकड़े गये, सम्भवतः सारे लोग समाप्त हो चुके हैं, क्योंकि उस स्थान पर वॉल्संग और उसके पुत्रों के स्थान पर हड्डियों का एक ढेर ही शेष है। अतएव सिगियर, यह समझकर कि अब उसके सारे शत्रुओं का अन्त हो चुका है, अपनी पत्नी की निगरानी ढ़ीली कर देता है और उसकी पत्नी अपने स्वजनों को समाधिस्थ करने के विचार से आँख बचाकर जंगल में भाग जाती है। यहाँ वह अपने भाई ज़ीग्मंड से, सहसा ही, भेंट करती है जो कि झाड़ियों के पीछे छिपा-हुआ है। अब भाई-बहन में बहुत देर तक बातचीत होती है और इसी समय बहन प्रतिज्ञा करती है कि यदि वह उसके पति से अपने पिता और अपने भाइयों की मौत का बदला लेने की कोई भी योजना बनायेगा तो वह उसकी प्राण-पण से सहायता करेगी !

× ×

अपने भाई को दिया हुआ वचन पूरा करने के लिये सिगनी बेचैन है कि एक लम्बा समय बीत जाता है। वह एक के बाद दूसरे, अपने दो पुत्रों को उसके पास भेजती है कि वह उन्हें शिक्षा देकर अपने काम का बनाये और फिर बदले के कार्य में उनसे सहायता ले! किन्तु शीघ्र ही प्रमाणित हो जाता है कि दोनों ही बालकों में साहस का अभाव है, दोनों ही डरपोक और निकम्मे हैं, अतएव सिगनी इस नतीजे पर पहुँचती है कि उसके भाई की सहायता केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसकी नसों में विशुद्ध वॉल्संग-रक्त दौड़ रहा हो। अब इस जाति का पुत्र प्राप्त करने की अभिलाषा से वह एक किरातिनि का रूप बनाकर चुपचाप अपने भाई की कुटिया जाती है और गर्भवती होकर लौटती है। यथा समय पुत्र होता है और जब यह पुत्र सिनफ़िओटली में बड़ा हो जाता है वह उसे ज़ीग्मंड के पास भेज देती है कि वह उसे बड़ा करे और शिक्षा दे!

× ×

यह बालक बड़ा ही उत्साही और वीर साबित होता है। कहना न होगा कि इसकी प्रकृति ने दबना, झुकना और बुझना तो जैसे सीखा ही नहीं। इसकी सहायता से ज़ीग्मंड कितने ही साहसिक कृत्यों में सफलता प्राप्त करता है।

एक दिन ज़ीग्मंड सिनफ़िओटली के साथ सिगियर के गोदाम में चुपचाप घुस पड़ता है और शस्त्र खींच कर इस प्रतीक्षा में लेट रहता है सिगियर उधर से निकले और अचानक ही हमला कर वह उससे अपना पुराना बदला चुकाये! किन्तु पता नहीं कैसे सिगियर के पुत्र सब कुछ जान लेते हैं और अपने पिता को सचेत कर देते है कि गोदाम के पीपों के पीछे कुछ दुश्मन छिपे-बैठे हैं जो उसे निश्चित-रूप से मार डालना चाहते हैं। वह सुनता है और उसके कान खड़े हो जाते हैं। वह उन्हें पकड़वा कर अलग-अलग कोठरियों में डलवा देता है और खाने के नाम पर कुछ न देकर उन्हें भूखों-मार डालने का निर्णय करता है। किन्तु सिगनी को जैसे ही यह मालूम होता है वह सींकों का एक बोझ ज़ीग्मंड की कोठरी में डलवा देती है। वह पहिले तो इस बोझ को देख कर चौंक उठता है, किन्तु उसे उसमें शीघ्र ही बालमंग नामक जादू की तलवार मिलती है और उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता।

यह तलवार अमोल है! इसकी सहायता से वे दोनों अपनी कोठरियों से बाहर आने का ही प्रबन्ध नहीं करते प्रत्युत मुक्त होने के बाद कितने ही गोथों को मार भी डालते हैं। इसके बाद वे राज-महल में आग लगा देते हैं कि बचे-बचाये गोथ जान बचा कर भाग निकलते हैं। सहसा ही उनकी निगाह आग की लपटों में लिपटी सिगनी पर पड़ती है और वे उसे बचाने के हार्दिक प्रयत्न करते हैं, किन्तु उनकी सारी कोशिशें बेकार जाती हैं। उन दोनों पर दृष्टि पड़ते ही सिगनी उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है और अपने पति के कमरे की ओर संकेत कर उनसे विदा लेती है। दूसरे ही क्षण और भयंकर आग की लपटें उसे चारों ओर से घेर लेती हैं। इसी समय सिगियर के कमरे की ऊंची छत गिर पड़ती है, और उसकी दीवारें बैठ जाती हैं और वह उनके नीचे दब कर दम तोड़ देती है!

× ×

इस प्रकार अपने पिता और अपने भाइयों की मौतों का बदला चुका कर अपना कर्तव्य पूरा करने के बाद ज़ीग्मंड अपने देश लौटता है ! वह बहुत समय बाद बुढ़ापे में एक युवा-स्त्री से विवाह करता है और इस विवाह के थोड़े-ही दिनों बाद लड़ाई में मार डाला जाता है। उसकी इस वीर-गति के समाचार सुन कर उसकी गर्भवती स्त्री रण-स्थल में जाती है और वहाँ से उस टूटी हुई, जादू की तलवार टुकड़े अपने साथ ले आती है। यही नहीं, वह सोचती है कि ये टुकड़े ही वह एक-मात्र सम्पत्ति हैं जिसे उसका होने वाला पुत्र अपने पिता की वसीयत समझेगा और जिसकी सहायता से उसके शत्रुओं से बदला लेगा !

अगली कथा-वस्तु के विषय में विद्वानों में मतभेद है। एक मत की धारणा है कि ज़ीग्मंड के शत्रु उसकी पत्नी का पीछे करते हैं और वह उनसे पिंड छुड़ाने के लिये एक घने जंगल में घुस-पड़ती और बाद में राह भटक जाती है। अन्त में वह एक माइमर नायक लोहार के घर में शरण ग्रहण करती है लोहार उसे भरसक सहायता देने का वचन देता है। यहाँ वह सिगर्ड नामक एक पुत्र का जन्म देती और फिर मर जाती है। माइमर इस बच्चे का लालन-पालन करता है और थोड़े समय बाद ताज्जुब से अनुभव करता है कि बच्चा भय नाम की कोई चीज़ जानता ही नहीं ! दूसरे मत का प्रचार है कि ज़ीग्मंड की पत्नी उसकी मृत्यु पर विलाप कर रही है कि एक समुद्री डाकू उधर से गुज़रता है और दुखिया और अकेली देख कर उसे अपने साथ ले जाता है। थोड़े समय बाद वह उससे विवाह का प्रस्ताव करता है, किन्तु वह इस शर्त पर अपनी अनुमति देती है कि ज़ीग्मंड के बच्चे को वह अपना बच्चा समझेगा और एक अच्छे पिता की भाँति उसका पालन-पोषण करेगा ! वह वचन देता है और थोड़े समय बाद ज़ीग्मंड के पुत्र का जन्म होता है।

× ×

ज़ीग्मंड का पुत्र सिगर्ड बड़ा होता है और सर्व प्रसिद्ध विद्वान और वीर रेगिन उसका गुरु बनता है ! वह उसे वे सारी विद्यायें और सारी कलायें सिखला देता है जो कि किसी के लिए आवश्यक हैं। शीघ्र ही सिगर्ड को एक घोड़े की आवश्यकता होती है और पड़ोस के घोड़ों पर उसकी नज़र जाती है। रेगिन इस कार्य में भी उसकी सहायता करता है और वह तमाम घोड़ों में ग्रेन या ग्रेफ़ल नामक घोड़ा अपने लिये पसन्द करता है। कहना न होगा कि यह घोड़ा ऑडिन के स्नाइपनियर नामक घोड़े के वंश का ही है।

× ×

अब रेगिन देखता है कि उसका शिष्य प्रौढ़, युवा और सभी प्रकार साहसिक कृत्यों के योग्य है, अतएव वह उसे अपनी कथा सुनाता है ! उसका इस प्रकार आत्मकथा कहने का कुछ विशेष प्रयोजन है, किन्तु ऐसा लगता है जैसे कि वह एक कहानी-भर कह रहा है !

वह अपने शिष्य से कहता है कि एक बार ऑडिन हॉनियर और अग्नि का देवता लोकी आदि पृथ्वी पर भ्रमण करने निकले और इस भ्रमण में उन्होंने एक ऊदबिलाव मारा ! इसके बाद वे उसे एक पास की झोपड़ी में ले गये, क्योंकि वे चाहते थे कि वह खाने के योग्य

का मालिक उस ऊदबिलाव को देखते ही पागलों की भाँति चिल्ला उठा-'हाय रे' तुमने तो ऊद-बिलाव रूपी मेरे सबसे बड़े लड़के को मार डाला, इसके बाद उसने न आव गिना; न ताव, बस, उन्हें कसकर जकड़ दिया और प्रतिज्ञा की कि वह उस ऊदबिलाव की खाल के बराबर सोना मिलने पर ही उन लोगों को छोड़ेगा, नहीं तो नहीं !

रेगिन कहता रहता है कि देवता जानते थे कि उनका काम केवल जादू के कोष से ही चल सकता है और वे मुक्त हो सकते हैं, अतएव उन्होंने अपने मेज़मान से प्रार्थना कि यदि यह थोड़े समय के लिये भी लोकी को आजाद कर दे तो वे उसे मुँहमाँगा सोना देंगे ! मेज़-मान उनकी बात मान ली और लोकी को छोड़ दिया। लोकी मुक्त होते ही उस एँडवरी नामक बौने की खोज में निकल पड़ा जिसने अकूत सोना इकट्ठा कर-रक्खा था। किन्तु बौना बड़ा चालाक था और आसानी से देवता के हाथ न आ सकता था। अतएव अंत में लोकी को दुष्टता बरतनी पड़ी और तब कहीं वह उसे राइन के उद्गम-स्थान पर मछली के रूप में दिखलाई पड़ा ! अब नज़र पड़ते ही उसने समुद्र की देवी का वह जाल राइन में डाला, जिससे बचकर निकल-भागना असम्भव है, और बौने को फाँस लिया ! इस प्रकार उसे वश में करने के बाद लोकी ने उससे सोने का विशाल कोष तो ले ही लिया, हेल्म 'आफ़ ड्रेड' नामक वह शिरस्त्राण भी छीन लिया जिसे सिर पर रखते ही आदमी अदृश्य हो जाता है। इस तरह परीशान किये जाने पर बौना खीझ उठा और उसने श्राप दिया कि उसके संताप के कारण दो भाई, एक पिता और आठ राजा मारे जायंगे। किन्तु लोकी ने भविष्यवाणी को कुछ नहीं समझा और इसके लिये उसकी खूब मरम्मत करने के बाद अपने साथी देवताओं की यातना का अनुमान कर तेज़ क़दम बढ़ाये ! वह वहाँ पहुंचा और उसने कामना की कि उस खाल के बराबर सोना देकर वह उन देवताओं को छुड़ा ले, लेकिन वह विकल हो उठा जब खाल प्रति-क्षण बढ़ती रही और इतनी भारी हो गई कि उस सारी स्वर्ण राशि के साथ-साथ उसे वह शिर-शास्त्र और अपनी सर्पाकार अंगूठी भी दे देनी पड़ी और तब कहीं आवश्यक हरजाना पूरा हुआ ! उधर कोष का नया स्वामी, ललचाई आंखों से उस सोने के ढेर को तब तक घूरता रहा जब तक कि उसका स्वभाव नहीं बदल गया और वह आदमी के बजाय एक राक्षस नहीं हो गया। शीघ्र ही उसके दो शेष पुत्रों में से एक फ़ैफ़निर उस झोंपड़ी में घुसा और उसने बिना यह ख्याल किये कि वह उसका पिता है, उस दैत्य को मार डाला ! अपने पिता की भांति वह भी उस सारी सम्पत्ति को पाकर धन्य हो गया। और अंत में वह उसे निर्जन में ले गया और उसी प्रकार आंख फाड़ कर देखता रहा, फल यह हुआ कि वह भी राक्षस में बदल गया और उसी रूप में कितने ही समय तक उसकी रखवाली करता रहा !

इतना कहने के बाद रेगिन क्षण भर को रुकता है, किन्तु इस समय उसकी मुद्रा इस प्रकार बदल जाती है कि साफ़ झलक जाता है कि वह कहानी न कहकर अपने वास्तविक संकट की कहानी कह रहा है।

शीघ्र ही भेद खुल जाता है कि उस राक्षस का दूसरा बेटा वह स्वयं है और उसका

भाई आज भी राक्षस बनकर उस कोष की रखवाली कर रहा है। बात स्पष्ट होते ही वह अपने शिष्य से कहता है कि उस विशाल कोष पर अपने भाई का अकेला एकाधिकार उसे बहुत खलता है। किन्तु वह उसका सामना करने में असमर्थ है अतएव आवश्यक है कि सिगर्ड शिष्य होने के नाते इस कार्य में उसकी सहायता करे।

यद्यपि रेगिन भी उतना ही कुशल लोहार है जितने कि इस कहानी के पहिले मत की कथा का माइमर तो भी सारा किस्सा सुनने के बाद सिगर्ड तलवारों के वे सारे फल टुकड़े टुकड़े कर डालता है जो कि रेगिन ने अपने लिए बना रक्खे हैं, और जिन्हें वह बेकार समझता है। उसके पास अपने पिता की जादू की तलवार के टुकड़े हैं। वह उन सबको ठोंक-पीट कर एक ऐसा अस्त्र तैयार करता है एक ओर तो उससे एक बार में ही किसी भी निहाई के दो टुकड़े कर सकता है और दूसरी ओर किसी भी सोते में बहते हुए उनके रेशों को बहुत सफ़ाई से काट सकता है। इस प्रकार मुंह से कुछ न कह कर भी वह तुरन्त ही उसकी सहायता के लिए ऐसे तैयार हो जाता है, जैसे कि बचन-बद्ध हो चुका हो!

इस प्रकार शस्त्रों से भली भाँति सुसज्जित होने के बाद घोड़े पर सवार होकर, रेगिन के नेतृत्व में, सिगर्ड उस 'ग्लिटरिंग हथि' चमचमाते झाड़खंड की ओर चल-पड़ता है, जहाँ रेगिन का भाई फ़ेफ़ानर उस भण्डार की रखवाली कर रहा है। राह में ओडिन नामक एक काना नाविक उसे मिलता है जो उसका आशय जान लेने के बाद उसे सूचित करता है कि प्यास लगने पर फ़ेफ़निर तट पर पानी पीने आता है। इतना ही नहीं वह एक ख़ास रास्ते की तरफ़ इशारा भी करता है और सलाह देता है कि वह उस रास्ते में कहीं एक खाई खोदे और उसी में छिपा रहे और जब फ़ेफ़निर उसके सिर के ऊपर से गुज़रे तो अचानक ही उस पर ऐसा वार करे कि उसका काम तमाम हो जाय।

सिगर्ड को उसकी सलाह बहुत लाभदायक मालूम होती है फिर इसकी उपेक्षा का प्रश्न ही कहाँ उठता है! मतलब यह है कि सिगर्ड उस नाविक की योजना पर अमल करता है और शीघ्र ही फ़ैफ़निर पर वार करता है। वह शीघ्र ही दम तोड़ देता है, किन्तु उसके शरीर से से ख़ून की ऐसी पिचकारी छूट-निकलती है कि सिगर्ड पूरी तरह नहा उठता है और उसके शरीर का वह छोटा सा स्थान ही उस खून से अछूता रहता है जो कि कहीं से आ चिपकी नीबू की पत्ती के द्वारा ढंका हुआ है। इस प्रकार सिगर्ड का सारा शरीर इस्तपात हो-उठता है, जिस पर किसी भी आघात का असर हो ही नहीं सकता!

सिगर्ड गम्भीर है और तुरत के मारे-गये राक्षस के विषय में कुछ सोच रहा है कि रेगिन उसके पास पहुँचता है। उसे आशंका होती है कि कहीं ऐसा न हो कि सिगर्ड भी उस स्वर्ण-राशि पर अधिकर जमाले। अब वह युक्ति सोचता है कि अच्छा हो कि यह राह का रोड़ा भी निकल जाय।

×　　　　　　　　×

थोड़ी देर बाद वह उसे आदेश देता है कि वह उस दैत्य का कलेजा निकाले और फिर उसे उसके लिये भूने। यह एक सरल-सा काम है, जिसे वह एक आज्ञाकारी शिष्य की भाँति

दूसरे ही क्षण पूरा कर डालना चाहता है। किन्तु, जब कि वह इसमें व्यस्त है, रेगिन उस दैत्य के उष्ण रक्त से सनी हुई अपनी उंगली सहसा ही उसके मुँह में घुसेड़ देता है, जैसे कि उसे किसी अपराध के लिये दंड दे रहा हो। इस प्रकार फ़ैफ़निर के कलेजे के ख़ून के ज़ुबान से लगते ही सिगर्ड में ऐसी अलौकिक शक्ति आ जाती है कि वह आसपास में चहचहाती हुई उन चिड़ियों की भाषा बड़ी सरलता से समझने लगता है, जो गीतों के बहाने उसे यह बतला देना चाहती हैं कि रेगिन की नीयत साबित नहीं है और वह शीघ्र ही उसे मार डालने की कोशिश करेगा। अतएव, यह सोचकर कि रेगिन आवश्यकता से अधिक नीच है जो कि उसके उपकारों का बदला इस नृशंसता से चुकाना चाहता है, सिगर्ड क्रोध से आग—बबूला हो-उठता है और उसे मार डालता है। अब रेगिन की लाश की रखवाली में वह सारी स्वर्ण-राशि एक गुफ़ा में छिपा देता है और केवल तलवार, जादू का शिरस्त्राण और उस अंगूठी के साथ घोड़े पर सवार होकर अपनी राह लेता है।

चिड़ियाँ एक बार फिर उसकी सहायता करती हैं और उनके संकेत के सहारे वह एक पहाड़ पर पहुँचता है जिसकी चोटी पर घोर प्रकाश है। यह प्रकाश और कुछ न होकर एक क़िले के चारों ओर धधकती हुई उस आग की लपट-मात्र है जो कि उसकी सीमायें निर्धारित करती है!......सिगर्ड उस आग के पास पहुँचता है और घोड़ा आग देखकर ठिठकने और भड़कने लगता है, किन्तु वह उसे इतनी ज़ोर की एक एड़ लगाता है कि वह कूद कर आग के ऊपर से निकल जाता है।

आग ठंडी पड़ती है और धीरे-धीरे बुझ जाती है। सिगर्ड क़िले के बिचले भाग में पहुँचता और देखता है कि एक मृत योद्धा चबूतरे पर पड़ा हुआ है। वह आगे बढ़ता है और अपनी तलवार से उसके कवच के बन्द काटता ही है कि उसे ज्ञात होता है कि कवच के नीचे का व्यक्ति और कोई न होकर युद्ध की देवी वैलकीर[1] ब्रिनहिल्ट है।

ब्रिनहिल्ट धीरे-धीरे होश में आती है, एक बार फिर जीवन और ज्योति पाने पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट करती है और अपने जीवन-दाता को हृदय से धन्यवाद देती है। इस बीच में दोनों की निगाहें एक होती हैं, ऐसा होते ही वे एक-दूसरे को प्रेम करने लगते हैं और एक-दूसरे को अपना परिचय देते हैं। सिगर्ड अपना निवास-स्थान और अपना नाम आदि बतलाने के बाद अपने साहसिक कृत्यों की चर्चा करता है और ब्रिनहिल्ट उत्तर में उसे बतलाती है कि वह एक वैलकीर है। यही नहीं, वह सारी कथा विस्तार में बतलाती है कि एक बार उसने एक ऐसे आदमी को जीवन-दान दिया जिसे कि ऑडिन मृत्यु-दंड दे चुका था, अतएव फल यह हुआ कि उससे नाराज होकर ऑडिन ने उसे त्याग दिया और शाप दिया कि वह किसी ऐसे मनुष्य की पत्नी हो, जो स्वयं उसका हाथ अपने हाथ में ले ले। इस पर वह बहुत डरी कि कहीं उसे कायर-पति न मिले और इससे बचने के लिये उसने ऑडिन से प्रार्थना की कि वह उसे चारों ओर से ऐसी भयानक आग से घेर दे जिसे एक महान योद्धा ही पार कर सकता हो! इतना

[1] वह स्त्री जो एक ऐसे आदमी को अपना पति चुने जिसका रण में खेत-रहना निश्चित हो!

कहने के बाद वह देवी क्षण भर को रुकती है और फिर स्वीकार करती है कि उसका सहायक मनुष्य है तो क्या, वह उसे हृदय से प्यार ही नहीं करती है, बल्कि उससे विवाह कर उसकी पत्नी बनने में भी उसे किसी प्रकार का कोई संकोच नहीं है। तत्पश्चात सिगर्ड उसे वह अंगूठी भेंट करता है जिसे ब्रिनहिल्ट अपनी अंगुली में पहिन लेती है! अब वे दोनों एक दूसरे को चूमते और हृदय से लगाते हैं।

× ×

किन्तु युवक-वीर महत्वाकांक्षी है और इस जीवन से अधिक साहसपूर्ण घटनाओं में उसकी रुचि अधिक है, अतएव वह ब्रिनहिल्ट को उसी आग के घेरे के संरक्षण में उसके पिछले स्थान पर छोड़ देता है और घोड़े पर सवार होकर निबेलउंग के प्रदेश बरगेंडी की ओर चल-पड़ता है।

× ×

इस प्रदेश की रानी की रूपवती बेटी का नाम गुदरुन है। गुदरुन एक दिन स्वप्न देखती है कि कुछ देर तक उसके महल पर मंडराने के बाद एक बाज़ ने उसके हृदय में घोंसला बना लिया और फिर कुछ देर बाद उसका हृदय उसी बाज़ की जिन्दगी के ख़ून से रंग कर लाल हो गया। वह सोकर उठती है, कुछ न समझ कर दुखी हो-उठती है और शकुन-अपशकुन की बात तय कर-लेने के विचार से ब्रिनहिल्ट से भेंट करती है। ब्रिनहिल्ट उसे बतलाती है कि समय आने पर उसका विवाह एक ऐसे राजा से होगा जो कि विवाह के थोड़े समय बाद ही अपने दुश्मनों के द्वारा मार डाला जायेगा।

इस घटना को हुये थोड़े ही दिन बीतते हैं कि सिगर्ड बरगेंडी में आ-पहुँचता है और गुदरुन के भाई गुन्नार को लड़ने के लिये ललकारता है। किन्तु एक राक्षस का वध करने वाले उस अजनबी के साथ तलवारों का व्यापार करने के बजाय गुन्नार मित्रता का हाथ उसकी ओर बढ़ाता है और अपनी बहिन को बुलवाता है कि अपने हाथ से मधु-पात्र देकर वह उस अतिथि का स्वागत करे।

इस प्रकार सिगर्ड राज्य-अतिथि होता है और अपने इस प्रवास-काल के इने-गिने दिनों में भी उनके व्यायाम-सम्बन्धी खेलों में भाग लेकर और युद्ध छिड़ने पर उनके शत्रुओं को जीतकर निबेलउंगों पर इस तरह अपना सिक्का जमाता है कि उनमें विशिष्ट और आदरणीय समझा जाने लगता है। कहना न होगा कि शौर्य शक्ति और साहस के उसके कृत्य गुदरुन के हृदय को जीत लेते हैं, परन्तु सिगर्ड उसकी ओर से बिल्कुल उदास रहता है! अतएव, वह अपनी माँ से हठ करती है कि वह उसे वह विशिष्ट पेय पिला दे जिसे पाते ही मनुष्य पागलों की भाँति आवश्यक-रूप से प्रेम करने लगता है। उसकी माँ उसका हठ टाल नहीं पाती और दूसरे दिन, जैसे ही सिगर्ड कुछ साहसिक कृत्य कर लौटता है, वह वही पेय उसके सामने रख देती हैं। सिगर्ड हँसकर प्याला ख़ाली कर देता है वह यह नहीं जान पाता कि यह पेय धरती के रक्त अतिरिक्त कितनी ही दूसरी चीज़ों से तैयार किया गया है, जिनमें प्रमुख हैं :—धरती की छिपी हुई शक्ति, शीतल समुद्र के जन्म से सम्बन्धित कहानियाँ, घोर कपट, अद्भुत प्रेम की उलझन और वे सारी

परिस्थितियाँ और उपादान जिनसे बड़े-बड़े देवताओं का निर्माण होता है! यही नहीं, वह बेचारा यह भी नहीं समझ पाता कि इस असाधारण पेय का विशेष गुण यह है कि इसका पीनेवाला बाध्य होकर अपनी कामनायें और महत्त्वाकांक्षायें भूल जाता है और फिर अपनी बुझी हुई इच्छाओं और अभिलाषाओं पर उसी तरह जान देने लगता है जैसे कि दिन पर रात जान देती है।

अब फल यह होता है कि कुछ क्षण बाद ही हमारा यह नायक ब्रिनहिल्ट से किये अपने सारे वायदे भूल जाता है और गुदरुन का प्यार पाने के लिये अधीर हो—उठता है। गुदरुन उसे वचन देती है कि यदि वह ब्रिनहिल्ट को प्राप्त करने में उसके भाई गुन्नार की सहायता करेगा तो उसे उसकी पत्नी बन जाने में कुछ भी आपत्ति न होगी, बल्कि हार्दिक प्रसन्नता होगी!

दूसरे ही क्षण सिगर्ड गुन्नार का रूप धारण करता है और घोड़े पर सवार होकर उन आग की लपटों के बीच से होकर उस पार पहुँचता है। यद्यपि इस समय कितनी ही धूमिल स्मृतियाँ उसके हृदय में हलचल मचाती हैं, तथापि वह किले में यथा स्थान पहुँच कर ब्रूनहिल्ट से विवाह के चिह्न-स्वरूप जादू की अंगूठी ज़बरदस्ती छीन लेता है और दावा करता है कि वह उसकी पत्नी है। इस पर ब्रूनहिल्ट बहुत हिचकिचाती और संकोच करती है, किन्तु उसका संकल्प है कि वह किसी भी ऐसे वीर को पति मान लेगी जो आग की भयंकर लपटें पार कर इस पार आयेगा, अतएव नियति से विवश होने के कारण वह उसे अपना पति स्वीकार करती है। इस प्रकार सिगर्ड को न पहचान-पाने के कारण उसका विवाह निबेलउंगों के राजा गुन्नार से हो जाता है।......! किन्तु गुन्नार के दरबार में वह सिगर्ड को पहचान लेती है, उसे अपनी और उसके वचनों की याद दिलाने की कोशिश करती है और यह देखकर बुरी तरह खीझ उठती है कि वह गुदरुन से विवाह कर चुका है और उस पर पूरी तरह आसक्त है!

इस बीच में ब्रूनहिल्ट गुन्नार को अपने पास फटकने भी नहीं देती, फल यह होता है कि अपनी मनचाही पत्नी पाने पर भी गुन्नार कभी प्रसन्न मुख नहीं दिखलाई पड़ता, बल्कि प्रत्येक क्षण उदास रहता है, यों तो कमी उसे किस चीज़ और किस बात की है! अंत में वह सिगर्ड से असन्तोषजनक जीवन की चर्चा करता है और सिगर्ड उसे वचन देता है कि ब्रूनहिल्ट को उसकी आज्ञाकारिणी बनाने में वह अपनी सारी शक्ति लगा देगा और देखेगा कि वह अपने को उसकी दासी समझती है।

सिगर्ड गुन्नार को वचन देकर ही नहीं रह जाता, प्रत्युत वह ब्रूनहिल्ट के पास जाता है, उससे उसका कमरबन्द और उसकी अंगूठी छीन लेता है, और उसे अपने साले के पास घसीट लाता है। इस समय ऐसा लगता है जैसे कि इतनी विनीत और आज्ञाकारिणी पत्नी और कहीं मिल ही नहीं सकती और जैसे कि इसका स्वभाव ही बदल दिया गया है। इसके बाद सिगर्ड गुदरुन के पास जाता है और ब्रूनहिल्ट की अंगूठी और कमरबन्द विजयोपहार के रूप में भेंट करता है।

× ×

इस तरह ऊपर से गम्भीर और मधुर बन जाने पर भी ब्रूनहिल्ट अन्दर ही अन्दर जलती रहती है और कोई जान नहीं पाता! इस तरह कुछ दिन बीत जाते हैं कि एक दिन एक

तालाब पर नहाते समय वह गुदरुन से खुले रूप में लड़—जाती है, क्योंकि सहसा ही गुदरुन दावा करती है कि वह उससे पहले तालाब पर आई है। इस पर गुदरुन उसे उसकी जादू की अंगूठी दिखलाती है और ताना मारकर कहती है कि वह वही गुन्नार की पत्नी है, जो उसके-अपने पति की प्रेमिका रह चुकी है और इस प्रकार जिसका हृदय उसका अपना पति भी जीत चुका है! बात बढ़ जाती है और दोनों पक्ष अलग-अलग राजदरबार में अपनी सफ़ाई पेश करते हैं। यहाँ हगनी नामक निबेलउंगों का एक सम्बन्धी बहुत उत्तेजित होकर ब्रूनहिल्ट का पक्ष लेता है और इस तरह उसके पक्ष का पूर्ण समर्थन भी करता है! यह हगनी बड़े निम्न स्तर के, गंदे और उलझे हुये विचारों का आदमी है और सदैव ही किसी न किसी के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने में व्यस्त रहता है, अतएव उसे जाने कहाँ से जादू के पेय की युक्ति और ब्रूनहिल्ट और सिगर्ड के प्रथम परिणय के सम्बन्धित सारी बातें मालूम हो जाती हैं। वह ब्रूनहिल्ट के कान भरता है और कहता है कि सचमुच ही उसके साथ अन्याय हुआ है, अतएव अब वह तभी सन्तुष्ट हो जब उसके अपमान का बदला ख़ून से चुकाया जाये।

पहले मत के अधिकारियों के अनुसार हगनीकिसी तरह सिगर्ड के शरीर के उस स्थान का पता लगता है जहाँ प्रहार करने से उसे इतनी चोट पहुँचेगी कि वह मर जायेगा। इसके बाद एक दिन जब कि सिगर्ड सो रहा है, वह जाता है और उसी घातक स्थान पर अपना भाला घुसेड़ देता है। सिगर्ड बुरी तरह घायल हो जाता है और उसे केवल इतना समय मिलता है कि वह अपनी पत्नी को बुलाये और उससे कहे कि वह तो चला,अब उसे स्वयं बच्चों को पालना-पोसना है, बड़ा करना है और उनकी रक्षा करनी है। इसके बाद वह दम तोड़ देता है और गुदरुन की आज्ञा से उसकी लाश एक चिता पर रख दी जाती है और उसके साथ उसके अस्त्र-शस्त्र और उसका प्रिय घोड़ा भी। किन्तु इसी समय जब कि सिगर्ड राख बन कर हवा में उड़ने को होता है, ब्रूनहिल्ट अपने प्रियतम के साथ ही मर-मिट जाने के लिये बेचैन हो-उठती है। कोई कहता है कि वह भी आग में कूद पड़ती है और कोई बतलाता है कि इस आदेश के साथ आत्म-हत्या कर लेती है कि उसकी लाश उसके प्रियतम के पार्श्व में ही जलाई जाय...! जो भी हो, इस समय दोनों की हड्डियाँ एक साथ कड़क रही हैं, किन्तु दोनों के बीच में फिर भी एक चमकती हुई तलवार का अन्तर है, गोकि जादू की अंगूठी इस समय भी ब्रूनहिल्ट की उंगली में उसके प्रांजल प्रेम की भाँति ही लौ मार रही है!

दूसरे मत के अनुसार सिगर्ड शिकार करते समय हगनी के द्वारा मार डाला जाता है। सिगर्ड की मृत्यु का समाचार पति ही हूणों का राजा एटली अपनी बहिन ब्रूनहिल्ट के अपमान और उसकी मृत्यु के लिये गुन्नार से जवाब तलब करता है। गुन्नार कुछ विशेष उत्तर न देकर उसे वचन देता है कि वह बदले में अपनी बहिन गुदरुन का विवाह उसके साथ कर देगा! बात तय हो जाती है, किन्तु सिगर्ड की विधवा पत्नी इसके लिये राज़ी नहीं होती अतएव उसे भी वह प्रणय-पेय दिया जाता है और इस प्रकार वह एटली की पत्नी बन जाने को मजबूर की जाती है। अन्त में उसका विवाह एटली से हो जाता है और इस विवाह के परिणाम-स्वरूप गुदरुन के दो पुत्र होते हैं।

किन्तु यथा समय उस प्रणय-पेम प्रभाव विनष्ट हो जाता है और तब अपने इस दूसरे विवाह के लिये गुदरुन बहुत दुखी होती है और कामना करती है कि किसी प्रकार उसका उसके दूसरे पति से पीछा छूटे और वास्तविक पति सिगर्ड की मौत का बदला चुकाये !

× ×

जैसा कि निबेलउंगेनलीड में भी है, एटली अपने साले और अन्य सम्बन्धियों को हंगेरी आने के लिये निमन्त्रित करता है। उधर निमन्त्रण पाते ही वे अपना सारा सोना और अन्य कोष राइन नदी के एक गुप्त स्थान में छिपाकर, इस इरादे के साथ कि वे इसकी चर्चा कभी-भी किसी से न करेंगे, हंगेरी के लिये चल पड़ते हैं। किन्तु उनके हंगेरी पहुँचते ही दूसरी ओर युद्ध की तैयारियाँ होने लगती हैं। गुदरुन को अपने पति का यह छल पूर्ण व्यवहार इतना खलता है कि वह अपने भाई का पक्ष ग्रहण करती है और लड़ाई के मैदान में उसकी ओर से लड़ने का संकल्प करती है।

गुदरुन के भाई आदि भी किसी भाँति दबते नहीं, अतएव युद्ध छिड़ जाता है। इस युद्ध में आदि से अंत तक गुन्नार केवल एक ही काम करता है, वह है सारंगी बजा बजाकर अपने साथी निबेलउंगों की हिम्मत बढ़ाता, जैसे लड़ने से उसका अपना कोई प्रयोजन न हो ! फिर भी, युद्ध बहुत समय तक चलता है और निबेलउंग जी-तोड़ कर लड़ते हैं, किन्तु शीघ्र ही सारे वीर खेत रहते हैं और गुन्नार और हगनी ही बच रहते हैं। ये दोनों अकेले हैं और इन्हें जीत लेना बहुत आसान है, अतएव वे पकड़-लिये जाते और कैदखाने में डाल दिये जाते हैं।

यहाँ एटली उनके पास जाता है और उनसे राइन नदी का वह गुप्त स्थान जानना चाहता है, जहाँ सारी निधि गड़ी हुई है, किन्तु उन दोनों में से कोई भी टस-से मस नही होता ! दूसरे ही क्षण एटली को ज्ञान होता है कि जब तक हगनी जीवित है वह स्वयं तो कुछ बतलायेगा ही नही, गुन्नार भी कोई पता देने से रहा ! अतएव, वह आज्ञा देता है कि हगनी मार डाला जाय और उसका हृदय गुन्नार के सामने लाया जाय ! कुछ देर में हगनी का हृदय गुन्नार के सामने लाया जाया है। अब गुन्नार, यह समझ कर उस स्वर्ण-राशि का जानकार केवल वह बच रहा है, सन्तोष की सोत लेता है और उस विषय में कुछ भी बतलाने से साफ़ इन्कार कर देता है। यही नहीं, जैसे वह यह कह कर एटली का घमंड चूर कर देना चाहता है कि उसने पक्का इरादा कर लिया है कि वह उसे उस विषय में कुछ भी न बतायेगा और मरते दम तक न बतायेगा ! उसका कथन है कि एटली बहुत धनी राजा है और उसके लिये उस कोष का कोई महत्व नहीं है किन्तु वह अभागा है, वन्दी है और उस विशाल सम्पत्ति का रहस्य ही उसके लिये सब कुछ है, उसके लिये एक बार जीभ खोलने पर उसे आजीवन पश्चाताप करना पड़ेगा ! वह प्रस्ताव करता कि वह विशाल धन राशि आज की भाँति ही हमेशा गहरे पानी में छिपी रहे और किसी भी मनुष्य की कभी भी उस तक पहुँच न हो ताकि देवता एक बार फिर धनी और प्रसन्न हो उठें ! इतना कह कर गुन्नार क्षण-भर को रुकता है और फिर इस कथन के साथ अपनी बात समाप्त करता है कि उसके जीवन-काल में तो नहीं, किन्तु उसकी मौत के दिन से उस कोष को इस बात का पूरा-पूरा अधिकार होगा कि वह मनुष्य ही नही, मनुष्य के नाम से भी घृणा करे और चिढ़े।

इस वक्तृता से एटली क्रोध के मारे जलने लगता है और आज्ञा देता है कि बुरी तरह बन्धनों से जकड़े हुये गुन्नार को उस गढ़े में डाल दिया जाये जिसमें कि सांप ही सांप भरे हैं। राजा के आदेश का पालन होता है और उसका मज़ाक बनाने के ख्याल से उसकी वीणा भी उसके पास फेंक दी जाती है। गुन्नार अपनी वीणा अपने समीप देखकर अपनी सारी यातना भूल जाता है और अपने पैर के अँगूठे से उसे तबतक बजाता रहता है जबतक कि उसके तारों के साथ उसकी-अपनी सांसों के तार भी कहीं बीच से टूट नहीं जाते !

× ×

इस महान विजय के उपलक्ष में एटली शानदार दावत करता है। किन्तु इस दावत में वह इस क़दर नशे में चूर हो जाता है कि उसे अपने तन-बदन का होश नहीं रहता और गुदरुन अपने वास्तविक पति सिगर्ड की तलवार से उसका सिर उतार लेती है।

अब शेष रहती है एक गुदरुन, जिसके विषय में कुछ मतान्तर है। कुछ अधिकारियों का मत है कि इधर दावत में एटली इस तरह मधुपान करता है कि उसके होश-हवास ठिकाने नहीं रहते और उधर गुदरुन महल में आग लगा देती है और अन्य हूणों के साथ ही स्वयं भी भस्म हो जाती है। दूसरी धारणा है कि पति की मदोन्मत्त अवस्था में उसका वध करने के अपराध में वह एक जहाज़ के साथ बीच समुद्र में छोड़ दी जाती है और डेनमार्क के समुद्री किनारे पर जा-लगती है। यहाँ वह डेनमार्क के राजा से विवाह करती है और उसके तीन पुत्र होते हैं। ये तीनों जवान होने पर अपनी एक सौतेली, सुन्दर बहिन की मौत का बदला लेने के प्रयत्न में मार डाले जाते हैं। गुदरुन जीवन भर संकटों का सामना करते-करते हार-गई है अतः इस पुत्र शोक को नहीं सह पाती और पुत्रों की अन्त्येष्टि-क्रिया के लिये जलाई गई चिता में कूदकर आत्म-हत्या कर लेती है।

× ×

इस प्रकार यह महाकाव्य समाप्त होता है। किंतु यदि हम रूपकों पर गम्भीर रूप-से विचार करें तो हमें ज्ञात होगा कि यह सूर्य्य से सम्बन्धित एक पौराणिक कथा है। इसके रक्त और वध संध्याकालीन आकाश की लालिमा और सूर्य्य की नारंगी किरणों के प्रतीक है। इसमें फ़ैफ़निर का वध उस शीत और उस अन्धकार की पराजय की घोषणा है जो कि ग्रीष्म के सुनहले आकाश और संसार को बड़ी सरलता से ग्रस लिया करते हैं।

× ×

इतना सब होने पर भी सिगर्ड को भूल जाना असम्भव है। उसका ईश्वर के विरोधियों का वध करना पृथ्वी के अंधेरे गहरे तल से उस स्वर्ण राशि का निकालना, पर्वत पर प्रेम का आह्वान करना, सुन्दरी ब्रूनहिल्ट को प्रगाढ़ निद्रा से जगाना, कुछ समय के लिये वातावरण में छा जाना, और संसार की आँखों में जगमगा उठना और फिर सूर्य्य का उसी गति से शनैः-शनैः इसी अस्ताचल की ओर गमन और सदा के लिये पतन आदि ऐसी घटनायें हैं जिनपर हम तो क्या, आनेवाले युग भी युग-युग तक भावना और विचार में पड़े रहेंगे ! यह कथा मनुष्य के मन और बुद्धि से कभी भी निर्वासित नहीं हो सकती।

जर्मन महाकाव्य—

अधिक काल तक अनिश्चित दशा के बाद ६०० में जर्मन साहित्य का जन्म हुआ 'हिल्डेब्रान्द्स्लीड की कीटि के रूढ़िगत, आरम्भिक-गीत काव्य इस साहित्य के उदाहरण हैं। उत्तरी और दक्षिणी जर्मनी जाति और भाषा की विभिन्नता के कारण ये गीत काव्य कितने ही चक्रों में बांटे गये है जिनमें बहुत से आज भी उपलब्ध हैं। ये सब थोड़ी संख्या में निश्चित नायकों को ही किसी-न-किसी रूप में हमारे सामने रखते हैं। इनमें 'एरमानिश' नामक गोथ 'डिट्रिक फ्रॉन बेर्न', 'ऐतिल्ला' नामक हूण, 'ज़ीग्फ्रीत' और प्रसिद्ध रोमन विजेता 'आरमिनियस' आदि अधिक उल्लेखनीय हैं।

'हिल्देब्रान्द्' के घटना क्रम में हंगेरी में तीस वर्ष व्यतीत करने के बाद हिल्देब्रान्द स्वयं तो इटली चला आया किन्तु उसकी पत्नी और उसका 'हेदूब्रान्द्' नामक पुत्र वहीं छूट गये ! समय की गति में उसका पुत्र हंगेरी का महान योद्धा गिना जाने लगा और बहुत प्रसिद्ध हो गया। इसी समय एक हवा उड़ी कि 'हिल्देब्रान्द' मर गया, अतएव किसी साहसिक-यात्रा के सिलसिले में पुत्र पिता से मिला तो उसने उसे धूर्त और बनावटी तो समझा, ही उससे युद्ध भी किया। यहीं कविता समाप्त हो जाती है और पाठक यह निश्चय नहीं कर पाता कि युद्ध में पिता जीता अथवा पुत्र। किंतु बाद के कवियों ने इस ओर विशेष ध्यान दिया और कहानी को सुखान्त रूप देकर उस दुःखान्त-पुट से बचा लिया जो कि 'सोहराब और रुस्तम' में इतना हृदयद्रावक है।

× ×

इसी प्रकार के गीत-काव्यों के रूप में पुराने काव्यात्मक कथानकों का इतना प्रचार हुआ कि 'शार्लमॉन' ने उन्हें संकलित करने का इरादा किया, किन्तु उसके धार्मिक पुत्र 'लुई प्रथम' ने सिंहासन पर बैठते ही इस संकलन को नष्ट कर दिया क्योंकि इसमें वे सारे काव्य संग्रहीत थे जिन में जंगली मूर्तिपूजकों के देवताओं का बखान था जिन्हें कि उसके अपने पूर्वज भी पूजते आये थे। फिर भी इन महाकाव्यों के मूल में जंगलियों का ही हाथ रहा हो, ऐसा नहीं है, क्योंकि 'विज़न्स-ऑफ़ जजमेंट', ('न्याय के स्वप्न'), संतों की जीवनियाँ, 'हीलैंद' जैसे बाइबिल के गद्य-रूप 'लुदविगस्लीद' की तरह के मठाधीशों के राजनैतिक ग्रन्थ और नार्मनों के इतिहास जैसी चीज़ें भी हमें दूसरे युग में मिलती हैं। यहाँ 'वाल्टेरस्लीद' या ले 'ऑफ़ वाल्टर आफ़ ऐक्विटेन' का भी उल्लेख किया जा सकता है जो लैटिन में लिखी जाने के बाद भी कई दृष्टिकोणों से जर्मन है। 'वाल्थरस्लीद' बरगेंडी के हूण चक्र का एक महाकाव्य है, जिसकी रचना 'सेंत गाल' के 'एक्केहार्द' ने ९७३ के पूर्व की थी। इसमें

'एतिल्ला' के दरबार में शरीर-बन्धक के रूप में वन्दी 'ऐक्विटेन के वाल्टर' के अपनी विवाहिता पत्नी 'हिल्देगुंद' के साथ निगाह बचाकर भाग निकलने का मनोरंजक वर्णन किया गया है। कवि उनके निकल भागने की तैयारियों का उनकी यात्रा पद्धति का और उनके पड़ाव डालने की रीति का विवरण देने के बाद लिखता है कि एक सेना की टुकड़ी उन्हें *वौंसजीस पर्वत पर घेर लेती है और गुंथर और हैगेन के नेतृत्व में उनसे सारी धन-सम्पत्ति लूट लेना चाहती है किंतु ऐसा सम्भव नहीं हो पाता क्योंकि 'वाल्टर' सो रहा है किंतु उसकी पत्नी जाग रही है। वह ऐनमौके पर उसे संकट की सूचना देती है! वह तुरन्त ही उठकर अपना कवच धारण करता और अधिकांश शत्रुओं को मार भगाता है। अंत में केवल 'वाल्टर गुंथर' और 'हैगेन' ही बचते हैं, शेष सब खेत रहते हैं। इनमें सन्धि हो जाती है और दोनों प्रेमी एक बार फिर अपना यात्रा पर चल-देते हैं। शीघ्र ही वे 'ऐक्विटेन' पहुँचते हैं और तीस वर्ष तक राज्य करते है।

× ×

तीसरे युग में धर्म-युद्धों से कारण 'शालमाँन' और 'रोलैंड' की और सिकन्दर की महान दिग्विजयों की स्मृतिनों एक बार फिर हरी हो उठीं! फलस्वरूप 'रौलैंदस्लीद' 'अलेग्ज़ेन्दरस्लीद' और दूसरे कितने ही वीर-रस-प्रधान महाकाव्यों की रचना हुई। यही नहीं, बल्कि गद्य और पद्य दोनों में रोमाँस भी लिखे गये।

'रोलैंदस्लीद' में 'शालमाँन' की बहन 'वर्था' के विवाह और देशनिकोले का, 'रोलैंड' के जन्म का, अपने कपड़ों के लिये उसके अपने साथियों से धन उगाहने का, पहली बार उसके अपने चाचा के महल में आगमन का, अपनी माँ की आवश्यकता के लिये उसके शाही मेज़ से शराब और गोश्त के साहस से उठा लेने का, इस धूर्त्त पुत्र के अपराधों के लिये शालमाँन के उसकी माँ को क्षमा कर देने का और उसके 'ऑलिवर' से युद्ध आदि का सविस्तार वर्णन है।

इसका अंत रोलाँ की मृत्यु और देशद्रोही जेनेलाँ के दंड से होता है। किन्तु बाद के ग्रंथों का दावा है कि 'रौनसिवा' में घायल होने के बाद वह शीघ्र ही नीरोग हो गया और जर्मनी लौटा, जहाँ उसकी पत्नी ने उसे मरा जानकर सन्यास ग्रहण कर लिया था। इसके बाद उसके संताप की चर्चा आती है कि उसने 'रोलैंडसेक' में अपना आश्रम बनाया, किन्तु उसके बाद भी 'नौन्नेवूथ' के द्वीप के उस मठ की ओर से सदैव ही आँखें बचाता रहा, जहाँ उसकी प्रियतमा उसकी आत्मा की मुक्ति के लिये साधना करने में अपना सारा जीवन व्यतीत कर रही थी! इस चक्र की कविताओं का अंत 'रोलाँ' की मृत्यु से होता है, जब कि वह अपनी प्रियतमा की समाधि के बिल्कुल समीप ही समाधिस्थ किया गया और उसका मुंह उसकी प्रियतमा की ओर मोड़ दिया गया कि मरने के बाद भी वह उसको निरन्तर देखता रहे!

× ×

इसके बाद 'लैंगोबारबियन चक्र' का उल्लेख आवश्यक है, जिसमें 'रोथर' की कथा

*राइन के समानान्तर फैले हुये पहाड़

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। कहा जाता है कि यह रोथर शालर्मों का पितामह था। इसमें रोथर के द्वारा युवरानी के अपहरण किये जाने की चर्चा है, सम्राट के द्वारा पुत्री की खोज और प्राप्ति का उल्लेख है और पत्नी को फिर से जीत लेने के लिये अंत में 'रोथर' के अध्यवसाय और उसके प्रयासों का प्रशंसनीय वर्णन है।

'रोथर' के बाद 'ऑर्टनिट' इस चक्र की दूसरी उल्लेखनीय काव्य-गाथा है। इसमें बताया गया है कि इस 'ऑर्टनिट' नामक राजा ने एक जंगली मूर्तिपूजक राजकुमारी से विवाह किया, उसके पिता ने अपने दामाद को पखेरू-राक्षसों के अंडे भेंट किये, इन्हीं अंडों के कारण 'ऑर्टनिट' की मृत्यु हुई और उसके मरते ही उन राक्षसों ने ट्यूटनों की धरती को जीत लेने के विचार से उन पर हमला कर दिया।

आर्टनिट के बाद 'हग डिट्रिक' और 'वुल्फ़ डिट्रिक' की कथायें सामने आती हैं, जो कि लैंगोबार्डियन चक्र को जीवित रखकर उसके अंतिम क्षण तक ऑर्टनिट को साहसपूर्ण घटनाओं में व्यस्त चित्रित करती हैं!

'हरज़ॉग अर्नेस्ट' की कथा और अधिक लोकप्रिय है। इसमें बवेरिया के एक ड्यूक का वर्णन है! यह जेरूसलम की तीर्थ यात्रा करने के संकल्प से अपना प्रदेश छोड़कर रास्ते में अनेकानेक संकटों और रोमांचकारी आपदाओं का वीरता से सामना करता रहा।

× × ×

कहना न होगा कि 'निबेलुंगेनलीद' निश्चित-रूप से जर्मनी की श्रेष्ठतम काव्य-गाथा है। इसे प्रायः 'जर्मनी का इलियड' और गुद्रुन को प्रायः 'जर्मनी का ऑडिसी' कहा जाता है। गुद्रुन की कथा-वस्तु में लेखक कहता है कि जब युवराज हैगेन की आयु सात वर्ष की थी तो उसे एक [1]ग्रिफ़िन उठा ले गया, और स्वयं तो उसने उसे निगल जाने की कोशिश की ही, उसके पुत्र ने भी उसे हड़प जाने की कोशिश की, किन्तु बलवान बालक किसी प्रकार प्राण बचाकर जंगल में भाग गया। यहाँ सुयोग से उसे कुछ साथी मिले जिनके साथ रहकर वह पला, पनपा और बड़ा हुआ! कुछ समय बाद अंत में एक जहाज उधर से गुज़रा, जिसने हैगेन और उसके साथियों को शरण तो दी किन्तु ग़ुलाम बना लेने की धमकी भी दी। इस पर हैगेन ने अपने पूर्व साहस से काम लिया और अपने अपने पौरुष के प्रताप से नियति के इतने निर्मम व्यंग्य से भी मुक्ति पा ही ली! इसके बाद वह अपने देश लौटा, राजा बना, उसने विवाह किया और 'गुद्रुन' नामक एक पुत्री को जन्म दिया, जिसे कि 'ज़ीलांत' का राजकुमार उसके पिता और उसके प्रेमी से बहुत दूर भगा ले गया। राह में इसे 'हैगेन' के सिपाहियों से युद्ध करना पड़ा, जिसमें उसकी विजय हुई। अंत में राजकुमार अपने राज्य में आया। यहाँ, यद्यपि उसने गुद्रुन के स्नेह को जीतने के अथक प्रयत्न किये तथापि उसने उसका प्यार स्वीकार नहीं किया। उसकी इस अन्यमनस्कता और रुखाई से चिढ़कर राजमाता ने उसे कठोर यातनाओं से उसे झुकाने की बात सोची और यहाँ तक किया कि उसे एक दिन नंगे पैरों

---

[1]एक कल्पित दैत्य जिसके शरीर का ऊपरी भाग बाज़ का है और निचला भाग शेर का—

बर्फ़ में निकाल दिया कि वह जाये और पारिवारिक कपड़े धो लाये।.........इस प्रकार जबकि 'गुदरुन' अपने कार्य में लगी रही, उसे खोजते-खोजते उसके प्रेमी के साथ उसका भाई उधर आ निकला और उसने उसे और उसकी दासी—सखी को इस दयनीय स्थिति में देखा। शीघ्र ही बड़े नाटकीय ढंग से इन दोनों युवकों ने इन दोनों कुमारियों को मुक्त किया और उनके साथ विवाह कर लिया।

× × ×

तत्पश्चात् 'वोल्फ्रॉम' फ़ॉन एशनेबाख़' के दार्शनिक महाकाव्य और 'स्ट्रैसबर्ग' के 'गॉट फ़्रीत' के काव्यात्मक कथानक क्रम में आते हैं। इन दार्शनिक काव्य-खण्डो में टेनीसन और वैग्नर की प्रेरणाप्रदाता 'पारजीफ़ाल' का स्थान अमर है और इन काव्यात्मक कथानकों में अपूर्ण होते हुये भी 'ट्रिस्टन उन्द आइसोल्दे' एक बहुत सुन्दर कृति है। इसी सिलसिले में यह बता देना उचित होगा कि 'लॉंग्फ़ेलो' के 'गोल्डेन लीजेंड' और 'इवीन' या 'दि नाइट विद दि लॉयन' के मूल श्रोत 'एक उंद एनाइदे' और 'देर आमें हीनरिश' का रचयिता गॉट फ़्रीत का समकालीन 'हातमान-फ़ॉन देर यू' ही है।

× × ×

बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी के गीतकारों में 'वाल्टेर फ़ॉन दर प्रोगिलवाइंदा' और 'वोल्फ्रॉय फ़ॉन एशेनबाख़ बहुत प्रसिद्ध हैं। इन्होंने राज दरबारों से सम्बंधित कथाओं को ही अपने प्रिय कथानकों का रूप दिया और इस प्रकार अपने महाकाव्यों में 'आर्थर', 'होली ग्रेल' और 'काल देर माग्नें' से सम्बंधित कहानियों को विशेष-रूप से सजाया और सँवारा! इन काव्य-कथानको में अधिकांश 'हेल्देनबुश या 'बुक ऑफ़ दी हीरोज़' में प्राप्य हैं, जिसका संकलन पन्द्रहवीं शताब्दि में 'कैपे फ़ॉन देर रून' ने किया था।

तेरहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में एकाएक कृत्रिमता और अस्वाभाविकता का प्रभुत्व आ गया। फलस्वरूप इसकी कमर तोड़ देने और साहित्य को इस धारा के दूषित प्रभाव से बचाये रखने के लिये उपदेशात्मक कृतियों की रचना हुई।

इसके बाद चौदहवीं शताब्दि आरम्भ हुई और इसके आरम्भ होते-होते स्वतन्त्र नगरों, साहित्यक संस्थाओं और पांच विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। इस समय राजनैतिक-व्यंग्य-प्रधान कृतियाँ तो सामने आईं ही, ऐतिहासिक गद्य-ग्रन्थों की भी रचना हुई: जिन्हें कभी-कभी 'गद्यात्मक काव्य-कथा' भी कहा जाता है। इसी समय 'वॉक्सबूसर' नामक दूसरे काव्य-चक्र भी अस्तित्व में आते हैं जिनमें 'वान्बरिंग फ़्रिड' या 'डॉक्टर' फॉस्टस जैसी अमर कथायें अब तक सुरक्षित हैं, जो कि अन्यथा अब तक कभी की काल के गाल में समा गई और लुप्त हो गई होतीं।

सुधार-युग कवियों के लिये बहुत अप्रीतिकर और गहन प्रमाणित हुआ क्योंकि पुरानी 'कथाओं को नवीन-रूप देने के अतिरिक्त वे इस युग में किन्हीं नये महाकाव्यों की रचना न कर सके। इस प्रकार तीस वर्ष बीत गये और तब कहीं एक 'क्लॉप्स्टॉक' कृत 'मेसियाज़' सामने आई जिसका उल्लेख मौलिक रचना के रूप में आवश्यक है। यह महाकाव्य बीस भागों में है।

इसका विषय है ईसा का जीवन, उसके जीवन का महान उद्देश्य और उस दैवी उद्देश्य की पूर्ति जिसे पूरा करने के लिये ही उसने पृथ्वी पर जन्म लिया था।

× × ×

'इसी क्लापस्टाक' के कितने ही प्रसिद्ध समकालीनों ने जर्मन-साहित्य के 'क्लैसिक युग' में जर्मन साहित्य की बड़ी सेवा की और यश कमाया। इस युग का आरम्भ तब से होता है जब 'गेटे' जर्मनी लौटा और उसने 'शिलर' के सहयोग से जर्मन-साहित्य में 'क्लैसिकल स्कूल' की स्थापना की। एक ओर 'शिलर' ने विलियम टेल, जैसे अमर महाकाव्यात्मक-नाटकों से अपने साहित्य का गौरववर्द्धन किया, दूसरी ओर गेटे ने 'हेमान' और 'डोरोथिया' जैसी हरी-दुनिया की सृष्टि की, फॉस्ट जैसे नाटकीय-महाकाव्य को जन्म दिया और 'रीनेके फ़ुक्स' जैसे पशु-महाकाव्य को अद्भुत, अभूत पूर्व और अद्वितीय रूप देकर साहित्य के गले का हार बना दिया।

× × ×

'वीलान्त' भी कई क्षेत्रों में धुरन्धर लेखक था। यद्यपि 'अरेबियन नाइट्स', 'शेक्सपियर' के 'मिडसमर नाइट्स ड्रीम', और 'हुआँ दे बोरदो से प्रेरणा ग्रहण करने के बाद ही उसने अपने 'ओबेरों' नामक रूपकात्मक महाकाव्य की रचना की, तथापि उसका पाठ करते समय पाठक के सामने चित्र पर चित्र आते जाते हैं और पाठक उनके इन्द्रधनुषी रंगों से अभिभूत हो उठता है। यही कारण है कि अपने जन्म-काल से अब तक उसने कितने ही संगीतज्ञों और कलाकारों को प्रेरणा, रस और आधार प्रदान किया है। यह चर्चा संगीतज्ञों और कलाकारों की है अन्यथा कहा कहा जा सकता है कि उसका कथानक भी कम लोगों ने नहीं अपनाया।

'गेटे' के युग के बाद 'वैग्नर' ने प्राचीन महाकाव्य-साहित्य का सबसे सफल और चित्रात्मक प्रयोग किया। कहना न होगा कि उसके नाटकों के सारे कथानकों के मूल स्त्रोत जर्मन महा-काव्य ही हैं।

———

'निबेलउंगेनलीद'—निबलउंगों का गीत—

'निबेलउंगेनलीद' या 'निबेलउंगों' के गीतों का रचना-काल यद्यपि तेरहवीं शताब्दि है तथापि इसमें छठवीं और सातवीं शताब्दी की घटनायें भी वर्णित हैं। कुछ अधिकारियों का मत है कि 'निबेलउंगेनलीद' विभिन्न कालों में, विभिन्न स्थानों में, विभिन्न कवियों द्वारा रचे गये बारह गीतों का एकीकरण है, किन्तु कुछ दूसरे विद्वानों का कथन है कि यह एक कवि की ही रचना है, अतएव विभिन्न कालों और विभिन्न स्थानों का प्रश्न ही नहीं उठता। दूसरे वर्ग के दिग्गज 'कान्राडफ़ॉन क्यूरेनबर्ग', 'वाल्फ़्रॉम फ़ॉन एशेनबाख़', 'हाइनरिख़ फ़ॉन आफ़्टरडिंगन', 'वाल्टेर फ़ॉन-देर फ़ोगिलवाइदा' में से किसी एक को इसका लेखक मानते हैं। कविता चार-चार पंक्तियों वाले २४५६ पदों के ३६ 'साहसों' या पर्वों में विभाजित है! इसका घटना-काल तीस वर्ष है और यह फ्रैंकिश, बरगैंडिश, आस्ट्रो-गॉथिक और हूणों के सागा-चक्रों से ली गई कथा-वस्तु पर आधारित है।

ऐसा माना जाता है कि इसका 'डिट्रिक फ़ॉम बेर्न' और कोई न होकर इटली का थिओडोरिक[1] है, 'एटसेल एटिला' नामक हूण का प्रतीक है और गुंथर बरगेंडी के उस राजा का प्रतिनिधि है, जो कि ४३६ में अपने साथियों के सहित नष्ट कर दिया गया।

साहस एक—

काव्य के आरम्भ में कवि कहता है कि राइन-तट पर स्थित वोर्म्स में बरगेंडी के तीन राजकुमार रहते हैं। उनकी एक बहन का नाम क्रीमहिल्त है। यह एक दिन एक स्वप्न देखती है कि दो गिद्ध एक बाज़ का पीछा करते हैं और अंत में उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण वह बाज़ आता है और उसके हृदय शरण में लेता है।

× ×

वह इस स्वप्न से घबड़ा उठती है और, यह जानकर कि उसकी माँ स्वप्नों का अर्थ लगाने में चतुर है, उससे इस भयंकर स्वप्न की चर्चा करती है। उसकी मां कहती है कि इस स्वप्न का अर्थ तो केवल यह है कि उसके भावी पति को भीषण शत्रुओं का सामना करना पड़ेगा।

× ×

---

[1] **इटली के पूर्वी प्रदेशों का राजा जिसने ४८९ में इटली में प्रवेश किया था—वह साहित्य का विशेष प्रेमी भी था!**

यहाँ पाठकों को यह बतला देना आवश्यक है कि यह आरम्भिक भविष्य-वाणी काव्य में थोड़े-थोड़े अन्तर पर अनेक स्थलों में इतनी बार दुहराई जाती है कि अंत में ऐसा मालूम होने लगता है कि कोई मर गया है, उसके अंतिम संस्कार हो रहें हैं और गिर्जे के घंटे बार-बार बजकर उसकी मृत्यु की घोषणा कर रहे हैं, शोक मना रहे हैं ! ऐसे में फिर हर्ष की बात कहाँ !

साहस दो—

अब काव्य में हम राइन पर बसे सान्टेन नामक स्थान आते हैं। यहाँ का राजा ज़ीग्मंत और उसकी पत्नी अपने एक-मात्र किशोर पुत्र ज़ीग्फ़ीत के लिये एक प्रतियोगिता करते हैं ! इसमें स्वयं राजकुमार महान सफलता प्राप्त करता है और उसकी माँ उसकी इस सफलता के उपलक्ष में सारे उपस्थित सरदारों को नाना प्रकार के बहुमूल्य वस्त्राभूषण भेंट करती है। यही नहीं, बल्कि कितने ही उत्सव मनाये जाते हैं और दावतें तो सात दिनों तक चलती रहती हैं !

साहस तीन—

अधिक समय बीत जाता है।

एक बार ज़ीग्फ़ीत क्रीमहिल्ट के सौन्दर्य की इतनी प्रशंसा सुनता है कि वह उसके प्रेम में पड़कर उसे प्राप्त करने की चेष्टा करता है, और केवल ११ साथियों के साथ तुरन्त ही इस उद्देश्य से चल भी पड़ता है। शीघ्र ही वह वोर्म्स आ पहुँचता है ! उसके यहाँ पहुँचते ही राज्य में खलबली मच जाती है। इसी समय इस प्रदेश के राजा और क्रीमहिल्त के भाई गुंथर का चचेरा भाई ट्रॉनियो का हैगेन गुंथर को सचेत करता है कि यह नवागन्तुक वह वीर है जिसने एक पंख-वाले भयानक अजगर को मारकर कितने ही योद्धाओं को नीचा दिखाया है। यही नहीं, वह कहता है कि यह वह व्यक्ति है जो निबेलउंगों की निधि का स्वामी भी है।

यहाँ निबेलउंगों की निधि के विषय में कुछ बतलाना आवश्यक है। यह निधि दो भाइयों ने निबेलउंगों से प्राप्त की और ज़ीग्फ़ीत से प्रार्थना की कि वह उसे उनमें बराबर-बराबर बाँट दे। ज़ीग्फ़ीत ने यह कार्य स्वीकार कर इच्छा प्रकट की कि इसके बदले में सोने के ढेर के ऊपर रक्खी 'बालमंग' नामक तलवार उसे मिल जाय ! उसकी शर्त मान ली गई, किन्तु वह उसके बँटवारे में ही व्यस्त था कि दोनों भाइयों ने एक दूसरे को तरह घायल कर डाला ! थोड़ी ही देर में दोनों उस सोने पर सिर रखकर मर गये और इस प्रकार उस अपार धन-राशि का एक-मात्र स्वामी बनकर ज़ीग्फ़ीत संसार का सब से धनी व्यक्ति हो गया।

अतएव यह सुनकर कि नवागन्तुक इस बात का ढिंढोरा पीट रहा है कि वह गुंथर को तुमुल-युद्ध के लिये चुनौती देने आया है, बरगैंडियों के होश उड़ जाते हैं ! किन्तु, शीघ्र ही वे उसे समझा-बुझाकर शान्त करते हैं और अंत में अनेकानेक खेलों और प्रतियोगिताओं के द्वारा उसका मनोरंजन कर उसे एक साल तक अपना अतिथि बनाये रखते हैं। इस बीच में तमाम कौतुकों और प्रतियोगिताओं में विशेष सफलता प्राप्त कर वह क्रीमहिल्त को अपनी ओर

आकर्षित कर लेता है। खिड़की पर वह उसकी प्रत्येक जीत पर संतोष से खिल उठती है और दूसरी ओर ज़ीग्फ़्रीत उसे स्वयं अपनी खिड़की की जाली से प्रायः झाँका करता है।

साहस चार—

ज़ीग्फ़्रीत के प्रवास के अंतिम दिनों में अकस्मात् सूचना मिलती है कि चार हज़ार वीरों के साथ सेक्सोनी और डेनमार्क के राजा वोर्म्स पर चढ़े-आ रहे हैं। इस चढ़ाई की चर्चा सुनते ही तमाम लोगों के हाथ-पैर फूल जाते हैं और वे इतने अधीर हो उठते हैं कि केवल एक हज़ार योद्धाओं को साथ लेकर ज़ीग्फ़्रीत उन राजाओं का सामना करने और उन्हें जीत-लेने का प्रस्ताव करता है। राजा गुंथर इस प्रस्ताव से सन्तोष की सांस लेता और सुखी होता है और उसे सारे साज-सामान के साथ विदा करता है। कहना न होगा कि ज़ीग्फ़्रीत शीघ्र ही विजयी होकर लौटता है। यही नहीं, वह उन राजाओं को भी बन्दी बनाकर अपने साथ लाता है, जिन्हें देखकर गुन्थर प्रसन्नता से फूला नहीं समाना! दूसरे ही दिन ज़ीग्फ़्रीत के सम्मान में राज-दरबार होता है और इस समय वह चारण, जो उसकी महान विजय की घोषणा करता है, क्रीमहिल्त के द्वारा पुरस्कृत होता है। क्रीमहिल्त इस वीर की प्रशंसा सुनकर आह्लाद और गर्व से खिल—उठती है!

साहस पाँच—

वोर्म्स में इस विजय के सम्मान में हुये उत्सवों का वर्णन करने के बाद कवि बताता है कि कैसे एक दिन ज़ीग्फ़्रीत और क्रीमहिल्त का आमना-सामना हो जाता है और कैसे पहली बार दृष्टि मिलते ही वे परस्पर एक दूसरे को प्रेम करने लगते हैं।

'एक ओर से सर्व सुन्दरी आई नारी,
जैसे कुहरों के बादल से, मुस्कानों में किरणें भरकर,
धीरे-धीरे आये ऊषा;
और, उधर दूसरी ओर से वीर अनूठा आया जैसे
शौर्य चल रहा हो पृथ्वी पर..........!'

× ×

अब ज़ीग्फ़्रीत साहस से काम लेता है और क्रीमहिल्त से विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है। गुंथर अपनी बहन की ओर से बड़ी प्रसन्नता से यह प्रस्ताव स्वीकार करता है।

साहस छः—

किन्तु जैसे गुंथर एक सौदा तय कर लेना चाहता है—वह ज़ीग्फ़्रीत से कहता है कि उसकी बहन को पत्नी बनाने के पहले वह उसके साथ ईसेनलैंड चले और ब्रूनहिल्त नामक संसार की सब से सुन्दरी नारी को प्राप्त करने में उसकी सहायता करे! वह जानता है कि उसकी सहायता के बिना यह कार्य सम्भव नहीं है, क्योंकि ब्रूनहिल्ट का संकल्प है कि वह केवल उस व्यक्ति के साथ विवाह करेगी जो अपना भाला और पत्थर उसके द्वारा फेंके गये भाले और पत्थर से दूर फेंक देगा और कूदने की प्रतियोगिता में उसे हरा देगा। इस पर ज़ीग्फ़्रीत गुंथर को बहुत समझाता है कि वह इस फेर में न पड़े, किन्तु उसकी समझ में कुछ नहीं आता। इस प्रकार अंत में वह उसकी सहायता करने और उसका साथ देने का निश्चय करता है। इसी समय, पता नहीं किस विचार से, वह गुंथर से आग्रह करता है कि वह हैगेन और एक दूसरे योद्धा को भी अपने साथ ले ले।............!

वे चलने को होते ही हैं कि क्रीमहिल्त आती है और अपने हाथ के बने कितने ही उपयोगी वस्त्र उन्हें भेंट करती है। इसके बाद वे चारों प्रस्थान करते हैं, एक छोटे जहाज़ में बैठते हैं और राइन के नीचे की ओर चलकर बारह दिन के बाद ईसनलैंड पहुँचते हैं। इस स्थान के समीप आते ही ज़ीग्फ़्रीत अपने साथियों को विशेष आदेश देता है कि वे ख़ास तरह से ध्यान रक्खें और अपना परिचय देते समय हरएक से अपने को गुंथर की रिआया ही बतलायें। यही नहीं कि वह उन्हें ही ऐसा आदेश देता है, बल्कि यह कि उपयुक्त समय पर वह स्वयं भी ऐसे कार्य करता है कि वह गुंथर का एक सेवक-मात्र मालूम होता है।

साहस सात—

सहसा ही ब्रूनहिल्त अपनी खिड़की से समुद्र पर दृष्टि दौड़ाती है और देखती है कि एक जहाज़ उसकी ओर बढ़ा आ रहा है। यहाँ पाठकों को यह बतला देना आवश्यक है कि ज़ीग्फ़्रीत ब्रूनहिल्त के राज्य में पहले भी एक बार आ चुका है, अतएव ब्रूनहिल्त उससे भली भाँति परिचित है और इसलिये ही इस समय जहाज़ पर दृष्टि पड़ते ही यह सोचकर फूली नहीं समाती कि इस बार वह उससे विवाह करने के लिये ही उसके पास आ रहा है। किन्तु शीघ्र ही उसे यह जानकर बड़ा आश्चर्य होता है कि पहले तो जहाज़ के बाहर क़दम रखते ही ज़ीग्फ़्रीत सेवक की भाँति गुंथर की अभ्यर्थना करता है, और, फिर यह, कि उससे विवाह करने का इच्छुक है बरगेंडी का राजा गुंथर, ज़ीग्फ़्रीत नहीं! अतएव वह निराशा से हत बुद्धि होकर उग्र हो उठती है और नवागन्तुक को सचेत करती है कि या तो वह परीक्षा में भाग लेकर सफलता प्राप्त करे या अपने प्राणों से हाथ धोने को तैयार हो जाय।

गुंथर पर इस धमकी का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता और वह परीक्षा देने की इच्छा प्रकट करता है, किन्तु दूसरे ही क्षण वह यह देखकर भय से कांप उठता है कि वह भाला इतना

भारी है कि उसे बारह आदमी लादकर ला रहे हैं, और वे भी उसके बोझ से दबे जा-रहे और लड़खड़ा रहे हैं, जैसे कि अब गिरे और तब गिरे ! उसकी यह स्थिति देखकर ज़ीग्फ़ीत उसे एक बार फिर विश्वास दिलाता है और कान में फुस्फुसाता है कि वह थोड़ा भी चिंतित न हो, केवल अपने शरीर के अंगों को आवश्यक रूप से हिलाता-डुलाता रहे, शेष के लिये वह स्वयं उपस्थित है ! उसका कहना है कि वह अपना 'टार्नकैपे'[1] पहिन लेगा और फिर सारी आवश्यक शक्ति लगा देगा, कोई जान भी पायेगा !

× ×

भाला फेंकने का समय आता है। ब्रूनहिल्त अपनी पूरी ताक़त से उस भाले को इतने ज़ोर से फेंकती है कि गुंथर और अदृश्य ज़ीग्फ़ीत दोनों लड़खड़ाने लगते हैं जैसे कि वे तुरन्त ही धरती पकड़ लेंगे। यह देखकर ब्रूनहिल्त अपनी विजय की घोषणा करना ही चाहती है कि ज़ीग्फ़ीत उस भाले को उसके लक्ष्य से बहुत दूर फेंक देता है और इस प्रकार उसका घमंड चूर कर देता है।

दूसरी परीक्षा आती है और, विरोधी की विजय पर आश्चर्य चकित रहने पर भी, ब्रूनहिल्त पत्थर इस तरह हवा में फेंकती है कि वह मीलों दूर जा गिरता है। यही नहीं, पत्थर के साथ ही वह स्वयं भी छलांग भरती है और, जैसे पर लग जाते हैं, दूसरे ही क्षण गिरे हुये पत्थर के समीप ही जा खड़ी होती है। इस पर गुंथर की बारी आनेपर ज़ीग्फ़ीत अपना पत्थर उसके पत्थर से बहुत आगे फेंक देता है और गुंथर को पेटी के सहारे साधकर इस तरह उछलता है कि पत्थर के ज़मीन पर गिरते ही वह भी उसके समीप ही नज़र आता है।

इस प्रकार पराजित होने पर ब्रूनहिल्त गुंथर से विवाह करने को राज़ी हो जाती है, यद्यपि इस समय वह ऊपर से घोर असन्तुष्ट और बहुत गम्भीर है ! किंतु, गुंथर अपनी विजय पर गद्गद् हो रहा है।

साहस आठ—

ज्योंही विवाह की तैयारी आरम्भ होती है, ब्रूनहिल्त अवसर पाकर अपने विवाहोत्सव में भाग लेने के लिये कितने ही यशस्वी योद्धाओं को अपने महल में बुला-भेजती है ! ज़ीग्फ़ीत अदृश्य-रूप से गायब हो जाता है और निबेलउंगों के देश की राह लेता है। यहाँ आने पर वह स्वयं अपने महल में प्रवेश नहीं कर पाता और उसे इसके लिये युद्ध करना पड़ता है। बात यह है कि निबेलउंग कोष का सजग और सावधान संरक्षक उसे पहचान नहीं पाता, अतएव महल में घुसने नहीं देता। इसपर ज़ीग्फ़ीत उससे लड़ता है और संरक्षक इस प्रकार पराजित होने के बाद विवश होकर वह उसे और उसके अधिकार को पहचानता है।

× ×

[1] एक लबादा जिसे पहिनने से कोई भी अदृश्य हो जाये और उसमें बारह योद्धाओं के बराबर शक्ति आ जाये !

ज़ीग्फ़ीत महल में आता है और अपने एक हज़ार वीरों को आज्ञा देता है कि वे तुरन्त तैयार होकर उसके साथ ईसेनलैंड के लिये कूच करें। उसी क्षण उसकी आज्ञा का पालन होता है!

× ×

इतनी विशाल सेना को अपने राज्य की ओर आता देखकर ब्रूनहिल्त का प्राण यों ही सूख जाता है और इसपर जब गुँथर उसे यह बतलाता है कि वह उसकी सेना है तब तो उसमें उसका सामना करने की कल्पना करने का भी साहस नहीं रह जाता।

साहस नौ—

अब एक बार फिर जहाज़ों के पाल चढ़ जाते हैं और इतने शूर-वीरों के संरक्षण में वह अपूर्व सुन्दरी राइन के ऊपरी भाग की ओर प्रस्थान करती है।

× ×

जैसे ही जहाज़ बरगेंडी के समीप आते हैं, गुँथर सोचता है कि उसके पहले उसके राज्य में उसकी पहुँच का समाचार पहुँचना आवश्यक है, अतएव वह ज़ीग्फ़ीत के पीछे पड़ जाता है और, उसे यह विश्वास दिलाने के बाद कि इसके लिये क्रीमहिल्ट उसका बड़ा उपकार मानेगी, उससे आग्रह करता है कि वह स्वयं यह कार्य कर दे और सन्देशवाहक बनकर यह सन्देश उसे दे आये।

साहस दस—

ज़ीग्फ़ीत क्रीमहिल्त को गुंथर और उसकी पत्नी के आगमन का शुभ समाचार सुनाता है! वह फूली नहीं समाती, इस सन्देश के लिये उसे हृदय से धन्यवाद देती है और तुरन्त ही अपने भाई और उसकी नव-वधू का स्वागत करने के लिये उसके साथ-साथ समुद्री-किनारे पर आती है।

× ×

इसके बाद कविता में चुम्बनों, भाषणों और ब्रूनहिल्त के सम्मान में कौतुकों और प्रतिभोजों का मनोहारी वर्णन है। ऐसे ही एक भोज में ज़ीग्फ़ीत सबके सामने गुँथर को उसके वचन की याद दिलाता है कि जैसे ही ब्रूनहिल्त उसकी हो जायेगी वह क्रीमहिल्ट का विवाह उससे कर देगा!...... इस पर गुंथर तुरन्त ही अपनी बहिन को बुलवाता है। उसकी पत्नी यह सब कुछ नहीं समझ पाती और आश्चर्य करती है कि वह अपनी बहिन का हाथ एक सेवक के हाथ में दे रहा है। किन्तु वह एक नहीं सुनता और उसे शान्त कर दूसरे ही क्षण क्रीमहिल्त को ज़ीग्फ़ीत को सौंप देता है। इस प्रकार दो नव-दम्पति इस संध्या के भोज में समीपस्थ उत्सव की शोभा बढ़ाते हैं।

× ×

विश्राम की वेला आती है। गुंथर अपने शयनागार में आता है और जैसे ही अपनी पत्नी को चूमने की कोशिश करता है, उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। वह अनुभव करता है कि वह ज़बरदस्ती घसीटा जाता और बांधकर एक ऊंची खूंटी पर टाँग दिया जाता है। इसके बाद, वह यद्यपि कितनी ही बार गिड़गिड़ाता और अपनी मुक्ति की प्रार्थना करता है, उसकी पत्नी एक नहीं सुनती। इस प्रकार वह रात भर उसी स्थिति में लटका रहता है और केवल तब छोड़ा जाता है जब सुबह होने लगती है और नौकर-चाकर महल में आने-जाने लगते हैं।

दूसरे दिन सारा-जन समाज लक्ष्य करता है कि ज़ीग्फ़्रीत का चेहरा तो खिल उठा है और लाल हो-रहा है, किन्तु गुंथर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही है और एक भयानक त्योरी का बादल प्रतिक्षण उसकी भवों के चारों ओर मंडरा रहा है। इस पर स्वयं उसके नये बहनोई को अचरज होता है और वह गुँथर से इस मुद्रा का कारण जानना चाहता है। गुंथर पहिले तो बात टाल जाता है, किन्तु फिर दिन में अपनी अप्रसन्नता और दुःख के कारण का विस्तार में वर्णन करता है। सारी कथा सुन लेने के बाद ज़ीग्फ़्रीत वचन देता है कि वह उस रात अपना बादलों वाला लबादा धारण कर ब्रूनहिल्त से भेंट करेगा और उसे विवश करेगा कि वह अपने पति के साथ आगे से आदर और स्नेह का बर्ताव करे!

शाम होती है। ज़ीग्फ़्रीत को अपने वचन का ध्यान है, अतएव गुँथर और ब्रूनहिल्त के साथ-साथ वह स्वयं भी अदृश्य-रूप से उनके शयनागार में प्रवेश करता है, ज्यों ही दीप-शिखा बुझा दी जाती है, ब्रूनहिल्त को कुश्ती लड़ने के लिये ललकारता है और उससे तबतक लड़ता रहता है जबतक कि वह अपनी हार नहीं मान लेती! अंत में वह आत्म-समर्पण कर देती है। अब यह जानकर कि एक मनुष्य से हार मान लेने के कारण उसकी सारी अलौकिक शक्ति का क्षय हो चुका है और वह शक्तिहीन हो गई है, ज़ीग्फ़्रीत चाहता है कि गुँथर को अपनी विजय का फल भोगने के लिये छोड़कर वह अपनी राह ले! वह चलने को क़दम बढ़ाता है, किन्तु इस प्रकार जाते-जाते भी ब्रूनहिल्त की पेटी और उसकी एक अंगूठी उससे ज़बरदस्ती छीन लेता है। वह बेचारी समझती है कि उसकी चीज़ें गुंथर ने छीनी है और उसके पास सुरक्षित हैं।

× ×

थोड़े समय बाद ज़ीग्फ़्रीत क्रीमहिल्त के पास लौटता है, उससे विस्तार में बतलाता है कि वह कैसे और कहाँ व्यस्त रहा और इसके बाद ब्रूनहिल्त की पेटी और अंगूठी उसे अर्पित कर देता है।

साहस ग्यारह—

विवाहोत्सव समाप्त होते हैं और ज़ीग्फ़्रीत अपनी पत्नी के साथ सान्टेन के लिये प्रयाण करता है। इस समय क्रीमहिल्ट के साथ उसकी वह अनन्य अनुचरी भी है जो उसके साथ-साथ जाने और रहने का संकल्प कर चुकी है, चाहे उसकी स्वामिनी जहाँ रहे।

× ×

ज़ीग्फ़ीत के माता-पिता पुत्र-वधू का हार्दिक स्वागत ही नहीं करते, बल्कि स्वयं राज सिंहासन त्याग नव-दम्पति के हाथों में राज्य की बाग-डोर सौंप देते हैं। अब ज़ीग्फ़ीत और क्रीम-हिल्त प्रेम से आनन्दपूर्वक रहते हैं और कुछ समय बाद पुत्र-जन्म का आनन्द मनाते हैं।

साहस बारह—

पूरे दस वर्ष बीत जाते हैं कि एक दिन ब्रूनहिल्त गुंथर से ज़ीग्फ़ीत की चर्चा करती है और आश्चर्य करती है कि इतना लम्बा समय बीत गया और उसका सेवक उसके प्रति आदर प्रकट करने के लिये भी एक बार वोर्म्स नहीं आया! गुंथर उत्तर में उसे विश्वास दिलाता है कि वह स्वयं भी एक पराक्रमी राजा है, केवल एक सेवक ही नहीं! इसपर वह उससे आग्रह करती है कि वह अपनी बहिन और अपने बहिनोई को वोर्म्स में आने के लिये निमन्त्रित करे! गुंथर उसका यह प्रस्ताव प्रसन्नता से स्वीकार करता है और सान्टेन निमंत्रण भिजवा देता है।

साहस तेरह—

निमन्त्रण मिलता है! क्रीमहिल्त और ज़ीग्फ़ीत इस सम्भावना पर बहुत प्रसन्न होते हैं कि वे एक बार फिर वोर्म्स जायेंगे और उन्हें एक बार फिर राजा गुंथर और रानी ब्रूनहिल्त के साथ रहने का सुयोग लेगा।

× ×

अतएव अपने बालक-पुत्र को सान्टेन में छोड़कर और कुछ समय पूर्व उसकी पत्नी की मृत्यु हो जाने के कारण ज़ीग्मंद को साथ लेकर ज़ीग्फ़ीत और क्रीमहिल्त वोर्म्स के लिये रवाना होते हैं। उनके यहाँ पहुँचने पर क्रीमहिल्त का उसकी भाभी ब्रूनहिल्त द्वारा उतनाही शानदार स्वागत होता है जितना कि वोर्म्स में पहली बार क़दम रखने पर उसका स्वयं हुआ था। यही नहीं, उसके और उसके पति के सम्मान में अनेकानेक कौतुक होते हैं, अनेकानेक भोज दिये जाते हैं, जिनमें ननद-भौजाई, दोनों रानियाँ एक दूसरे पर रोब जमाने का यत्न करती है।

एक दिन ब्रूनहिल्त और क्रीमहिल्त दोनों बैठी अपने पतियों का यश बखान रही हैं कि बात-बात में बात बढ़ जाती है और ब्रूनहिल्त बहुत गरम होकर क्रीमहिल्त को ताना मारती है कि बड़ी-बड़ी बातें बनाना तो और बात है, यों उसका पति ज़ीग्फ़ीत उसके पति गुंथर का सेवक ही तो है, फिर वह उसकी महानता को कहाँ पहुँच सकता है!

साहस चौदह—

क्रीमहिल्त बहुत उत्तेजित होकर यह बात उड़ा देती है। किन्तु, ब्रूनहिल्त अपना वाक्य बार-बार दुहराती है, अतएव अंत में वह धीरज खो-बैठती है और दावा करती है कि वह पिछली कई ऐसी घटनाओं का वर्णन कर सकती है जिनसे यह पूर्णतया प्रमाणित हो जायेगा कि उसका पति गुंथर से कहीं अधिक श्रेष्ठ और कहीं अधिक महान है, और फिर

भी यदि उसे विश्वास न हो तो वह गिर्जे के द्वार पर अपनी बातों को दुहरा सकती है।

इस प्रकार एक दूसरे की शत्रु होकर दोनों अपना शृंगार करती हैं, अपने को बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से भलीभाँति सजाती हैं और अनेकानेक तड़क-भड़कवाली परिचारिकाओं के साथ गिर्जे में जाने के लिये एक साथ महल से बाहर निकलती हैं ! वे गिर्जे के द्वार पर आती है। यहाँ यह देखकर कि क्रीमहिल्त उससे पहिले गिर्जे में प्रविष्ट होना चाहती और उसका अपमान करना चाहती है, ब्रूनहिल्त उसे आदेश देती है कि वह रुक जाये और पहिले उसे प्रवेश करने दे ! इस पर एक बार फिर दोनों में कहा-सुनी हो जाती है और बात यहाँ तक बढ़ जाती है कि उन्हें ऊँच-नीच का कुछ भी ध्यान नहीं रहता, बल्कि जो उनके मुंह में आता है वे एक दूसरे को सुनाने लगती हैं। इसी जोश में क्रीमहिल्त ब्रूनहिल्त पर दुष्चरित्रा होने का आरोप लगाती है और कहती है कि वह भूल गई कि उसने उसके पति को यानी ज़ीग्फ़्रीत को उसकी-अपनी पत्नी की भाँति ही उपकृत किया है। यही नहीं, वह एक क्षण बाद ही उसकी पेटी और उसकी अंगूठी प्रमाण में पेश करती है। ब्रूनहिल्त आपे से बाहर हो जाती है और उसी क्षण गुंथर को बुलवाती है। वह आता है और बेचारा दो क्रुद्ध स्त्रियों के बीच में अपने को निस्सहाय पाकर ज़ीग्फ़्रीत के पास दूत भेजता है। शीघ्र ही ज़ीग्फ़्रीत वहाँ आ पहुँचता और कहता है कि पत्नियों को कड़े नियन्त्रण में रखना चाहिये। वह गुंथर की ओर मुड़ता है और विश्वास दिलाता है कि यदि वह अपनी पत्नी को सम्हाल लेगा तो उसे अपनी पत्नी को शान्त करते कुछ भी देर न लगेगी। इसके बाद वह सारे जन-समाज के सामने शपथ लेता है कि बरगेंडी की रानी से उसका कभी भी किसी भी प्रकार का अप्रिय और अशोभन सम्बंध नहीं रहा और यदि दुर्भाग्य से कोई इस तरह का भ्रम फैल गया है तो उसे उसके लिये आन्तरिक क्लेश है।

यद्यपि ज़ीग्फ़्रीत सारी प्रजा के सामने इस प्रकार के वाक्य कहता है तथापि ब्रूनहिल्त रूठी कि प्रसन्न होने का नाम ही नहीं लेती, बल्कि कुछ भी सुनने से इन्कार कर देती है और अपने पति से आग्रह करती है कि वह उसके अपमान का बदला ले। किन्तु, गुंथर ऐसा कोई भी कार्य करने से आना-कानी करता है, अतएव वह हैगेन के पास जाती है और उससे सहायता माँगती है। वह उसकी बात में आ जाता है। वह ग़लती से यह समझ-बैठता है कि ज़ीग्फ़्रीत ने जान-बूझ कर उसके आत्म सम्मान के साथ खेल किया और उसे आघात पहुँचाया है। अतः वह गुथंर से ज़िद करता है कि वह ज़ीग्फ़्रीत पर चढ़ाई कर दे। आखिरकार निर्बल राजा अपनी मानिनी पत्नी और अपने प्रिय स्वजन के दबाव के कारण उस पर चढ़ाई करने पर राज़ी हो जाता है !

साहस पन्द्रह–

हैगेन एक चतुराई की योजना बनाता है—ज़ीग्फ़्रीत को सूचना दी जाती है कि वे सारे राजा, जिन्हें वह एक बार हरा चुका है, फिर से उठ-खड़े हुये हैं और विद्रोह कर रहे हैं। इतना सुनकर वह पहले की भाँति ही इस बार भी अपनी सेनायें अर्पित करता हैं और उन्हें दबाने

के लिये जाने को तैयार हो जाता है। किन्तु क्रीमहिल्त यह सुनते ही, कि वह युद्ध करने के लिये जा रहा है, उसके कुशल के लिये बहुत उत्सुक और चिंतित हो उठती है।

इधर सम्वेदना दिखलाने के बहाने से हैगेन उसके पास आता है और कहता है कि अजगर के रक्त से नहा चुकने के कारण उसके पति का शरीर इस्पात हो चुका है और उसे कहीं, किसी प्रकार, घायल नहीं किया जा सकता अतः उसे डर काहे का है! इस पर क्रीमहिल्त सारा भेद खोल देती है कि उसके कंधों के बीच के एक स्थान पर एक नीबू की पत्ती चिपकी रह गई थी और वह स्थान रक्त से अछूता रह गया था, अतएव उसे भय है कि कोई उसके उस स्थान पर वार न कर दे! हैगेन सुनता है और गम्भीर होकर बात बनाता है कि वह चिन्ता न करे, वह स्वयं उस स्थान की हिफ़ाज़त करेगा, किन्तु, इसके लिये आवश्यक है कि वह ज़ीग्फ़्रीत के लबादे पर उस घातक स्थान की जगह एक क्रॉस काढ़ दे ताकि वह दूर से आसानी से देखा जा सके! सरल क्रीमहिल्त उसे अपना हितैषी समझती है और लबादे में यथा स्थान क्रॉस बना देती है।

× ×

अब इस भयंकर शत्रु पर हैगेन की विजय निश्चित हो जाती है। वह ज़ीग्फ़्रीत से मिथ्या भाषण करता है कि उन तमाम राजाओं ने आत्म-समर्पण करने का सन्देश भेज दिया है। इसके बाद वह युद्ध करने के लिये जाने के बजाय 'आदेनवाल्त' के जंगल में शिकार खेलने के लिये प्रस्थान करने का प्रस्ताव करता है।

साहस सोलह—

इस समय कितनी ही भविष्यवाणियाँ होती हैं और क्रीमहिल्त व्याकुल हो उठती है। वह अपने पति से तरह-तरह से अनुनय-विनय करती है कि वह इस बार का आखेट टाल जाय, किन्तु ज़ीग्फ़्रीत उसके डर और उसकी शंकाओं को बेमतलब और बेकार समझकर उनकी हँसी उड़ाता है और बड़े प्रसन्न-हृदय उससे (सदा के लिये) विदा होता है—कहना न होगा यह भेंट इस दम्पति की अंतिम भेंट है।

× ×

यहाँ कवि इस विशेष दिन के आखेट का वर्णन करने के बाद घोषित करता है कि ज़ीग्फ़्रीत एक रीछ पकड़ता है और मज़ाक-मज़ाक में अपने साथियों को डराने के ख़्याल से यों ही पड़ाव में छोड़ देता है। इसी समय उसे प्यास लगती है और वह ज़ोर-ज़ोर से पानी-पानी चिल्लाने लगता है। दूसरे ही क्षण उसे मालूम होता है कि शराब ग़लती से जंगल के दूसरे भाग में पहुँचा दी गई है, अतएव वह गुंथर और हैगेन से प्रस्ताव करता है कि वे तीनों घोड़े पर सवार हों, देखें कि कौन सब से पहले पास झरने पर पहुँचता है और इस तरह अपनी-अपनी प्यास बुझायें! दोनों उसका प्रस्ताव स्वीकार करते हैं और अपना सब कुछ ख़ेमे में रखने के बाद

हलके होकर घोड़ों पर सवार हो जाते हैं, जब कि ज़ीग्फ्रीत उसी प्रकार लदा-फँदा अपने घोड़े पर चढ़-बैठता है। इस प्रकार तीनों एक साथ घुड़दौड़ शुरू करते हैं, किन्तु बोझीला होने के बावजूद भी ज़ीग्फ्रीट सब से पहले झरने पर पहुँच जाता है। इस पर भी जब गुंथर पानी पीने को झुकता है तो वह पानी पीने के पहले अपना कवच आदि उतार देने की इच्छा से विनम्रतापूर्वक एक किनारे हो जाता है! इस बीच में हैगेन उसके सारे अस्त्र-शस्त्र बड़ी होशियारी से उसकी पहुँच के बाहर कर देता है और जैसे ही वह पानी पीने को झुकता है उसके पीछे छिप कर, ठीक उसी स्थान पर वार करता है जहाँ कि लबादे में क्रॉस कढ़ा हुआ है! ज़ीग्फ्रीत सांघातिक रूप से घायल हो जाता है, किन्तु फिर भी घूम पड़ता है और अपनी ढाल इस तरह नचाकर अपने विश्वासघाती को मारता है कि ढाल के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।

बदले की इस अंतिम कोशिश के बाद वह धरती पर गिर पड़ता है और, गुंथर से यह प्रार्थना करते-करते कि उसकी पत्नी क्रीमहिल्त उसकी शरण में है, वह कृपाकर उसकी रक्षा करे, अपना दम तोड़ देता है। गुथर कितनी देर तक ज़ीग्फ्रीत की लाश को घूरता रहता है और अधीर हो उठता है, जैसे कि उसका मन यह मानने को तैयार नहीं है कि इस कायरतापूर्ण वध में उसका भी हाथ है। फिर वह यह सोचकर और डर जाता है कि संसार सुनेगा तो क्या कहेगा कि उसने अपने बहनोई को ही मार डाला या मरवा डाला, और सो भी इस कायरता से, इस धोखेबाज़ी से! अतएव वह प्रस्ताव करता है कि यह ख़बर तुरन्त ही मशहूर कर दी जाये कि ज़ीग्फ्रीत जंगल में अकेले शिकार करते समय डाकुओं द्वारा मार डाला गया! किन्तु हैगेन को अपनी योजना और अपनी वीरता पर गर्व है, इसलिये वह इस प्रस्ताव से सहमत होने का इरादा नहीं करता, बल्कि शव के साथ वोर्म्स लौटते समय अपने षड्यन्त्र की अगली रूप-रेखा भी तैयार करता है ताकि उसकी धोखेबाज़ी और उसकी नीचता खुलकर खेल सके, उसका पाखण्ड उसके सर चढ़कर बोल सके!

साहस सत्रह—

शव और शव के साथ के सारे लोग आधी रात के समय वोर्म्स में आते हैं और यहाँ पहुँचते ही हैगेन शव वाहकों को आदेश देता है कि वे ज़ीग्फ्रीत के शरीर को क्रीमहिल्त के दरवाज़े पर रख दें ताकि सुबह जब वह गिर्जा जाने के लिये बाहर निकले तो अपने पति की लाश से ठोकर खाकर गिर पड़े! उसके आदेश का पालन होता है और सुबह अटककर गिरने पर क्रीमहिल्त देखती है कि वह जिससे वह ठोकर खाकर गिरी है लाश है और वह भी उसके प्रियतम पति की! अतएव, वह बेहोश हो जाती है और उसकी सेविका विलाप करने लगती है।

थोड़ी देर बाद बूढ़े ज़ीग्मंद को भी शोक-समाचार मिलता है, उसकी नींद उचट जाती है और वह भी औरों की भाँति ही रोने-कलपने लगता है। इसके बाद वह और दूसरे निबलंग-वीर लाश को गिर्जे में लाते हैं! क्रीमहिल्त की धारणा है कि यहाँ उसके पति के हत्यारे का पकड़-जाना निश्चित है, अतः वह हठ करती है कि उस दिन के सारे शिकारी एक-एक

कर एक क्रम से ज़ीग्फ़्रीत के मृत शरीर की परिक्रमा करें !

मध्य युग में यह माना जाता रहा है कि जब भी किसी मनुष्य को मारने वाला उसके समीप आयेगा, उसके मृत-शरीर के घाव रिसने लगेंगे और उनसे रक्त बह चलेगा।

× ×

हैगेन के स्पर्श-मात्र से ज़ीग्फ़्रीत के घावों से रक्त की बूंदें टपकने लगती है, अतएव सारे उपस्थित लोगों के सामने क्रीमहिल्त उसे अपने पति को मारने वाला ठहराती है। किन्तु अपनी करनी पर पश्चाताप करने और उसके लिये शोक प्रकट करने के बदले हैगेन बहादुरी और गौरव से घोषित करता है कि ज़ीग्फ़्रीत ऐसा दुष्चरित्र व्यक्ति था जिसने उसकी रानी को कलंकित करने की कोशिश की, उसकी मर्यादा भंग करने की कोशिश की, अतएव उसे मार कर उसने केवल अपने कर्त्तव्य का ही पालन किया है !

साहस अट्ठारह—

अपने प्यारे पुत्र को सदैव के लिये दयामयी धरती को सौंपने के बाद ज़ीग्फ़्रीत का पिता ज़ीग्मंद अपने घर लौटने का विचार करता है और, यह देख कर कि क्रीमहिल्त की माँ और उसके अन्य भाई तो उसकी भांति ही दुखी हैं किन्तु बूनहिल्त का हृदय कुछ भी नहीं पसीजा, क्रीमहिल्ट को उसके पुत्र की याद दिलाकर उससे भी अपने राज्य में लौट-चलने का आग्रह करता है, किन्तु वह अपने पति की समाधि से टस से मस नहीं होती, जैसे कि वह कभी वहाँ से उठने का नाम ही न लेगी। अन्त में बेचारा बूढ़ा निराश हो कर अपनी राह लेता है।

साहस उन्नीस—

तीन वर्ष बीत जाते हैं। एक दिन हैगेन सहसा ही गुंथर को सुझाता है कि वह क्रीमहिल्त से आग्रह करे कि वह अपने विवाह के समय मिला निबेलउंग-कोष, निबेलउंग-महल से मंगवा भेजे। गुंथर सुनता है और यह प्रस्ताव ज्यों-का-त्यों क्रीमहिल्त के सामने रख देता है ! क्रीमहिल्त का दृढ़ निश्चित है कि इस धन से अस्त्र-शस्त्र और सेना एकत्रित कर उसके पति की मृत्यु का बदला लिया जायेगा, अतएव वह तुरन्त ही प्रसन्नता पूर्वक अनुमति दे देती है।

× ×

पाठकों को सुन कर आश्चर्य होगा कि बारह छकड़े चार दिन तक सोना और धन ढोते हैं और तब कहीं सारा कोष निबेलउंगों के महल से समुद्र-तट पर आ-पाता है ! यहाँ से वह क्रीमहिल्त के पास वोर्म्स पहुँचा दिया जाता है।

अब विधवा रानी इतने बड़े कोष की सहायता से थोड़े दिनों में ही इतने अधिक पराक्रमी राजाओं की मित्रता और उनका सहयोग प्राप्त कर लेती है कि हैगेन सशंकित हो-उठता है और क्रीमहिल्त के भाइयों को सलाह देता है कि वे उस विशाल कोष पर अधिकार जमा लें अन्यथा, वह सारा धन उसके लिये बड़ा अनिष्टकर सिद्ध हो सकता है। ......

वे उस पर अधिकार कर लेते हैं। ऐसा होते ही हैगेन उसे राइन में गाड़ आता है और अपने प्रभुओं के अतिरिक्त किसी को भी उस स्थान का पता नहीं देता।

साहस बीस–

कुछ समय बीता कि हंगेरी के राजा एटमेल की पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है। उसके कोई पुत्र नहीं है और उसे एक उत्तराधिकारी की आवश्यकता है जो उसके बाद उसके सिंहासन पर बैठे और राज्य करे, अतएव वह दुबारा विवाह करने का निश्चय करता है। वह इधर-उधर दृष्टि डालता और अन्त में महान् क्रीमहिल्त पर उसकी दृष्टि जा पड़ती है। वह अनुभव करता है कि इस महान पद के लिये उससे अधिक अधिकारिणी नारी का मिलना असम्भव है, अतएव वह विवाह के प्रस्ताव के साथ अपने प्रमुख सरदार रुडिगेयार को वोर्म्स भेजता है।...

रुडिगेयर का महल राह में है अतएव अपनी पत्नी और पुत्री के साथ थोड़े दिन ठहरने के बाद वह शीघ्र ही वोर्म्स पहुँचता है। यहाँ हैगेन उसका स्वागत करता है। हैगेन चार वर्षों तक अतिथि के रूप में एटसेल के दरबार में रह चुका है, अतएव वह उससे भली भाँति परिचित है।

× ×

राजदूत रुडिगेयर यथासमय अपना प्रस्ताव गुंथर के सामने रखता है। गुंथर तीन दिन का समय माँगता है ताकि वह अपनी बहन से बातचीत कर उसकी इच्छा-अनिच्छा का भी निश्चय कर सके! उसकी धारणा है कि क्रीमहिल्त यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेगी! वह सन्तोष की साँस लेकर सोचता है कि ऐसा हो जाये तो क्या ही अच्छा हो, किन्तु हैगेन का कथन है कि यदि उसका विवाह एटमेल जैसे शक्ति शाली राजा से हो गया तो उनकी ख़ैर नहीं है, क्यों कि उस सूरत में वह किसी दिन भी अपने पति की हत्या का बदला उन सब से ले सकती है।......

× ×

पहिले तो विधवा क्रीमहिल्त एटसेल के प्रस्ताव को सुनने से भी इन्कार कर देती है, किन्तु रुडिगेयर शपथ लेता है कि उसकी मर्यादा हंगेरी की मर्यादा है, उसकी हर तरह और हमेशा रक्षा की जायेगी और यह कि भूत या भविष्य में उसे आँख दिखलाने वाले या उसे किसी तरह हानि पहुँचाने को दुनिया से मिटा दिया जायेगा। इस पर वह अन्त में राज़ी हो जाती है और कहती है कि उसे एटसेल स्वीकार है।

× ×

इसके बाद अपनी अनन्य दासी एकावार्ट के सहित, निबलेग कोष का थोड़ा सा धन लेकर, जो अब भी उसके पास सुरक्षित है, क्रीमहिल्ट हंगेरी के लिये रवाना होती है।

साहस इक्कीस–

बरगंडी के तीनों राजकुमार अपनी बहन को डेन्यूब तक पहुँचाते हैं और तब विदा होते हैं! क्रिमहिल्त आगे बढ़ती है और रूडिगेयर के साथ 'पासाऊ' पहुँचती है, जहाँ उसका

चाचा पादरी पिलग्रिन उसका हार्दिक स्वागत करता है। यहाँ से वह रूडिगेयर के महल में जाती है, जहाँ उसकी पत्नी और उसकी पुत्री अपनी भावी-रानी की बड़ी आवभगत करती हैं और अनेकानेक बहुमूल्य उपहार भेंट करती है। फिर यात्रा आरम्भ होती है और अब क्रीमहिल्त को चारों ओर अपने भावी प्रजाजन मिलते हैं! वे आदर पूर्वक उसका अभिवादन करते हैं।

साहस बाईस—

अंत में वह हंगेरी पहुँचती है और एटसेल और उसके प्रमुख सभासद उसका स्वागत करते हैं। इनसे मिलते ही वह, अपने भावी पति को तो चूमती ही है, उन लोगों को भी चूमती है जिन्हें उसका पति इस गौरव का अधिकारी मानता है और इसलिये ही जिनकी ओर संकेत कर देता है। इन भाग्यशाली सरदारों में इस महाकाव्य का एक चरित्रनायक डिट्रिक बेर्न भी है। इसी डिट्रिक बेर्न के संरक्षण में हंगेरी के सम्राट और सम्राज्ञी वियना के लिये प्रस्थान करते हैं। यहाँ सत्रह दिन तक उनके विवाहोत्सव मनाने जाते हैं।

साहस तेईस—

सात वर्ष बीत जाते हैं। इस समय यद्यपि क्रीमहिल्त एटसेल के उत्तराधिकारी एक पुत्र की माता है तथापि, वह अब भी ज़ाग्फ्रीत के अभाव का अनुभव करती है और इसीलिये संतप्त होकर अपनी भूलों पर बराबर सिर धुनती है।

एक दिन वह अकस्मात् एटसेल से आग्रह करती है कि वह उसके स्वजनों को हंगेरी के आने के लिये निमंत्रित करे, और, जब राजा उसका यह प्रस्ताव प्रसन्नता से स्वीकार कर-लेता है तो सन्देश-वाहक चारणों को विशेष रूप से आदेश देता है कि वे सबके साथ वोर्म्स से चलने के पहिले यह निश्चित कर लें कि उसके भाइयों के साथ हैगेन भी है।

साहस चौबीस—

चौदह दिन की यात्रा के बाद वन्दी वोर्म्स पहुँचते हैं और एटसेल का सन्देश गुंथर को सुनाते हैं।...... ...सभी इस पक्ष में हैं कि निमन्त्रण स्वीकार कर हंगेरी चला जाये, किन्तु हैगेन इसका विरोध करता है और कहता है कि इस मित्रता में संदेह के काँटे साफ़ देख पड़ते हैं, अवश्य ही कुछ-न-कुछ दाल में काला है। इस पर उसका स्वामी गुंथर क्रुद्ध हो-उटता है और व्यंग्य कसता है कि अपराधी आत्मा सदैव ही सशंकित और भयभीत रहती है अब कोई और रास्ता न देख कर हैगेन बड़े ज़ोरदार शब्दों में घोषित करता है कि जाने की बात क्या, वह तो उनका अगुआ बनने को तैयार है, किन्तु एक शर्त है कि वे अपनी रक्षा के लिये अस्त्र-शस्त्रों भली भाँति लैस होकर एक हजार सैनिकों के साथ यात्रा करे, कौन जाने कुछ छल बरता ही जाये, कुछ षडयन्त्र हो ही!......!

साहस पच्चीस–

ब्रूनहिल्त और उसके पुत्र को घर के विश्वसनीय नौकर-चाकरों पर छोड़कर बर्गेंडियन रानी से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और यात्रा के लिये चल पड़ते हैं। (चूँकि इस दल के साथ वे लोग हैं जो निबेलउंग-कोष के एक-मात्र मालिक है, अतएव कवि आगे से उन्हें और उनके साथियों को 'निबेलोंग' के नाम से ही पुकारता है।'

हैगरी का रास्ता केवल हगेन ही जानता है, अतएव वह पथ-प्रदर्शन करता है! शीघ्र ही सब लोग डेन्यूब पर आ पहुँचते हैं। वह पार जाने की कोई सुविधा न देखकर औरों से विश्राम और प्रतीक्षा करने की बात कह कर स्वयं जाने के लिए कुछ प्रबन्ध करने की बात सोचता है। वह नदी के निचले भाग की ओर क़दम बढ़ाता है कि उसकी दृष्टि तीन हंस-परियों पर पड़ती है। ये स्नान कर रही हैं और उसे देखते ही चौंक उठती है। वह उनके वस्त्र अपने अधिकार में कर उन्हें भविष्य-वाणी करने के लिये मजबूर करता है। एक हंस-परी अपने वस्त्र पाने के विचार से उसे कितनी ही मधुर-मधुर, सुखदायक बातें बतलाती हैं, किन्तु शेष दोनों परियाँ उससे किसी तरह अपने वस्त्र ले लेतीं हैं और तब भविष्य-भाषण करती हैं कि एक पुरोहित के अतिरिक्त और कोई भी सही-सलामत बरगंडी न लौटेगा!

किन्तु, यह देखकर कि वह नाव की खोज में हैं, वे हंस-परियाँ उसे सूचित करतीं है कि यदि वह नदी के उस पार जाकर पास हैगेन खड़े मल्लाह को अपना नाम एमालुंग बतला देगा तो वह उसकी और उसे अन्य साथियों की सहायता निश्चित-रूप से करेगा। हैगेन इतना सुनते ही उस मल्लाह से आग्रह करता है कि वह उसे दूसरे किनारे पर ले चले। वह तैयार हो जाता है। दूसरे किनारे पर पहुँचकर हैगेन उसी युक्ति से काम लेता है और बिना कुछ कहे-सुने उसकी बड़ी नाव में कूद पड़ता है, किन्तु दूसरे ही क्षण मल्लाह को सारी चलाकी का पता लग जाता है और वह और कुछ न पाकर अपने डाँड से ही उसकी भलीभाँति मरम्मत करता है। अब अपनी रक्षा के लिये हैगेन उसे मार डालता है। तत्पश्चात् वह उसकी नाव पर अधिकार करता, उसे बरगेडियों के पास लाता और कई बार में उन सबको उस पार पहुँचाता है। किन्तु अंतिम खेवे में उसकी निगाह नाव पर बैठे पुरोहित पर पड़ती है। उस पर दृष्टि पड़ते ही हंस-परियों की भविष्य-वाणी उसपर अधिकार जमा लेती है, अतएव उसे असत्य प्रमाणित करने के लिये वह उसे, सहसा ही, नाव से ढकेल देता है। किन्तु अपने लम्बे धार्मिक वस्त्रों के कारण पुरोहित डूबता नहीं और शीघ्र ही किनारे आ-लगता है, जहाँ से वह बरगंडी लौट आता है। हैगेन लक्ष्य करता है कि पुरोहित बच गया और बरगेंडी लौट गया, अतएव वह सोचता है कि हो-न-हो हंस परियों की बात सही है, और सचमुच ही अब कोई सकुशल बरगेंडी न लौटेगा। इस विचार के मन में घर करते ही वह बहुत घबड़ा-उठता है और सब लोगों के उतर जाने पर उस नाव को नदी में डुबा देता है।

अब अपने साथियों से आगे बढ़ने की बात कहकर उनकी रक्षा के लिये वह स्वयं

उनके पीछे हो जाता है। वह जानता है कि उस मल्लाह की हत्या की सूचना पाते ही उसके साथी उनका पीछा करेंगे और उनपर हमला भी!

साहस छब्बीस—

हैगेन का भय सही उतरता है। शीघ्र ही मल्लाह के साथी उसका और उसके साथियों का पीछा कर उनपर हमला करते हैं, किन्तु बरगेंडी-निवासी इतनी बहादुरी से लड़ते हैं कि वे शीघ्र ही हार जाते हैं।

× ×

वे आगे बढ़ते हैं तो देखते हैं कि सड़क के किनारे कोई आदमी सो रहा है और समीप से देखने पर हैगेन को ज्ञात होता है कि वह और कोई न होकर एकावार्ट है, जो कि इस अवस्था में यहाँ यह सूचित करने के लिये पड़ी है कि क्रीमहिल्त की नीयत साबित नहीं है और उसे होशियार हो जाना चाहिये। हैगेन और सारे बरगेंडी सबकुछ सुनते हैं, किन्तु इस चेतावनी से किसी प्रकार भी हतोत्साहित अथवा प्रतिहत नहीं होते! वे उसी तरह हँगेरी की ओर बढ़ते-रहते हैं। राह में वे पादरी पिलग्रिन और रूडिगेयर से भी भेंट करते हैं।

साहस सत्ताईस—

इस समय जबकि बरगेंडी रूडिगेयर के आतिथ्य-सत्कार का आनंद ले रहे हैं, इस समय जबकि वह उन सबको अनेकानेक बहुमूल्य उपहार भेंट कर रहा है, हैगेन, सहसा ही, प्रस्ताव करता है कि रूडिगेयर बरगेंडी के सबसे छोटे राजकुमार जिसेलर के साथ अपनी पुत्री का विवाह कर दे! रूडिगेयर तुरन्त ही सहमति प्रकट करता है, और शीघ्र ही विवाह सम्पन्न भी हो जाता है! इसे विवाह न कहकर शिष्टाचार कहना ही ठीक होगा।

इस उत्सव को समाप्त होने पर रूडिगेयर बरगेंडियों को एटसेल के दरबार तक पहुँचा आने के लिये तैयार होता है।

इधर हंगेरी में यह सोचकर कि वे सब जल्दी ही आनेवाले हैं, क्रीमहिल्त सन्तोष और हर्ष से फूली नहीं समाती!

साहस अट्ठाईस—

क्रीमहिल्त की बदनीयती अबतक इतनी साफ हो जाती है कि डिट्रिक बेर्न तो क्या, उनका स्वामिभक्त सेवक हिल्टेब्रान्द भी बरगेंडियों को चेतावनी देता है कि वे अब भी चेत जायें और होशियार हो जायें! इस दूसरी चेतावनी से सब प्रभावित होते हैं और हैगेन की सलाह पर निश्चय करते हैं कि वे तीन दिन तक अपने अस्त्र-शस्त्रों को अपने पास से अलग न करेंगे!

× ×

बरगेंडी हंगेरी आ-पहुँचते हैं और राजमहल में आते हैं कि क्रीमहिल्त अपने सब से छोटे भाई को प्यार से हृदय लगाती है, किन्तु अपने और दोनों भाइयों का उस प्रकार स्वागत

उसे नहीं भाता ! वह हैगेन से प्रश्न करती है कि वह उसकी स्वर्ण-राशि अपने साथ क्यों नहीं लाया ? हैगेन उत्तर देता है कि वह कोष राइन को अर्पित किया जा चुका है और अब वह प्रलय के दिन तक वहीं नहीं पड़ा रहेगा। इतना सुनते ही क्रीमहिल्त उसकी ओर से मुंह फेर लेता है और अन्य लोगों से आग्रह करती है कि वे अपने अस्त्र-शस्त्र दरवाजे पर रखकर अन्दर चलें। इसपर हैगेन राजकुमार के संकल्प का उल्लेख करता है और कहता है कि वे अगले तीन दिनों तक अस्त्र-शस्त्रों का परित्याग न करेंगे ! इसके बाद डिट्रिक इसका अनुमोदन करता है कि उसका अपना पूर्ण विश्वास है कि उसकी नीयत साबित नहीं है।

साहस उन्तीस—

यद्यपि तीनों राजकुमार क्रीमहिल्त के साथ महल में प्रवेश करते हैं तथापि हैगेन दरवाजे पर ही ठिठक रहता है, फोल्केयर नामक चारण को बुलाकर अपने पास बेंच पर बैठाता है, उससे अपने भय और अपनी आशंका का सविस्तार वर्णन करने के बाद अनुरोध करता है कि समय आने पर वह उसका साथ दे, और बदले में अवसर आने पर स्वय उसकी प्राण-रक्षा करने का संकल्प करता है !

× ×

क्रीमहिल्त अभी तो केवल हैगेन को ही नष्ट कर देना चाहती है, अतएव उसे महल के द्वार पर अकेले और इतने समीप पाकर चार सौ वीरों को बुलवाती है और हैगेन पर हमला करने का आदेश देती है। यही नहीं, वह उनसे कहती है कि वह भी उनके साथ चलेगी और उनके सामने उससे जवाब तलब करेगी !·········

× ×

क्रीमहिल्त को अपनी ओर आता हुआ देखकर फ़ोल्केयर हैगेन से कहता है कि उन्हें उसके सम्मान में खड़ा हो जाना चाहिये। इस पर हैगेन गम्भीर होकर उत्तर देता है कि वह ऐसी विनम्रता को उनकी दुर्बलता समझेगी, इसलिये उन्हें उसी प्रकार बल्कि और अकड़कर बैठ जाना चाहिये। इतने में रानी बिलकुल पास आ जाती हैं और, बजाय खड़े होने के उसे दिखलाने के लिये, हैगेन ज़ीगफ़्रीत की तलवार अपनी गोदी में रख लेता है। यह देखकर क्रीमहिल्त उससे व्यंग्यात्मक ढंग से पूछती है कि उसके पति की हत्या उसी की है न ? हैगेन इसका कोई नहीं उत्तर देता, अतएव वह अपने सिपाहियों को उसे मार डालने की आज्ञा देती है, किन्तु उसकी अंगारों-सी आँखों की एक निगाह से ही सिपाहियों के दिल इस तरह बैठने लगते हैं कि वे भाग खड़े होते हैं। इसके बाद कोशिश करने के बाद भी रानी उन्हें रोकने और हैगेन पर हमला करवाने में सफल नहीं हो पाती।

× ×

शाम होती है ! हैगेन और फ़ोल्केयर दावत के कमरे में अपने अन्य मित्रों से मिलते हैं। यहाँ एटसेल औरों कि भाँति ही उनका भी स्वागत-सत्कार करता है, क्योंकि, एक

तो, वह सारे षड़यन्त्रों से परिचित नहीं है और, दूसरे, काव्य में वह एक निरपराध सीधे-सादे वयोवृद्ध के रूप में चित्रित किया गया है।

साहस तीस—

इधर क्रीमहिल्त कुछ हूणों को उभाड़ देती है और वे रात में अपने शयन-कक्षों की ओर जाते हुये बरगेंडियों से ज़बरदस्ती छेड़-छाड़ करते हैं, किन्तु बरगेंडी किसी प्रकार सकुशल अपने खेमों तक पहुँच जाते हैं। यहाँ हैगेन और फ़ोल्केयर रात भर पहरेदारी करते हैं क्योंकि उन्हें आशंका है कि कोई एकबयक हमला न कर दे! कहना न होगा कि उनका ऐसा करना उनके लिये बड़ा मंगलकारी प्रमाणित होता है क्योंकि क्रीमहिल्त एक बार फिर आधीरात में कुछ हूणों को उनपर धावा बोल-देने के लिये भेजती है, किन्तु वे भी उसके आग्नेय-नेत्र देखते ही इतने भयातंकित हो-उठते हैं कि जान लेकर उल्टे पैरों भाग खड़े होते हैं।

साहस इकतीस—

सबेरा होता है। बरगेंडी हथियारों से अब भी उसी प्रकार लैस हैं। इस समय वे गिर्जे में जाकर प्रार्थना करते और फिर सम्राट और सम्राज्ञी के साथ अपने सम्मान में आयोजित कौतुकों में जाते हैं। यहाँ इस डर से कि कुछ अनहोनी घटना न घट जाये डिट्रिक और रूडिगेयर दोनों ही किसी भी खेल में भाग लेना उचित नहीं समझते और नाहीं कर देते हैं। दूसरे ही क्षण उनकी दूरदर्शिता सा हो-उठती है क्योंकि खेल में फ़ोल्केयर के द्वारा एक हूण की हत्या होती ही है कि क्रीमहिल्त चीख़ उठती है कि इस हत्या का बदला लिया जाना आवश्यक है। वह इस ओर ज़रा भी ध्यान नहीं देती कि उसका पति उसे बार-बार मना कर रहा है और आदेश दे रहा है कि वह शान्त रहे।……

×	×

इस बीच में क्रीमहिल्त हूणों को छिपी तरह से बराबर उभाड़ती रहती है, फलस्वरूप वे अपने अतिथियों के विरुद्ध इतने उत्तेजित हो उठते हैं कि अंत में एटसेल का अपना भाई ही उन्हें तहस-नहस कर डालने और हमेशा के लिये दबा-देने का ज़िम्मा लेता है।

×	×

इधर राजा एटसेल अपने अतिथियों के साथ दावत में व्यस्त है कि बरगेंडी के तीनों राजकुमार अस्त्र-शस्त्रों से भली भाँति सुसज्जित होकर आ-खड़े होते हैं, जैसे कि अब एटसेल की ख़ैर न हो। एटसेल देखता है और उसके होश उड़ जाते हैं, किन्तु वह उन्हें शान्त कर अपनी मित्रता का विश्वास दिलाता है और प्रमाण-स्वरूप वचन देता है कि वह अपना पुत्र उन्हें दे देगा और उसके स्थान पर वे उसका लालन-पालन करेंगे।

साहस बत्तीस–

इन बरगेंडियों के अतिरिक्त, जो इस समय सम्राट एटसेल के साथ दावत खा रहे है, शेष सब हैगेन के भाई दान्कावार्त के संरक्षण में अपने शयनागारों में विश्राम कर रहे हैं अतएव, सहसा ही, फिर कुछ हूण हमला कर देते हैं। बरगेंडी पहले से ही होशियार हैं इस लिये कुछ क्षणों में सारे दुश्मनों का सफ़ाया कर देते हैं, किन्तु इस प्रकार मारे-गये हूण प्रतिहिंसा की स्थायी अग्नि धधका देते हैं। फल यह होता है कि शीघ्र ही दूसरी सेनायें आती है और दान्कावार्त के अतिरिक्त सबका काम तमाम कर देती हैं।

× × ×

दुश्मनों की सेनाओं के बीच से किसी प्रकार निकल कर दान्कावार्त भोज के बड़े कमरे में पहुँचाता है। इधर यहाँ उसका भाई व्यंजनों का स्वाद लेने में व्यस्त है और उधर सारे योद्धा और सारे साथी अपने ही ख़ून की नदी में डूब-उतरा रहे हैं।........

साहस तैंतीस–

भाई का आर्त्तनाद कान में पड़ते ही हैगेन क्रोध के मारे आपे से बाहर होकर अपनी तलवार म्यान से खींच लेता है और एटसेल के पुत्र पर इस तरह वार करता है कि दूसरे ही क्षण उसका सिर धड़ से अलग होकर उछल कर माँ की गोद में जा-गिरता है। तत्पश्चात् अपने भाई को ललकार कर, कि कोई बचकर न निकल पाये, हैगेन उन चारणों के हाथ काट डालता है जो कि उसे हंगरी आने का निमन्त्रण देने गये थे। इतना कर चुकने के बाद वह दायें-बायें जिसे भी पाता है गाजर-मूली की तरह काट डालता है।

× × ×

इधर पुत्र का कटा-हुआ सिर राजा-रानी को लकवा मार जाता है और लगता है जैसे कि अब वे जीवित मनुष्य न होकर सिंहासन पर प्रतिष्ठित प्राणहीन पत्थर-मात्र हैं। इसी समय दान्कावार्त को रखवाली के लिये द्वार पर भेजकर हैगेन स्वयं उनके सम्मुख जाता है और उन्हें ताना मारता है कि यदि उनकी इच्छा हो तो वे भी हथियार हाथ में लें और अपनी और अपने साथियों की रक्षा करें!

× × ×

यद्यपि अब बरगेंडी उन्मत्त होकर बड़ी बेरहमी से शत्रुओं के प्राण हरते हैं तथापि वे डिट्रिक और रूडिगेयर के उपकारों को नहीं भूलते और उनपर हमला करना पाप समझते हैं, अतएव ज्यों ही वे अपने साथियों के साथ बाहर जाने की आज्ञा मांगते हैं, उनकी प्रार्थना सहर्ष स्वीकार करते हैं।

× × ×

अब डिट्रिक अपने हाथों का सहारा देकर राजा और रानी को कमरे के बाहर लाता है।

रूडिगेयर और अन्य साथी उसका अनुकरण करते हैं। उधर बरगेडी तब तक अपनी भयंकर मारकाट जारी रखते हैं जबतक की राजसभा का अंतिम व्यक्ति भी नहीं मार डाला जाता !

साहस चौंतीस—

इस अविरामहत्या से थककर बरगेंडी पलभर दम लेना चाहते हैं, किन्तु इतनी लाशों की वीभत्स और अप्रिय उपस्थिति जैसे उन्हें असह्य हो उटती है, अतएव वे ७०० अपराधियों को ऊपर से ही सीढ़ियों पर लुढ़का देते हैं। फल यह होता है कि मुर्दों के साथ कितने ही साधारणतया घायल व्यक्ति भी इस प्रकार झोंक दिये जाते और मार डाले जाते हैं।

कुछ ही देर बाद हूण अपने साथियों की लाश लेने इस स्थान पर आते हैं और आवश्यकता से कहीं अधिक उत्तेजित होकर बदला लेने का हठ करते हैं। अंत में उनका अधिनायक इस बात पर विवश हो जाता है कि वह अपनी सेना बुलाये और बरगेंडियों को भोज के कमरे से मार-भगाये !

× ×

इस समय हैगेन दरवाज़े पर पहरेदारी कर रहा है। वह देखता है हूणों का नेता उनका-अपना बूढ़ा अधिनायक है, अतः वह उसका बड़ा मज़ाक बनाता है। इस पर क्रीमहिल्त घोषित करती है जो व्यक्ति हैगेन का सिर काटकर उसके पास लायेगा वह उसे इस तरह पुरस्कृत करेगी कि वह जन्म-जन्मान्तर तक न भूलेगा।

साहस पैंतीस—

इस अपरिचित अनन्त पुरस्कार को प्राप्त करने का पहिला प्रयास डाने नामक एक वीर करता है। वह बड़े कमरे में प्रवेश करने में तो सफलता प्राप्त कर लेता है, किन्तु उसके बाद दूसरे ही क्षण खदेड़ दिया जाता है। फिर भी, वह अपनी इस विफलता से शक्ति ग्रहण करता है और एक बार फिर नये उत्साह और नये शौर्य से आगे बढ़ता है, परन्तु इस बार अपने अन्य साथियों की भाँति ही तलवार के घाट उतार दिया जाता है।

साहस छत्तीस—

अब बरगेंडी कुछ देर तक आराम करते हैं, किन्तु फिर उन्हें पता लगता है कि क्रीमहिल्त के नेतृत्व में एक सेना उनकी ओर बढ़ी-आ रही है, अतएव वे उसका सामना करने को उठ-खड़े होते हैं। इस बार क्रीमहिल्त अपने सारे स्वजनों का नाम-निशान मिटा डालना चाहती है, यद्यपि पहिले-पहल तो उसने हैगेन से ही बदला लेने की बात सोची थी। उधर इस नृशंसता से पुत्र का सिर उतारे-जाने के कारण एटसेल का खून भी खौल उठा है और हूण भी अपने साथियों की मौत के बदले में प्रलय मचा देने के लिये दाँत पीस रहे हैं।

बरगेंडी क्रीमहिल्त और एटसेल की सेनायें देखकर घबड़ाते नहीं, बल्कि उसी बहादुरी से उनका मुक़ाबला करने और उनसे युद्ध करने का हौसला रखते हैं, किन्तु लड़ने के पहले वे आश्वासन पाना चाहते हैं कि यदि वे विजयी हो जायें तो उन्हें बिना किसी प्रकार की छेड़छाड़ के उनके स्वदेश लौटने दिया जाय। इसके उत्तर में क्रीमहिल्त अपने पति से अनुरोध करती है कि वह उनकी शर्त अस्वीकार कर दे और कहे कि यदि ऐसा हो भी सकता है तो तभी हो सकता है जब वे हैगेन को तुरन्त ही उसे सौंप दें। एटसेल जैसे का तैसा वाक्य बरगेंडियों के सामने रख देता है, किन्तु वे इस प्रकार अपने एक साथी को दुश्मनों को सौंप देना अपमानजनक समझते हैं और एटसेल की शर्त ठुकरा देते हैं। इस पर क्रीमहिल्त आवेश में आज्ञा देती है कि बड़े कमरे में आग लगा दी जाये!

रानी के आदेशानुसार बड़े कमरे में आग लगा दी जाती है। रानी का ख़्याल है कि वह सारे बरगेंडियों को ज़िन्दा ही भून डालेगी, किन्तु होता कुछ और ही है। कमरा पत्थरों का बना है, अतएव उसपर आग का कोई असर नहीं पड़ता, बल्कि यह कि वह उन्हें शरण और देता है, और जितनी भी लपटें और चिनगारियाँ उसमें प्रवेश करती हैं, सभी रक्त में तिरोहित हो जाती हैं। इस प्रकार शत्रु सभी भाँति सुरक्षित रहते हैं।

किन्तु बाहर की अग्नि के ताप के कारण बरगेंडियों को इतनी भीषण प्यास लगती है कि वे निर्जीव हो-उठते हैं। इसी समय हैगेन उनसे आग्रह करता है कि वे काटे-गये दुश्मनों का ख़ून पियें और अपनी प्यास बुझायें। वे उसकी बात सहर्ष मानते हैं और इस प्रकार रक्तपान कर ६०० बरगेंडी एक बार फिर अपने दुश्मनों का सामना करने के लिये जी-उठते हैं। सहसा ही क्रीमहिल्त की सेना हाल पर टूट-पड़ती है।........

साहस सैंतीस—

किन्तु अपने इस तीसरे प्रयास में भी असफल होने के बाद क्रीमहिल्त रूडिगेयर को उसकी पवित्र- प्रतिज्ञा की याद दिलाती है और मांग करती है कि वह बरगेंडियों का क़त्ल कर अब अपने वचन को पूरा करे! इसपर परम सज्जन रूडिगेयर उसे तरह-तरह से समझाता है और अंत में अपनी सारी धन-सम्पत्ति उसे अर्पितकर भिखारी बनकर उसका राज्य छोड़ने को तैयार हो जाता है। किन्तु वह एक नहीं सुनती और सारी भावनायें और सारा त्याग आज्ञा-पालन के रूप में ही सामने देखना चाहती है। अतः निराश रूडिगेयर अस्त्र-शस्त्र से भली भाँति सुसज्जित होकर हाल की ओर बढ़ता है और पहली सीढ़ी पर खड़े होकर बरगेंडियों को सारी परिस्थिति स्पष्ट कर देता है। हैगेन सब कुछ सुन कर उसकी विशाल-हृदयता और उदारता की सराहना करता है और उससे एक ढाल माँगता है क्योंकि उसकी अपनी ढाल टुकड़े-टुकड़े हो चुकी है। वह दूसरे ही क्षण उसकी सहायता करता है और ढाल पाने पर हैगेन घोषित करता है कि आत्म-समर्पण करने के पहले वह अपने को एक अपूर्व वीर तो प्रमाणित कर ही देगा।

इसके बाद डंका बजता है, युद्ध आरम्भ होता है और अपने सैनिकों के साथ रूडि-

गेयर हाल में घुस पड़ता है। दोनों ही पक्षों के असंख्यक सैनिक मारे जाते हैं। अंत में क्रीमहिल्त का एक भाई गरनॉट और रूडिगेयर आपस में गुँथ जाते हैं और एक दूसरे को मार डालते हैं।

साहस अड़तीस—

एक बार फिर असंख्यक लाशें सीढ़ियों से नीचे लुढ़का दी जाती हैं और ऐसा होते हूणों का ऐसा चीत्कार होती है कि बेर्न का डिट्रिक परीशान हो उठता है और कुछ न समझ-पाकर इस करुण-क्रंदन का कारण जानना चाहता है। एक क्षण बाद ही, जैसे ही उसे पता लगता है कि रूडिगेयर मार डाला गया, वह हिल्देब्रान्द को आज्ञा देता है कि वह जाये और बरगेंडियों से रूडिगेयर की लाश ले आये! यह वीर केवल अपने स्वामी की आज्ञा पालन ही नहीं करता, प्रत्युत बात बढ़ जाने पर फ़ोल्केयर को क़त्ल भी कर डालता है। इस पर हैगेन उसे सीढ़ियों पर ढकेल देता है, किन्तु इस समय तक हैगेन और गुंथर के अतिरिक्त सभी बरगेंडी काम-आ चुके हैं!

इसी बीच में हिल्देब्रान्द डिट्रिक को सारी परिस्थितियों से अवगत करता है! यह सुनते ही कि उसके पक्ष के अधिकांश वीरों को तलवार के घाट उतार दिया गया है, इस योद्धा-सरदार की आँखों में रक्त उबलने लगता है और वह उनका बदला लेने के लिये शत्रुओं की ओर झपटता है।

साहस उन्तालीस—

हाल में पहुँचने पर वह देखता है कि शत्रुओं में केवल गुंथर और हैगेन ही शेष रहे हैं, अतएव वह उन्हें सलाह देता है कि वे आत्म समर्पण कर दें और बचन देता है कि यदि आवश्यकता हुई तो वह उन्हें सकुशल उनके स्वदेश भेजने के लिए अपने व्यक्तिगत प्रभाव का भी उपयोग करेगा। किन्तु वे दोनों जानते हैं कि क्रीमहिल्त उन पर किसी भी प्रकार की दया न दिखलायेगी, अतएव वे आत्म-समर्पण करने से इन्कार कर देते हैं। इस पर बुरी तरह थके हुए हैगेन और डिट्रिक में द्वंद-युद्ध होता है, जिसमें डिट्रिक हैगेन को धोखे से अपनी पकड़ में लाता, बुरी तरह जकड़ता और क्रीमहिल्त के पास लाकर उससे प्रार्थना करता है कि वह उस क़ैदी पर कृपा करे और उसे क्षमा कर दे। इसके बाद वह गुंथर को ले आने के लिये लौट पड़ता है।

× ×

उधर डिट्रिक गुंथर को लाने के लिये लौटता है और इधर हैगेन को अकेले पाकर क्रीमहिल्त उससे एक बार फिर अपने निबेलउंग-कोष की माँग करती है। इस पर हैगेन अपने संकल्प की चर्चा करता है कि जब तक उसका स्वामी ज़िन्दा रहेगा तब तक वह किसी से भी

उस स्थान का पता न बतायेगा। वह कहता है कि इस संकल्प के कारण ही वह विवश है और उस विषय में कुछ भी नहीं बतला सकता !

× ×

इसी बीच में गुंथर भी आ जाता है। इस समय क्रीमहिल्त इतने आवेश में है कि उसे अपने तन-बदन का भी होश नहीं है, अतएव वह विशेषतया उस कोष के लिए ही अपने अंतिम भाई को भी मरवा डालती है, और उसका सिर लेकर हैगेन के पास जाती है ! वह साबित करती है कि उसका अंतिम स्वामी भी अब इस संसार में नहीं रहा ! वह उससे आग्रह करती है कि वह राइन के उस विशिष्ट स्थान पता बता दे जहाँ वह सारा कोष गड़ा-पड़ा है। किन्तु हैगेन सन्तोष की साँस लेकर उसकी आशा निराशा में बदल देता है। वह कहता है कि केवल एक-अकेला वह बचा है जिसे उसका पता है, अतएव अच्छा है कि यह रहस्य सदा एक रहस्य ही रहा-आये ! इस पर क्रीमहिल्त की इतने दिनों की सारी प्रतिहिंसा साकार हो उठती है, वह उत्तेजित हो उठती है, कभी-की ज़ीग्फ़्रीत की तलवार तुरन्त ही म्यान से खींच लेती है और एक ही भरपूर वार में हैगेन का सिर धड़ से अलग कर देती है।

× ×

एटमेल और हिल्देब्रान्द दोनों में से एक भी इस पाप की कल्पना भी नहीं कर पाते कि क्रीमहिल्त हैगेन का काम तमाम कर देती है ! क्रीमहिल्त की इस निर्दयता से हिल्देब्रान्द की आँखों के डोरे लाल हो उठते हैं ! वह दूसरे ही क्षण क्रीमहिल्त की गर्दन उतार लेता है, जैसे कि वह हैगेन की मौत का बदला ले रहा हो !

× ×

क्रीमहिल्त के शव पर डिट्रिक और एटसेल के विलाप में काव्य का अन्त होता है।

———

इटैलियन महाकाव्य-

लैटिन बहुत समय तक प्रमुख साहित्यक भाषा बनी-रही। इसका फल यह हुआ कि इटली-भाषा में बहुत अधिक काल तक किसी प्रकार के साहित्य का आविर्भाव और विकास न हो सका और यहाँ तक कि इटली में प्रचलित तमाम योरोपीय महाकाव्यों और रोमांसों की भाषा लैटिन ही रही। किंतु प्रायद्वीप के उत्तरी भाग में उनमें से कितने ही रोमांस और महाकाव्य प्रोवांसाल के लिये अपरिचित न थे। इसीलिए तेरहवीं शताब्दी में इटली भाषा में जो साहित्य आया वह प्रमुख-रूप से प्रोवांसाल-चारणों की कृतियों की छाया-मात्र था। इस काल के सर्वश्रेष्ठ कवियों में 'सोरदेल्लो' भी बतलाया जाता है जिससे दान्ते *'परगेटोरियो' में वार्तालाप करता है।

इसके बाद ही इटली और विशेषतया वेनिस में 'शार्लमान चक्र' से प्रभावित कहानियाँ विशेषरूप से प्रचलित हुईं! फलस्वरूप इन प्राचीन महाकाव्यों और रूपकात्मक 'रोमाँ दिला रोज़' के इटली भाषा में कितने ही रुपान्तर हुये! किंतु सच पूछिये तो इटली की वास्तविक काव्य-धारा का विकास तो फ्रेड्रिक द्वितीय के समय में सिसिली में हुआ, और यहीं से बोलचाल की भाषा में काव्य रचना की चेष्टा का प्रचार सारे देश में हुआ। इन आरम्भ के कवियों ने प्रेम को ही अपना प्रमुख विषय माना और बहुत सतर्कता से प्रोवांसाल-शैली की शरण ली! इसके थोड़े समय बाद ही 'गिनचेल्ली' ने 'डाल्चे स्टिल नुओवो' अथवा नवीन-मधुर शैली को जन्म दिया! अतएव गिनचेल्ली ही इटली भाषा का ऐसा प्रथम और सच्चा कवि है जिसका कुछ भी उल्लेख किया जाना युक्ति-संगत कहा जा सकता है। इस तरह तेरहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध में 'बुओवो दि अन्तोना', 'रिनार्ड दि फ़ॉक्स' के भाषान्तर और कई दूसरे काव्य इटली भाषा के आरम्भिक महाकाव्यों के रूप में वेनिस में और अन्यत्र प्रचलित रहे। किंतु तेरहवीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में रोमांसों का गद्य रूप ही अधिक लोक-प्रिय हुआ! इन रोमांसों में आर्थर और उसके योद्धाओं की कहानियाँ, मार्कोपोलो की यात्रा की कहानियाँ और ट्रॉय की कथा के नये रूप विशेषतया उल्लेखनीय हैं।

शीघ्र ही एक विचित्र स्थिति पैदा हुई। उत्तरी और मध्य योरोप में ऐसे कितने ही प्राणी इधर-उधर एक स्थान से दूसरे स्थान को आते जाते और भटकते दिखलाई देने लगे जिनका व्यवसाय था सारे सुलभ साधनों से कहानियाँ गढ़ना और कहना। वे सभी वर्गों और सभी

*वैतरणी—स्वर्ग की एक मंजिल—

उन्नों के सदस्यों को समान-रूप से आकृष्ट करते थे, यह और बात है कि इस प्रकार उनका निजी मनोरंजन भी होता था।

किन्तु, इटली का पहिला महान महाकवि 'दान्ते' था, जिसका जन्म-काल १२६५ से १३२१ तक है। इसने 'डिवाइना कॉमेडिया' नामक अपना महाकाव्य १३०० में आरम्भ किया था, जिसकी कथा-वस्तु आगे दी जाये! यद्यपि 'पेटराक' को अपनी इटली भाषा की कविताओं की अपेक्षा अपनी लैटिन-कविताओं पर ही अधिक गर्व था, तथापि उसने इटली-काव्य के परिष्करण से उसे बहुत अधिक पूर्णता प्रदान की। उसने इटली-काव्य को कम-से-कम इतना सुष्ठु और सम्पन्न तो कर ही दिया कि उसके वैयक्तिक मित्र 'बोकाचिओ' ने अपनी 'डिकेमेरॉन' की कहानियों के लिये इटली-भाषा को ही उपयुक्त समझा और उसने उसमें दीर्घकालीन सफलता भी लाभ की! ये कहानियाँ 'केन्टरबरीटेल्स' की समकक्षी हैं, और कहा जा सकता है कि कितने ही विषयों में दोनों लेखकों ने एक ही कथानक का प्रयोग भी किया है।

× ×

पन्द्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में मुद्रणकला के आविष्कार के कारण हर क्षेत्र में आमूल-परिवर्तन और पुनर्जागरण का युग चल पड़ा। इस काल में अकस्मात् लोगों का ध्यान पुराने महाकाव्यों की ओर गया और उन्होंने उनमें हाथ लगाया। अब 'रोलैंड' या, जैसे कि लोग उसे इटली में पुकारते हैं, 'ऑरलैंडो', सामूहिक-रूप से इस कवि-परम्परा का चरित्र-नायक मान लिया गया और कितने ही कवियों ने उसके प्रणय-परिणय की घटनाओं को मूर्त्त-रूप देने का ठेका भी ले लिया। फलस्वरूप सामने आईं 'बोइआरडो' और 'बरनी' द्वारा रचित 'ऑरलैंडो इनामोराटो' और 'पुलची'-कृत 'मॉरगॅंटी माज्योरी', जिसमें ऑरलैंडो को एक विशेष रूप दिया गया था। ये कवितायें, जहाँ तक शैली, प्रभाव और ध्वनि का प्रश्न हैं, असाधारण रूप से मनोहर हैं, किन्तु जहाँ तक उनके विस्तार और उनके असंख्यक चरित्रों की असंख्यक जीवन-घटनाओं के वर्णन का सम्बंध है, वे आधुनिक पाठक के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि वह शीघ्र ही ऊब और थक जाता है।

इटली के निवासी दान्ते के बाद उस 'एरिऑस्तो' को अपना दूसरा महाकवि मानते हैं, जिसकी 'ऑरलैंडो फ्यूरिओसो' या 'रोलैंड इन्सेन' नामक कविता ने 'बोइआरडो' की 'आरलैंडो-इनामोराटो' के कथा- चक्र को गति दी और उसे बढ़ाया। 'एरिऑस्तो' ने अपनी सामग्री का अधिकांश मध्य कालीन फ्रांसीसी रोमांसों से लिया, अतएव उसका विषय जैसे नवीन हो उठा। यही नहीं, बल्कि अपने कथानक की श्री-वृद्धि के लिये उसने शैली भी बड़ी ही हृदय-ग्राही चुनी। फल यह हुआ कि थोड़े समय में ही रोलैंड इटली के प्रत्येक नर-नारी के गले का हार हो गया। इसी समय इस विषय पर 'फ्रोलैंगो' ने 'ऑरलैंडिनो' नामक शब्द-परिवृत्ति काव्य की रचना की!

इटैलियन-साहित्य का दूसरा उल्लेखनीय काव्य है 'टोरकुवातो टैसो' रचित 'जेरूसलामे-लिबेराटा।' इसकी रचना १५५० के बाद किसी समय हुई थी किंतु अपनी अभूतपूर्व शैली के कारण यह आज भी उतना ही लोक-प्रिय है। इसका चरित्र-नायक 'गॉडफ्रे ऑफ़ बुइआँ' है। यह अपनी पुण्य-भूमि के लिये लड़नेवाले वीरों का अनन्यतम महाकाव्य है। इसके अतिरिक्त इस 'टैसो-

ने 'रिनाल्डो', जेरूसलामे 'कौंक्विस्टाटा' और 'सेट्ट जिओरनाते देल मुन्दे क्रियातो' विश्व-रचना के सात दिन-आदि विषयों पर भी महाकाव्य गये रचे थे।

'एरिआस्तो' के कुछ समकालीन कवियों ने इस महाकाव्य शैली का अनुकरण किया। इनमें ट्रिसिनिओ का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। इसने अपने 'इटैलिया लिबेराटा' नामक काव्य की रचना अनुकान्त छंद में की और छन्दों में गोथों पर 'बेलसरियस' की विजयों का वर्णन किया। किन्तु इसने विशेष यश 'सोफ्रोनिज़्बा' की रचना के द्वारा ही कमाया। 'सोफ्रोनिज़्बा' करुण-रस प्रधान-काव्य है। यह वह काव्य है जिसे आधुनिक साहित्य का वह पहला करुण-रस-प्रधान काव्य कहना चाहिये, जिसमें महाकाव्य के सारे नियमों और सारी परम्पराओं का यथाविधि निर्वाह किया गया है।

यद्यपि इसके बाद किसी उल्लेखनीय महाकाव्य की रचना नहीं हुई तथापि 'अलामनी' ने 'जिरोना इल कारतेज' और 'एवारिकदो' नामक महाकाव्य रचे। दोनों ही आवश्यकता से अधिक लम्बे हैं जिन्हें बिना ऊबे और थकान का अनुभव किये आद्यंत पढ़ डालना साधारण मनुष्य के वश की बात नहीं है।

इस क्रम में 'मैरिनस' वह अद्भुत कवि था जिसने विलक्षण कल्पनाओं को जन्म दिया और उनकी परम्परा चलाई। इसने अपनी 'आदोने' नामक कविता के २० पर्वों में 'वीनस' और 'एडोनिस' की कथा का विस्तार किया। इसने 'जेरुसलामे दिस्त्रुत्ता' और 'ला स्त्राजा देल इनोंचेटी' की भी सृष्टि की और कहा जाता है कि इसकी कविता में कुछ वैसा ही रस प्राप्त होता है जैसा कि स्पेंसर' की!

'फॉरतिग्वेरी' अंतिम इटैलियन कवि था, जिसने एक लम्बा काव्य लिखा। उसकी 'रिकारदेत्तो' कितने ही गुणों के लिए सुविख्यात है। कहा जाता है कि किसी पुरस्कार के आकर्षण में काव्य का एक परिच्छेद नित्य लिखकर कवि ने वह पुरस्कार प्राप्त किया था।

इटली की श्रेष्ठ गद्य-रचनाओं में १८३० में 'मानसोनी' द्वारा लिखे-गये 'ई प्रोमेस्सी स्पोसी' नामक उपन्यास का नाम विशेष गौरव के साथ लिया जाता है। इसके बाद इटली के लेखकों ने इस दिशा में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया। यह और बात है कि उन्होंने अपने समकालीन प्रमुख कवियों की रचनाओं के छन्द-बद्ध अनुवाद करने की बात सोची और 'मिल्टन' की 'पैराडाइज़ लॉस्ट', 'इलियड', 'ऑडिसी' 'ऑरगोनाटिका' और 'लूसियेड' आदि के अनुवाद सुन्दर और सफल भी रहे।

———

'डिवाइना कॉमेडिया'—'स्वर्ग की मंज़िलें'—

'इन्फ़र्नो' या यमपुरी—

परिचय—

मध्य काल में यह किम्वदन्ती सर्वसाधारण में एक विश्वास बन गई थी कि लूसिफ़र या शैतान के आकाश से धरती पर गिरने से धरती में एक गहरा छेद हो गया, जो तब तक गहरा होता गया, तब तक कि शैतान धरती के ठीक बीचों बीच नहीं पहुँच गया ! यह विचित्र छेद जेरुसलम[1] के ठीक नीचे माना गया है। महाकवि ने इसे नौ स्वतन्त्र वृत्तों में बाँटा है, जिन्हें एक दूसरे से जोड़े-रखने के लिये पुलों या सीढ़ियों की भाँति कटावदार चट्टानों की बात कवि ने सोची है। कवि की भावना के अनुरूप इनमें से प्रत्येक वृत्त में अपने-अपने निश्चित कर्मों के फल-स्वरूप अपराधी अपना-अपना दंड भोगते हैं।

पर्व एक—

तेरहवीं सदी के अन्त में, ३५ वर्ष की अवस्था में, 'दान्ते' का दावा है कि उसने जीवन-यात्रा की सीधी राह छोड़ी और मृत्यु के समान ही दूसरी विषम अनुभूतियों का परिचय प्राप्त करने के विचार से एक असाधारणतया टेढ़ा रास्ता पकड़ लिया—यही नहीं, उसने अपनी इन कटु अनुभूतियों को रूपक का रूप देकर सर्वसाधारण के लिये सुलभ भी कर दिया, ताकि दूसरे पापी सावधान हो जायँ !

'कवि' तन्द्रा की कोटि की सुषुप्ति से जागता है और अपने को एक ऐसे वन में पाता है, जिसके ऊपर के पर्वत-शिखर को सूर्य चूम रहा है ! अब वह उस पर्वत पर चढ़ने की चेष्टा करता है, किन्तु पहले उसे दिखलाई पड़ता है भोग-विलास और लौकिक आनन्द का प्रतीक एक चित्तीदार तेंदुआ, फिर वह देखता है क्रोध और महत्त्वाकांक्षा का प्रतीक एक शेर और फिर उसे मिलता है लोभ और लिप्सा का प्रतीक एक भयानक भेड़िया, और, ये तीनों उसे एक ओर को ढकेल देते हैं। वह इन यमदूत सरीखे हिंसक पशुओं से डरकर भाग-खड़ा होता है, और उस

[1] पैलेस्टाइन की राजधानी—ईसाइयों का तीर्थ-स्थान।

निर्जन में अपने को पहले की भांति ही असहायावस्था में पाता है। किन्तु, शीघ्र ही उसकी निगाह अपने ही जैसे एक दूसरे मनुष्य पर पड़ती है। वह उससे सहायता की याचना करता है और शीघ्र ही उसे पता चलता है कि उसका सहायक और कोई न होकर स्वयं कवि-सम्राट् 'वर्जिल' है, जिसकी सर्वसुन्दर और सर्व मधुर शैली का अनुकरण करने के कारण वह भी उत्कर्ष के मार्ग में प्रसिद्ध हो गया है!

इसी समय वर्जिल को ज्ञात होता है कि वह दाँते को उस भयानक भेड़िये से बचाने के लिये ही वहाँ भेजा गया है, जो पोप के ग्वेल्फ़[1] वर्ग का भी साकार-रूप है। किन्तु वह जानता है कि उतने से ही उसके कर्त्तव्य की समाप्ति न होगी, प्रत्युत उसे भयावनी यमपुरी और यातनापूर्ण वैतरणी में भी दाँते को पार लगाना होगा, और इस प्रकार उसे स्वर्ग में पहुँचा देना होगा! स्वर्ग में उसकी देखरेख के लिये एक सुकुमार आत्मा पहले से ही है।

पर्व दो—

वर्जिल प्रस्ताव करता है और प्रस्तावित यात्रा की कल्पना-मात्र से दाँते के छक्के छूट जाते हैं किन्तु शीघ्र ही वह उसे सचेत करता है कि कायरता और साहसके अभाव के कारण ही लोगों को प्रायः बड़ी-से-बड़ी और महान-से-महान कार्य योजना त्याग देनी पड़ी है। दूसरे ही क्षण वह उसे प्रोत्साहित करता है और कहता है कि शायद वह नहीं जानता कि उसके स्नेह से विचलित और द्रवित होकरही उसकी प्रियतमा बिऐट्रिसने अपना स्वर्गका स्थान त्यागकर उसके पास आकर उससे अनुरोध किया कि वह जाये और उसके प्रेमी का नेतृत्व करे! इस पर उसे आश्चर्य हुआ कि बिऐट्रिस कैसे एक क्षण को भी अपना स्वर्गीय स्थान छोड़ सकी, किन्तु बिऐट्रिस ने छूटते ही उत्तर दिया कि लूसिया के द्वारा [2]कुमारी मैरी ने उसके पास यह आदेश भेजा कि उसे उसके बचपन से अबतक प्यार करनेवाले व्यक्ति की सहायता करना उसका सर्व प्रथम कर्त्तव्य है। इस तरह वर्जिल अपनी बात समाप्त करता है और दान्ते उसमें उसी प्रकार शक्ति ग्रहण करता है, उसी प्रकार क्रियाशील हो उठता है, जैसे कि किसी हेमेन्त की रात के बाद सूर्य की पहली किरण के स्पर्श-मात्र से कोई ठिठुरा-हुआ फूल एक बार फिर आंखें खोल दे और खिल-उठे। दान्ते स्वस्थ-चित्त वरजिल का अनुकरण करने को तैयार हो जाता है।

पर्व तीन—

दान्ते वर्जिल के साथ चल पड़ता है। शीघ्र ही दोनों यात्री उस वन से निकल कर एक फाटक पर पहुँचते हैं जिसपर ये वाक्य अंकित है।

मेरे भीतर आ-जाने पर तुम चिर-यातना और चिरन्तन पीड़ा के नगर में पहुँचोगे! मेरे भीतर से चल कर तुम ऐसे मनुष्यों के बीच में पहुँचोगे जो सदा के लिये अभिशप्त हैं, और जहां मेरा सृष्टा न्याय भी अधीर हो-उठा है।

× ×

---

[1]एक जाति। [2]ईसा की माँ।

मेरे निर्माण के मूल में दैवी शक्ति सर्वोच्चविवेक और प्रथम प्रणय का हाथ है।

मेरे अस्तित्व के पूर्व सृष्टि नाम से शाश्वत उपादानों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था!

मैं चिरन्तन हूँ, मैं अनादि हूँ!

× ×

फिर भी, मुझमें प्रवेश करने वाले, समझ लो कि एक बार इधर आकर तुम फिर कभी उधर न जा सकोगे, और फिर तुम्हारी आशायें और अभिलाषायें सदा के लिये तिरोहित हो जायेंगी। अतएव समझ-बूझकर ही अगला चरण बढ़ाओ!'

दान्ते की दृष्टि इन वाक्यों पर पड़ती है, किन्तु वह इनका कुछ भी आशय नहीं समझ पाता, और वर्जिल से आग्रह करता है कि वह उसे उनका रहस्य बताये। उत्तर में वर्जिल कहता है कि अब वे यमलोक के निचले प्रदेश 'हेडीज़' नामक तल में उतरने वाले हैं।

× ×

वर्जिल यहाँ पहले भी आ चुका है, अतएव वह एक बेधड़क जानकार की तरह उसे नर्क की ड्यौढ़ी पर ले आता है, यहाँ के आसमान में एक भी तारा नहीं है और यहाँ की हवा की नब्ज़ में आहों, कराहों और पश्चातापों की आवाज़ साफ़ सुनाई देती है। यहाँ दान्ते भय से कांपने लगता है और जिज्ञासु हो उठता है कि अन्ततः यह सब क्या है! वर्जिल उत्तर देता है कि वे सारी आत्मायें जिन्होंने न तो यश कमाया और न अपयश, और वे सभी देवदूत जो स्वर्ग में युद्ध के समय युद्ध की ओर से अन्यमनस्क रहे, इस स्थान पर हैं! स्वर्ग, वैतरणी और नरक, तीनों ही इन्हें शरण देने से आनाकानी करते हैं, और मृत्यु कभी उनके पास फटक नहीं पाती, वह भी उनसे सदा के लिये मुंह मोड़ चुकी है!

इसी क्षण, जबकि वर्जिल अभी यह सब कह रहा है, ऐसी ही अभागी आत्माओं का दल का दल उनके पास में सर्र से निकल जाता है। दान्ते देखता है कि असंख्यक घातक कीड़े-मकोड़े उन्हें भयानक रूप से काट रहे हैं। इनमें अकस्मात् उसकी दृष्टि जा-पड़ती है 'पोप सेलेस्टाइन पंचम' पर जिसने कायरता और कर्महीनता के कारण ही अपना पद त्याग दिया था अर्थात् पाँच महीने की निश्चित अवधि समाप्त होने पर अपने पद को तिलांजलि दे दी थी। उसमें साहस नहीं था कि वह उसे सौंपे गये कार्य की कठिनाइयों का सामना करता!

इस प्रकार लज्जा से नीची दृष्टिवाली आत्माओं के पास से निकलने के बाद दान्ते एकेरॉन नामक मृत्यु की नदी के किनारे पहुँचता है। यहाँ उसे कैरन नामक प्रसिद्ध केवट उसकी ही ओर आता दिखलाई पड़ता है। वह इन मृतात्माओं में एक जीवित मनुष्य देखकर आश्चर्य से अवाक् हो उठता है और अत्यधिक उग्र होकर दान्ते को आज्ञा देता है कि वह उसी क्षण अपने लोक को लौट जाय। किन्तु तुरन्त ही, वर्जिल एक छोटा-सा वाक्य कहकर उसका मुंह बन्द कर देता है कि जहाँ इच्छा, और शक्ति समन्वित एवं एकाकार होती हैं, वहाँ विधि का विधान कुछ और ही होता है। अब कैरन किसी प्रकार की आपत्ति नहीं करता, और उन्हें अपनी छोटी

नाव में बैठने की अनुमति दे देता है। वह नाव पर बैठी अन्य आत्माओं से उतराई उगाहने में शीघ्रता करता है और जो उतराई देने में थोड़ी भी सुस्ती दिखलाती हैं और देर लगाती हैं, उन्हें अपने डाँड़ से बड़ी निर्दयता से पीटता है।

दान्ते यह सब देखकर अचरज करता है, अतएव वर्जिल गुत्थी सुलझाता है कि पवित्र और भली-आत्माओं को कभी भी इस नदी को पार नहीं करना पड़ता, और यह कि इस समय नाव पर जितने भी यात्री हैं वे सब इस दंड के पात्र हैं।

इतने ही में भूचाल आता है। सारा प्रदेश हिल उठता है और दान्ते भय से अचेत हो जाता है।

पर्व चार—

चेत आने पर दान्ते अपने को कैरन की नौका पर न पाकर किसी बहुत बड़ी गोलाकार खाई के किनारे पर पाता है, जिसमें आह-कराह और करुण-क्रंदन का आर्त्तनाद ही बाहर आ रहा है, किन्तु जिसमें गहन अंधकार होने के कारण दिखाई कुछ भी नहीं पड़ता।

उस समय वर्जिल उसकी उदास-मुद्रा का कारण जानने को उत्सुक हो उठता है और यह उत्तर पाने पर कि वह भयातंकित है, कहता है कि उसके उदास और मौन होने का प्रधान कारण उसकी उन आत्माओं के प्रति सहानुभूति है, भय नहीं। इस प्रश्नोत्तर के बाद वह अपने शिष्य को सावधान करता है कि अब वे अन्ध-लोक में उतरने वाले हैं, और इस चेतावनी के साथ ही वह उसे नरक के पहले घेरे में ले आता है।

यहाँ पश्चातापों के स्थान पर केवल कराहें सुनाई पड़ती है। दान्ते उत्सुक दृष्टि से वर्जिल की ओर देखता है और वर्जिल रहस्योद्घाटन करता है कि यह अंधलोक उन बच्चों के लिये तो है ही, जो विधि से ईसाई धर्म में दीक्षित नहीं हुये, उनके लिये भी है जो कि ईसा के पूर्व जन्म लेने पर भी भविष्य में जीवित रहेंगे और अपनी उन अनेक लालसाओं के माया-जाल में फँसे रहेंगे, जो कभी भी पूरी न हुईं और न होंगी। दान्ते सुनता है और उन आत्माओं के प्रति वास्तविक सहानुभूति से आर्द्र होकर एक बार फिर पूछता है कि क्या कभी भी ऐसा कोई व्यक्ति अपने लोक से इस प्रदेश में नहीं आया, जो इनसे मिलता और इनकी सहायता करता। इसपर वर्जिल सन्तोष की सांस लेता है और बतलाता है कि एक बार एक व्यक्ति कितने ही विजयोपहार लेकर इस निम्न-प्रदेश में आया था, और आया था उन्हें भेंट देकर, उनके बदले में आदम, ऐबेल[1] और नोआ[2] जैसे नर-रत्नों को यहाँ से मुक्त कराने के लिये, किन्तु उसके पूर्व न तो किसी ने किसी को इस प्रदेश से मुक्त कराने की बात सोची और न तो यहाँ का कोई भी जीव इस प्रकार बचाया ही जा सका।

[1]आदम का पुत्र—[2]पवित्र बूढ़ा भक्त जिसे संसार का विनाश करते समय ईश्वर ने एक नाव देकर आदेश दिया कि वह उसमें संसार की प्रत्येक चीज़ का एक-एक जोड़ा रख ले!

इस प्रकार बातचीत में व्यस्त गुरु-शिष्य आहें भरती हुई आत्माओं के एक वन से पार होते हैं और अंत में एक ऐसे स्थान पर पहुँचते हैं, जहाँ आग जल रही है, जिसके चारों ओर सम्भ्रान्त आत्मायें जुटी हैं। यहाँ वर्जिल दान्ते को सूचित करता है कि इनमें प्रत्येक आत्मा यशस्वी और सम्मानित है। एक क्षण बाद ही वह उससे मिलने के लिये उसकी ओर आती हुई चार महान आत्माओं की ओर संकेत करता है, और उसके कान में धीरे से कहता है कि ये हैं 'होमर', 'होरास', 'ओविड', और 'ल्यूकन'! वे ज़रा समीप आते हैं, वर्जिल से कुछ देर तक कितनी ही बातें करते हैं और परिचय पाने पर अपनी काव्य-स्वर्गंगा के छठवें जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप में दान्ते का अलौकिक स्वागत करते हैं! दान्ते भी सबका परिचय प्राप्त करता है और इस समय ऐसे ही विषय छेड़ता है, जिनकी चर्चा ऐसे उच्चकोटि के समाज में ही हो सकती है। इस प्रकार उनसे बातें करते-करते वह एक ऐसे महल के समीप आ निकलता है, जो सात परकोटों और एक खाई से भलीभाँति सुरक्षित है! इसके बाद ही वे छहों कवि एक के बाद दूसरे सात फाटकों में जाते हैं और एक वनस्थली में आते हैं, जहाँ उन सब की कृतियाँ एक ही स्थान पर एकत्रित हैं। यहाँ वह हेक्टर, इनीयस, केमिला, [1]ल्यूक्रीशिया और उन तमाम दार्शनिकों, इतिहासकारों और गणित-विद्या विशारदों से भेंट करता है जो कि समय-समय पर हमारी पृथ्वी पर अवतरित हुये हैं। यद्यपि दान्ते की इच्छा है कि वह यहाँ थोड़ी देर रुके और उन सबसे कुछ और बातें करे, तथापि उसका नेता उसे आगे बढ़ने का आदेश देता है! शीघ्र ही वे चारों कवि अदृश्य हो जाते हैं और ये शेष बचे गुरु-शिष्य एक ऐसे स्थान में प्रवेश करते हैं, जहाँ के लिये सूर्य और सूर्य की प्रभा क्या, सूर्य्य की एक किरण और प्रभा की एक हलकी-सी झलक भी सपने की बात है।

पर्व पाँच—

इस घेरे से अपेक्षाकृत निचले घेरे में उतरकर वर्जिल और दान्ते नरक के दूसरे घेरे में पहुँचते हैं। यहाँ उन सारी आत्माओं को दंड दिया जाता है जिन्होंने अपने जीवन-काल में अपने पावन जीवन को अपने कृत्यों से सदैव ही अपावन किया है! यह घेरा व्यास में पहले घेरे से अपेक्षाकृत छोटा है! इसका अधिपति न्यायाधीश माइनॉस है! वह सभी नवागन्तुक आत्माओं के भाग्यों का निर्णय करता है, और अन्त में उन सबको अपनी पूँछ के फंदों में फाँसकर, उनके लिये निश्चित, विभिन्न घेरों में पहुँचा देता है।

माइनॉस की निगाह दान्ते पर पड़ती है और वह उसे भयानक-रूप से धमकाता है, किन्तु, जब वर्जिल एक बार फिर यह भेद खोलता है कि वे किसी अपेक्षाकृत अधिक महान शक्ति के द्वारा वहाँ भेजे गये हैं तो, माइनॉस भी उन्हें अपनी सीमाओं से जाने की अनुमति दे देता है।

वे दोनों आगे बढ़ते हैं। उनके हर बढ़ते पग के साथ यातनाग्रस्त आत्माओं का आर्त्तनाद

---

[1]रोमन चरित्र-नायिका

बढ़ता जाता है। अन्त में वह आर्त्तनाद गर्जन में परिणित हो जाता है और लगता है जैसे कि वे और अधिक न सुन सकेंगे और बहरे हो जायेंगे। एक क्षण बाद ही दान्ते देखता है कि यहाँ की अतल खाड़ी की भयंकर भँवर में असंख्यक आत्मायें तड़प रही हैं, जिन्हें पल-भर के विराम की भी आज्ञा नहीं है। वह उनके समीप से निकलता है और लक्ष्य करता है कि उनकी बिलकुल वही दुर्दशा है जोकि किसी भयानक आँधी में वन के दुर्बल और निस्सहाय पक्षियों की होती है। इसी समय वर्जिल शीघ्रता से उनमें से कुछ की ओर उसका ध्यान आकृष्ट करता है और सेमिरैमिस[1], डिडो[2], क्लिओपेट्रा[3], हेलेन, एकीलीज़, पेरिस, ट्रिस्टन[4], और कितने ही दूसरों को उसे संकेत से दिखलाता है!

उसी क्षण दान्ते की इच्छा होती है कि वह अपनी ओर आती हुई दो आत्माओं से बातें करे! वह वर्जिल से अनुमति मांगता है। उसे अनुमति मिल जाती है और बातचीत करने पर उसे पता चलता है कि उनमें से एक आत्मा है प्रसिद्ध प्रेमी पाउलो की और दूसरी उसकी साली और प्रेमिका फ्रांचेस्कादारिमिनि की! परिचय पाने पर उसे आश्चर्य होता है और वह रिमिनि की आत्मा से प्रश्न करता है कि आखिर वह स्वयं क्यों उस दारुण-अवस्था में है। उत्तर में उसका कंठ भर आता है और वह कहती है कि दुख के क्षणों में बीते सुख की मधु-स्मृतियों से अधिक बड़ी और भयंकर यातना शायद ही कोई हो, फिर भी बात यों है कि विद्यार्थी-जीवन में जब वह स्वयं और पाउलो सहपाठी थे और साथ-साथ 'लान्सलॉट' की कहानी पढ़ते थे तो उन्होंने एक दिन अनुभव किया कि वे एक दूसरे को 'लान्सलॉट' की भाँति ही प्यार करने लगे हैं। इस तरह उनका अपराध यही था कि उन्होंने वही कार्य किया था जिसे कि पुस्तक में पाप ठहराया गया था। बहुत साफ़ है कि लेखक और पुस्तक दोनों का एक ही ध्येय था, और वह था प्यार का एक सलोना संसार बसाना और उसे रचा-संवार कर उसमें चार चाँद लगा देना। इतना कहकर रिमिनि एक क्षण को रुकती है। इस प्रकार वह अपना अपराध पूरी तरह स्वीकार भी नहीं कर पाती कि उसकी और उसके प्रेमी की संरक्षिका एवं अधिकारिणी तेज़ हवा उन दोनों को आगे उड़ा ले जाती है। दान्ते उनकी आर्त-ध्वनि सुनकर इतना सहम हो उठता है कि अचेत हो जाता है।

पर्व छः—

दान्ते सजग होता है और देखता है कि इसी बीच में वरजिल उसे तीसरे घेरे में ले आया है। इस प्रदेश में सदैव ही कड़ाके का जाड़ा पड़ता है, सदा ही पानी बरसता रहता है और इस ऋतु को और भी भीषण बनाने के लिये जब-तब ही ओले भी पड़ने लगते हैं, हिम वर्षा होती है। यहाँ 'सरबिरस' नामक एक तीन सिर का कुत्ता राज्य करता है। यह कुत्ता उन सारी आत्माओं की दुर्गति करता और उन्हें अपने तीक्ष्ण पंजों से चीर-फाड़ डालता है जो अपने जीवन-

[1]एसीरिया की महारानी- [2]टायर की महारानी- [3]मिश्र की महारानी- [4]कॉर्नवाल के आर्थर नामक राजा के दरबार का योद्धा-बादशाह मार्क का भतीजा

काल में वृकोदर रही हैं, जिन्होंने सदा ही परिमाण से अधिक भोजन किया है और जिन्होंने सदैव केवल अपने पेट पाटने की ही चिन्ता की है। इस कुत्ते के समीप पहुँचते ही वर्जिल उसके मांस के भूखे, खून के प्यासे हिंसक जबड़ों में एक मुट्ठी धूल झोंक देता है ताकि वह उस पर और उसके शिष्य पर वार न कर सके, और शीघ्रता से उधर से होकर गुज़र जाता है। इसके बाद वह एक ऐसे स्थान में आता है जहाँ उसे और दान्ते को पृथ्वी पर धूलि फांकती हुई असंख्यक आत्माओं के ऊपर से हो कर चलना पड़ता है! इस तरह वे आगे बढ़ते हैं कि एक आत्मा उठ बैठती है, सहसा ही दान्ते से प्रश्न करती है कि क्या वह उसे वहीं नहीं पहिचानता, और फिर स्वयं ही अपना परिचय देती है कि वह फ्लोरेंस के दैत्य-वृकोदर 'चाक्को' की आत्मा है। दाँते कुछ समझ नहीं पाता, किन्तु मन-ही-मन सोचता है कि सम्भव है, इसमें कुछ भविष्य वाणी की शक्ति हो, अतएव वह उसी के नगर का भविष्य जानने को उत्सुक हो कर उससे उस आशय का प्रश्न करता है। चाक्को की आत्मा उत्तर देती है कि उस नगर का एक राजनैतिक-दल दूसरे को शीघ्र ही पराजित करने वाला है, किन्तु तीन साल बाद वह स्वयं भी कहीं का न रहेगा। इतना कहने के बाद आत्मा जैसे कुछ सोचने लगती है, किन्तु दूसरे ही क्षण फिर कहना आरम्भ करती है कि उस नगर में केवल दो न्याय-प्रिय व्यक्ति रह गये हैं, शेष सब जैसे के तैसे हैं। इसके बाद वह चुप हो जाती है और दान्ते दूसरा प्रश्न करता है कि अन्त में उसके मित्रों का क्या हुआ! इस पर वह आत्मा फिर मुखरित हो उठती है और कहती है कि उनमें कुछ हेडीज़ के विभिन्न प्रदेशों में हैं और, यदि वह इसी प्रकार और निचले प्रदेशों में उतरता रहा तो, उससे अनिवार्य-रूप से मिलेंगे! इतना ही नहीं, मित्रों की चर्चा आने पर वह दान्ते से आग्रह करती है कि वह अपनी मनोहर और मधुर दुनिया में लौटने पर उसके शेष मित्रों से उसकी चर्चा अवश्य करे। इसके बाद वह आँखें मूंद लेती है और उन तमाम अपराधियो में एक बार फिर लुप्त हो जाती है! वे सब-के-सब न्यूनाधिक अंधे हैं! इसी समय वर्जिल दान्ते को सूचित करता है कि देवदूत की अंतिम शंखध्वनि के समय तक इस आत्मा की मुक्ति सम्भव नहीं है। तत्पश्चात गुरु-शिष्य धूल और धूल में मिली आत्माओं के पथ से आगे बढ़ते हैं। एक बार फिर वर्जिल दान्ते को सम्बोधित करता है और कहता है कि यद्यपि पथ पर बिछी हुई पापात्माएं पूर्ण मुक्ति की आशा तो नहीं कर सकतीं, किन्तु तो भी उनके विकास का द्वार उनके लिये पूर्णतया बन्द नहीं है।

पर्व सात—

इस तरह बातें करते हुये दोनों यात्री चौथे घेरे में उतर आते हैं। इस प्रदेश का राजा प्ल्यूटस है! वह पहिले तो उनके उधर से आने पर आपत्ति करता है, किन्तु जब वर्जिल उसके स्वामी और किसी समय के सर्वोच्च देवदूत की चर्चा करता है, उसे अपने उस प्रदेश से हो कर जाने के अधिकार से अवगत करता है और बतलाता है कि उसे तो उस स्थान तक जाना ही है, जहाँ माइकेल ने शैतान को बन्दी कर रक्खा था, तो वह अत्यन्त विनम्र हो उठता है और उन्हें अपने प्रदेश से होकर आगे बढ़ने की अनुमति देता है।

थोड़ी दूर जाने के बाद वर्जिल दान्ते को बतलाता है कि यह घेरा दो प्रकार के व्यक्ति की आत्माओं का कारागार है। एक तो उनका, जो अपने जीवन-काल में आजन्म लोभ और लिप्त के शिकार रहे हैं और दमड़ी-दमड़ी पर अपना ईमान बेचते रहे हैं, कौड़ी-कौड़ी पर जान देते रहे हैं, दूसरे उनका, जो अपने जीवन-काल में सदैव मितव्ययी रहे हैं, और इसलिये कभी भी अपने सोने-चाँदी और वैभव का सदुपयोग नहीं कर सके हैं। इतना बतलाने के बाद वर्जिल इस प्रदेश में दी-जाने वाले दण्ड की चर्चा करता है और कहता है कि यहाँ के सारे अपराधियों को बहुत भारी-भारी पत्थर लुढ़काने पड़ते हैं। सहसा हां, दान्ते की निगाह कुछ पादरियों की आत्माओं पर जा टिकती है, जो अपने जीवन-काल में अपने को विशेष ईश्वर भक्त और साधु प्रमाणित करने के विचार से परम्परा के अनुसार अपने सिर तक मुंडवाते रहे हैं। इस भाँति उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता जब उसके सामने यह सत्य आता है कि बड़े-बड़े साधु और मठाधीश भी अपने को इन पापों से अछूता नहीं रख सके हैं। इसी बीच में वर्जिल बड़ी योग्यता से उसकी शंका का समाधान करता है और उसे समझाता है कि विधि का विधान तो कुछ ऐसा था कि सभी राष्ट्र क्रम से अपने-अपने प्रभुत्व का सुख लाभ करते, किन्तु दुर्भाग्य है कि वे और उनके सारे निवासी भाग्य के शिकार हो गये और उनके मन का चंचलपन स्वभाव बन कर ही नहीं रह गया प्रत्युत एक कहावत का रूप भी पा गया !

इसके बाद ही वे एक कूप के पास से निकलते है, जिसका पानी उमड़ रहा है और सोते का रूप धारण कर रहा है। दोनों कवि इसी सोते की अधोमुखी धारा के सहारे चल कर स्टिक्स नामक एक दलदल पर आ निकलते हैं। दान्ते देखता है कि यहाँ सैकड़ों नंगे जीव दलदल में फंसे हुये तड़प रहे हैं और उन्मत्त होकर आपस में टकरा कर एक-दूसरे को धक्का दे रहे हैं। वर्जिल दान्ते की उत्सुकता का अनुमान कर लेता है और उसे उन आत्माओं का परिचय देता है। वह कहता है कि ये वे आत्मायें हैं जिनका क्रोध पर कभी कुछ वश नहीं चला, जिन पर क्रोध सदैव ही हावी रहा और जिन पर, अन्त में, उसने विजय भी प्राप्त कर ली। इतना कहकर वह थोड़ा रुकता है और फिर आरम्भ करता है कि ऐसी कितनी ही आत्मायें इस गंदे पानी की तह में दबी पड़ी है, जिनके साथ रहना और जिनका साथ देना वे बुलबुले तक पसन्द नहीं करते, जिनका विधाता इन आत्माओं की साँस की वायु है, जो प्रति क्षण तल पर आते रहते हैं और लोगों की दृष्टि पड़ते ही सदा के लिये लुप्त हो जाते हैं।

इतना कह कर वर्जिल चुप हो जाता है और दान्ते विचार शील हो उठता है। इस प्रकार इस वीभत्स तालाब के किनारे-किनारे चल कर दोनों कवि, अन्त में, एक ऊँचे स्तम्भ के द्वार पर आ-जाते हैं।

पर्व आठ—

इस ऊंचे और विशाल स्तम्भ से रह-रहकर लाल लपटें लहक उठती है, जैसे कि वे जलपोत के संकेत हों। दूसरे ही क्षण एक पोत उस ओर आता दिखलाई पड़ता है और यह बात सिद्ध हो जाती है।

यहाँ आने पर उस पार पहुँचने के लिये वर्जिल पोत पर चढ़ना चाहता है, किन्तु 'फ्लेजियस' नाम का एक चिड़चिड़ा केवट नाक-भौं सिकोड़ने लगता है और उसके द्वारा सन्तुष्ट और शान्त किये जाने पर ही उसे अपनी नाव पर क़दम रखने देता है! इस प्रकार स्वयं नाव पर पहुँच जाने पर वर्जिल दान्ते को भी अपने पास बुला लेता है। नाव चल पड़ती है और दान्ते देखता है कि हर दूसरे ही क्षण कोई न कोई सिर गंदे पानी के ऊपर उभर आता है और दूसरा डूब जाता है। वह विस्मय से इस दृश्य पर विचार करता रहता है कि ऐसा ही एक सिर उसके समीप निकल कर उससे प्रश्न करता है कि वह कौन है जो अपने निश्चित समय के पूर्व ही वहाँ आ गया है! कवि तुरन्त ही उत्तर देता है कि उसका विचार वहाँ ठहरने का नहीं है और वह शीघ्र ही अपने लोक को लौट जायेगा। किन्तु इस उत्तर से ही उसका जी नहीं भरता और उसके सौहार्द्र से प्रभावित होकर वह उस आत्मा का परिचय भी पाना चाहता है। परन्तु, यह भाव मन में आते ही वह उस ऑरजेंटी नामक पापी को पहचान लेता है और घृणा से भरकर उसकी ओर से मुंह फेर लेता है। वर्जिल को उसका यह व्यवहार बहुत पसन्द आता है और जब दान्ते कामना करता है कि यह राक्षस सदा के लिये इस दलदल में डूब जाये और इस तरह डूबे कि इसका दम घुटता रहे और इसके प्राण भी घोर कष्ट से निकले तो उसका गुरु उसी ओर आती हुई प्रतिहिंसात्मक आत्माओं के एक दल की ओर संकेत करता है और कहता है कि उसकी इस इच्छा की पूर्ति के लिये ही वे आत्मायें आंधी की गति से उस ओर बढ़ी आ रही हैं। इतना सुनते ही आरजेंटी अपने ही दाँतों से अपना शरीर काटने लगता है और दलदल में डूब जाता है।

इस भाँति दान्ते की नाव आगे बढ़ती रहती है। थोड़ी देर बाद वर्जिल उसे सूचित करता है, कि अब वे शीघ्र ही डिस नामक उस महानगरी में पहुँचनेवाले हैं, जिसके ऊँचे स्तम्भ भीतर से आग के रंग के हैं और दूर से चमक रहे हैं।

कुछ क्षण बाद ही वे उस नगरी की खाई में पहुँचते हैं। यहाँ यात्री धीरे-धीरे उसकी लोहे की दीवालों को घेरकर खड़े हो जाते हैं, जिनपर नीचे की ओर झुक कर भ्रमित आत्मायें कोलाहल करने लगती हैं और जानना चाहती हैं कि वह कौन है जो मृतकों के प्रदेश में प्रवेश तो कर रहा है, किन्तु जिसने पहले कभी मृत्यु का अनुभव नहीं किया। इस पर दान्ते उन्हें सन्तुष्ट करने का संकेत करता है और वे सब अदृश्य हो जाती हैं, मानों उन्हें उस प्रदेश में प्रवेश करने का निमन्त्रण दे रही हों! किन्तु जब यात्री फाटकों पर पहुँचते हैं तो वे देखते हैं कि वे उसी प्रकार बन्द हैं और उनका खुलना कठिन है! वर्जिल उन सब की अधीरता अनुभव करता है और उन्हें बतलाता है कि वे दीवारों पर झुकी हुई दुष्आत्मायें वे हैं जिन्होंने हेडीज़ में ईसा के प्रवेश का भी विरोध किया था, किन्तु पहले 'ईस्टर' के दिन जिनकी शक्ति का विनाश किया गया था और इस प्रकार जिन्हें हार खानी पड़ी थी।

पर्व नव-

इस दृश्य से दान्ते भय से कांपने लगता है। उसे इस स्थिति में देखकर वर्जिल सूचित

करता है कि यद्यपि पहला व्यक्ति तो वह स्वयं है जिसने इनीयस के साथ *'क्यूमियनसिबिल' के नेतृत्व में पहिले-पहिल इन प्रदेशों की यात्रा की, तथापि वह दो चार और लोगों के भी नाम गिना सकता है, जिन्हें वह जानता है और जिन्होंने प्रेत-पुरी के इन वीभत्स और विषम प्रदेशों में जाने का साहस किया है।

इसी समय जब कि वर्जिल अपने शिष्य से इस प्रकार बातें कर रहा है, इस स्तम्भ के सिरे पर प्रतिहिंसा की तीन दानवीयाँ अकस्मात् दिखलाई पड़ती है। वे इन अनिमंत्रित, अनावश्यक जीव-धारियों को देखते ही मेडूसा नामक दानवी का आवाहन करती हैं कि वह आये और उन्हें पत्थर बना दे! वर्जिल सावधान हो जाता है और दान्ते को आदेश देता है कि वह किसी प्रकार भी उस दानवी की हर वस्तु को पत्थर बना देनेवाली दृष्टि से अपनी दृष्टि न मिलाये। इतना ही नहीं प्रत्युत इसलिये कि उसके संरक्षण में उसे किसी तरह की आँच न आने पाये, वह अपने हाथों से उसकी आँखें मूँद लेता है। इस तरह कुछ देर के लिये अन्धा हो जाने पर दान्ते किनारे से टकराती हुई लहरों की ध्वनि सुनता है और जब वर्जिल उसकी आँखें मुक्त कर देता है तो वह देखता है कि एक देवदूत 'स्टिक्स' से होकर आ रहा है, किन्तु फिर भी उसके पैर बिल्कुल साफ़ है, जैसे कि वह धरातल के ऊपर-ऊपर होकर अपना रास्ता तय कर रहा हो! देवदूत उनके समीप आता है और उसके हाथ के स्पर्श-मात्र से 'डिस' के फाटक अनायास खुल जाते हैं। इस प्रकार अपना कार्य कर चुकने के बाद यह देवदूत तुरन्त ही लौट पड़ता है और उन दो महान कवियों की ओर कुछ भी ध्यान नहीं देता, जो कृतज्ञता के कारण इस समय नत मस्तक हो रहे हैं, जैसे कि यही उनका स्वाभाविक रूप हो।

× ×

शीघ्र ही गुरु-शिष्य फाटक के भीतर के नगर में प्रवेश करते हैं। यहाँ दान्ते देखता है कि लाल और दहकते हुए कफ़न में लिपटे असंख्य पापी जलती हुई चिकनी मिट्टी में धंसे-पड़े हैं। वह अपने गुरु से उनके विषय में कुछ जानना चाहता है। उत्तर में वर्जिल कहता है कि इनमें विशिष्ट धार्मिक वर्गों के नेता या ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने अपने जीवन-काल में विशिष्ट धार्मिक-सिद्धान्तों को कुछ-का-कुछ रूप देकर उनका प्रतिपादन और प्रचार किया है, अतएव उनके समाधि-स्थान को उतना ही तपाया जा रहा है, जितना कि उनमें स्थित आत्माओं के भ्रामक उपदेशों के द्वारा समाज और जनता की हानि हुई है।

पर्व दस—

इस प्रकार इन धधकती हुई समाधियों और दुर्ग की उत्तप्त दीवारों के बीच से वर-जिल दान्ते को एक ऐसे स्थान पर ले आता है, जहाँ एक खुली हुई समाधि में गिबेलाइन जाति का नेता फ़ैरीनाटा पड़ा-तड़प रहा है! यह योद्धा उन्हें देखकर अपनी आग से दहकती हुई

---

*क्यूमिया-द्वीप की तीन बुद्धिमान राक्षसियों में से एक—

समाधि से उठने का यत्न करता है और थोड़ा उठकर दान्ते को सूचित करता है कि दो बार खदेड़े जाने के बाद उसकी जाति के प्रतिद्वंदी ग्वेल्फ्स एक बार फिर फ़्लोरेंस में लौट आये हैं। इसी समय एक दूसरा पापी अपने कफ़न के किनारे से सिर निकालकर बाहर झांकता है और बहुत उत्सुक होकर उन दोनों से अपने पुत्र ग्विडो का कुछ हाल-चाल जानना चाहता है। इस भाँति यह प्रमाणित हो जाता है कि इन अभागी आत्माओं को भूत और भविष्य दोनों का पूर्ण ज्ञान है, किन्तु वर्तमान इनके लिए एक रहस्य है। इस पर दान्ते इतना आश्चर्यचकित हो उठता है कि पहले तो उसके मुँह से शब्द नहीं निकलता किन्तु फिर वह भूतकाल में ग्विडो का उल्लेख करता है। उसके भूतकाल में बात आरम्भ करने के कारण अभागा पिता समझ-बैठता है कि उसका पुत्र मर गया है, अतएव एक हृदय-विदारक क्रन्दन के साथ वह अपने कफ़न में सिर गड़ा कर पड़ रहता है, जैसे कि अभी अभी यह दूसरी मृत्यु आई हो! सहसा ही दान्ते अनुभव करता है कि अनजाने में ही उससे एक भयंकर भूल बन पड़ी है, जिसके कारण उस आत्मा को बड़ा कष्ट पहुँचा है, अतएव वह अपनी भूल सुधार का और कोई रास्ता न देखकर फ़ैरीनाटा से अनुरोध करता है कि वह जल्दी-से-जल्दी अपने पड़ोसी को सूचित कर दे कि उसका पुत्र अभी जीवित है और सकुशल है।

कहना न होगा कि अब तक दान्ते जो कुछ देखता-सुनता है, उसे समझ नहीं पाता, अतएव अधीर हो उठता है, और सोच-विचार में पड़ जाता है, तो भी दंडित पापियों पर सहानुभूति की एक दृष्टि डालता हुआ आगे बढ़ता है! शीघ्र ही वर्जिल उसकी व्यग्रता लक्ष्य करता और उसे इस विश्वास से धैर्य बंधाता है कि यात्रा के अंत में स्वयं बिएट्रिस उसके सारे प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर देगी, उसकी सारी शंकाओं का समाधान करेगी!

पर्व ग्यारह—

अब दोनों कवि एक खाई पर आ निकलते हैं! इसमें से ऐसी भीषण दुर्गन्धि निकल रही है कि उनका दम घुटने लगता है और वे एक पथरीली समाधि के पीछे शरण ग्रहण करने के लिए विवश हो जाते हैं। इस प्रकार जब कि वे यहाँ कुछ देर के लिए ठहर जाते हैं, दान्ते देखता है कि वह खाई न होकर एक समाधि है, जिस पर उस पोप एनैस्टैशियस का नाम खुदा हुआ है, जो कि अपने जीवन-काल में पथ-भ्रष्ट हो गया था। इस तरह थोड़ी देर तक उस स्थान पर खड़े रहने के कारण वे उस दुर्गन्धि के आदी हो-चलते हैं, और तब वर्जिल अपने सहचर मित्र को सूचित करता है कि अब वे सातवें घेरे के उन तीन क्रमिक उपघेरों से होकर निकलने वाले हैं, जहाँ उन तमाम हिंसक अथवा उग्र आत्माओं को दण्ड मिलता है, जिन्होंने अपनी इच्छा से बलात् कुछ ऐसे कार्य किये जिनके कारण ईश्वर को या उनके साथियों को किसी-न-किसी प्रकार पीड़ा पहुँची, उन्हें कष्ट हुआ!

पर्व बारह—

दान्ते वर्जिल की बात ध्यान देकर सुनता है और आगामी दृश्यों और घटनाओं के लिए पूरी तरह तैयार हो जाता है। वर्जिल एक ढालू रास्ते से उसे एक दूसरे घेरे की सीमा पर ले आता है। यहाँ, सहसा ही, 'मिनोटॉर'[१] से उनकी भेंट होती है! इस दैत्य के दृश्य-मात्र से दान्ते पसीने-पसीने हो उठता है, किन्तु वर्जिल 'थीसियस' के नाम का उल्लेख करता और उसे लड़ने के लिए ललकारता है। दूसरे ही क्षण वह भयानक बैल के समान राक्षस नीचा सिर करके उसकी ओर झपटता और उस पर हमला करना चाहता है। वर्जिल इससे लाभ उठाता और दान्ते के साथ एक ढालू पथ पर नीचे की ओर भाग-खड़ा होता है, किन्तु इस रास्ते के पत्थर मरणशील, जीवित मनुष्यों के चरणों का बोझ सम्हालने के आदी न होने के कारण टूटकर खिसकने लगते हैं, जैसे कि वे किन्हीं आने वाले संकटों की पूर्व-सूचना हों! इसी समय वर्जिल दान्ते को बतलाता है कि वह पिछली बार जब हेडीज़ में आया था तो यह रास्ता कम संकटापन्न था, किन्तु उसके बाद ईसा के प्रेतपुरी में उतरने के समय एक भूचाल आया, जिसने इस प्रदेश को झकझोर दिया और उस रास्ते को वर्तमान ऊबड़-खाबड़ रूप दे दिया!

शीघ्र ही वर्जिल एक खौलती हुई, 'फ्लेगेथॉन' नामक रक्त की नदी की ओर संकेत करता और दाँते को वे सभी पापी दिखलाता है, जो कि उसमें विभिन्न गहराइयों में पड़े उबल रहे हैं, क्योंकि अपने जीवन-काल में उन्होंने अपने पड़ोसियों के साथ दुर्व्यवहार किया था और उनकी हत्या की थी। दान्ते देखता है कि यद्यपि वे सारी पतित आत्मायें इस रक्त के पारावार से जान-बचाकर निकल भागना चाहती हैं तो भी वे रखवालों के दलों के कारण अपनी सीमा के बाहर झांक भी नहीं पातीं। ये रखवाले नदी के दोनों किनारों पर चक्कर लगा रहे हैं, और धनुष-बाण से भली भाँति सुसज्जित हैं, किन्तु इनमें से प्रत्येक का आधा शरीर मनुष्य का है और आधा घोड़े का! ये नज़र पड़ते ही वर्जिल को भी ललकारते और उसे मार-डालने को धमकाते हैं, किन्तु वह बहुत शान्तभाव से उत्तर देता है कि वह उनके नेता 'किरॉन' से मिलना चाहता है। वे रखवाले उसे शीघ्र ही बुलवाते हैं। इसी बीच जब कि वह 'किरॉन' की प्रतीक्षा कर रहा है, वर्जिल दान्ते को 'नेसियस' नामक उस राक्षस को दिखलाता है, जिसने कभी हरकुलीज़ की पत्नी को बलपूर्वक ले-भागने की कोशिश की थी!

एक क्षण बाद ही 'किरॉन' उनकी ओर आता नज़र आता है। वह बहुत अचरज करता है जब वह देखता है कि उन दो मिलनार्थियों में से एक की छाया ज़मीन पर पड़ रही है और उसके पैरों के नीचे के पत्थर रह-रह कर लुढ़क रहे हैं, जिससे यह साफ है कि वह अभी जीवित मनुष्य है। वर्जिल उसके विस्मय के समाधान के लिए उसे बतलाता है कि सचमुच ही उसका साथी जीवित मनुष्य है, किन्तु वह प्रेत पुरी से होकर आगे बढ़ना चाहता है और इस प्रदेश में उसका

[१] एक राक्षस जिसका 'क्रीट' में 'थीसियस' ने वध किया—

पथ-प्रदर्शन करने के लिये ही वह स्वयं उसके साथ भेजा गया है। इतना ही नहीं, इतना बतला कर वह उससे आग्रह करता है कि वह अपने किसी सहकारी को बुलाये और उसे आदेश दे कि वह उसे रक्त की नदी के उस पार कर दे क्योंकि किसी भी मृत-आत्मा की तरह वह स्वयं हवा पर नहीं चल सकता! उसकी बात समाप्त होते ही 'किरॉन' नेसियस को इस कार्य के लिये बुलाता है और निर्देश करता है कि वह कवि दान्ते को बड़ी होशियारी से नदी के पार ले जाय! नेसियस अपने नायक की आज्ञा का पालन करता है और दान्ते को साथ लेकर चल पड़ता है। राह में वह दान्ते से कितनी ही बातें करता है और इन बातों के सिलसिले में उसे बतलाता है कि इस रक्त की नदी में वे सभी हिंसक आत्मायें हैं, जिन्होंने अपने जीवन-काल में केवल रक्तपात में ही सुख पाया है, उदाहरण के लिये 'सिकन्दर', 'डाइनाइसियस'[1] आदि!

थोड़ी देर बाद ही दान्ते उस पार पहुँच जाता है और नेसियस अकेले लौट पड़ता है। पिछले क्षणों में यद्यपि वह साथ नेसियस के ही रहा है, तो भी उसका संरक्षक अपने उत्तरदायित्व के प्रति सर्वदा और सर्वथा सजग रहा है।

पर्व तेरह—

इसके बाद दोनों यात्री अब घोर घने जंगल में प्रवेश करते हैं! यह जंगल नरक के सातवें घेरे का दूसरा विभाग है। वर्जिल के कथनानुसार इस जंगल के प्रत्येक कँटीले झाड़-झंखाड़ में किसी-न-किसी आत्म-हंता का निवास है, और इस जंगल के पेड़ों की ऊंची शाखें हारपीज़[2] नामक राक्षसोंकी उपस्थिति की परिचायक हैं! इन राक्षसों के प्रायश्चित और चीत्कार से सारा वातावरण करुणा और भय से भर-उठा है, किन्तु वे अंकुरित होते ही हर पत्ते को बड़ी नृशंसता से निगल जाते हैं।

दान्ते पश्चातापों और आहों-कराहों की इस तीव्र वायु से द्रवित और भयांतकित हो-उठता है, और प्रश्नसूचक दृष्टि से वर्जिल की ओर देखता है। उत्तर में वर्जिल उसे आदेश देता है कि वह पास के किसी भी एक पेड़ से एक डाल तोड़ ले। वह अपने निर्देशक की आज्ञा का पालन करता है और देखता है कि उसके डाल तोड़ते ही उस स्थान से टप-टप कर रक्त की बूंदें चूने लगीं! इतना ही नहीं, उसे लगता है जैसे कि उसकी इस निर्दयता के लिये कोई बहुत उग्र होकर उसे फटकार भी रहा है! वह उत्सुक हो उठता है और तब उसे ज्ञात होता है कि उस विशिष्ट पेड़ पर निवास करने वाली आत्मा अपने जीवन काल में 'फ्रेड्रिक द्वितीय' की अन्तरंग सहायक-मंत्री रही थी, किन्तु जिसने अपने किन्हीं दुष्कृत्यों के कारण लज्जाजनक परिस्थिति में पड़ कर और अधिक अपमान न सह सकने के कारण आत्म-हत्या की शरण ली थी। वह यह सब बड़े ध्यान से सुन रहा है कि सहसा ही, उस प्रेतात्मा का कण्ठ भर आता है और एक आर्त्तनाद सुनाई पड़ने लगता है। दूसरे ही क्षण वह देखता है कि आगे-आगे दो नंगी आत्मायें अपना आपा खोये

[1] वह हत्यारा जिसने 'सिराक्यूज़' का वध किया था—

[2] वे राक्षस जिनका आधा शरीर स्त्रियों का होता है और आधा चिड़ियों का-

भागी जा रही हैं और उनका पीछा कर रहा है एक शिकारी और उसके साथ भयावने भारी कुत्तों का एक दल जिनके मोटे ओंठ नीचे झुके हैं और निश्चितरूपेण मांस-लोलुप हैं। शीघ्र ही कुत्तों का दल उन दो नग्न शरीरों में से एक पर टूट पड़ता है और क्षण में ही उसे चीर-फाड़कर उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालता है। दान्ते इस दृश्य की वीभत्सता सहन नहीं कर पाता और कांपने लगता है! इसी बीच में वर्जिल उसे बतलाता है कि यह अपराधी अपने जीवन-काल में कोई अतिव्ययी नवयुवक था, जिसने अपने महाजनों का धन वापिस न कर-उनसे पिंड छुड़ाने के लिये विष-पान कर प्राण-त्याग दिये थे, किन्तु जो मरने के बाद भी उनसे मुक्त न हो सका था! उसके कथनानुसार ये शिकारी और कुत्ते उन्हीं महाजनों के प्रतीक हैं।

पर्व चौदह—

इस मृत्यु के समान ही भयोत्पादक वन से निकलने पर दान्ते इस घेरे के तीसरे विभाग में प्रवेश करता है! यह जलती हुई बालू का प्रदेश है। यहाँ धरती पर पड़ी हुई असंख्यक झुलसती, नंगी आत्माओं पर आग की वर्षा हो रही है! ये अपने हाथ-पैर पटक-पटक कर अपनी पीड़ा कम करने का निष्फल प्रयत्न कर रही हैं। इन सारी पीड़ित आत्माओं में केवल एक ही ऐसी पूर्ण और विशाल आत्मा है जो इस अग्नि-वर्षा की ओर से अन्यमनस्क है। दान्ते उसे देखता है और प्रश्न करता है कि यह कौन हो सकता है। उत्तर में वर्जिल उसे समझाता है कि यह पापात्मा और कोई न होकर राजा कैपैनियस है। जिसने अपने जीवन-काल में अपने अन्य छः साथी-राजाओं के साथ बियोशिया की राजधानी थीब्ज़ पर आक्रमण किया और उसे घेर लिया था, जिसने अपनी शक्ति और अपने पौरुष के दुर्दमनीय मद में चूर होकर जूपिटर पर व्यंग्य-बाणों का प्रयोग किया था, और जिसका वध जूपिटर ने स्वयं अपने बिजली के वज्र की सहायता से किया था।

× ×

गुरु-शिष्य बड़ी सावधानी से इस प्रदेश से गुजरते हैं। वे जलती-हुई बालू के पथ को बचाने के लिये एक लाल स्रोत को पार करते हैं। यह लाल स्रोत क्रीट के इडा पर्वत से सीधे यहां तक आता है और इसका उद्गम-स्थान उस प्रदेश की उस एक मूर्ति का तल है जिसका मुँह रोम की ओर घूमा हुआ है।

वर्जिल दान्ते को बतलाता है कि सारी संतप्त और दुखी पापात्माओं के आँसू का खारा-जल ही इस सोते की जीवन धारा है और यह इतना गहरा और इतना अटूट है कि इसके कारण ही हेडीज़ की चारों विशाल नदियाँ हर ऋतु में लबालब रहती हैं। इस तरह जब कि बात-चीत चल रही है दान्ते प्रश्न करता है कि खाई में गिरने वाली अन्य दो नदियाँ कौन हैं और उन्हें अब तक क्यों नहीं मिलीं। इस पर उसका निर्देशक उसे उत्तर देता है कि यद्यपि वे एक गोलाकार पथ पर यात्रा करते रहे हैं तथापि वे अब तक पूरे प्रदेश का भली भाँति एक चक्कर भी नहीं

लगा पाये हैं प्रत्युत वे तो परिधि पर थोड़ी देर और थोड़ी दूर तक यात्रा करने के बाद ही एक उप-घेरे से दूसरे में उतरते रहे हैं अतएव उन नदियों को न देख पाना कोई अचरज की बात नहीं है।

पर्व पन्द्रह—

इस अश्रु-प्रपात के किनारे इतने ऊँचे हैं कि वे दोनों कवि इस प्रदेश की जलती-हुई बालू और अग्नि-वर्षा के दुष्प्रभावों से पूरी तरह अछूते और भली भांति सुरक्षित रहते हैं। किंतु शीघ्र ही प्रेतात्माओं के एक दल से उनका सामना होता है, जिनमें हर एक उन्हें भयानक दृष्टि से घूर-घूर कर देखता है। इनमें से एक पापी दान्ते को पहिचान लेता है और उसे सम्बोधित करता है। इस पर पहले तो दान्ते कुछ समझ नहीं पाता किंतु फिर उसे भी याद आ जाता है और उसे यह देखकर विस्मय होता है कि उसके सामने उसका बूढ़ा स्कूलमास्टर 'सेर ब्रुनेतो' है। वह उसके साथ-साथ चलने लगता है और 'ब्रुनेतो' उसे बतलाता है कि उसे और उसके साथियों को दण्ड दिया गया है कि वे सौ साल तक बराबर इस अग्नि-वर्षा के नीचे चलते रहें, न क्षण भर को गरमी की रोक के लिये हाथ में पंखा लें और न पल भर को भी विराम के लिये रुकें! ब्रुनेतो की बात रुक जाती है किंतु वह स्वयं भी अपने पुराने शिष्य के विषय में कुछ जानना चाहता है और उससे प्रश्न करता है कि वह कैसे और क्यों उस निम्न-प्रदेश में आया। दान्ते उसे सन्तोष जनक उत्तर देता है। अंत में ब्रुनेतो भविष्यवाणी करता है कि यद्यपि उसे कितने ही संकटों का सामना करना होगा तो भी अंत में वह इतना यश लाभ करेगा कि अमर होकर-रहेगा।

पर्व सोरह—

वे उस पापात्मा को उसके भाग्य पर छोड़ कर अपनी राह लेते हैं। अब वे उस स्थान पर पहुंचते हैं जहाँ वह प्रपात, जिसकी धारा के साथ-साथ वे अबतक चलते रहे हैं, आठवें घेरे में बड़े वेग से गिरता है। यहाँ उन्हें उनकी ओर आती हुई तीन प्रेतात्मायें दिखलाई पड़ती है जो एक दूसरे के चारों ओर चक्कर काट रही है जैसे कि उनमें से हर एक-एक घूमता हुआ चक्र हो। वे दान्ते का वेष देखकर बोल उठती है कि हो-न-हो वह व्यक्ति अवश्य ही उनके अपने देश का है। दान्ते उनकी वाणी सुनता है और देखते ही भाँप लेता है कि वे तीनों तीन प्रसिद्ध ग्वेल्फ़[1]-वीर हैं और जब वे उससे अपने निवास नगर कर हाल-चाल जानना चाहती है तो वह उनके नगर में इधर घटी-तमाम नवीनतम घटनाओं का सविस्तार वर्णन कर जाता है। प्रेतात्मायें सन्तोष की सांस लेती हैं और अदृश्य हो जाती हैं किन्तु इस प्रकार हवा हो जाने से पूर्व वे दान्ते से प्रार्थना करती हैं कि वह दुनिया में वापस लौटने पर उनके अपने नागरिक-परिचितों से उनकी चर्चा अवश्य करे और कहे कि वे सब उन्हें प्रायः याद आते हैं।

इसके बाद वे प्रपात के किनारे-किनारे खाई की सीमा पर आ-पहुँचते हैं। यहाँ

[1] एक जाति—

वर्जिल दान्ते की कमर की रस्सी ढीली कर देता है और उसका एक सिरा खाड़ी में डालकर उसे सूचित करता है कि उसे किसी की प्रतीक्षा है, जिसका कुछ ही क्षणों में उपस्थित हो जाना निश्चित है। दूसरे ही क्षण खाई के गहरे तल से एक राक्षस उभरता है जो डोर की सहायता से उनके पास आ-पहुँचता है।

पर्व सत्तरह—

इस राक्षस का नाम जेरिऑन है। यह धूर्त्त छल-कपट और जाल का साक्षात अवतार होने के कारण मनुष्य, पशु और सर्प का एक अद्भुत सम्मिश्रण और प्रतिरूप है। वर्जिल उससे प्रस्ताव करता है कि वह उन्हें खाई के तल में पहुँचा दे। इस बीच में दान्ते पास की पहाड़ी तक बढ़ जाता है, जिसकी चोटी पर अनेक पापात्मायें बन्दी हैं! वे उसे देखते ही अपने हाथों से अपने मुँह ढंक लेती हैं। इन सबने अपने गलों में थैलियाँ पहन रक्खी हैं, चूंकि पृथ्वी पर ये मुनाफ़ा-ख़ोरों के नाम से बदनाम थीं और दूसरों को सताकर और उनका पेट काटकर अपने खाने के लिये अन्न एकत्रित करती थीं। वह इनसे कुछ देर तक बातें करता रहता है, किन्तु फिर उसे वर्जिल का ध्यान आता है, और, चूंकि वह नहीं चाहता कि वह व्यर्थ में उसकी प्रतीक्षा करे अतएव, वह लौट पड़ता है। वह उसके समीप आने पर देखता है कि वह राक्षस की पीठ पर सवार हो रहा है। वर्जिल उसे देखते ही अपना हाथ फैला देता है और दान्ते सशंकित हृदय से उसकी बग़ल में बैठ जाता है। इसके बाद वर्जिल राक्षस को रवाना होने का आदेश देता है और दान्ते को सम्हल कर सावधान होकर बैठने का, ताकि ऐसा न हो कि वह गिर जाय! राक्षस चल पड़ता है और धीमी गति से नीचे की ओर उड़ता है। यही नहीं, वह अपनी गति का विशेष ध्यान रखता है। ज़रा भी तेज़ होने पर उसे अपने ऊपर सवार यात्रियों के लुढ़क-पड़ने का डर है।

इस स्थान पर दान्ते अपने रोमांचकारी अनुभवों का बड़ा सफल और मनोहारी वर्णन करता है। वह इनकी तुलना 'फ़ीटॉन' की अनुभूतियों और 'आइकेरियस'[१] के भयांतकित मनोभावों से करता है, जबकि एक सूर्य्य के रथ से पृथ्वी पर गिर पड़ा था और दूसरा समुद्र में डूबता-उतराता रहा था। वह बड़े अलौकिक ढंग से बतलाता है कि कैसे जब वह राक्षस परिधि-जैसे रास्ते से नीचे उतर रहा था, उसकी उड़ती हुई दृष्टि आग से धधकते हुए तालाबों पर पड़ी, और उसे लगा कि उन तालाबों के भीतर की प्रताड़ित पापात्माओं के आर्त्तनाद और उनकी चीत्कार से उसके कान बहरे हो जायेंगे! वह कहता है कि शीघ्र ही वह राक्षस एक समतल मैदान पर उतरा और इस तरह उतरा जैसे कि कोई बाज़ अपने शिकार पर टूटे। अब उसने उन्हें चिरकालीन, निष्ठुर और निर्मम पास की पहाड़ी के तल पर उतारा और फिर वह स्वयं अपने निश्चित निवास-स्थान की ओर इस तरह तीव्र गति से चल पड़ा जैसे कि खिंची हुई प्रत्यंचा से छूटा हुआ तीर!

---

[१] डिडलस का पुत्र जो उड़ने के प्रयत्न में मार डाला गया था—

पर्व अठारह–

इस आठवें घेरे को 'मालेबोल्जे' या अशुभ, अपवित्र खाई कहते हैं। ये प्रदेश दस खाइयों में विभाजित है, जिनके बीच के चट्टानी महराब पुल के रूप में रास्ते का काम देते हैं। यह पूरा प्रदेश पत्थर और बर्फ़ का है! इसमें प्रधान खाई से प्रतिक्षण प्राणघातक भाप उठती रहती है।

दान्ते यहाँ की पहली खाड़ी के समीप आता है, जहाँ अनेक सींगदार बैल अभागी आत्माओं को इस तरह लगातार कोड़े लगा रहे हैं कि उनका हाथ क्षण-भर को भी नहीं रुकता। वह इन दुरात्माओं में एक को लक्ष्य करता और उसे पहचान लेता है। यह पापी धरती पर विलासियों के लिये दुराचारिणी स्त्रियों की व्यवस्था करने वाला एक दलाल था जो इस समय अपने कर्मों का फल भोग रहा था। दान्ते इस पर विचार करता ही रहता है कि उसके सामने से अपराधियों का एक दूसरा दल निकलता है, जिन्हें दैत्य पशुओं की भाँति हाँक रहे हैं। इनमें भी उसकी दृष्टि 'अरगोनाटों'[1] के नेता 'जेसेन' पर जा-टिकती है। यह वह व्यक्ति है जिसने 'कॉलचीज़' के राजा 'ऐटीज़' की पुत्री 'मिडिया' की सहायता से स्वर्णिम-ऊन प्राप्त कर अपने साथियों की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति की थी, किन्तु जिसने आभारी होने की जगह अंत में मिडिया के साथ विश्वासघात किया था।

दोनों आगे बढ़ते हैं और एक पुल से इस प्रदेश के दूसरे विभाग में आते हैं, जहाँ अनेक पापी लीद के भीतर गड़े-पड़े हैं। इनका अपराध यह है कि जब यह जीवित थे तो इन्होंने अपनी चाटुकारी से लोगों का मन दूषित किया था! दान्ते इनमें से एक को पहिचानता और उससे कुछ बातचीत करना चाहता है। वह अपने गंदे वातावरण से उभरता और भारी मन से स्वीकार करता है कि उसे चापलूसी के कारण ही ये बुरे दिन देखने पड़े हैं और वह यहाँ पहुँच गया है जहाँ उसकी जीभ को किसी भी प्रकार का भोजन प्राप्त नहीं होता। बात समाप्त हो जाती है और इन अन्य विलासियों और चापलूसों में दान्ते की दृष्टि 'ताया' नामक वेश्या पर भी पड़ती है जो अपना बोया काट रही है और अपने पूर्व पापों का प्रायश्चित कर रही है।

पर्व उन्नीस–

वे और आगे बढ़ते हैं और एक दूसरे चट्टानी-पुल की सहायता से तीसरी खाड़ी में आ पहुँचते हैं, जहाँ उन सब लोगों को यातना भोगनी पड़ती है, जिन्होंने अपने जीवन में घूस देकर धार्मिक पद प्राप्त किये थे और जिन्होंने धार्मिक पदों का क्रय-विक्रय किया था। यह सारे पापी सिर के बल कितनी ही धधकती हुई खाइयों में झोंके और डुबाए जा रहे हैं, जिनमें से उनके

---

[1] वे लोग जो सुनहले ऊन के लिये समुद्र की यात्रायें करते थे—

[2] अनातोले फ्रांस का प्रसिद्ध उपन्यास—इस उपन्यास की नायिका—

झुलसे, तड़प रहे पैरों के आरक्त तलवे ही ऊपर दिखलाई पड़ते हैं। इसी समय दूर पर इस प्रकार की पापात्माओं पर एक लाल लपट मंडराती देखकर दान्ते वर्जिल से इस अधिकारी आत्मा का परिचय पाना चाहता है। इस पर वर्जिल उसे ठीक उसी स्थान पर ले आता है और कहता है कि वह स्वयं उस अपराधी से अपना प्रश्न करे। दान्ते इस पथरीली खाई में दूर तक दृष्टि दौड़ाता है और जल्दी-से-जल्दी उत्तर पाने के लिये चंचल होकर अपना प्रश्न दुहराता है। पहले तो कुछ देर तक उसका प्रश्न गूँजता रहता है, किन्तु फिर किसी का स्वर सुनाई पड़ता है, जैसे कोई बहुत क्रोध में कुछ कहने का प्रयत्न कर रहा हो। यह बोलने वाला 'निकोलस'[1] तृतीय है, जो अपने प्रश्नकर्त्ता को पहले तो 'पोप बॉनेफ़ेसी' समझने की ग़लती करता है और उत्तर देता है कि धार्मिक-पदों के सम्बन्ध में अपने पुत्रों, भतीजों और अन्य सम्बन्धियों का अनुचित पक्षपात ग्रहण करने के कारण ही आज उसकी यह दशा हुई है। किन्तु, एक क्षण बाद ही वह भविष्य-वाणी करता है कि इससे क्या, शीघ्र ही अपेक्षाकृत एक और अधिक पतित पोप इस प्रदेश में आने वाला है। उसकी इस बात पर दान्ते बहुत अधिक उग्र हो उठता है और उसकी बहुत भर्त्सना करता है।

पर्व बीस—

'पोप निकोलस' से दान्ते की बातचीत सुनकर वर्जिल इतना प्रसन्न होता है कि वह उसे अपनी भुजाओं में भर लेता है और वेग से उस पुल की ओर बढ़ता है जो उन्हें इस प्रदेश के चौथे विभाग में पहुँचा देता है। यहाँ आने पर दान्ते के आगे से एक दल निकलता है, जिसके सारे सदस्य धार्मिक पदों का पाठ कर रहे हैं, किन्तु जिनके सिर उनकी पीठ की ओर मोड़ दिये गये हैं! उस पर इस दृश्य का इतना प्रभाव पड़ता है कि वह द्रवित हो उठता है और रोने लगता है, किन्तु वर्जिल उसे शान्त करता है और विभिन्न आत्माओं को ध्यान से देखने का आदेश देता है। दान्ते उसकी आज्ञा का पालन करता है और देखता है कि इन पापियों में वह 'चुड़ैल मैंतो' भी है, जिसके नाम पर उसके अपने निवास-नगर का नाम 'मेन्तुआ' रख दिया गया है। इतना ही नहीं, उसे तुरन्त ही ज्ञात होता है कि ये सब दुनिया के तमाम भविष्य-वक्ता, विरक्त, जादूगर और चुड़ैलें हैं, जिन्होंने अपने को भविष्य-द्रष्टा मानकर भविष्य-स्रष्टा बनने की कोशिश की थी, और जिन्हें इनके इसी जघन्य अपराध के लिये इस प्रकार दंड भोगना पड़ रहा था।

पर्व इक्कीस—

गुरु-शिष्य और आगे बढ़ते हैं और एक दूसरे पुल के ऊपर से पास की एक खाई में झाँकते हैं। वे देखते हैं कि इस खाई के प्रवासी वे सारे बेईमान लोग हैं जिन्हों-

[1]पोप—

ने पृथ्वी पर उन्हें सौंपी-गई धन-सम्पत्ति को अपना समझ लिया और उसे पचा लिया। ये सब इस खाई के उस गहरे, गाढ़े उबलते हुये द्रव्य में डूब उतरा रहे हैं, जिसकी दुर्गन्धि से दान्ते अनुमान करता है कि वह धूना है और जिसके कारण हठात् ही उसे वेनिस का वह स्थान याद आ जाता है, जहाँ जलयानों का निर्माण होता है। इसी समय वर्जिल दान्ते का ध्यान एक राक्षस की ओर आकर्षित करता है जो एक पापी को नचाकर, सिर के बल खाईं में झोंक देता है और बिना इसकी चिन्ता किये कि उसका क्या हुआ, तुरन्त ही किसी दूसरे पापी की खोज में चल पड़ता है। दान्ते भरी-आँखों से यह दृश्य देखता है और यह भी कि किसी भी पापी का सिर ऊँची-काली लहरों के ऊपर उठा और उभरा कि कितने ही दैत्य झपटे और उन्होंने अपने लम्बे बर्छों की सहायता से उसे एक बार फिर डुबा दिया।

इधर दान्ते इन दृश्यों में तन्मय रहता है और उधर वर्जिल आशंकित हो उठता है। वह नहीं चाहता कि उसका शिष्य भी इन पतित प्रेतों का शिकार हो अतएव वह उसे निर्देश करता है कि वह पहले पुल के गुम्बज के पीछे छिप जाय और तब वहाँ की सारी विषम और दारुण परिस्थितियों का अध्ययन करे। दान्ते उस स्थान में छिप जाता है, किन्तु शीघ्र ही दूर के राक्षस की गरुड़-दृष्टि उस पर पड़ जाती है, जो उसे लक्ष्य कर उस पर आक्रमण करना चाहता है। परन्तु वर्जिल बहुत उग्र हो उठता है और घोषित करता है कि उनकी उस स्थान पर उपस्थिति की सारी ज़िम्मेदारी ईश्वरीय इच्छा और ईश्वर पर है। वह अपना यह वाक्य इतने प्रभावोत्पादक ढंग से, इतने सशक्त शब्दों में कहता है कि उस राक्षस के हाथ से बर्छा छूट-गिरता है, वह शक्तिहीन हो उठता है और उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा पाता! अपने वाक्य का यह प्रभाव देखकर वर्जिल दान्ते को उस पुल की मीनार के पीछे से लौटा लेता है। इसके बाद वह बहुत कठोर और रूखे शब्दों में उस राक्षस को आज्ञा देता है कि वह अगुआ बने और अपने विकृत-मुख साथियों की अनेक श्रेणियों के बीच से सकुशल निकालकर उन्हें उस ओर पहुँचा दे। राक्षस वर्जिल की आज्ञा का पालन करता है, किन्तु जैसे ही गुरु-शिष्य उन पतित-आत्माओं के बीच से निकलते हैं, वे उन्हें देखकर तरह-तरह की वीभत्स और भयानक मुद्रायें बनाती हैं।

पर्व बाईस—

कितने ही युद्धों में सक्रिय-रूप से भाग लेने के कारण सैन्य-संचालन की सुव्यवस्था से परिचित होने के बाद भी इस समय, सहसा ही, दान्ते यह स्वीकार करता है कि इन दैत्य-सैनिकों से अधिक सुपरिचालित और सिद्ध-हस्त सैनिक उसने नहीं देखे। वह लक्ष्य करता है कि यथा समय इन दलों का एक सदस्य आगे आता है और या तो कितने ही नये आये हुये पापियों को कोलतार की उस खाई में ढकेल देता है या अपना बर्छा भोंक कर किसी पापी को उस खाई के ऊपर उठा लेता है, उसे कुछ देर तक झकझोरता है और फिर नचाकर उसमें फेंक देता है। वर्जिल इस दृश्य से करुणार्द्र हो-उठता है और एक पापात्मा से कुछ पूछता है। वह उत्तर देती

है कि उसका व्यक्ति किसी समय 'नवार देश' का उच्च पदाधिकारी था, किन्तु उसने कितने ही लोगों की उसे सौंपी गई धन-सम्पत्ति हड़प ली थी। वह इस आशय की अपनी बात पूरी भी नहीं कर पाती कि आततायी दैत्य उसे उस ओर आते देख पड़ते हैं, और वह उनके उत्पीड़न से कोलतार में डूबा-रहना कहीं अच्छा समझता है, अतएव तुरन्त ही उस दुर्गन्धिमय द्रव्य में डूब जाती है। यह देखकर हताश दैत्य आपस में एक दूसरे से लड़ने लगते हैं। यह लड़ाई इतनी विषम हो उठती है कि उनमें से दो राक्षस लड़ते-लड़ते उसी धूने की खाई में जा गिरते हैं और इस प्रकार अपने अन्य दैत्य-साथियों के शिकार बन-जाते हैं।

पर्व तेइस—

इसके बाद वर्जिल और दान्ते किसी ऐसे सकरे रास्ते से गुज़रते हैं कि वे एक साथ, सटे हुए नहीं चल सकते अतएव उन्हें आगे पीछे आगे बढ़ना पड़ता है! अब वे एक दूसरे विभाग के किनारे आ पहुँचते हैं। इस बीच में भयभीत दान्ते प्रतिक्षण मुड़कर पीछे देखता रहा है, जैसे कि वे दैत्य उसका पीछा कर रहे हों। कहना न होगा कि उसकी यह आशंका सत्य और नीतिपूर्ण है! वर्जिल उसकी मनोदशा का बड़ी सरलता से ही अनुमान कर लेता है, किन्तु वह जानता है कि दैत्य कभी भी अपनी सीमा का उल्लंघन नहीं करते, फिर भी दान्ते को अपनी बाहों में भरकर वह इस तरह दूसरी खाई की ओर भागता है जैसे कि दान्ते उसका सहचर न होकर केवल उसका पुत्र हो, और जैसे कि किसी संकट की कल्पना-मात्र से व्यग्र होकर कोई पिता अपने एक-मात्र पुत्र को लेकर भाग-निकलने की कोशिश करे और सोचे कि जहाँ वह जा रहा है वहाँ संकट की छाया भी न पहुँच-पायेगी!

× ×

इस छठवें विभाग में वे देखते हैं कि पापियों का एक दल रेंग-रेंगकर आगे बढ़ रहा है, और सीसे-जस्ते के भार से दबा जा रहा है वह इतनी धीमी गति से बढ़ रहा है कि यद्यपि ये गुरु-शिष्य अधिक चाल से नहीं चल रहे तो भी शीघ्र ही उसे पीछे छोड़कर उसके बहुत आगे निकल जाते हैं। उसी क्षण दान्ते का ध्यान दूसरी ओर आकर्षित हो उठता है, वह अनुभव करता है, कि कोई उसे बुला रहा हो। वह मुड़ता है और देखता है कि बोझ से दबा हुआ एक पापी उससे कुछ कहना चाहता है। वह बात-बात में उसे बतलाता है कि वह और उसके अन्य साथी पृथ्वी पर वास्तव में दम्भी अथवा पाखंडी रहे, अतएव उन्हें दण्ड मिला कि वे इन भारी बोझों के कारण अचेत होते रहें और इस प्रेतपुरी के विशाल घेरे के चारों ओर लगातार चक्कर लगाते रहें।

फिर एक ही क्षण बाद दान्ते देखता है कि आगे का सकरा रास्ता एक पापात्मा ने घेर रक्खा है। वह पापी तीन खूँटों के द्वारा पृथ्वी पर गाड़ दिया गया है और पीड़ा के मारे बुरी तरह तड़प रहा है। यह 'कायफ़स' है जिसने, इस सिद्धान्त पर दृढ़ रहने के कारण कि सारे समाज के लिये एक व्यक्ति को ही दंड देना चाहिये, ईसा को सूली पर चढ़वा दिया और

जो इस समय इस गुरु, जघन्य अपराध के कारण ही यह यातना भोग रहा है। इतना ही नहीं, यह भी निश्चित है कि उसे कुचलकर, उसके चौरस-पड़े शरीर के ऊपर से प्रेतात्माओं का दल-का दल निकलेगा! यह पाप-पंगु व्यक्ति, जिससे दान्ते कितनी ही देर तक बात करता है, उसे सूचित करता है कि ईसा को घृणा की दृष्टि से देखने वाले, उसकी अवमानना करनेवाले और उसके लिये दंड नियत करनेवाले 'अनेनायज़' जैसे दंड-विधान-समिति के कितने ही दूसरे सदस्य घेरे के दूसरे भागों में हैं।

थोड़ी देर के बाद वर्जिल अनुमान करता है कि इतनी देर तक इस प्रदेश को देखने से दान्ते का जी अवश्य ही भर गया होगा, अतएव वह बाहर निकलने की राह के लिये उत्सुक हो उठता है। शीघ्र ही एक दैत्य आता है और एक सीधे, चढ़ाईवाले रास्ते की ओर संकेत कर देता है!

पर्व चौबीस—

दोनों इसी मार्ग का अनुकरण करते हैं, किन्तु यह रास्ता इतना ऊबड़-खाबड़ है कि वर्जिल दान्ते को आधा साध लेता है और इस प्रकार आगे बढ़ने में उसकी सहायता करता है। यों हाँफते हुए जैसे कि थके होने के साथ-साथ, वे उस प्रान्त की जानकारी के लिये भी आवश्यकता से अधिक उत्सक हों, वे एक पहाड़ी पर पहुँचते हैं जिसके नीचे इस प्रदेश की सातवीं खाई है। यह असंख्यक डाकू-आत्माओं का निवास-स्थान है, जो कि इस समय भयानक-रूप से भीषण, हिंस्र अजगरों के शिकार बन रहे हैं, और जिनके हाथ पीछे की ओर सांपों की रस्सियों से जकड़े हुये हैं। ये अजगर इन पापात्माओं को लगातार डसते हैं और इतना डसते हैं कि वे राख हो जाती हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण 'फ़ेयनिक्स'[1] की भाँति ही उठ बैठती है और फिर वही यातनायें भोगती हैं। दान्ते इस दृश्य से सिहर उठता है। अब वह इनमें से एक दस्यु से बातें भी करता है। वह अपने दुष्कृत्यों का वर्णन करने के बाद फ़्लोरेंस-विषयक कुछ भविष्य-वाणी करता है।

पर्व पच्चीस—

वह इतना ही कहकर नहीं रुकता, प्रत्युत अनेक रूप में ईश्वर की निन्दा करता है। उसकी यही चेष्टा चलती रहती है कि साँपों का एक दल उस पर आघात करता है। वह इनसे पिंड छुड़ा कर निकल भागना चाहता है, किन्तु दुर्भाग्य से आधे मनुष्य के और आधे घोड़े के (शरीरवाले) एक अद्भुत नर-पशु की पकड़ में आ जाता है! वह उसे घेर कर तरह-तरह से सताता है। वर्जिल बतलाता है कि इस अद्भुत प्राणी का नाम 'कैकस' है।

इसके बाद दोनों महाकवि और आगे बढ़ते हैं और तीन ऐसे अपराधियों को देखते हैं,

[1] अमरता की प्रतीक विदेशी पुराणों की एक चिड़िया जिसके विषय में कहा जाता है कि वह जल-मरने के बाद एक बार फिर जी-उठी थी और फिर ५०० वर्ष तक जीती रही थी।

जिनमें से प्रत्येक के मनुष्य के और साँप के, क्रम से, दो-दो व्यक्तित्व हैं, किन्तु जो अपने स्वभाव और शरीर से मनुष्यों की अपेक्षा साँप ही अधिक मालूम होते हैं। वे रहे-रहे एक हो उठते हैं और उनमें से प्रत्येक की चार लम्बाइयों से दो-दो हाथ-पैर वाले, पेट, सीना, जांघ, पैर आदि से पूर्ण ऐसे आकार तैयार हो जाते हैं जैसे किसी ने कभी नहीं देखे !

पर्व छब्बीस–

यहाँ दान्ते के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता, किन्तु वह आगे बढ़ता है और एक पुल से झांक कर प्रेतपुरी की आठवीं खाड़ी पर सरसरी निगाह डालता है। यहाँ वह देखता है कि वे सारे लोग, जिन्होंने अपने साथियों को कभी अनुचित और आपत्तिजनक राय दी है, चारों ओर से आग की ऊंची-ऊंची लपटों से घिरे हुये हैं। इनमें वह डायोमिडीज़[1] यूलीसीज़[2] और 'इलियड' के दूसरे योद्धाओं को पहिचानता है। वर्जिल इनके समीप जाता है और इनसे बातचीत करता है। यूलीसीज़ उसे बतलाता है कि उसने अपने राज्य इथाका में लौटने के थोड़े समय बाद ही पर्यटन का कार्य एक बार फिर आरम्भ कर दिया और इस सिलसिले में वह 'हरकुलीज़' के स्तम्भों तक चला गया, किन्तु उस स्थान का पहाड़ इस बात का साक्षी है कि ज्यों ही उसका जहाज़ सूर्य्य के मार्ग पर बढ़ा, वह सहसा ही डुबा दिया गया और इस प्रकार उसका-अपना भी अन्त कर दिया गया।

पर्व सत्ताईस–

इसी प्रकार की एक दूसरी लपटों की सेज पर दान्ते एक दूसरे पापी को देखता है। वह उससे रोमानिया का इतिहास बतलाता है और वह अपराधी, बदले में, उसे अपनी जीवन-कथा ! तत्पश्चात वह अपने निर्देशक के साथ इस प्रदेश की नवीं-खाड़ी की ओर बढ़ता है।

पर्व अट्ठाईस–

यहाँ दान्ते को वे तमाम लोग मिलते हैं जिन्होंने अपने जीवन-काल में दूसरों की निन्दा की थी, जिन्होंने धार्मिक वर्गों में मतभेद पैदा करने की कोशिश की थी, धर्म तो क्या, धर्म के मूलगत सिद्धान्त को ही असत्य कहा था और जिनके शरीर में इतने घाव थे जितने कि इटली के तमाम युद्धों में भी शायद ही लगे हों। दान्ते देखता है कि इनमें प्रत्येक पापी को एक दैत्य अपनी तलवार से चीर डालता है, किन्तु वह इतनी जल्दी अपनी पूर्वावस्था में आ जाता है कि जैसे ही वह दूसरे दैत्य के समीप पहुँचता है, वह भी एक बार फिर उसके साथ वही व्यवहार करता है। इन सब में उसकी निगाह मोहम्मद पर जा टिकती है और वह उसे पहिचान भी लेता है। मोहम्मद किसी जीवित मनुष्य के प्रेतपुरी में आने पर अचरज करता है और इसलिये ही अन्य साथियों का ध्यान भी उसकी ओर आकर्षित करता है !

दान्ते क्षण भर ठिठक जाता है और उसे इस स्थिति में देखकर वर्जिल भी रुकता है।

[1] ट्राजन युद्ध का यूनानी योद्धा— [2] ऑडिसी का चरित्र-नायक, 'इथाका' का राजा–

इस समय उनके पास से जाती हुई आत्माओं में से कितनी ही अपने नाम बतलाती है और दान्ते चौंक उठता है क्योंकि इनमें वे पापी भी शामिल हैं जिन्होंने इटैलियन-राज्यों के पारस्परिक संघर्ष में नेतृत्व किया है। इतना ही नहीं, वह 'बरट्रेंड द बॉर्न' को देखते ही भय से काँपने लगता है क्योंकि उसे इंग्लैंड के हेनरी द्वितीय के विरुद्ध उसके पुत्र को लड़ने के लिये भड़काने के कारण इस समय दण्ड मिल रहा है। वह अपना सिर अपने ही हाथों में इस प्रकार लटका कर ले-चल रहा है, जैसे कि कोई साधारण व्यक्ति लालटेन लेकर चले।

पर्व उन्तीस—

अब इस घेरे के लोमहर्षक दृश्यों को इस प्रकार देखते-देखते दान्ते को लगता है कि वह अचेत हो जायेगा। उसे ज्ञात होता है कि इसकी परिधि २१ मील है। इसके बाद ही वह दूसरे पुल पर आ जाता है। यहाँ उसे लगता है जैसे कि किसी अस्पताल-की-सी आहों कराहों से उनके कान शीघ्र ही बहरे हो जायेंगे। इस दसवीं खाई की गहराई में आँख गड़ाने पर उसे कितने ही प्रकार के रोगों के रोगी दिखलाई पड़ते हैं और उसे शीघ्र ही पता चलता है कि इनमें कितने ही धूर्त्त और असंख्यक रसायन-विद् अपने पापों का दण्ड भोग रहे हैं। इनमें दान्ते एक ऐसे आदमी को भी लक्ष्य करता है जो मनुष्यों को उड़ना सिखा देने का दावा करने के कारण अपने जीवन-काल में जीवित जला दिया गया, और इस प्रकार उसके मरने के बाद न्यायाधीश को उसका यह दावा को इतना बेहूदा और इतना हास्यास्पद जंचा कि उसने बिल्कुल निर्दय हो कर उसे भी वही दंड दिया जो कि उसने जादूगरों, रसायन-विदों और दूसरे पाखंडियों और बहाने बाज़ों के लिये नियत और निश्चित कर-रक्खा था!

पर्व तीस—

इसी समय दान्ते का ध्यान वर्जिल कितने ही पापियों की ओर आकर्षित करता और उन्हें संकेत से दिखलाता है। इनमें से कुछ अपने जीवन-काल में वंचक और ठग थे, कुछ माया-जाल और पाखंडों में अभ्यस्त थे और शेष दूसरों के विरुद्ध अपवादों के गढ़ने और फैलाने में दक्ष। इनमें वह स्त्री भी दिखलाई पड़ती है जिसने जोसेफ़ और सिनान[1] पर कितने ही आरोप लगाये थे, जिन्होंने ट्राजनों से लकड़ी के घोड़े को शहर में ले जाने का आग्रह किया था।

ये अपराधी इन यातनाओं पर भी सन्तोष न कर एक-दूसरे पर क्रूर और निर्मम व्यंग्य-वाणों का प्रहार कर रहे हैं और पारस्परिक-कष्टों और संकटों को कई गुना और असह्य बना रहे

विशेष—पिछले पृष्ठ में हज़रत मोहम्मद का चर्चा आयी है। इस सम्बंध में इतना कह देना आवश्यक है कि दान्ते के समय में साम्प्रदायिक भावना अथवा वैयक्तिक जाति-चेतना लोगों में इतनी अधिक जागरूक थी की हज़रत मोहम्मद को भी दान्ते का शिकार बनना पड़ा! हमें इसका क्षोभ है, किन्तु उसकी अपनी विवशता के नाते हमें इस महान कलाकार को क्षमा ही कर देना होगा!

[1] एक यूनानी दास।

हैं। दान्ते इस दृश्य से खिन्न हो जाता है और इस खाई के पास अटक रहता है। पर वर्जिल तुरन्त ही उसकी चुटकी लेता है और कहता है कि इस प्रकार की वीभत्स कहा-सुनी में किसी अशिष्ट, असभ्य और जंगली दिमाग़ के व्यक्ति को ही आनन्द और सुख मिल सकता है !

पर्व इकतीस—

दान्ते अपने निर्देशक के इस वाक्य से लजा जाता है और बहुत दुखी होता है। वर्जिल पर इसका बड़ा प्रभाव पड़ता है और वह उसे साथ लेकर आगे बढ़ता है। किन्तु शीघ्र ही रानसिवो[1] पर रोलैंड[2] के बिगुल की ध्वनि से भी अधिक तेज़ ध्वनि से उनके कान के पर्दे फटने लगते हैं। वे नाद की दिशा में देखते हैं और दान्ते को कुछ दिखलाई पड़ता है, जिसे वह ऊँचे, विशाल स्तम्भ समझता है, किन्तु वर्जिल उसे तुरन्त ही सूचित करता है कि उनके समीप पहुँचने पर उसे पता लगेगा कि वे स्तम्भ न होकर भीमाकर दैत्य हैं जो कि सबसे निचली खाड़ी में खड़े हैं, किन्तु जो 'यथा नामः तथा गुणः' की कहावत के अनुसार ही आकाश में बहुत ऊँचे उठकर प्रत्येक क्षण अपने आकार के अस्तित्व की घोषणा करते हैं और मीलों दूर से ही देखे जाते हैं ! इसके थोड़े समय बाद ही दान्ते की निगाह तीन ऐसे शृंखला से जकड़े राक्षसों पर पड़ती है, जिनमें से प्रत्येक ७० फ़ीट लम्बा है। वह उन्हें देखकर भौचक्का रह जाता है। वर्जिल बतलाता है कि उन तीनों के नाम क्रमानुसार, निमराड, एफ़िलटीज़ और ऐनटियोस हैं ! सहसा ही ऐनटियोस बन्धन-मुक्त हो जाता है और वर्जिल उसे उन दोनों को उस दूसरे विभाग में पहुँचा देने के लिए मजबूर करता है, जहाँ कि पाप अपनी चरम सीमा को पहुँच चुका है और जहां असाधारण पापियों का निवास है। दैत्य उसकी बात मान लेता है और उन्हें मुट्ठी में बांध लेता है। इस समय दान्ते का जी मारे भय के बैठने लगता है, किन्तु शीघ्र ही उसके पैर पृथ्वी पर पड़ते हैं और वह शांति की साँस लेता है। फिर भी, वह भय-मिश्रित अचरज से देखता है कि दैत्य उन्हें पृथ्वी पर उतार देने के लिए झुकने के बाद एक बार फिर जहाज़ के मस्तूल की भाँति सीधा ऊपर उठता है और अपनी राह लेता है।

पर्व बत्तीस—

यहाँ दान्ते यह स्वीकार करता है कि इस संसार के इस अधोभाग का वर्णन करना, जहाँ वह इस समय उपस्थित है, सरल कार्य नहीं है, तो भी वह कहता है कि जितनी दूर तक उसकी दृष्टि जाती है उसे सभी दिशाओं में सीधी ऊंची चट्टानें आकाश चीरती हुई दिखलाई पड़ती हैं ! इन चट्टानों ने इस प्रदेश को चारों ओर से घेर रक्खा है ! वह इस दृश्य मे आश्चर्य-विभोर हो-उठता है, ऊपर की ओर देखता है और गंभीर हो उठता है कि वर्जिल उसे उसी क्षण सावधान करता है कि वह सचेत होकर चले ताकि ऐसा न हो कि उसका पैर किसी अभागी आत्मा पर पड़ जाय और वह

[1] एक घाटी जहां रोलैंड पर प्रहार करने के लिये लोग छिपे थे और जहां उसकी लाश पाई गई थी। [2] एक अंग्रेज़ी सेनानी

उसके पैर के नीचे आ जाय ! वर्जिल की चेतावनी सुनते ही वह अपने पैरों पर दृष्टि डालता है और तब उसे ज्ञात होता है कि वह एक ऐसे हिम-सागर पर खड़ा है, जिसमें असंख्यक पापी फँसे पड़े हैं, और जिनके केवल सिर ही बाहर नज़र आते हैं ! इतना ही नहीं, वह यह भी देखता है कि उन पापियों के गालों पर लगातार बहने वाले आँसू हिम का रूप धारण कर चुके हैं और इस प्रकार उनके सिर भी जैसे तुषार से ढक गये और उसमें गड़ गये हैं।

दान्ते अब पापियों की ओर ध्यान से देखता है और उसकी दृष्टि एक-दूसरे से इस प्रकार सटे खड़े दो पापियों पर पड़ती है जिनके सिर के बाल एक दूसरे में गुंथकर एक हो चुके हैं। वह उत्सुक हो उठता है और उनका परिचय पाना चाहता है। उसे मालूम होता है कि वे दो सगे भाई हैं, जिन्होंने उत्तराधिकार के मामले में झगड़ कर एक दूसरे को मार डाला है। वह इस विशिष्ट अपराध के अपराधी का परिचय पाकर कुछ चौंक उठता है और तभी उसे बतलाया जाता है कि प्रेतपुरी के इस विभाग का नाम 'कैना' है ! यह पतित से पतित हत्यारों का प्रदेश है और इसमें भी नर्क के अन्य प्रदेशों की भाँति हो अनगिनत पापात्माओं की भीड़ है।

अब वह निर्देशक के साथ इस हिम-तल पर आगे बढ़ता है कि उसका पैर फिर झील से बाहर निकले एक सिर से टकरा जाता है। वह चौंक उठता है, उससे कुछ पूछना चाहता है और इसके लिये वर्जिल की अनुमति चाहता है। वह आज्ञा दे देता है। दान्ते प्रश्न करता है। वह अपराधी पहले तो कुछ बोलने से इन्कार करता है, किन्तु, जब दान्ते केवल यह कहकर ही नहीं रह जाता कि यदि वह इस प्रकार मौन रहा तो वह उसके सिर के सारे बाल खींच कर नोच डालेगा, प्रत्युत वह उसके बालों को दो-चार झटके भी देता है तो, वह मुखरित होता और स्वीकार करता है कि वह एक विश्वासघाती राजद्रोही है। वह यह भी बतलाता है कि वह स्थान 'एंटिनोरा' नामक प्रदेश के सबसे निचले घेरे का दूसरा विभाग है जिसमें उस-जैसे अगणित पापी अपनी करनी का फल भोग रहे हैं।

पर्व तैंतीस—

वह अपनी बात पूरी करता ही है कि दान्ते की दृष्टि एक दूसरे पापी पर पड़ती हैं जो अपने किसी साथी का सिर बड़े चाव से काट-कुतर कर खा रहा है। वह इस दृश्य से घबड़ा-उठता है किन्तु वर्जिल उसे धैर्य बंधाने के बाद बतलाता है कि इस मानव-मांस-भक्षी का नाम 'काउन्ट-उगोलिनो डे गैराडेस्की' है ! इसे उसके राजनीतिक साथियों ने प्रमुख पादरी रूजियेरो के नेतृत्व में बहुत छल-छद्म से गिरफ्तार करने के बाद उसके दो बेटों और दो पोतों के साथ पीसा की फ़ेमीन-मीनार में बन्द-कर मार डाला था। इतना सुनने के बाद दान्ते जिज्ञासु दृष्टि से 'काउन्ट' को ओर देखता है जैसे कि वह उसके मुंह से उसकी आत्म-कथा सुनना चाहता हो ! काउन्ट उसका मतलब तुरन्त ही समझ लेता है और उसकी अतीत की स्मृतियाँ हरी हो-उठती हैं। सहसा ही उसका दिल भारी हो जाता है, उसकी आँखें भर-उठती है और उसका गला रूँध जाता है। फिर भी, वह पहले उस दिन के भय और उस दिन की आशंका का वर्णन करता है जिस दिन

सहसा ही उसके शत्रुओं ने आकर उसकी मीनार का फाटक इस तरह जकड़ दिया कि अन्दर आने के यत्न में हवा के भी छक्के छूट जाते। इसके बाद वह बतलाता है कि यद्यपि इस समय उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि अब उसका और उसके बेटे-पोतों का दम घुट-घुट कर ही निकलेगा और यद्यपि उनमें से हर एक भविष्य की यातनाओं और भविष्य के संकटों से भलीभांति अवगत हो गया, तो भी वे इस विषय में मौन ही रहे और उन्होंने निश्चय किया कि जो कुछ आगे आयेगा वे उसे धैर्यपूर्वक सहेंगे! किन्तु २४ घंटों के बाद ही अपने बच्चों का भूख से पीला और उतरा हुआ चेहरा देखकर वह स्वयं ही अधीर हो उठा और कुछ न कर-पाने की विवशता के कारण अपनी ही उंगलियां क्रोध से चबाने लगा! इस पर उसके एक पोते ने अनुमान किया कि वह अब भूख नहीं सह पा-रहा है अतएव उसने प्रस्ताव किया कि वह अपने पोतों में से एक को खा डाले और तब उसने यह अनुभव किया कि यदि वह साथ के शेष प्रियजनों के दुःखों को दुगुना और चौगुना नहीं कर देना चाहता तो उसे आत्म-नियन्त्रण से काम लेना चाहिये। किन्तु आत्म-नियन्त्रण, भूख और शारीरिक-शक्ति विभिन्न वस्तुयें हैं, अतएव वे सब दिन-प्रति-दिन क्षीण होते गये और एक दिन ऐसा भी आया कि सहायता के लिये व्यर्थ ही उसकी ओर निहारते हुये उसके पोतों ने दम तोड़ दिया और उनके बाद उसके दो पुत्रों ने भी। इस प्रकार इन मुर्दों का रक्षा करने और उन पर आँसू बहा-बहा कर जीने के लिए केवल वही बच-रहा! पर थोड़े समय बाद ही ऐसा लगा कि जैसे क्षुधा पीड़ा से अधिक बलवान और अधिक शक्तिशाली वस्तु दुनिया में और कोई नहीं है, और ऐसी भावना मन में दृढ़ होते ही वह भी भुखमरी का शिकार हुआ और इस दुनिया से चल-बसा! इतना कहने के बाद 'कान्उट' एक बार फिर अपने शत्रु के भक्षण में जुट-जाता है!

दान्ते क्षोभ से अधीर हो-उठता है, किंतु आगे बढ़ने पर ऐसे कितने ही दूसरे पापी देखता है जो हिम में धंसे पड़े हैं। यही नहीं, उसे यहाँ एक हिमानी हवा बहती समझ पड़ती है, जो ऐसी ठिठुरन पैदा कर रही है कि उसका चेहरा तक कड़ा पड़ जाता है। वह इस हवा का उद्गम जानना चाहता है और वर्जिल से पूछना ही चाहता है कि एक हिमाच्छादित पापी उससे प्रार्थना करता है कि वह कृपाकर उसके चेहरे पर से कड़ी वर्फ़ की तहें हटा दे। वह उसकी प्रार्थना स्वीकार करता है किन्तु ऐसा करने के पहले चाहता है वह पापी उसे अपनी आत्म-कथा सुनाये। दूसरे ही क्षण पापी कहना आरम्भ कर देता है कि पृथ्वी पर वह एक मठाधीश था जिसने अपने सगे सम्बन्धियों से अपना पीछा छुड़ाने के लिये एक योजना बनाई और मरवा डालने के विचार से उन्हें एक भोज पर निमन्त्रित किया। किन्तु भोज के समय अयाचित ही उसके मुंह से एक ऐसी विध्वंसक बात निकल गई कि उसके स्वजनों को मारने के लिये छिपे हुये हत्यारों के भी कान खड़े हो-गये और उन्होंने उन सबको भगा दिया! इस प्रकार उसकी बात पूरी भी नहीं हो पाती कि दान्ते उस पापात्मा के प्रति घृणा और क्रोध से भर-उठता है, किंतु उससे कहता है कि ऐसे निन्द-नीय षडयन्त्र का विधायक तो अभी पृथ्वी पर ही है। इस पर अपराधी स्वीकार करता है कि यद्यपि उसकी छाया पृथ्वी पर अब भी इधर-उधर भटकती नज़र आती है तथापि उसकी आत्मा नरक के

इस 'टौलोमिया' नामक प्रदेश में दंड-भोग से अपने पापों का पायश्चित कर रही है। इतना सुनने पर दान्ते उसे किसी भी प्रकार की सहायता देने से इन्कार कर देता है और अपने पाठकों से उसकी सहायता न करने के लिये क्षमा मांगता है कि ऐसी अधम आत्माओं के साथ हमारा दुर्व्यवहार ही हमारे सर्वाधिक सौजन्य का परिचायक है।

पर्व चौंतीस—

अब वर्जिल दान्ते का ध्यान एक ऐसी वस्तु की ओर आकर्षित करता है जो दूर से हवा से चलने वाली एक चक्की-सी दिखलाई पड़ती है। इसके बाद दान्ते को उस तीव्र और निर्मम झोंके से थोड़ा-बहुत बचाने के विचार से वह उसे अपने पीछे कर लेता है और सैकड़ों पापात्माओं के निकट से वेग से निकल जाता है। उसी क्षण दान्ते के एक प्रश्न के उत्तर में वह उसे सूचित करता है कि इस प्रदेश का नाम 'जुदेक्का' है। यहाँ अपने मन को दृढ़ और कड़ा कर लेने के बाद ही अगला क़दम उठाना और बढ़ाना चाहिये।

× ×

शीघ्र ही दान्ते सर्दी से इतना अधिक जकड़ जाता है कि उसे लगता है कि वह हवा में लटका हुआ जीवन और मृत्यु के आकाश के तारे गिन रहा है और उनके बीच की दूरी तय कर रहा है। दूसरे ही क्षण उसकी निगाह नरक के इन निचले प्रदेशों के अधिपति शैतान पर पड़ती है! वह कमर तक बर्फ़ में गड़ा हुआ है और उसके चमगादड़-जैसे परों की फड़फड़ाहट से ही इन प्रदेशों में वायु का संचालन सम्भव है। उसके दृश्य-मात्र से उसके होश उड़ने-से लगते हैं, किन्तु वह सम्हलता है और शैतान का वर्णन करते समय कहता है कि इस शैतान के शरीर और एक राक्षस के आकार-प्रकार में वही भेद है जो कि राक्षस और एक सामान्य मनुष्य की देह में! इतना ही नहीं, प्रत्युत वह सोच नहीं पाता कि शैतान को अपनी किस वस्तु पर गर्व है, क्योंकि यदि वह उतना सुन्दर भी होता जितना कि असुन्दर है तो भी उसकी ईश्वर की निन्दा, उसका विरोध और पापों का प्रचार और प्रतिपादन समझ में आता, किंतु साधारणतया तो किसी असाधारण कारण की कल्पना नहीं की जा सकती :—

'घोर असुन्दर होने पर भी
कैसे कर लेता है
अपने सृष्टा का वह घोर विरोध,
उसकी सत्ता का उपहास!
बात समझ में आती यदि वह
उतना ही सुन्दर होता औ' फिर ढाता सबपर तूफ़ान,
दुख के, संकट के तूफ़ान!'

इसके बाद दान्ते शैतान के तीन सिरों का वर्णन करता है जो, क्रम से, पीले, सफ़ेद और हरे हैं। वह अपने एक मुँह में 'जूडास' को, दूसरे में 'ब्रूटस' को और तीसरे में 'कैसियस' को

इस तरह चबा रहा है कि उनकी हड्डियों की कड़कड़ाहट की आवाज़ दूर-दूर तक सुनाई पड़ती है।

× ×

दान्ते इस अद्भुत जीव को आंखें फाड़-फाड़कर देखता है और इस तरह आश्चर्य और भय में डूब जाता है कि उसे समय का ध्यान ही नहीं रहता। इसी तरह अधिक समय बीत जाता है और तब वर्जिल उससे कहता है कि वे इस नर्क-प्रदेश में सभी कुछ देख-सुन चुके, अतएव अब उन्हें शीघ्रातिशीघ्र अपनी राह लगना चाहिये। यही नहीं, वह यह भी कहता है कि इसके लिये उसे तुरन्त ही उसकी गले को कसकर पकड़ लेना और उसमें लटक-जाना चाहिये। उसकी बात समाप्त होती है! दान्ते उसके आदेश का अविलम्ब पालन करता है, और जैसे ही शैतान के पर फैलते और ऊपर उठते हैं, वर्जिल एक पर के नीचे छिपकर खड़ा हो जाता है और इस आशंका से कि कहीं गिर न जाये उसके गंदे, रोयेंदार कंधों को अपनी शक्ति भर अपने हाथों से जकड़ लेता है और उनमें लटक-रहता है। अब वह धीरे-धीरे पृथ्वी के मध्य-भाग की ओर उतरने लगता है, किन्तु इस समय एक विचित्र स्थितिमें रहने के कारण उसे असह्य यातना का अनुभव होता है।

इस भाँति वे नीचे उतरते रहते हैं, उतरते रहते हैं कि खिसकते-खिसकते शैतान की जाँघों तक आ जाते हैं। यहाँ पहुँचने पर वर्जिल अनुभव करता है कि उसकी जाँघें पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति का केन्द्र-विन्दु हैं, अतएव वह तुरन्त ही लौट पड़ता है और दान्ते को पूरी तरह सम्हालते हुये एक बार फिर ऊपर की ओर चढ़ने लगता है। चूंकि दान्ते को पूर्ण विश्वास है कि वे शीघ्र ही फिर शैतान के सिर तक पहुँच जायेंगे, अतएव उसे यह देखकर आश्चर्य होता है कि वे शैतान के पैरों की ही चढ़ाई तय कर रहे हैं और एक चिमनी की शकल के ढाल पर चढ़ने में वर्जिल को अपनी पूरी शक्ति लगा देनी पड़ रही है। इस प्रकार दान्ते संकल्प-विकल्प और असमंजस में पड़ जाता है कि वर्जिल उसके साथ शीघ्र ही ऊपर की खुली हवा में आ-पहुँचता है! सहसा ही वह उसे बतलाता है कि अब वे एक ऐसे स्थान पर आ-निकलनेवाले हैं, जहां कि उसे पश्चिमी समुद्र लहराता नज़र आयेगा, जो कि 'हेडीज़' के प्रवेश-द्वार की बिल्कुल विरोधी दिशा में है और जिसके बीचोंबीच परगेटरी[1] का पर्वत स्थित है! यह पर्वत शैतान के आकाश से धरती पर गिरने और उसमें धंस जाने से उठी हुई मिट्टी का बना हुआ है।

× ×

इस प्रकार कुछ ही क्षणों में दान्ते, एक बार फिर, अपनी जगमगाती हुई दुनिया में आ पहुँचता है। इधर वह काफ़ी समय तक 'हेडीज़' के अंधेरे जगत में यात्रा करता रहा है और उसकी आंखें, अंधकार, क्लेश और संताप से जलने लगी हैं, अतएव अब वह अपनी दुनिया का प्यारा, नीला आसमान, अपनी दुनिया का चांद और अपनी दुनिया के सितारों को देखकर फूला नहीं समाता, प्रत्युत, कहना न होगा कि, अपने चन्द्रमा की शीतल चांदनी से अपनी आंखें ठंडी करता है।

---

[1] वैतरणी या वह स्थान जहाँ कि स्वर्ग में प्रविष्ट होने के पूर्व आत्मायें अपने को पवित्र करती हैं, यानी जहाँ वे अपने सारे पाप धोती हैं।

'परगेटोरियो' या वैतरणी—

पर्व एक—

नरक या प्रेतपुरी का वर्णन करने के बाद दान्ते उस प्रदेश का गुणगान करना चाहता है जहाँ मानवीय पापात्मायें अपने पापों से मुक्त होकर शुद्ध होती हैं और स्वर्ग में प्रवेश करने की तैयारी करती हैं। उसे यह कार्य बड़ा दुरूह मालूम होता है, अतएव वह काव्य, संगीत और कला की (यूनानी) अधिष्ठात्री 'म्यूज़ेज़' से सहायता की याचना करता है। अब वह अपने चारों ओर दृष्टि डालता है और अपने को एक बड़े प्यारे, नीलम संसार में पाता है। वह कामना करता है कि वह युग-युग तक नीलम की भाँति ही प्रतिक्षण रंग बदलने वाले इस मोहक सांसारिक-सौन्दर्य के रस का पान करता रहे। उसकी इस मोहमयी कामना का कारण केवल यह है कि वह इसके पूर्णतया विरोधी, अंधकारमय जगत से अभी-अभी बाहर निकला है।

सवेरा होने वाला है कि इसी क्षण उसकी दृष्टि चार मूलगत सदाचरणों और सद्‌गुणों के प्रतीक 'दक्षिणी क्रॉस' नामक चार सितारों पर जा ठहरती है और वह ईश्वर-भक्ति मिश्रित भय से सिहर उठता है। वह कुछ देर तक इन तारों पर कुछ विचार करता रहता है, किन्तु शीघ्र ही अपने सहचर के लिये चिंतित हो उठकर उत्तर की ओर घूम पड़ता है और देखता है कि वर्जिल इस प्रदेश के संरक्षक 'कैटो' से वार्त्तालाप कर रहा है। यह शैतान के प्रदेश में उससे मिला है, उसके साथ आया है और अब आश्चर्य प्रकट कर रहा है कि वह इतनी सरलता से उस चिरबन्धन से मुक्त हो गया!

× ×

इसीबीच में वर्जिल स्वयं अभिवादन कर दान्ते को भी अभिवादन करने का संकेत करता है। कहना न होगा कि इसी स्थिति में लैटिन-महाकवि 'कैटो' को सारी कथा सुना जाता है कि कैसे स्वर्ग की एक स्त्री ने दान्ते को किंकर्त्तव्यविमूढ़ देखकर उससे प्रार्थना की कि वह जाये और उसकी सहायता करे, और वह भी इस प्रकार कि नरक में उसका नेतृत्व करने के बाद वैतरणी में पापात्माओं के पापों का धुलना और उनका शुद्ध होना उसे दिखला और समझा दे! इतना कह जाने के बाद वह कहता है कि उसे सौंपे गये कार्य का पूर्ण-रूप से सफल होना तभी सम्भव है जब वह उसे अपने संरक्षित प्रदेश में प्रवेश करने की अनुमति दे दे! 'कैटो' इतनी मधुर शब्दावली से द्रवित हो उठता है और वर्जिल से कहता है कि वह अपने मुख के कारण

चिन्ह धो डाले और दान्ते के मुख से नरक के रेत-कण झाड़-पोंछ दे ! यही नहीं, वह वर्जिल को आदेश देता है कि वह पहिले दान्ते के हृदय को उदासी के स्थान पर संगीत से भर दे, उसे विनम्रता का प्रतीक एक सरकिंडा दे दे और तब परगेटरी के पर्वत पर चढ़े। यह पर्वत हरे-भरे किनारों की झील के बीचोंबीच स्थित दिखलाई पड़-रहा है, और 'हेडीज़' के उस आन्तरिक भाग का ही दूसरा रूप है जो कि किसी युग में उससे दूर-आ पड़ा है।

× ×

वर्जिल 'कैटो' की अनुमति लेकर बहुत तड़के अपने शिष्य को अनुगमन का आदेश देकर एक हरे भूखण्ड की ओर चल पड़ता है। यहाँ वह पहिले ओस से भीगी दूब को स्पर्शकर अपना वही ओसीला हाथ दाँते के मुँह पर फिराता है और फिर, इस प्रकार उसके मुंह से वे सारे चिन्ह मिटा देने के बाद जिनसे उसकी नरक यात्रा का पता चलता है, उसे झील के किनारे ले जाता है और विनम्रता का प्रतीक एक लचीला, मज़बूत सरकिंडा उसके हाथ में दे देता है।

पर्व दो—

अब वर्जिल और दान्ते लक्ष्य करते हैं कि प्रतिपल दूध से नहाते हुये पूर्व की विरोधी दिशा से एक पोत उनकी ओर बढ़ा आ रहा है, और वह जब उनके निकट आ जाता है तो वे देखते हैं कि उस पोत के अगले भाग पर एक देवदूत खड़ा हुआ है, जिसके पर पाल का काम दे रहे हैं। दान्ते देवदूत को देखते ही उसका अभिवादन करता है और अनुभव करता है कि पोत के यात्री 'जब इज़राइल' गया मिश्र 'से', शीर्षक प्रार्थना गा रहे हैं, किंतु पोत के दूर होने के कारण वह उसे ठीक सुनाई नहीं पड़ रही।

पोत तट पर आ-लगता है। देवदूत प्रत्येक यात्री के ललाट पर 'क्रॉस' का चिन्ह बनाकर सारे यात्रियों को किनारे पर उतार देता है, और सूर्य्योदय होते-होते अदृश्य हो जाता है। इधर सारे यात्री वर्जिल को समीप देखकर बहुत विनीत-भाव-से उससे पर्वत का रास्ता पूछते हैं। वर्जिल उत्तर देता है कि वह भी अभी-अभी ही आया है यद्यपि उसने और उसके साथी ने यहाँ आने के पहिले उन सबसे कहीं अधिक दुस्तर और अगम राह तय की है। वे सब उसके शब्दों से यह समझ जाते हैं कि उसका साथी दान्ते है और वह अभी जीवित है, अतएव वे आत्मायें उसे चारों ओर से घेर लेती हैं और उसके स्पर्श के लिये उत्सुक हो-उठती हैं। दान्ते आकुल हो-उठता है, किन्तु दूसरे ही क्षण सम्हलकर उनपर दृष्टि डालता है और उनमें 'कासेल्ला' नामक अपने एक गायक-मित्र को पहिचान लेता है। वह उसे हृदय से लगाना चाहता है, पर सिद्धान्त-रूप से मृतात्मा को स्पर्श न कर-सकने के कारण मन मसोस कर रह जाता है। उस स्थान पर अपनी उपस्थिति का सविस्तार कारण बतलाने के बाद वह अपने मित्र से प्रार्थना करता है कि वह प्रेम के गीत गा-गाकर वहाँ के उपस्थित-समुदाय को सान्त्वना दे और उन्हें सुख पहुँचाये, क्योंकि उसके गीत निश्चित-रूप से सुखदायक और मंगलमय होते हैं। इस तरह यह बातचीत समाप्त होती ही है कि 'कैटो' एक बार फिर आ-पहुँचता है और उन सारी आत्माओं से आग्रह करता है

कि वे अब तुरन्त पर्वत के लिये रवाना हों और अविलम्ब वहाँ पहुँच कर अपनी आँखों से अन्धकार का वह पर्दा हटा दें जिसने कि अब तक ईश्वर को उनकी आँखों से ओझल कर रक्खा है। इतना सुनकर दलबद्ध आत्मायें कबूतरों के एक झुंड की भाँति ही तितर-बितर हो जाती हैं और पहाड़ पर चढ़ना आरम्भ कर देती हैं। थोड़ी देर बाद वर्जिल और दान्ते भी धीरे-धीरे उनका अनुकरण करते हैं!

पर्व तीन—

रास्ता बीहड़ और ढालू है, अतएव दान्ते को बड़ा कष्ट होता है और यह कष्ट कई गुना हो उठता है जब वह देखता है कि केवल उसी की परछाईं पृथ्वी पर पड़ रही है। वह समझता है कि वर्जिल ने उसका साथ छोड़ दिया, किन्तु मुड़कर देखते ही वह उसे अपने पीछे-पीछे आता हुआ पाता है! वर्जिल एक क्षण में ही उसकी अधीरता समझ जाता है और उसे बतलाता है कि शरीर-मुक्त आत्माओं की छाया पृथ्वी पर नहीं पड़ा करती! इस तरह बातें करते-करते वे पहाड़ के शिखर पर आ-पहुँचते हैं और उसके भयंकर रूप से ढालू, उबड़-खाबड़, चट्टानी किनारों को देखकर उनका साहस छूटने-लगता है। वे एक दरार की खोज में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाते हैं ताकि उसकी सहायता से ऊपर चढ़ सकें, किन्तु सारा श्रम व्यर्थ जाता है! दूसरे ही क्षण वे देखते हैं कि दूध से वस्त्रों से सुसज्जित आत्माओं का एक दल धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ा-आ रहा है। शीघ्र ही वह उनके पास आ-जाता है और बहुत विनम्र होकर दान्ते से रास्ता पूछता है। दान्ते इस दल का बड़ा मनोरंजक वर्णन करता है। वह कहता है कि दो तीन आत्मायें इस प्रकार इस भाग्यशाली दल के आगे-आगे चलती हैं और बाक़ी इस तरह उनके पीछे-पीछे जैसे कि भेड़ों के एक बड़े दल से दो-तीन भेड़ें फूट जायें, और दौड़-दौड़ कर आगे हो जायें किंतु शेष भयभीत-सी पृथ्वी पर आँख और नाक झुकाये हुये बिल्कुल वही करें जो कि उनकी नेता-भेड़ें करें यानी यदि वे रुक जायें तो वे उन्हें चारों ओर से घेर कर खड़ी हो जायें और इस प्रकार यह प्रमाणित कर दें कि वे बड़ी सरल और शान्त हैं, यहाँ तक कि वे यह भी नहीं जानना चाहतीं कि उन्होंने उनका साथ क्यों छोड़ दिया! अस्तु—

जो भी हो इस दल की सारी आत्मायें एक जीवित मनुष्य को देख कर चौंक-उठती हैं, किन्तु जब वर्जिल उन्हें सूचित करता है और विश्वास दिलाता है कि दान्ते ईश्वरीय इच्छा के कारण ही वहाँ आया है तो वे बड़ी कृतज्ञतापूर्वक सामने के सीधे और सकरे रास्ते की ओर संकेत कर देती हैं। यह रास्ता 'परगेटरी' के प्रवेश-द्वार का काम देता है। इसके बाद ही उस बड़े दल का एक सदस्य दल के बाहर आता है और दान्ते से पूछता है कि क्या उसे नेपिल्स और सिसिली के राजा 'मान.फ्रेड' की याद नहीं है, और क्या वह उसे नहीं पहिचानता! इतना ही नहीं, वह उससे अनुरोध करता है कि दुनिया में लौटने पर वह राजकुमारी से मिले और कहे कि उसके पिता को अपने पापों के लिये बड़ा दुःख है, वह उनके लिये बड़ा पश्चाताप कर रहा है और उसने उससे आग्रह किया है कि वह स्वयं भी ईश्वर से उसके परीक्षा-काल के कम हो जाने की प्रार्थना करे!

पर्व चार—

इस समय तक सूरज आसमान में काफ़ी चढ़ आता है, अतएव यहाँ सब कुछ देखने-सुनने से दान्ते की आँखों में चकाचौंध पैदा हो जाती है। शीघ्र ही वह एक चट्टानी रास्ते के सिरे पर आ-जाता है इस पर चढ़ने और वर्जिल का अनुकरण करने में उसे अत्यधिक कष्ट होता है और उसे अपने दो पैरों के साथ-साथ कभी-कभी अपने दोनों हाथों का सहारा भी लेना पड़ता है! इसकी चोटी पर पहुँचकर दोनों अचरज से भर कर चारों ओर दृष्टि दौड़ाते हैं और स्थिति से अनुमान करते हैं कि इस समय वे एक स्थान पर हैं जो कि फ्लोरेंस की बिल्कुल विरोधी दिशा में है! यहाँ यह बतलाना आवश्यक है कि उन्होंने अपनी यात्रा फ्लोरेंस से ही आरम्भ की है!

इस चढ़ाई में दान्ते को इतना परिश्रम करना पड़ता है कि वह हाँफने लगता है और कहता है कि उसे भय है कि कहीं उसकी शक्ति उसका साथ न छोड़ दे! इस पर वर्जिल बहुत ममतापूर्ण शब्दों में उसे विश्वास दिलाता है कि आगे की चढ़ाई इतनी दुस्तर नहीं है जितनी कि आरम्भ की, प्रत्युत वे जैसे-जैसे ऊपर को चढ़ते जायेंगे, रास्ता सरल और सुखमय होता जायेगा! इसी समय एक ध्वनि उन्हें सम्बोधित करती है और विश्राम करने का प्रस्ताव करती है। दान्ते रहस्य कुछ समझ नहीं पाता और घूमता है तो उसकी निगाह आत्माओं के एक दल पर पड़ती है, जिनमें बैठे हुए मित्र को वह बड़ी सरलता से पहिचान लेता है। यह अपने जीवन-काल में अपने आलस्य और अपनी सुस्ती के लिये सुप्रसिद्ध रहा है! इस आत्मा से बातचीत करने पर दान्ते को पता चलता है कि यह 'बेल्लाका' नामक उसका मित्र 'परगेटरी' के पहाड़ पर चढ़ने का कष्ट उठाने के बजाय इस समय भी अपनी पुरानी सुस्ती का शिकार है और आशा लगाये हुये है कि किसी ईश्वर-कृपा-प्राप्त आत्मा के कारण वह बिना हाथ-पैर हिलाये ही एक क्षण में वहाँ पहुंच जायेगा। इस प्रकार की निष्क्रियता से वर्जिल झल्ला-उठता है और दान्ते से कहता है कि अब उन्हें वेग से बढ़ना चाहिये, क्योंकि सूर्य्य संध्या-सुन्दरी के उष्ण अधरों के चुम्बन का लोभ अधिक देर तक संवरण न कर सकेगा, यानी शाम होने आई, शीघ्र ही रात हो जायेगी और फिर उनके आगे न बढ़-सकने के कारण उनकी यात्रा अधूरी रह जायेगी!

पर्व पाँच—

इस भाँति दान्ते आगे बढ़ता रहता है। राह में कितनी ही आत्मायें यह देखकर कि वह अन्य आत्माओं की भाँति पारदर्शी नहीं है, प्रत्युत अपारदर्शी और धुंधला है, एक-दूसरे के कानों में कुछ फुसफुसाती हैं, किन्तु वह इन सब आलोचनाओं को एक नहीं कान करता शीघ्र ही उसे ऐसी ही आत्माओं का एक दूसरा दल मिलता है यह ईश्वर-संकीर्तन में पूर्णतया तन्मय हैं किंतु उसकी गहनता और उसके घनत्व पर विस्मय करती हैं। शीघ्र ही उन्हें पता चलता है कि वह एक जीवित मनुष्य है, अतएव वे उत्सुक होकर उससे अपने पृथ्वी-निवासी स्वजनों और

प्रियजनों के विषय में कितने ही प्रश्न करती हैं। ये सभी पापात्मायें वे हैं जो हिंसात्मक मृत्यु के बाद भी इस बात में आस्था रखती हैं कि एक-न-एक दिन उन पर अवश्य ही भगवद्-कृपा होगी और ऐसा सही भी है। दान्ते इनमें से किसी को भी नहीं पहिचानता अतएव वह मौन होकर उनकी भयानक, हिंसात्मक मौतों के वर्णन सुनता है और वचन देता है कि वह उनके सभी मित्रों और सभी प्रियजनों से उनकी चर्चा करेगा और उनके सौभाग्यों की सराहना भी!

पर्व छः—

इस बीच में वर्जिल आगे बढ़ता रहता है अतएव आवश्यक हो जाता है कि दान्ते भी उसका साथ दे, यद्यपि ऐसा होना बहुत सरलता से सम्भव नहीं है, चूंकि वे आत्मायें रह-रहकर उसके वस्त्र खींचती हैं और चाहती हैं कि वे जो कुछ कह रही हैं वह सुन ले! अंत में स्वयं अपने काल के प्रसिद्ध लोगों और प्रसिद्ध ऐतिहासिक महान पुरुषों की दुखभरी गाथायें सुनते-सुनते उसका हृदय फटने लगता है और वह वर्जिल से प्रश्न करता है कि क्या प्रार्थनाओं की विधि के विधान में कुछ परिवर्तन नहीं हो सकता? इस पर वर्जिल उसे बतलाता है कि सच्चा प्रेम एक दूसरी ही विभूति है, उसके द्वारा कितनी ही असम्भावनायें सम्भावनाओं में बदली जा सकती हैं और कितनी ही अनहोनी घटनायें घटाई जा सकती हैं। इतना ही नहीं, वह कहता है कि शीघ्र ही वह 'बियेट्रिस' से मिलेगा और तब वह देखेगा कि उसका यह कथन अक्षरशः सत्य है! इस प्रकार यह आशा बंधते ही कि वह अपनी प्रेमिका से आमने-सामने बातें कर सकेगा, दान्ते चंचल हो उठता है और वर्जिल से प्रार्थना करता है कि वह और वेग से आगे बढ़े! कहना न होगा कि उस के थके हुये पैरों में जैसे पर लग जाते हैं। इसी समय वर्जिल दान्ते का ध्यान एक अलग खड़ी हुई पापात्मा की ओर आकृष्ट करता है। वह उसे तुरन्त ही पहिचान लेता है। वह कवि 'सॉरदेल्लो' है! वह बड़ा शोक प्रकट करता है क्योंकि उसका और दान्ते का भी) निवास-नगर मेन्तुआ इस समय राजनीहिक उथल-पुथल और चढ़ावों-उतारों के कारण उसी प्रकार डगमगा उठा और अस्त-व्यस्त हो-उठा है जैसे कि एक नाविकहीन पोत तूफ़ान में पड़ जाये और उसके अंजर-पंजर ढीले हो जायें!

पर्व सात—

यह बातचीत चलती रहती है कि वर्जिल 'सॉरदेल्लो' से कहता है कि चूंकि उसमें निष्ठा, श्रद्धा, आस्था और विश्वास की कमी है अतएव उसने आशा त्याग कर यह सोच लिया है कि स्वर्ग तो उसे मिलने से रहा! इतना सुनते ही कवि बड़ी श्रद्धा और भक्ति से उसके एकदम समीप आ-खड़ा होता है और कहता है कि वह तो 'लैटियम' की श्री एवं मर्यादा हैं, उसे इसप्रकार की धारणा शोभा नहीं देती। इसके बाद ही वह एक बार फिर बड़े आदर से पूछता है कि वह आ कहां से रहा है! इस पर वर्जिल सारी कथा बतला-जाता है कि कैसे किसी स्वर्गीय प्रेरणा से

प्रभावित होकर उसने अपना स्वर्ग के समान 'लिम्बो'[1] त्याग दिया, कैसे वह नरक के तमाम प्रदेशों से पार हुआ और अब कैसे वह वह स्थान ढूँढ रहा है जहां से कि 'पर्गेटरी' का आरम्भ होता है। 'सॉरदेल्लो' सब कुछ शान्त भाव से सुनने के बात उसे विश्वास दिलाता है कि वे निश्चित रहें, उन्हें कष्ट न होगा, अब वह स्वयं उनका पथ-प्रदर्शन करेगा। किन्तु, दूसरे ही क्षण वह प्रस्ताव करता है इस समय दिन डूब चुका है अतएव अच्छा हो कि इस समय वे पास की एक घाटी में आराम करें ! वर्जिल उसका आग्रह स्वीकार करता है और सॉरदेल्लो गुरु-शिष्य को एक घाटी में ले जाता है यहाँ वे मह-मह करती हुई कलियों और अलौकिक सुगन्धि से गमकते हुए फूलों पर विश्राम करते हैं, और आत्माओं का एक समाज रात-भर मोक्ष सम्बन्धी प्रार्थनाओं का मधुर गान करता है ! इन सब में इन नवागन्तुकों की निगाह कुछ प्रसिद्ध राजाओं पर पड़ती है जिनके कृत्यों का संक्षेप में वर्णन भी किया जाता है।

पर्व आठ—

अब रात भीगने लगती है और इस समय ऐसा लगता है जैसे कि सारे दिन की थकान भी कहीं आराम कर लेना चाहती है ! यही नहीं बल्कि,

'यह वह क्षण है जब कि
सागरों में स्थित मानव-मन-प्राण
सहसा चंचल हो उठते है,
जैसे कसक-कसक उठती है
कोई स्वर्गमयी अभिलाषा !
यह वह पल है जब कि
दूर के गिरजों से घंटों की ध्वनि सुन
सिहर-सिहर उठता है कोई
प्रणय-राह का नूतन राही;
क्योंकि उसे लगता है जैसे—
अभी-अभी डूबे दिन के संग,
अस्त हुआ है कोई उनका,
भर आया है उनका अन्तर,
भर आई हैं उनकी आँखें,
शोक मनाते हैं बेचारे !'

× ×

[1] एक कल्पित प्रदेश जहाँ ईसाई-मत से अनजान सारी भोली आत्मायें बन्दी रक्खी जाती हैं।

दूसरे ही क्षण वे सारी आत्मायें संध्या की ईश-वन्दना में तल्लीन हो जाती हैं और इसकी समाप्ति एक इतने कोमल सरस और भक्ति भावना से ओत-प्रोत मधुर गीत से होती है कि दान्ते और वर्जिल दोनों की चेतन-शक्तियाँ भावनाओं के लहराते हुये सागर में डूबने-उतराने लगती हैं। इस प्रार्थना की समाप्ति पर, सहसा ही, सारी आत्माओं की दृष्टि प्रकाश की ऊंचाई पर जा टिकती है, जैसे कि इस प्रकार टकटकी लगा कर वे अपनी युग-युग की आशा का साकार संसार देख लेना चाहती हैं। एक क्षण बाद ही गुरु-शिष्य देखते हैं कि दो हरित वसन-धारी देवदूत, जिनके हाथों में लपटों के समान ही दहकती हुई तलवारें हैं, आकाश से उनकी घाटी की ओर आये और उसके दोनों किनारों पर के टीलों पर उतरे ! ये देवदूत वे स्वर्गीय योद्धा हैं जिन्हें ईसा की माता 'मेरी' ने 'ईडेन'[1] के समान ही अलौकिक इस घाटी में भेजा है ताकि ऐसा न हो कि रात्रि के समय कोई साँप वहाँ रेंग आये और उस पर किसी की निगाह न पड़े ! 'सॉरदेल्लो' यह सब लक्ष्य करता है और उन्हें एक दूसरे विश्राम-स्थल में ले जाता है, जो कि पत्तियों से भली भाँति सुरक्षित है। यहाँ अयाचित् ही दान्ते की भेंट एक अपने ऐसे मित्र से होती है, जिसके विषय में उसकी धारणा थी कि वह नरक की यातनायें सह रहा है। यह मित्र उसे बतलाता है कि अपनी पुत्री की प्रार्थनाओं के कारण ही ऐसा है कि वह इस स्थान पर है और नरक में घुट-घुट कर उसका दम नहीं निकल रहा है; यों तो उसकी पत्नी बड़ी निकम्मी निकली, उसने उसके मरते ही दूसरा विवाह कर लिया ! वह इतना कह कर मौन हो जाता है।

× ×

इस समय सहसा ही दान्ते की निगाह उन तीन तारों पर जा गड़ती है जो कि आस्था, आशा और उदारता एव, दानशीलता के प्रतीक हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण 'सॉरदेल्लो' उसे वह साँप संकेत से दिखलाता है जिसे देखते ही देवदूत झपट-पड़ते हैं और मार डालते हैं।

पर्व नव—

अब दान्ते गहरी नींद में सो जाता है, किन्तु, जैसे ही ज्योति की प्रथम किरण रात की काली चादर में से पृथ्वी पर झांकने का यत्न करती है, वह एक स्वप्न देखता है कि एक सोने के पंख का गरुड़ आया और उसे एक धधकती हुई आग की ओर ले गया, किन्तु इसमें जल कर वे दोनों ही भस्म हो गये ! एक क्षण बाद ही वह इस रोमांचकारी स्वप्न से चौंककर उठ-बैठता है और अपने को एक दूसरे ही स्थान में पाता है, जहाँ वर्जिल के अतिरिक्त उसके आसपास और कोई नहीं है। यही नहीं, वह यह भी लक्ष्य करता है कि इस समय पूरी धूप चढ़ आई है यानी सूर्य को उदय हुये कम-से-कम दो घंटे हो चुके हैं ! वर्जिल उसे हतबुद्धि देख कर रहस्य बतलाता है और विश्वास दिलाता है कि 'संत लूशिया'[2] की कृपा से वह निद्रावस्था में ही परगेटरी के प्रवेश-द्वार पर आ-पहुँचा है।

[1]आदम और ईव का स्वर्ग-सा बाग़— [2]ईश्वरानुकम्पा का एक प्रकार—

यहाँ दान्ते बहुत देर तक आँखें गड़ा-गड़ा कर उन ऊंची-ऊंची ढालू चट्टानों को देखता-रहता है, जिनसे कि यह पहाड़ चारों तरफ़ से घिरा हुआ है। इसी समय उसकी निगाह एक गहन गुफ़ा पर पड़ती है ! वह और वर्जिल इसमें से होकर एक ऐसे बड़े प्रवेश-द्वार पर आ-निकलते हैं, जिसे 'प्रायश्चित का द्वार' कहते हैं और जिस तक पहुँचने के लिये विभिन्न रंगों और विभिन्न आकारों की तीन सीढ़ियाँ दूर से साफ़ दिखलाई पड़ती हैं ! दान्ते देखता है कि इन सीढ़ियों के शिखर पर हीरों के सिंहासन पर मुक्ति-दाता देवदूत प्रतिष्ठित है और उसके हाथ में एक चमचमाती हुई तलवार है। यह देवदूत इन्हें देखते ही उग्र हो उठता है, और प्रश्न करता है कि वे उस स्थान तक किस प्रकार आये ? इस पर वर्जिल उसे उत्तर देता है कि 'संत लूशिया' की परम कृपा के कारण ही वे उस स्थान तक आ पाये हैं। 'संत लूशिया' का नाम सुनते ही देवदूत नरम पड़-जाता है और उन्हें अपने समीप बुलाता है। उसका आदेश पाने पर दान्ते पहले उस श्वेत स्फटिक की सीढ़ी पर चढ़ता है जो कि हृदय की विमलता का प्रतीक है; इसके बाद वह उस चटके हुये पत्थर की अंधेरी सीढ़ी पर पैर रखता है जो कि किये गये पापों के लिये हार्दिक पश्चाताप और संताप का परिचायक है और अंत में वह उस लाल पत्थर की सीढ़ी को पार करता है जो कि आत्म-बलिदान और आत्म-त्याग का साकार-रूप है। इस प्रकार वह देवदूत के चरणों के समीप आ पहुँचता है और उससे द्वार खोल देने की प्रार्थना करता है। उत्तर में देवदूत अपनी तलवार से उसकी भौं पर 'पा' के ७ चिन्ह बना देता है। ये चिन्ह उन सातों प्रकार के पापों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनसे मुक्त होना स्वर्ग में प्रवेश करने की कामना करनेवाले प्रत्येक मनुष्य के लिये आवश्यक है ! थोड़ी देर बाद वह दान्ते से कहता है कि वह उन सारे चिन्हों को भली भांति मिटा दे। इसके बाद वह अपने राख के रंग के वस्त्रों से 'अधिकार की सोने की चाभी' और 'अन्तर-रेखा की चाँदी की चाभी' निकालता है और कहता है कि इन चाभियों को सौंपते समय संत पीटर ने उसे यह आदेश दिया है कि प्रवेश-द्वार खोलते समय उसे इतनी सावधानी की आवश्यकता नहीं है, जितनी कि चाभियों को सहेज कर रखने में सतर्कता की। इस भांति दूसरे ही क्षण वह द्वार खोल देता है और गुरु-शिष्य के उसमें प्रविष्ट हो जाने के बाद उन्हें चेतावनी देता है कि इस प्रदेश में जो पीछे मुड़कर देखता है वह अपने पथ पर आगे नहीं बढ़ पाता।

पर्व दस—

यद्यपि कुछ ही क्षणों में प्रवेश-द्वार ज़ोर की आवाज और भयानक धक्के के साथ बन्द होता है तो भी दान्ते देवदूत की चेतावनी के कारण ही मुड़कर नहीं देखता और एक घोर ढालू रास्ते पर नीचे दृष्टि कर अपने गुरू के पीछे-पीछे चलता है।

चढ़ाई बहुत कठिन है, उन्हें रास्ते में बड़ा कष्ट होता है और तब कहीं वे 'परगेटरी' के प्रथम तल पर आ-पाते हैं ! यहाँ अहंकार के पाप को दंड दिया जाता है। अब वे लगभग १८ फीट चौड़े एक स्फटिक-कंगूरे से निकलते हैं जो मूर्ति-कला के ऐसे उदाहरणों से सुसज्जित हैं जिनके निर्माण पर किसी भी सिद्ध-से-सिद्ध यूनानी-पाषाण-कला-कोविद् को गर्व हो सकता है। इनमें से एक में देवदूत 'कुमारी मेरी' को अभिवादन कर रहा है, एक में

'डेविड'[1] 'आर्क' के सम्मुख नाच रहा है और एक में रोमन-राजा 'ट्रैजन'[2] अभागी विधवा की प्रार्थना स्वीकार कर रहा है। वे रास्ते पर आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि पापात्माओं का एक दल उनकी ओर बढ़ा आ रहा है! इस दल का प्रत्येक सदस्य अपनी पीठ पर लदे बोझ के बोझ से दोहरा हुआ जा रहा है, रेंग-रेंग कर आगे बढ़ रहा है और हर क़दम पर कराह उठता है— 'अब मैं अधिक नहीं सह सकता', मुझसे अब और नहीं सहा जाता!

पर्व ग्यारह—

यह दुखी आत्मायें इस कंगूरे के चारों ओर चक्कर काट-काट कर अपने अहंकार के पाप का प्रायश्चित कर रही हैं और जब-तब ही राह के संकटों से ऊब कर प्रार्थना करती हैं और दया, क्षमा और सहायता की दुहाई देती हैं। दान्ते उनसे बहुत प्रभावित होता है और वह भी ईश्वर से उनकी मुक्ति के लिये विनय करता है। इसके बाद वह उनसे पूछता है कि क्या उसे कोई ऐसी सुविधा मिल सकेगी जिससे वह इस घेरे में चढ़-जा सके। इस पर एक आत्मा उससे अपने साथ-साथ आने को कहती है क्योंकि उस आत्मा का दल-का-दल शीघ्र ही दान्ते के अभीष्ट स्थान से निकलने वाला है। यह वक्ता बोझ के भार के कारण सिर नहीं उठा पाता किन्तु तो भी स्वीकार करता है कि धरती पर उसने इतनी अति की कि उसका दम्भ और पाखंड उसके साथियों के लिये असह्य हो उठा और, यही नहीं कि उसके विरुद्ध विद्रोह किया प्रत्युत, उन्होंने उसे मार भी डाला। इतना सुनकर दान्ते उसका मुँह देखने के लिये झुकता है और देखता है कि वह एक साधारण-सा कलाकार है, जो यह दावा करता रहा है कि वह अपने ढंग का अकेला कलाकार है, संसार में उसका कोई दूसरा सानी नहीं। कहना न होगा कि इस समय उसे अपने इसी पाप का फल भोगना पड़ रहा है।

दान्ते इस भारावनत कलाकार के साथ-साथ आगे बढ़ता है और वह बात-बात में अपने कितने ही सहभोगियों के नाम उसे गिना जाता है। इसी समय वर्जिल उसका ध्यान उसके पैर के नीचे के एक चबूतरे की ओर आकृष्ट करता है। दान्ते देखता है कि उस पर 'ब्रायरियस', 'निमरॉड' 'नायोबी' आदि उन सारे लोगों का नाम खुदा हुआ है, जिन्होंने अपने जीवनकाल में अपनी तुलना देवताओं से की थी, जो अपने थोड़े से सुकृत्यों का गुणगान करते कभी थकते

---

[1] 'इज़रायल' प्रदेश का राजा और ईसा का पूर्वज, जो उसको प्रसन्न करने के लिये ही एक बार अपनी कमर में साधारण मलमल लपेटकर 'परम पिता' की पालकी के चारों ओर नाचा था।

[2] कहा जाता है कि रोमन-राजा ट्रैजन शिकार पर जा रहा था कि एक संकट-ग्रस्त बुढ़िया ने उसका रास्ता घेर लिया किन्तु वह जल्दी में था अतः उसने उसे आश्वासन दिया कि वह लौटने पर उसकी आवश्यक सहायता करेगा। इस पर बुढ़िया ने कहा है कि वह न लौटा तो? राजा ने यह सुना और उत्तर दिया कि यदि वह न लौटा तो भी उसकी जगह जो भी होगा उसकी फरियाद सुनेगा! किंतु इतना कहने के बाद ही उसने पता नहीं क्या सोचा और उसकी सहायता करना उसने अपना प्राथमिक कर्त्तव्य समझा।

न थे और जो प्रतिक्षण घमंड में चूर रहते थे। वह इन विषयों के विचारों में बुरी तरह डूब जाता है और यह जानकर विचित्र ढंग से चौंक-उठता है कि एक देवदूत केवल उससे मिलने के लिये ही उसकी ओर आ रहा है। इतना ही नहीं, उसे यह भी समझा दिया जाता है कि यदि उससे पर्याप्त विनीत-भाव से प्रार्थना की गई तो वह उन्हें दूसरे घेरे में पहुंचने में, निश्चित रूप से, सहायता भी दे सकता है।

दूसरे ही क्षण वह देवदूत उनके समीप आ जाता है। उसके श्वेत वस्त्रों से आंखों में चकाचौंध पैदा हो जाती है और उसकी आकृति की कांति से कांति भी लज्जित हो-उठती है। वह उनकी इस प्रार्थना की प्रतीक्षा नहीं करता कि वे यात्री हैं और वह उनकी सहायता करे बल्कि वह तुरन्त ही बड़े मधुर ढंग से उन सीढ़ियों की ओर संकेत कर देता है, जिनपर चढ़ने के बाद एक गुफ़ा मिलती है। दान्ते सुनता है और एक आज्ञाकारी की भाँति उसके पीछे-पीछे उन सीढ़ियों पर चढ़ने लगता है। इसी समय देवदूत के पर के एक मधुर-स्पर्श से उसकी भौं पर अंकित 'पा' का एक चिन्ह पुंछ जाता है। यह 'पा' घमंड के पाप का परिचायक है, अतएव दान्ते इसके पुंछते ही इस घोर निन्दनीय पाप से मुक्त हो जाता है। किन्तु अंतिम सीढ़ी पर पहुँचने पर ही उसे इस भेद का पता चलता है, इसके पहले नहीं!

पर्व तेरह—

इस प्रकार शीघ्र ही वर्जिल और दान्ते दूसरे चट्टानी-जगत में जा-पहुँचते हैं। 'परगेटरी' के इस प्रदेश का अगला भाग पीले पत्थरों का बना है! इस अद्भुत और मनोहर पथ पर वर्जिल दान्ते को लगभग एक मील तक ले जाता है। इसके बाद ही उन्हें ऐसा लगता है जैसे कि कुछ अदृश्य, आत्मायें उनकी ओर उड़ती चली आ रही हैं, जिनमें कुछ गा रही हैं 'उनके पास नहीं है-मदिरा' और शेष उत्तर देती हैं 'जिनसे हो अपकार तुम्हारा उनको स्नेह करो'! यह सब वे पापी हैं जो अपने जीवन में ईर्ष्या के वशीभूत रहे हैं और जो दान-वृत्ति का विकास और अभ्यास करने के बाद ही उस पाप से मुक्ति पा सकते हैं। एक क्षण बाद ही वर्जिल दान्ते से दृष्टि गड़ाकर देखने को कहता है और स्वयं संकेत से सामने की वे सारी आत्मायें उसे दिखलाता है जो कि बोरा पहने हुए हैं और चट्टानों का सहारा लेकर बैठी हुई हैं। इनमें दान्ते की दृष्टि विशेषतया उन दो आत्माओं पर जा-ठहरती है जो कि एक दूसरे को सहारा दे रही हैं। इसके बाद ही उसे पता चलता है कि उनमें से सब की पलकें तार से ऐसी सिली हुई हैं कि उनमें से केवल पश्चाताप के आंसुओं की धारायें ही बाहर आ सकती हैं। वह उनसे बात करने को उत्सुक हो-उठता है और अनुमति मिल जाने पर उन पापात्माओं को सान्त्वना देता है! वह कहता है कि यदि वे कुछ सन्देश धरती पर भेजना चाहें तो उसे दे दें, उसे उनका कार्य करने में केवल सुख ही प्राप्त होगा! इतना सुनते ही एक पापात्मा कहती है कि उसका नाम 'सैपिया' है। वह अपने जीवन काल में मध्य इटली के 'सियन्ना' प्रदेश की निवासिनी रही-है और अपनी विद्वत्ता और योग्यता के लिये उसने काफ़ी यश भी लाभ किया है, किन्तु उसका अपराध यह रहा-है कि अपने देश के हारने

पर उसने बड़ी खुशी मनाई थी, अतएव इस समय वह उसी हृदयहीनता और कृतघ्नता का प्रायश्चित कर रही है। वह सोच नहीं सकती कि कोई खुली आँखों से उसके साथियों के बीच में इस प्रकार घूमे, इसीलिये दान्ते को देखकर बड़ा आश्चर्य करती है, और उसका परिचय पाना चाहती है। वह यह भी जानना चाहती है कि आखिर वह कैसे वहाँ तक पहुँच सका! अंत में सब कुछ सुनने-समझने के बाद वह उसके सम्मान में प्रार्थनायें गाती है और अनुरोध करती है कि वह उसके देशवासियों को आगाह कर दे कि वे व्यर्थ की महानता की आशाओं में न फंसे और व्यर्थ की ईर्ष्या का पाप न कमायें।

पर्व चौदह—

वे एक दूसरे पर झुकी हुई दो आत्माओं, जिनका ऊपर उल्लेख हो चुका है, दान्ते और वर्जिल को देखते ही एक-दूसरे से प्रश्न करती हैं कि आखिर ये कौन हो सकते हैं? वे इस प्रकार आपस में व्यस्त हैं कि रोम और फ्लोरेंस के नाम उनके कानों में पड़ते हैं और इनका उल्लेख होते ही वे गरम हो उठती हैं और कहती हैं कि इन टाइबर और आरनो नदी के किनारे रहने वालों का नैतिक-पतन घोर लज्जाजनक है।

× ×

थोड़ी देर बाद दान्ते अपने निर्देशक के साथ इस स्थान से आगे बढ़ता ही है कि उसे 'जो मुझे पायेगा मार डालेगा' आशय का विलाप सुनाई पड़ता है और उसके बाद धड़ाके की आवाज़ से उसके कान बहरे होने लगते हैं।

पर्व पन्द्रह—

इस तरह सदैव एक ही दिशा में इस पर्वत का चक्कर लगाते हुये दान्ते लक्ष्य करता है कि अब सूर्य डूबने वाला है! इसी समय पिछले चढ़ाऊ रास्तों में सब से कम ढालू रास्ते से एक तेजस्वी देवदूत उन्हें उस दूसरे तल्ले पर ले आता है, जहाँ कि क्रोधी अपने क्रोध नामक पाप का प्रायश्चित करते हैं। इस तल्ले पर चढ़ते समय वह देवदूत 'धन्य-धन्य हैं दयावान सब', और 'तुम तो भाग्यवान हो विजयी' बड़े कोमल स्वरों में गाता है और दान्ते की भौं से 'पा' कर दूसरा चिन्ह भी पोंछ देता है अर्थात् दान्ते को ईर्ष्या के पाप से भी मुक्त कर देता है। किन्तु जब दान्ते वर्जिल से आग्रह करता है कि वह उन सारी चीज़ों पर प्रकाश डाले तो वह उसे विश्वास दिलाता है कि जब उसकी भौं के शेष पाँच कलंक-चिन्ह भी पुंछ जायेंगे या मिट जायेंगे तो स्वयं बियेट्रिस उससे मिलेगी, वही उसकी उत्सुकता शान्त करेगी और उसकी शंका का समाधान भी।

× × ×

इस तीसरे तल पर दान्ते और वर्जिल अपने को कोहरे से घिरा हुआ पाते हैं। दान्ते इस धूमिल वातावरण में दृष्टि गड़ाने पर एक मन्दिर देखता है! इस मन्दिर में १२ वर्ष का किशोर

ईसा अपनी माँ की डांट-फटकार अनसुनी कर रहा है। इसके बाद उसकी दृष्टि एक रोती हुई स्त्री पर पड़ती है और अंत में स्टीफ़ेन पर, जिसे लोगों ने पत्थर फेंक-फेंककर मार डाला था।

पर्व सोलह—

अब वर्जिल दान्ते से आग्रह करता है कि वह जल्दी-जल्दी पैर बढ़ाये और शीघ्र ही क्रोध के प्रतीक कोहरे के इस अन्धकारमय लोक के पार हो जाये! इतना ही नहीं, वह कहता है कि वह ध्यान रक्खे और उसका साथ न छोड़े! किन्तु वह अपने निर्देशक के आदेशों को पूरी तरह ध्यान में रखने पर भी जैसे लड़खड़ाने लगता है। उसके पैर तेज़ी से आगे नहीं बढ़ते। इसी बीच में चारों ओर से एक ही प्रार्थना के स्वर उसे सुनाई पड़ते हैं! एक पापी दान्ते को सम्बोधित करता है, और दान्ते वर्जिल का संकेत पाने पर उससे इसके बाद के दूसरे तल का रास्ता पूछता है। वह पापी उसके प्रश्न का तो कुछ उत्तर नहीं देता, किन्तु उसका पर्याप्त वन्दन-अभिनन्दन करने के बाद रोम के विरुद्ध विष उगलना शुरू कर देता है! उसका कहना है कि रोम डींगें मारता था कि दुनिया में एक सूर्य हो तो हो, उसके अपने आकाश में तो दो सूर्य्य हैं—एक पोप और दूसरा राजा, किन्तु उसने स्वयं भरी-आँखों से देखा है कि एक ने दूसरे की प्यास बुझाई और...और क्या ..! उसका यह अंतिम वाक्य पूरा भी नहीं हो पाता कि, सहसा ही, वहाँ देवदूत आ पहुँचता है! यह इन सारे यात्रियों के पथ-प्रदर्शन करने के लिए भेजा गया है! इस प्रकार बातचीत जहाँ-की-तहाँ रह जाती है!

पर्व।सत्तरह—

अब वे आल्पस-प्रदेश के सघन कोहेरे की भाँति ही सघन क्रोध की भापों के बीच से निकलते हैं। बीच-बीच में दान्ते की दृष्टि होमैन और लैविनिया आदि पापियों पर पड़ती है जो कि अपने जीवन-काल में अपने क्रोध के लिये सुप्रसिद्ध रहे हैं। इस प्रकार शीघ्र ही दान्ते वर्जिल के साथ इस अन्ध-जगत के पार आ पहुँचता है! यहाँ सूर्य्य की चमक से दान्ते की आँख चमकने लगती है। दूसरे ही क्षण देवदूत सीढ़ी की ओर संकेत करता है और उस पर चढ़ते समय दान्ते अनुभव करता है कि 'सन्धि करने वाले धन्य' गाते-गाते उसने उसकी भौं से वह तीसरा अप्रिय और अशिव चिन्ह भी पोंछ दिया! कुछ क्षणों में ही दोनों महाकवि उस चौथे तल पर पहुँचते हैं जहां कि विरक्ति और सुस्ती के पाप का दंड दिया जाता है! इस समय वे इस राह पर आगे बढ़ रहे हैं कि वर्जिल दान्ते को बतलाता है कि विरक्ति का सारा कारण स्नेह की कमी अथवा प्रेमाभाव है। इस तरह प्रेम की चर्चा आते ही इस महान विषय पर वह बड़ी कुशलता से प्रकाश डालता है और कितनी ही देर तक यह बातचीत चलती रहती है।

पर्व अट्ठारह—

इसी बीच में पापियों का एक दल आता है और वर्जिल के वार्तालाप में विघ्न डाल

देता है। वर्जिल उनके तर्क सुनता है और उनसे कुछ प्रश्न करता है। उत्तर में दो आत्मायें जो शेप का नेतृत्व कर रही है, अपने तर्कों की पुष्टि के लिये निष्कपट स्नेह के कितने ही उदाहरण उपस्थित करती हैं! इतने में ही कुछ और पापात्मायें वहां आ पहुँचती हैं, जिन्होंने अपने जीवन-काल में साहसिक घटनाओं से भरे हुए कर्मठ जीवन की अपेक्षा कायरतापूर्ण, आरामतलबी अधिक पसन्द की, किन्तु अब जिन्हें उसके लिए बहुत अधिक दुःख है!

पर्व उन्नीस—

अब रात हो जाती है। दान्ते सो जाता है। नींद में वह यूलिसीज के, परीशान करनेवाली 'साइरेन' नामक समुद्र-परी के और दर्शन' अथवा 'सत्य' के स्वप्न देखता है। इसके बाद सवेरा होता है और वर्जिल उसे दूसरी सीढ़ी के समीप ले आता है। यहां फिर एक दूत उन्हें मिलता है, जो, जैसे हवा में तैरा कर, उन्हें ऊपर पहुँचा देता है और दान्ते के माथे से एक और 'पा' का चिन्ह पोंछ देता है। इस बीच में वह बराबर गाता रहा है—

'जिसे दुःख है निज पापों पर
वही धन्य है, धन्य,
क्योंकि मिलेगी उसको शान्ति!'

× ×

इस पाँचवें घेरे में लोभी आत्मायें दण्डित होती हैं। उन्हें शृंखला से इस तरह धरती से जकड़ दिया जाता है कि धरती में और उनमें कोई अन्तर नही रह जाता और तब वे धरती को कितने ही समय तक अपने पश्चाताप के आंसुओं से भिगोती रहती हैं! ऐसे ही एक पापी से दान्ते बातें करने लगता है। वह बतलाता है कि वह 'पोप ऐडरियन पंचम' है! वह पोप बनने के एक महीने बाद ही मर गया और उसे अपने अतीत के कुकर्मों के लिये बहुत क्षोभ है! इतना सुनते ही दान्ते सम्वेदना से भर-उठता है और इस विशाल व्यक्तित्व का अभिवादन करता है। वह उत्तर में उससे आग्रह करता है कि धरती पर लौटने पर वह पोप के परिवार की स्त्रियों से कह दे वे उसके पापों का प्रायश्चित कर डालें क्योंकि वे अब भी उनके घर पर मंडरा रहे हैं। शीघ्र ही दान्ते आगे बढ़ता है।

पर्व बीस—

थोड़ी दूर जाने पर इस पांचवें तल के रास्तों पर बिछी हुई आत्माओं में दान्ते की निगाह फ्रांसीसी राजाओं की तीसरी पीढ़ी के प्रवर्त्तक 'ह्यूग्यूइज़ कैपेट' पर पड़ती है। इसे वह इस अशिव पौधे की जड़ बतलाता है, क्योंकि इस पीढ़ी के कितने ही काले कारनामें उसकी निगाह से गुज़र चुके हैं! कहना न होगा कि अपनी प्रस्तुत रचना के कुछ ही वर्ष पहले उसने देखा और समझा कि 'फ़िलिप चुतुर्थ' ने धन के लिये 'पोप बॉनिफ़ेस' को मरवा डालने की यत्न किया और उसमें सफलता प्राप्त कर घोर पाप कमाया! ·····इस प्रकार घृणा से भर कर वह आगे

क़दम बढ़ाता है तो उसे और वर्जिल को टायर की रानी डिडो का भाई 'पिगमैलियन'[१], 'ऐकन'[२] 'हेलियोडोरस'[३], और 'क्रैसस'[४] आदि दिखलाई पड़ते हैं। इसके बाद ही वे यह अनुभव कर चौंक उठते हैं कि उनके पैरों के नीचे का सारा पहाड़ भयानक रूप से डगमगा रहा है और असंख्यक पापात्मायें प्रसन्न होकर चिल्ला रही हैं—'परम पिता की जय हो!'

पर्व इक्कीस—

दान्ते भय के मारे बोल नहीं पाता और वर्जिल से बुरी तरह लिपट जाता है। सहसा ही एक पापी सामने आता है जो दान्ते को देखकर आश्चर्य करता है और उसके विषय में कुछ जानना चाहता है। इस पर वर्जिल उसे बतलाता है कि नियति ने उसके साथी के जीवन का ताना-बाना अभी अस्त-व्यस्त नहीं किया है। वह अब भी जीवित है और अपने जीवन-काल में ही इस प्रदेश में आया है। इसके बाद जब वह उससे प्रश्न करता है कि, यह भूचाल कैसा है और यह कोलाहल कैसा है, तो वह आत्मा उसे सूचित करती है कि जब भी कोई आत्मा अपने पापों से मुक्त होती है, यह पहाड़ आनन्द से हिल उठता है। इतना कहकर वह एक क्षण को रुकती है और फिर कहती है कि वह (रोमन-कवि) स्टैटियस है! वह ५०० वर्षों की यातना भोगने के बाद आज मुक्त हुआ है और अब वह अपने गुरु 'वरजिल की खोज में है, क्योंकि वह उससे मिलने को कभी से उत्सुक है। यह वाक्य सुनते ही दान्ते मुस्कराने लगता है और बड़ी अर्थ-भरी दृष्टि से वर्जिल को देखता है! इससे स्टैटियस, सहसा ही, यह समझ जाता है कि उसकी सर्वप्रिय इच्छा की दैवात्, पूर्त्ति हो गई और वर्जिल ही उसके सम्मुख खड़ा है। अब दूसरे ही क्षण वह बहुत विनीत-भाव से अपने उस गुरु को सादर प्रणाम करता है, जिससे उसे काव्य की प्रेरणा प्राप्त हुई थी!

पर्व बाईस—

एक बार फिर एक देवदूत आ-उपस्थित होता है और इन तीनों कवियों को एक सीढ़ी के रास्ते उस छठे तल पर ले आता है, जहाँ पेटुओं और शराबियों को दण्ड दिया जाता है। इस राह में दान्ते का एक 'पा' का चिन्ह और मिट जाता है।

× ×

इस स्थान के चक्कर लगाने में दाँते उत्सुक हो-उठता है और जानना चाहता है कि स्टैटियस ने ऐसा कौन सा कार्य किया था, जिसने उसे लालची प्रमाणित किया और जिसके लिये उसे पिछले पाँचवे घेरे से निकलने की यातना भोगनी पड़ी! इस पर स्टैटियस उत्तर देता है कि उसका अपराध यह न था कि वह लोभी था प्रत्युत यह कि वह अपव्ययी था और यह

---

[१] अपने बहनोई की हत्या करने वाला। [२] इज़राइल का वंशज जिसे जोशुआ की आज्ञा से लूट-पाट मचाने के अपराध में पत्थरों से मार डाला गया था। [३] सेल्यूकस का मंत्री जिसने जेरुसलम के ख़ज़ाने छीनने की कोशिश की थी! [४] सीज़र और पॉम्पी का लोभी सहकारी—

कि उसकी इस लम्बी यातना का इससे भी बड़ा कारण यह है कि उसमें ईसाई मत को स्वीकार करने का साहस न था ! इतना बतलाने के बाद वह 'टेरेंस'[1], 'सिसिलिया'[2], 'प्लॉटस'[3] और 'वैरो'[4] आदि अपने देशवासियों के कुशल समाचार वर्जिल से पूछता है और उसे पता लगता है कि वे भी उसी तरह के अन्य अंधे प्रदेशों में पड़े हैं जहाँ वे दूसरे अन्य मूर्त्तिपूजक कवियों से प्रायः मिलते और हास-परिहास करते हैं।

इस बीच में दान्ते भक्ति से अपने साथियों की बातचीत सुनता रहता, काव्य माधुरी की रहस्यात्मक प्रेरणाओं पर मनन करता रहता और धीरे-धीरे उनके पीछे-पीछे चलता रहता है। शीघ्र ही वे एक निर्मल स्रोत के किनारे उगे हुये एक पेड़ के समीप आ-निकलते हैं ! यह पेड़ फलों से लदा हुआ है ! इस पेड़ से रह-रहकर ध्वनि आती है जो उन्हें पेटूपन के पाप के विरुद्ध सावधान करती है, क्योंकि इस प्रदेश में पेटुओं को दंड दिया जाता है। यही नहीं, वह अपनी बात के समर्थन में 'डेनियल' और 'बैपटिस्ट जॉन' जैसे विशिष्ट लोगों के उदाहरण सामने रखती है और कहती है कि वे इस नियम के अपवाद रहे हैं—इस पाप से बचने के लिये ही 'डेनियल' दाल से ही सन्तोष करता रहा है और जॉन टिड्डियों और जंगली शहद से !

पर्व तेईस—

दान्ते अब भी गूंगे की भांति इस भेद भरे पेड़ को विस्मय से देख रहा है कि वर्जिल उसे आगे बढ़ने को कहता है ! उन्हें अभी भी लम्बी मंज़िल तय करनी है। दान्ते आदेश का पालन करता है और शीघ्र ही गुरु-शिष्य कुछ ऐसी आत्माओं से मिलते हैं जो सिसक-सिसक कर रो रही हैं, जिनकी आँखों में पाताल की गहराई के गढ़े हो चुके हैं और जो इस तरह झुकी हुई हैं कि उनके शरीर की हड्डियाँ खाल के बीच से बाहर निकल आई हैं। इनमें से एक दान्ते को पहचानती है और दान्ते को यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि उसका मित्र 'फॉरसे' इस दयनीय स्थिति में है ! दो कंकाल-मात्र आत्मायें उसके आगे पीछे चल रही हैं और उसे सम्हाल रही हैं, ताकि वह चलते-चलते कहीं गिर न पड़े। इस पर फ़ॉरसे उत्तर देता है कि यद्यपि वह और उसके साथी दिन रात खाते-पीते रहते हैं तथापि वे कभी सन्तुष्ट नहीं होते और भूख और प्यास के मारे मरे जा रहे हैं, उनमें कुछ भी शक्ति शेष नहीं है। इतना सुनकर दान्ते एक बार फिर प्रश्न करता है और जानना चाहता है कि आख़िर ऐसा क्या है कि वह इतनी जल्दी 'परगेटरी' के इस ऊंचे तल्ले पर आ पहुँचा है, क्योंकि उसे मरे तो अभी पांच वर्ष ही हुये हैं। फ़ॉरसे उत्तर देता है कि अपनी पत्नी की लगातार प्रार्थनाओं के कारण ही वह एक बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे कारागारों से जल्दी-जल्दी मुक्त होता रहा है और इतने थोड़े समय में ही इस प्रदेश में आ गया है। दान्ते सब कुछ सुनता है और अन्त में उस प्रदेश में आने का

---

[1] एक रोमन सुखांत कवि। [2] दूसरा रोमन-सुखान्त कवि। [3] रोमन नाटककार। [4] एक रोमन-दुखान्त-कवि।

कारण बतलाने के बाद उसे अपने साथियों का परिचय देता है।

पर्व चौबीस—

दूसरे ही क्षण उन सब के साथ चलते-चलते 'फ़ोरेसे' अपनी बहिन पिकारडा के लिए उत्सुक हो-उठता है और जानना चाहता है कि वह क्या हुई। इसके बाद वह कुछ आत्माओं की ओर संकेत करता है! दान्ते इनसे बातें करता है और ये जिज्ञासा के उत्तर में उसे विश्वास दिलाती हैं कि उसके राजनीतिक विरोधियों का पतन बिल्कुल समीप है। उनका यह कथन पूरा भी नहीं हो पाता कि वे एकाएक चल देती हैं, किन्तु दान्ते देखता है कि सामने के पेड़ अपने मधुर-सुन्दर फल उन सब को देते हैं, किन्तु वे जैसे ही खाने के लिये उन्हें अपने मुंह तक लाती हैं उनसे तुरत ही छीन लेते हैं। इतना ही नहीं वह यह भी अनुभव करता है कि कुछ अदृश्य ध्वनियाँ उनके इस कार्य की प्रशंसा कर रही हैं और भोजन की साधारण मात्रा में भी कमी का प्रचार कर रही हैं।

पर्व पचीस—

इस समय ये तीनों कवि एक सीध में चल रहे हैं कि स्टैटियस अपने जीवन-सम्बन्धी सिद्धान्तों की चर्चा करता और उन पर प्रकाश डालता है। इसके थोड़ी देर बाद वे इस प्रदेश के सातवें तल पर चढ़ना आरम्भ करते हैं कि एक देवदूत पहले की भाँति ही आ-पहुँचता है। वह रास्ते में पवित्रता का गुणगान करता है और दान्ते एक बार फिर अनुभव करता है कि किसी ने उसे धीरे से छुआ और उसका एक और कलंक-चिन्ह पोंछ दिया। एक क्षण में ही वे चोटी पर आ-पहुँचते हैं। अब यहां इन कवियों को एक ऐसे सकरे रास्ते से जाना पड़ता है जिसके एक ओर गरजती हुई ज्वालायें हैं और दूसरी ओर अतल खाई! यह पथ इतना भयंकर है कि वर्जिल दान्ते को सावधानी से चलने का आदेश देता है अन्यथा बहुत सम्भव है कि वह या तो उन लपटों में भस्म हो जाये अथवा खाई में गिरकर सदैव के लिए लुप्त हो जाये और उसका चिन्ह तक मिट जाये! दान्ते सचेत हो-उठता है और ज्यों ही वह और उसके साथी आगे पैर बढ़ाते हैं, आग की भट्टी से उठती हुई भयानक चीख़-पुकार उनके कानों में पड़ती है। यह भट्टी में भस्मसात पापात्माओं का सामूहिक स्वर है जो क्रम से एक बार ईश्वर से क्षमा और दया की भीख मांगती हैं और दूसरी बार ब्रह्मचर्य और सतीत्व का गुणगान करते हुये 'मेरी' और 'डायना' का बखान करते नहीं थकतीं क्योंकि वे ऐसे पति-पत्नियों को श्रद्धेय मानती हैं जो विवाहित होने के बाद भी सदाचारी रहे-आते हैं।

पर्व छब्बीस—

वे ऐसे पथ से जा रहे हैं कि दान्ते की परछाईं धधकती हुई लपटों पर पड़ती है! उसमें झुलसती हुई आत्मायें चौंक उठती हैं और एक-दूसरे से प्रश्न करती हैं कि यह कौन हो

सकता है। दान्ते उनका प्रश्न सुनता है और उत्तर देना ही चाहता है कि उसका ध्यान उन पापात्माओं के एक दूसरे दल की ओर आकृष्ट हो जाता है! ये पापात्मायें जल्दी में एक दूसरे को चूमती हैं, एक दूसरे को धक्के देती हुई आगे बढ़ती हैं और पल-पल पर पासीफ़ी[1] जैसे दुराचारियों की चर्चा करती और उन लोगों की निन्दा करती हैं जिनका कि सॉडम[2] और गोमोरा[3] के विनाश में हाथ था! दूसरे ही क्षण दान्ते को अपने उत्तर की याद आती है। वह प्रश्नकर्त्ता को अपना परिचय देने के बाद वहां पहुँचने से सम्बन्धित सारी कथा बतला जाता है और यह आशा प्रकट करता है कि ईश्वर की कृपा से वह शीघ्र ही स्वर्ग में पहुँच जायेगा! इतना सुनकर वह प्रश्न करने वाली आत्मा दान्ते का आभार मानती है और स्वीकार करती है कि उसने अपने जीवनकाल में बिना किसी यम नियम की चिन्ता किये सांसारिक एवं शारीरिक प्रेम का जी-भरकर प्रचार किया है। इतना ही नहीं, वह कहती है कि यदि वह संकेत से दिखलाये तो वह निश्चि रूप से उसके सहभोगियों में से कितने ही लोगों को पहिचान लेगा। इसके बाद वह दान्ते की स्तुति करती है और एक बार फिर उस आग में खो जाती है, जो कि उसकी शुद्धि कर उसे स्वर्ग के योग्य बना रही है।

पर्व सत्ताईस—

संध्या का समय है सूर्य डूबना ही चाहता है कि उसी क्षण एक देवदूत 'धन्य हैं शुद्ध-हृदय के लोग' गाता हुआ उनके समीप आता है। वह उन महाकवियों को यह सूचित करने के बाद कि उनके और स्वर्ग के बीच में केवल एक आग की दीवाल का अन्तर शेष रह गया है, उन्हें यह विश्वास दिलाता है कि उनका एक बाल भी बांका न होगा, वे बिना किसी प्रकार के भ्रम के उसके अन्दर से निकल सकते हैं। किन्तु आग की दीवाल का नाम सुनते ही दान्ते के होश उड़ जाते हैं! वह पीछे ठिठक-रहता है, और वर्जिल आदि आगे निकल जाते हैं! कुछ ही क्षणों में वर्जिल पीछे मुड़कर देखता है और उसकी भयातंकित मुद्रा लक्ष्य कर उसे याद दिलाता है कि अब उसे अधीर नहीं होना चाहिये, क्योंकि इस आग की दीवाल को पार करते ही वह स्वर्ग में पहुँच जायेगा और वहाँ उसे बियेट्रिस मिलेगी! इतना सुनते ही दान्ते सारी चिन्ता और आशंकाओं से मुक्त हो-उठता है और धू-धू करती हुई आग की भट्टी में कूद पड़ता है। वर्जिल और स्टैटियस उसका अनुकरण करते हैं और शीघ्र ही वे तीनों एक चढ़ाऊ रास्ते पर आ-निकलते हैं। यहाँ वे अलग-अलग टीलों पर आराम करते हैं किन्तु दान्ते तबतक आसमान के सितारे देखता और गिनता रहता है जबतक कि उसे नींद नहीं आ जाती और वह स्वप्न नहीं देखता कि एक कुंज में एक अपूर्व सुन्दरी फूल चुन रही है और अपने से और अपनी बहिन से सम्बंधित एक गीत गा रही है। वह कहती है कि उसका अपना नाम 'ली' है, जो मध्य-युगीन

[1] क्रीट के राजा माइनॉस की पत्नी। [2] एक नगर— [3] एक नगर जहाँ के सेव पतित देवदूतों को पसन्द हैं!

सक्रिय जीवन का प्रतीक है किन्तु उसकी बहिन का नाम 'रेचेल' है जो विचार एवं चिन्तन-प्रधान अक्रिय जीवन का द्योतक है, यही कारण है कि वह फूल चुन रही है और उसकी निकम्मी बहिन एक विशाल दर्पण में अपना रूप निहार रही है।

× ×

सबेरा होता है। कविगण सोकर उठते हैं और वर्जिल दान्ते को यह विश्वास दिलाता है कि पहिले इसके कि आज का दिन डूबे उसकी बियेट्रिस को एक बार भर आंख देखने की साध अवश्य ही पूरी हो जायेगी! इस अमर-आशा से दान्ते के हृदय में एक ऐसी ज्योति जगमगा-उठती है कि उसके पर लग जाते हैं और कुछ ही क्षणों में वह चोटी पर पहुँच जाता है।

वर्जिल ने नरक के पतित प्रदेशों के बाद प्रायश्चित और चिरंतन-ज्वाला के प्रदेशा में उसका पथ प्रदर्शन किया है! यहाँ वह उसे आदेश देता है कि अब वह अपने मन का राजा है, जो चाहे सो करे और तब तक करे जबतक कि वह सुन्दर नारी उसे नहीं मिल जाती जिससे भेंट करने की महत्त्वाकांक्षा के कारण ही उसने यह यात्रा आरम्भ की है!

पर्व अट्ठाईस—

यह ईडन का उपवन है। यहाँ दान्ते वर्जिल और स्टैटियस के साथ तबतक इधर-उधर घूमता रहता है जबतक कि उसकी दृष्टि उस पारदर्शी झरने पर नहीं पड़ती जिसमें कि पापों को भुला देने की शक्ति है और जिसके दूसरी ओर एक सुन्दर नारी खड़ी है जो कि उसे देखते ही उस पर मुस्कराने लगती है। यह नारी 'सम्राज्ञी मैटील्डा' है! वह उसे सूचित करती है कि उसकी शंकाओं का समाधान करने के लिये ही वह वहाँ आई है, अतएव उसे अपनी जिज्ञासा उसके सामने रखनी चाहिये। दान्ते सुनता है और उससे कई प्रश्न करता है। इस प्रकार, जब वे झरने के दूसरी ओर टहल रहे हैं, दान्ते के ज्ञान-लाभ के लिये, 'मैटिल्डा' मनुष्य की सृष्टि और उसके पतन का रहस्य समझाती है उसके परिणामों पर प्रकाश डालती है और बतलाती है कि यह स्थान पृथ्वी पर उगनेवाले सारे पेड़-पौधों उद्गम-स्थान है।

× ×

थोड़ी देर बाद दान्ते देखता कि उसके पैरों के समीप बहने वाला पानी कभी न-सूखने वाले एक फुहारे से निकल रहा है। वह यह भी लक्ष्य करता है कि उसमें से बाहर आते ही वह दो धाराओं में बंट जाता है—एक धारा का नाम 'लीथ' है जिसका स्पर्श करते ही आत्मायें अपने पाप और अपराध भूल जाती है और दूसरी 'यूनो' कहलाती है जिसमें अवगाहन करने ही मृतात्माओं को अपने सुकृत्यों की याद हो-आती है।

पर्व उन्तीस—

उसी क्षण सम्राज्ञी आग्रह करती है कि अब वह कुछ देर के लिये ठहर जाय और कुछ विशेष देख-सुन ले। वह ठहर जाता है और अनुभव करता है कि दूसरी ओर तीव्र

प्रकाश हो रहा है। दूसरे ही क्षण अद्‌भुत, मधुर संगीत उसके कानों में पड़ता है और वह देखता है कि अलौकिक श्री से जगमग करती हुई आत्माओं का एक दल उसकी ओर बढ़ा आ रहा है। यह आत्मायें इतनी कान्तिमान हैं कि इनके पद-चिन्हों में इन्द्र-धनुष रह-रहकर झलक उठता है। इनका नेतृत्व वयोवृद्ध धर्म-गुरुओं का एक दल कर रहा है और इनका अनुकरण ईसा की जीवनी के चारों लेखक श्रद्धापूर्वक कर रहे हैं। इनके पीछे ग्राइफ़ॉन नामक विचित्र पशु है! यह पशु एक भव्य रथ खींच रहा है जो ईसाई गिर्जे या पोप के धार्मिक आसन का प्रतीक है,! इसे देखकर सहज में ही यह धारणा होती है कि ऐसा दिव्य रथ रोम की किसी राजसी विजय के अवसर पर भी शायद ही दिखलाई पड़ा हो। इस रथ के रक्षक भी अनेकों हैं, जिनमें दान, आस्था और आशा जैसी तीन सद्‌वृत्तियों और दूरदर्शिता आदि चार नैतिक नीतियों के अतिरिक्त संत ल्यूक, संत पॉल, गिर्जे के चारों महान् डॉक्टर और धर्माचार्य संत जॉन आदि विशेषतया उल्लेखनीय हैं।

पर्व तीस–

हमारा कवि दान्ते अब एक अद्‌भुत प्रकाश देखता है! यह प्रकाश सात शाखा-वाली एक मोमबत्ती से फूट रहा है और कुमारी ऊषा की हीरक-कांति से सारे स्वर्ग को जगर-मगर कर रहा है। इसी समय जब कि चारों ओर से प्रार्थनाओं के स्वर उसे सुनाई पड़ते हैं, वह देखता है कि एक रथ में एक स्त्री विराजमान है, जिस पर सफेद पर्दा पड़ा हुआ है। वह यह भी देखता है कि देवतागण उस पर फूल बरसा रहे हैं, और, यद्यपि इस समय वह दूसरे रूप में है तो भी, वह उसे दृष्टि पड़ते ही पहचान लेता है जैसे कि यह उसके लिए स्वाभाविक हो। यह स्त्री और कोई न होकर बियेट्रिस है! बियेट्रिस स्वर्गीय ज्ञान की प्रतीक है। इस प्रकार सहसा ही युग-युग की अभिलाषा साकार देखकर वह अचरज से अवाक हो-उठता है और यन्त्र-चालित सा वर्जिल की ओर मुड़ता है किन्तु देखता है कि वह अदृश्य हो चुका है। दान्ते का धीरज छूट जाता है।

× ×

उसकी अधीरता का अर्थ समझकर बियेट्रिस उसे यह वचन देकर सान्त्वना देती है कि वह चिन्तित न हो, इसके बाद वह स्वयं उसका पथ-प्रदर्शन करेगी। इतना कहकर वह एक क्षण रुकती है और फिर कड़े-मधुर शब्दों में बीती-बातों के लिये उसकी इतनी भर्त्सना करती है कि उसकी दृष्टि लज्जा से नीचे झुककर पैरों पर जा पड़ती है। यहीं पास के प्रकृति के दर्पण के प्रतीक एक सोते में वह अपनी परीशानी की परछाईं देखता है और अपने किये पर इतना पश्चात्ताप करता है कि बियेट्रिस द्रवित हो-उठती है। वह उसे समझाती है कि जिस भयानक रास्ते से वह यहां आया है, वह स्वयं उसने उसके लिये चुना है और स्वयं वह उसे उस राह से

[1]एक कल्पित पशु जिसका शरीर और जिसके पैर शेर के हों किंतु जिसकी चोंच और जिसके पर बाज़ के हों।

लाई है। उसके इस कार्य में कुछ रहस्य है! उसकी कामना है कि इसके बाद वह एक दूसरे ही प्रकार का जीवन व्यतीत करे!

पर्व इकतीस—

कोई प्रश्न नहीं कि उसके लिये उसे कितना अध्यवसाय और परिश्रम करना पड़ता, उसे पुनः प्राप्त करने के लिये उसे एक सदाचारी साधु का कठिन जीवन ही बिताना चाहिये था, किन्तु हुआ यह कि उससे बिछुड़ने के बाद वह छलिया सांसारिक सुखों और असार, मिथ्या आनन्दों का शिकार हो गया! इस प्रकार के कितने ही उलाहने देने के बाद अंत में बियेट्रिस दान्ते को क्षमा कर देती है और उससे एक बार फिर अपने चेहरे की ओर देखने का आग्रह करती है। दान्ते आँखे ऊपर उठाता है और अनुभव करता है कि जिस प्रकार उसका पिछला सौन्दर्य मनोहरता और हृदय-ग्राहिता में संसार की तमाम स्त्रियों से अलग और अधिक चमकता और गमकता था, उसी प्रकार उसकी इस समय की छवि भी पिछले रूप-लावण्य से कहीं अधिक लौ मारती है, सच तो यह है की दोनों की तुलना का कहीं प्रश्न ही नहीं उठता!

कहना न होगा कि दान्ते के मन में यह विचार गहरा बैठ जाता है कि वह उसके सर्वथा अयोग्य है और वह अचेत हो जाता है। कुछ देर में होश आने पर वह अपने को उस जल-प्रपात में पाता है जहाँ मतील्दा नामक एक परी उसे पानी से ऊपर उठाये हुये है और हवा की गति से बहाये-लिये जा रही है। दान्ते अनुभव करता है कि कहीं दूर देवदूत गा रहे है—'तुम्हीं मुझे नहलाओगे और बर्फ़ से कहीं अधिक मैं हो जाऊँगा धवल!'

× ×

'लीथ' के पवित्र जल के द्वारा पिछले पापों की सभी भयावह स्मृतियों से मुक्ति पाने के बाद दान्ते युग-युग के पुण्यों से पवित्र किनारे पर पैर रखता है। यहां बियेट्रिस की परिचारिकायें उसका स्वागत करती हैं और बियेट्रिस से प्रार्थना करती हैं कि वह अपना आन्तरिक सौन्दर्य प्रकट कर अपना कार्य पूरा करे ताकि यह दान्ते नामक मनुष्य, पृथ्वी पर जाने पर मानवजाति के सम्मुख उसका सही रूप रख रख सके, उसका वास्तविक चित्र चित्रित कर सके! दूसरे ही क्षण बियेट्रिस का अलौकिक रूप दान्ते के सम्मुख आता है! उसके छवि-दर्शन में उसकी सांसे तो कुछ क्षणों को ठिठक-रहती हैं, किन्तु उसे शब्द नहीं मिलते कि वह अपने सामने की अलौकिकता का वर्णन कर सके।

पर्व बत्तीस—

दान्ते उसकी रूप-माधुरी में इस तरह खो जाता है जैसे कि पिछले दस वर्षों की सारी प्यास इसी क्षण बुझा लेना चाहता है। शीघ्र ही बियेट्रिस की सेविकायें उसमे निगाहें नीची करने का आग्रह करती हैं। यद्यपि वह तुरन्त ही उनकी इच्छा की पूर्ति करता है, तथापि वह देखता है उसकी दशा बिल्कुल उस मनुष्य की सी है जो बहुत देर तक अपलक सूर्य्य को देखता

रहे और फिर आंखों में चकाचौंध हो जाने के कारण किसी वस्तु पर किसी प्रकार दृष्टि न गड़ा सके। दूसरे शब्दों में, वह अनुभव करता है कि हर वस्तु से, जिस पर वह दृष्टि डालता है, बियेट्रिस के रूप की किरणें फूट रही हैं और उसकी निगाह कहीं जमती नहीं। इसके बाद ही वह और स्टैटियस विनम्र भाव से बियेट्रिस के विराट और विशद् जुलूस के साथ हो जाते हैं! यह जुलूस एक वन में प्रविष्ट होने के बाद एक पेड़ के तने को घेर लेता है। इसी तने से वह रथ बांध दिया जाता है।

कहना होगा कि दूसरे ही क्षण के उस पेड़ की सूखी डालियों में किसलय निकल जाते हैं, उनमें कलियाँ मुस्कराने लगती हैं! ऐसे मधुमय क्षण में देवदूतों के स्वर्गीय संगीत से विभोर होकर दान्ते गहरी नींद में सो जाता है और एक ऐसा रोमांचकारी स्वप्न देखता है कि जागने पर पागलों की भाँति बियेट्रिस के लिये इधर-उधर देखने लगता है! उसे 'लीथ' से इसपार लानेवाली वह परी उसकी चिन्ता लक्ष्य करती है और उसे संकेत से बियेट्रिस को दिखला-देती है! वह इस रहस्यपूर्ण पेड़ के सहारे आराम कर रही है। इसी समय बियेट्रिस अपने स्थान से उठती है और दान्ते से कहती है कि अब वह उसके रथ के भाग्य का व्यंग्य देखे और समझे! कवि रथ की ओर घूम पड़ता है और देखता है कि 'राज्यसत्ता' का प्रतीक एक बाज़ आकाश से पृथ्वी पर उतरा, उसने उस पेड़ को बुरी तरह चीर-फाड़ डाला, उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले, और उस रथ पर हमला किया जो कि गिर्जे का प्रतीक है, और जिसमें धर्म-सम्बन्धी, मूलगत भ्रम की प्रतीक एक लोमड़ी इधर-उधर सिर मार रही है, जैसे कि किसी आखेट की खोज में हो। यही नहीं, दान्ते यह भी लक्ष्य करता है कि यद्यपि बियेट्रिस रथ के समीप गई, और उसने तुरन्त ही उस लोमड़ी का नशा उतार दिया तथापि उस बाज़ ने उस रथ में अपना घोंसला बना लिया। इसी समय एक दूसरे दैत्य को अपनी पीठ पर लादे हुये, ७ प्रमुख पापों का प्रतीक, सात सिरों का एक राक्षस उस रथ के नीचे से निकला! वह, क्रम से, पहिले कुछ देर तक एक वैश्या को मनुहार करता रहा और फिर उसे सुधारने के लिये कुछ देर तक उसे तरह-तरह के दंड देता रहा।

पर्व तैंतीस—

इसी समय सात धार्मिक-वृत्तियाँ एक प्रार्थना गाती हैं। इसके बाद बियेट्रिस दान्ते और स्टैटियस को अपना अनुकरण करने का संकेत करती है और दान्ते को विशेषतया चुप देखकर उसके इस मौन का कारण जानने को उत्सुक हो-उठती है। दान्ते उत्तर देता है कि वह उसका प्रश्न स्वयं जानती है, उसे बतलाने की आवश्यकता नहीं है। इस पर वह उसे अभी-अभी घटी तमाम घटनाओं का रहस्य समझाती है और आग्रह करती है कि वह उसे मनुष्य-जाति तक पहुँचा दे!

इस तरह बातें करते-करते दान्ते 'यूनो' नामक दूसरी धारा के समीप पहुँच जाता है। यहाँ बियेट्रिस उसे उस प्रपात का पानी पीने का संकेत करती है। वह झुकता है और इस नव-जीवन-प्रदाता जल के एक घूंट के बाद ही अनुभव करता है कि वह शुद्ध एवं पवित्र हो गया और अब वह नक्षत्र-लोक तक पहुँचने का अधिकारी है।

'पैराडाइज़ो' या स्वर्ग--

परिचय--

दान्ते का स्वर्ग चन्द्र, बुद्ध, शुक्र, सूर्य्य, मंगल, वृहस्पति, शनि, ध्रुव और गोलोक, जैसे नौ पारदर्शी चक्रों में विभाजित है! ये चक्र विभिन्न आकार के होते हुये भी एक दूसरे से सम्बद्ध हैं और पराक्रमी युवराजों, यशस्वी अधिष्ठाताओं, महान-सिंहासनों, विभिन्न शक्तियों, सर्व धर्माचरणों और समान्य एवं सर्वोच्च देवदूतों द्वारा परिचालित हैं। इनको गति की गूंज से सारा स्वर्ग संगीतमय रहता है। इनके सीमान्त पर 'एक गुलाब' या 'सच्चा स्वर्ग' नामक दसवां चक्र है। यह दसवाँ चक्र दैवी-शान्ति का निवास है! इसका हृदय स्थल पिता, पुत्र और परम-पवित्र आत्मा के अवतार त्रिमूर्ति ब्रह्म का निवास-स्थान है!

पर्व एक--

दान्ते स्वर्ग का आरम्भ अपने इस वक्तव्य से करता है कि सृष्टि के सबसे अधिक ज्योतिपूर्ण भाग स्वर्ग से वह अभी-अभी आया है, किन्तु उसने जो कुछ वहाँ देखा है उसका जैसे का तैसा वर्णन कर देना उसके वश के बाहर की बात है, अतएव अवश्यक है कि वह सूर्य्य के देवता अपोलो से सहायता की प्रार्थना करे।

× ×

उसकी आँखें बियेट्रिस की आँखों से मिलती हैं और वह तुरन्त ही सांसारिक बंधनों से मुक्त हो जाता है। सहसा ही वह अनुभव करता है कि वह ऊँचा उठ रहा है, और अवर्णनीय वेग से किसी, कल्पनातीत, दूसरे ही लोक में पहुंच जाता है या पहुंचा दिया जाता है।

पर्व दो--

इस पर दान्ते के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता और उसे भौचक्का देखकर बियेट्रिस एक बार फिर उसे इस तरह सान्त्वना देती है, उसे इस तरह सहायता का वचन देती है, जैसे कि कोई माता अपने व्यग्र पुत्र को धीरज बंधाये। दान्ते चारों ओर देखता है और अनुभव करता है कि वह और उसके साथी चन्द्र के विमल प्रदेश में प्रवेश कर चुके हैं यह चन्द्र-लोक देवदूतों के द्वारा परिचालित है। तद्नन्तर अपने साथियों को सचेत करने के बाद कि वह एक सर्वथा अछूते पथ से गुज़र रहा है! वह कहता है कि बियेट्रिस इस समय उसे स्वर्गीय चक्रों और

उनके दैवी आवर्त्तनों का रहस्य समझाती है और वायदा करती है कि वह उसे 'सत्य कि तुम मुझे प्रेम करते हो' का भी मर्म बतलायेगी !

पर्व तीन—

चन्द्रमा के इस मोतिया वातावरण को भेद कर, दूसरे ही क्षण, उसकी दृष्टि कुछ भक्त-स्त्रियों पर जा-पड़ती है और बियेट्रिस उसे उनसे बातें करने का संकेत देती है ! वह निकट आकर उनको सम्बोधित करता है और उसे पता लगता है कि उनमें से एक उसके मित्र फ़ॉरेसे की बहिन पिकार्डा है जिसे उसके सन्यास ग्रहण करने के बाद उसका पति भगा ले गया था। यद्यपि उसे अपने धार्मिक संकल्पों का पालन करने में ही अत्यधिक प्रसन्नता होती तो भी वह एक पति-भक्ता स्त्री प्रमाणित हुई। वह कहती है कि जबतक सर्वशक्तिमान अपने पास नहीं बुला लेते वह और उसकी साथ की आत्मायें अपने लिये नियुक्त इस जगत में ही प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं:—

'वह अपनी चिर-संगिनियों के साथ मधुर मुस्काई,
और मुदित होकर बोली यों'
जैसे खनक उठे ममता की याकि प्रेम की प्रथम किरण—
बंधु, दान है सर्वोपरि !
अरे, दान की शक्ति सदैव,
निश्चित करती है हम सब की आशायें औ' अभिलाषायें,
और विवश हम हो जाते हैं
करने को सन्तोष पास जो केवल उससे,
कभी नहीं हम उड़ पाते हैं 'उसकी' अभिलाषा के आगे !'

उसका कथन है कि अनेकानेक अभिलाषाओं के साथ उसकी साथी-आत्माओं की यह भी कामना है कि वे सब ईसा की पत्नियाँ हो जायें, तो भी वे शांतिपूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन करती है और यह समझकर कि परमपिता की इच्छा ही उनकी इच्छा है, और उसकी इच्छा में ही उनकी मुक्ति है, वे अपना सारा समय ईश्वर भजन में व्यतीत करती हैं।

शीघ्र ही वे सारी आत्मायें लुप्त हो जाती हैं और दान्ते बियेट्रिस की ओर देखने लगता है। उसकी इच्छा है कि वह इस विषय पर और प्रकाश डाले।

पर्व चार—

दान्ते की प्रश्न सूचक दृष्टि के उत्तर में बियेट्रिस कहती है कि अपनी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी करना पाप है और ऐसा पाप करने पर विवश होने वालों को स्वर्ग कभी भी क्षमा नहीं करता। उसका कहना है कि निष्काम आत्मा सदैव अजेय है और यह कि अपनी इच्छा-शक्ति के कारण ही संत लॉरेंस और 'म्यूसियस स्किवोला' इतनी बहादुरी से आग का सामना कर सके थे ! इसके बाद, वह उसे दिखलाती है कि केवल सत्य ही ज्ञान-पिपासु मस्तिष्क को सन्तुष्ट कर सकता है।

पर्व पाँच—

बियेट्रिस विशेष ज़ोर देकर कहती है कि स्वर्ग से मिली अनेकों निधियों में इच्छा-स्वातन्त्र्य मनुष्य जाति की सबसे बहुमूल्य निधि है, और यह कि विद्या को अध्यवसाय और मनोयोग से प्राप्त करने के बाद उसे मस्तिष्क में भलीभाँति सजा-संवारकर रखने का ही दूसरा नाम ज्ञान है। अंत में वह दान्ते को बतलाती है कि शपथ लेने का मतलब है ईश्वर के लिये अपनी इच्छा और कामना का उत्सर्ग कर देना। अतएव बिना सोचे-विचारे कोई भी संकल्प नहीं किया जाना चाहिये, किन्तु यदि एक बार कोई प्रतिज्ञा कर ली गई है तो, जिस तरह भी हो, उसका किया ही जाना चाहिये! फिर भी, वह स्वीकार करती है कि जेफ़था अथवा एगेमेम्नान की भाँति किसी निन्दनीय षडयन्त्र में योग देकर अक्षम्य अपराध मोल लेने की अपेक्षा तो यही अच्छा है कि की-हुई प्रतिज्ञा ही तोड़ डाली जाय। उसका कथन है कि यहूदियों का कल्याण और पथ-प्रदर्शन या तो 'टेस्टामेंट' के द्वारा हो सकता है या ईसाइयों के द्वारा, अन्य किसी रीति से नहीं!

× ×

एक बार फिर बियेट्रिस अपनी तेज़ निगाहों का प्रयोग करती है और उसकी शक्ति से खिंचकर ही दान्ते, दूसरे ही क्षण, दूसरे चक्र या 'बुद्ध'[1] के स्वर्ग में पहुँच जाता है! यह लोक, अपेक्षाकृत, उच्चकोटि के देवदूतों के द्वारा परिचालित होता है। यहां पानी की तरह झलझल करते हुये विमल वातावरण में दान्ते अनुभव करता है कि 'हमारा प्रेम बांटने को, अरे, लो, आया-प्रेमी एक' गाते हुये हज़ारों देवदूत उसकी ओर बढ़े-आ रहे हैं। ये सब उसे विश्वास दिलाते हैं कि उसका जन्म बड़े मंगलमय क्षण में हुआ था क्योंकि वह पहला व्यक्ति है जिसे अपना सांसारिक, मांसल युद्ध-व्यापार समाप्त करने के पूर्व ही स्वर्ग के वैभव को समीप से देखने की अनुमति मिली है। यही नहीं, वे इच्छा प्रकट करते हैं कि वह उनके स्वर्गीय आनन्दों का भागी बनें और उनकी कांति से जगमग हो-उठे! इतना सुनकर दान्ते सबसे समीप खड़ी आत्मा से कुछ प्रश्न करता है और यह स्नेह से पूरित होकर उसे उत्तर देने को उत्सुक हो-उठती है। उसका विचार है कि उसे इस सुयोग से लाभ उठाकर अवश्य ही उसकी सेवा करनी चाहिये! अतएव यह वार्त्तालाप तब तक चलता रहता है जब तक कि इतना प्रकाश नहीं हो जाता कि आँखों में चकाचौंध पैदा हो जाये!

पर्व छः—

यह देवदूत घोषित करता है कि उसका नाम 'जस्टीनियन' है! वह अपने जीवन-काल में अनावश्यक नियमों का मूलोच्छेदन करने के लिये चुना गया था। उसका जन्म ईस्वी-सन् से ५०० वर्ष पूर्व हुआ था और उसने उपरोक्त कार्य में सारा जीवन बिताने के लिये ही [2]'बेलिसैरियस' को अपनी सारी सेना सौंप दी थी! वह दान्ते को रोमन इतिहास की एक झांकी दिखला-देना चाहता

---

[1]पूर्व का अधीश्वर [2]'इटैलिया लिबराता' का चरित्र-नायक-

है, अतएव सैब्राइन्स के अपहरण से लेकर अपने समय तक की प्रमुख-प्रमुख घटनाओं का वर्णन बड़े मनोरंजक ढंग से कर-जाता है। वह महान सेनापतियों की महान विजयों पर विशेष ज़ोर देता है और उस क्षण की विशेष चर्चा करता है जब स्वर्ग को यह बात सुनाई गई कि गहन और चिरन्तन शान्ति के अवतार ईश्वर को ही सारी दुनिया के लिये चिंतित होने का अधिकार है, अन्य किसी को नहीं! यही नहीं, वह राज्य के संकट काल का और ग्वेल्फ़स[1] और गिल्बेलाइन्स[2] के उत्तराधिकार सम्बन्धी पारस्परिक संघर्ष का भी विशेष उल्लेख करता है। इसके बाद वह कहता है कि बुद्ध लोक में वे लोग बसते हैं जिन्होंने पृथ्वी पर अपना सारा जीवन मर्यादा और यश की प्राप्ति की साधना में बिताया है। इनमें वह उस 'रेमान्ड-बेरेंज़ेयर' की चर्चा विशेष-रूप से करता है, जिसकी चार पुत्रियाँ यथासमय रानियाँ बनीं!

पर्व सात—

इस संलाप के बाद अपने अन्य साथी-देवदूतों के साथ जस्टीनियन अदृश्य हो जाता है और उचित प्रोत्साहन पाकर दान्ते बियेट्रिस से प्रश्न करता है कि माना कि प्रतिहिंसा की भावना निन्दनीय है, किन्तु यदि वह उचित और न्यायसंगत हो तो न्याय उसे कैसे और क्या दंड दे सकता है। इस पर वह उत्तर देती है कि जिस तरह आदम का अनुकरण करने से पतन होता है और मृत्यु प्राप्त होती है, उसी प्रकार, मंगलमय ईश्वर को धन्यवाद है कि, श्रद्धा से ईसा के अनुसरण के द्वारा एक बार फिर जीवन प्राप्त हो सकता है, परमपिता की माया विचित्र है।

पर्व आठ—

इस बीच में दान्ते की दृष्टि बराबर बियेट्रिस पर जमी-रहती है। बात चलती रहती है और दान्ते को पता भी नहीं चलता कि वह तीसरे स्वर्ग में पहुँचा दिया जाता है! इस लोक का नाम 'शुक्रलोक' है! यह लोक पराक्रमी युवराजों द्वारा परिचालित होता है और यह वह प्रेम-लोक है जहाँ बियेट्रिस का सौन्दर्य कई गुना होकर निखर उठता और दमकने लगता है! दान्ते देखता है कि यहाँ प्रेम में अति करने के कारण अपूर्ण रह-गई आत्माओं का दल चक्राकार रास्तों पर बराबर घूम रहा है। इनमें से एक तेजस्वी आत्मा दान्ते के समीप आती है! वह उसे अपनी सेवायें अर्पित करती हैं और अपना परिचय देती है कि वह नेपिल्स के राबर्ट के भाई और हंगेरी के राजा 'चार्ल्स मार्टिल' की आत्मा है! ज्ञान का प्यासा दान्ते परिचय पाते ही उससे पूछता है कि यह कैसे सम्भव है कि मधुमय वसन्त माधुरी का बीज बो दे, किन्तु फलस्वरूप उसे मिले विषमता और कटुता! इस पर वह बड़ा व्यवस्थित उत्तर देती है कि प्रायः लड़के अपने माँ-बाप से बिल्कुल भिन्न होते हैं। अपने इस तर्क को बल देने के लिये वह 'ईसेन' और 'जैकब' के उदाहरण भी देती है और कहती है कि कभी-कभी ही ऐसा होता है कि प्रकृति अपनी इच्छा

१-२—दान्ते के समय के दो प्रमुख राजनैतिक दल-

और सर्वशक्तिमान के आदेश से 'सोलन', ज़रक्सीज़', 'मेलकिज़ाडेक' और 'डिडलस' जैसों का निर्माण कर देती है।

पर्व नव—

दूसरे ही क्षण 'बियेट्रिस' एक कनिट्सा' नामक दूसरी आत्मा से बातें करने लगती है! इसने मैकडालेन की भाँति ही बहुत प्रेम किया था और यह इस प्रेम के कारण ही अपने पापों के लिये क्षमा कर दी गई थी! यह कनिट्सा अपने अदृश्य होने के पहले उससे प्रोवांसाल-चारण फ़ोल्को का परिचय कराती है। यह फ़ोल्को वह कवि है जिसके लिये वह निश्चित हो चुका है कि उसकी प्रेम विषयक कवितायें, संसार के उसको भूल जाने के ५०० साल बाद, एक बार फिर प्रकाशित की जायेंगी। अपनी जीवन-कथा सुना जाने के बाद फ़ोल्को दान्ते को बतलाता है कि 'जोशुआ' के गुप्तचरों को बचा लेने के कारण 'राहब' नामक प्रसिद्ध वेश्या भी स्वर्ग में प्रवेश पा गई है। यह आत्मा अंत में तत्कालीन पोप की नीति की कटु आलोचना करती है और घोषणा करती है कि उसकी नीति इतनी व्यावहारिक, इतनी लोभी और इतनी अवसरवादिनी है कि उसका रंग बराबर बदलता रहा है और उसे ईश्वर और स्वर्ग की कृपा कभी भी प्राप्त नहीं हो सकती!

पर्व दस—

इस बार सूर्य की आकर्षण-शक्ति से आकर्षित दान्ते अपने को ऐसे जगत में पाता है जो कि महान शक्तियों के द्वारा परिचालित होता है और जिसके किसी भी उपादान पर दृष्टि डालने के यत्न में आँखों में चकाचौंध पैदा हो जाती है। यहाँ दान्ते और बियेट्रिस की दृष्टि कुछ मालाकार घेरों पर पड़ती है! इन घेरों का एक क्रम है और ये निरन्तर गतिशील रहते हैं। इनमें से प्रत्येक घेरे में उन बारह पुण्यकर्ता सांसारिकों की आत्मायें हैं जो कि पृथ्वी पर ब्रह्मज्ञान अथवा दर्शन के शिक्षक रहे हैं! ईश्वरीय-संगीत से ओत-प्रोत ऐसा ही एक चंचल घेरा हमारे कवियों के चारों ओर चक्कर काटने लगता है। इस घेरे का 'संत टॉमस एक्वाइनस' नामक एक सदस्य अपना शब्दों के लिये अवर्ण्य, अलौकिक गीत समाप्त कर उनसे अपने सारे साथियों का परिचय कराता है। यही नहीं, वह यह भी बतलाता है कि इस चिरन्तन वैभव के स्वर्ग में उनके अपने क्या अधिकार हैं।

पर्व ग्यारह—

इस बातचीत के प्रसंग में 'संत टॉमस' दान्ते को 'एसीसी' के 'संत फ्रैंसिस' की जीवनी बतलाता है और उसके पवित्र और महान चरित्र पर विशेष प्रकाश डालने के बाद कहता है कि

'रोमानो की महिषी

कैसे दीनता से हाथ पकड़ने के बाद उसने अपने अनुयायियों की जड़ें मज़बूत कीं, उनका संगठन किया, ईश्वरीय अनुकम्पा प्राप्त की, कैसे अपने द्वारा आरम्भ किये सद्कार्य को चलाते-रहने और आगे बढ़ाते रहने के लिये 'संत डॉमिलिक' जैसे योग्य शिष्य और उनके प्रतिद्वंदी तैयार किये और कैसे, अंत में, सुगन्धि बनकर दैविक-पवित्रता के साथ एकाकार होने में सफलता प्राप्त की। इसके बाद वह कहता है कि 'संत फ्रैंसिस' के कितने ही अनुयायी इन प्रकाश-परिधियों में देखे जा सकते हैं, कहना न होगा कि इन्हीं प्रकाश-परिधियों का दूसरा नाम 'सूर्य्य-लोक' है।

पर्व बारह—

इसी समय, जब कि एक के बाद दूसरे इन्द्रधनुषी-चक्र दान्ते को घेरते हैं, 'संत-बुआनावेन्तुरा' 'संत डॉमिलिक' की मानव-जाति के प्रति की गई तमाम अमूल्य सेवाओं का वर्णन करता है। इस प्रकार दान्ते उसकी अपूर्व आसक्ति, अदम्य उत्साह, और गहन श्रद्धा का गुणगान सुनकर कृत्कृत्य हो-उठता है।

पर्व तेरह—

इस समय, जब कि दान्ते और बियेट्रिस सूर्य्य के सारे प्रदेश का चक्कर लगाते हुये उन ज्योति-चक्रों को देखकर अचरज, भय और यशोगान में अवाक् हो उठते हैं, 'संत टॉमस एक्वाइ-नस' दान्ते की कितनी ही समस्यायें सुलझाता और उसे सचेत करता है कि बिना पूरी तरह तोले और सोचे-समझे वह किसी प्रस्ताव को कभी भी कार्य-रूप में परिणित न करे!

पर्व चौदह—

इस प्रकार एक के बाद दूसरे घेरे पार करते हुए दान्ते और बियेट्रिस स्वर्ग के अन्तरतम प्रदेश में पहुँचते हैं। यहाँ बियेट्रिस 'सालोमन' को आदेश देती है कि वह स्वर्ग के अंतिम निर्णय के बाद की धर्मात्माओं की जीवनी का वर्णन कर दान्ते के संदेहों को दूर करे! 'सालोमन' दूसरे ही क्षण आदेश का पालन करता है और इतने गंभीर शब्दों में अपनी वाक्य-चातुर्य का प्रदर्शन करता है कि लगता है कि 'संत जेब्रेईल' 'मेरी' को अपना सन्देश सुना रहा है!

× ×

जैसे ही 'सालोमन' अपनी वक्तृता समाप्त करता है, सैकड़ों कंठो से एक साथ निना-दित 'तथास्तु' का शब्द दान्ते के कानों में पड़ता है और 'सालोमन' उससे आकाश की ओर देखने का आग्रह करता है, जहाँ इस प्रदेश की सारी आत्मायें क्रॉस के रूप में एकत्रित हैं। ये मुख्यात्मायें वे हैं जो स्वर्गीय-श्री से कांतिमान हैं, और जिनकी धमनियों में स्वर्गीय संगीत बज रहा है और यह क्रॉस वह क्रॉस है जो कि ईसा के रूप की किरणों से प्रतिपल ज्योतिर्मय है और जिसका अधिकारी केवल वह है जिसने ईसाई धर्म की दीक्षा ली है और इसके बाद ईसा का अनुसरण किया है।

पर्व पन्द्रह—सोलह—

दान्ते इन दृश्यों और इन स्वर्गीय ध्वनियों के कारण उपलब्ध आनन्दातिरेक में डूब-उतरा रहा है कि उसकी दृष्टि चमकते हुए क्रॉस के उन देवदूतों पर पड़ती है जो कि प्रतिक्षण अपना स्थान बदल रहे हैं और उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता जब वह उनमें अपने पूर्वज 'काचागुइदा' को भी देखता और पहिचान लेता है। 'काचागुइदा' उसे विश्वास दिलाता है कि जब तक उसके निवासी सरल और सात्विक जीवन बिताते रहे, फ्लॉरेंस फलता-फूलता रहा किन्तु जैसे ही उसकी दीवालों के अन्दर लोभ-लिप्सा, विलास-प्रियता, और वासनात्मक, खोखले आनन्द ने घर किया उसका पतन आरम्भ हो गया और वह नीति-भ्रष्ट हो गया।

पर्व सत्तरह—

दान्ते को खुलकर बातें करने का मौक़ा देने के लिये बियेट्रिस उससे कुछ दूर खड़ी है, किन्तु फिर भी बढ़ावा देती है और वह अपने पूर्वज से विनीत होकर आगामी संकट के विषय में कुछ जानना चाहता है ताकि वह उसका बुद्धिमता से सामना करने के लिये तैयार हो जाये। इस पर 'काचागुइदा' उत्तर देता है कि वह फ्लॉरेंस से निकाल दिया जायेगा और इस देश-निकाले के बाद उन लोगों के साथ जीवन बिताने पर विवश होगा जो कि उसके विरोधी और शत्रु हो-उठेंगे, किन्तु, जो बाद में, इसके लिये लज्जित होंगे और पछतायेंगे। इतना ही नहीं, वह कहता है कि तब दान्ते को शिक्षा मिलेगी और पता लगेगा कि कितना कड़ुआ होता है दूसरे की रोटी का स्वाद और कितना कठिन होता है दूसरे की सीढ़ियों पर चढ़ना! इसके बाद वह बतलाता है कि उसे अंत में 'लम्बार्डी' में केरोना के युवराज 'कॉन ग्रान्डे' के यहाँ शरण मिलेगी। यहाँ वह उन कविताओं की रचना करेगा जिनमें पाप के कारण नरक के निम्नतम प्रदेश तक और पश्चाताप के प्रताप से चिरन्तन सुख और शान्ति के संसार स्वर्ग तक की स्मरणीय यात्रा का मनोहारी चित्रण होगा।

× ×

इस भविष्यवाणी से दान्ते भयातंकित और निरुत्साहित हो-उठता है किन्तु बियेट्रिस दूसरे ही क्षण एक ही मुस्कान से उसका सारा दुख-संताप और भय हर लेती है और, यह देखकर कि वह एक बार फिर उससे सम्बधित विचारों में खो गया है, उसे चेतावनी देती है कि केवल उसकी आँखें ही स्वर्ग नहीं हैं, स्वर्ग उनके बाहर भी है।

पर्व अठारह—

अब बियेट्रिस दान्ते को 'मंगल' में लाती है। यह लोक सद्वृत्तियों द्वारा परिचालित है और इसमें 'जोशुआ', 'मक्काबीज़' 'शार्लमॉन' 'आरलैंडो', और 'बुइयाँ' के 'गॉडफ्रे' जैसे कितने ही सत्य-धर्म पर जान देनेवाले और अपने अपराध स्वीकार करनेवाले पवित्र योद्धा

बसते हैं, जो कि इस समय एक दूसरे ही रूप में हैं। यह सिद्ध आत्मायें रहस्यात्मक क्रॉस का एक अंग है और ज्यों ही बियेट्रिस एक-एक करके, उनका परिचय देती है, वे एक अभूतपूर्व दीप्ति से दमक उठती हैं।

अब बियेट्रिस उसे छठवें स्वर्ग में ले आती है। यह 'बृहस्पति' है, राज्यसत्ताओं द्वारा परिचालित होता है और प्रसिद्ध न्यायी सम्राटों की आत्माओं का निवास स्थान है। दान्ते देखता है कि ये आत्मायें बड़ी शीघ्रता से एक स्थान से दूसरे स्थान को जा रही हैं और इनके चलने से ऐसा लगता है जैसे कि सारे मनोहारी रंगों की एक गुलाबी झलक इनके साथ-साथ चल रही है। वह यह भी देखता है कि एक आत्मा पृथ्वी पर एक रहस्य पूर्ण शब्द बना देती है, दूसरी चुपचाप निकल जाती है, तीसरी फिर एक शब्द बना देती है, इस प्रकार यह क्रम चलता रहता है और एक वाक्य तैयार हो जाता है, जिसका अर्थ है—'पृथ्वी के न्यायाधीशों, न्याय और सदाचार को प्यार करो और यदि ऐसा न कर सको तो शान्तिपूर्वक एक विशालकाय बाज़ का रूप धारण कर लो!' इस दृश्य का दान्ते पर इतना प्रभाव पड़ता है कि वह अभिवादन करने के लिये झुकता है और हृदय की सारी भावनाओं का बल लगाकर ईश्वर से प्रार्थना करता है कि उसके स्वर्ग की भाँति ही उसकी पृथ्वी पर भी न्याय का राज्य हो!

र्व उन्नीस-

सहसा ही दान्ते आश्चर्य से अवाक् हो-उठता है। वह देखता है कि वह रहस्यमय गरुड़ दुंदुभी के स्वरों में घोषणा कर रहा है कि अंत में न्याय और दया ही सर्वोपरि समझी जायेगी, इनके बिना कोई भी मनुष्य बचाया न जा सकेगा। यही नहीं, वह यह भी कहता है कि स्वर्ग का 'चिरन्तन न्याय' मानवीय मस्तिष्क की समझ में आनेवाली वस्तु नहीं है—केवल अपराधों का स्वीकार करना व्यर्थ है, और यह कि कितने ही ईसाई कहलानेवाले शक्तिशाली नरेशों को भी न्याय के दिन निराश होना पड़ेगा! इस सिलसिले में वह कितने ही नाम भी गिना जाता है जो राज्य-सत्ता के प्रतीक है।

पर्व बीस—

इतना कहने के बाद वह गरुड़ कुछ क्षणों के लिये शान्त हो जाता है, किन्तु उसके बाद ही फिर मुखर हो-उठता है, और कुछ राजाओं को, विशेषतया उन पुण्यात्मा सम्राटों को जोकि आँख और आँख की पलकों के रूप में उसके शरीर के अंग बन चुके हैं, बहुत ऊँचा उठा देता है। यह आँख 'डेविड' है और पलकें हैं रोमन-सम्राट 'ट्रेजेन' और इंग्लैंड के युवराज 'कान्स्टैंटाइन!' कहना न होगा कि वह जैसे ही उनका उल्लेख करता है वे अनमोल माणिक-रत्नों की भाँति लौ देने लगते हैं। वह कहता है कि यद्यपि ईसा के अवतार के पूर्व यह सब पृथ्वी पर जीवित रहे हैं तथापि इन सब की मुक्ति हो चुकी है, क्योंकि 'श्रद्धा', 'आशा' और 'दानशीलता' इनका पक्ष ग्रहण करती और इनका प्रतिनिधित्व करती रही हैं।

पर्व इक्कीस

जैसे-जैसे ये लोग ऊपर की ओर बढ़ते गये हैं बियेट्रिस का सौन्दर्य निखरता गया है, अतएव दान्ते इस समय एक बार फिर उसकी आँखों में डूब जाता है और अनुभव करता है कि वह मुस्कान अब उससे कोसों दूर है। इस पर बियेट्रिस उसे समझाती है कि अब उसमें मुस्कराने का साहस नहीं है, क्योंकि उसे आशंका है कि जिस प्रकार 'जोव' को देखते ही 'सेमेली'[1] अस्तित्वहीन हो-उठी थी, उसी प्रकार कहीं वह भी अपना अस्तित्व न खो बैठे !

× ×

इस बार फिर बियेट्रिस की आँखों की चुम्बकीय शक्ति से दान्ते छठवें घेरे से सातवें घेरे में आ जाता है। यह 'शनि' है, राज्य-सिंहासनों द्वारा परिचालित होता है और चिन्तन-प्रधान विरागी साधुओं और मठाधीशों का केन्द्र है। यहाँ दान्ते एक सीढ़ा देखता है, जिस पर वे शान्ति-पूर्वक चढ़ते हैं जिन्होंने वैराग्य ग्रहण कर ईश्वर के पवित्र चिन्तन में अपना सारा जीवन व्यतीत किया है। यह सब देखकर उसे बड़ा विस्मय होता है। सहसा ही यह ध्यान कर कि पहले की भाँति स्वर्गीय संगीत अब उसे नहीं सुनाई पड़ रहा—वह चिन्तित हो-उठता है, किन्तु दूसरे ही क्षण एक आत्मा उस सीढ़ी से उतरकर उसके पास आती है और उसे सूचित करती है कि इस लोक तक आने में स्वर्गीय संगीत इतना प्रखर और इतना सघन हो उठता है कि मानवीय-कान उसे सुन नहीं पाते या सुन नहीं सकते। इतना कहकर वह एक निरन्तर-चंचल ज्योतिष्चक्र में परिवर्तित हो जाती है। दान्ते यह रहस्य समझ नहीं पाता और एक दूसरी आत्मा से प्रश्न करता है कि इसका क्या मतलब है। वह उत्तर देती है कि वे महान आत्मायें जिनपर उनके जीवन-काल में मांसल-शरीर का अधिकार रहता है, किन्तु जो उसके बन्धनों से सर्वथा अनजान रहती हैं, स्वर्ग में अधिक तेज से चमकती हैं।

× ×

यह 'संत पीटर डैमियन' की आत्मा अपना परिचय देने के बाद विस्तार में उस स्थान का वर्णन करती है जहाँ कि उसने अपना आश्रम स्थापित किया था। इसके बाद वह घोषित करती है कि बहुत से आधुनिक धर्माचार्य इतने लोभी और इतने विलास-प्रिय रहे हैं कि अपने पापों के कारण वे या तो नरक में सड़ रहे हैं या 'परगेटरी' में।

इस बीच में जबकि यह आत्मा उपरोक्त आशय की बातचीत करती है, एक-एक करके

'[1]सेमेली' भी 'जूपिटर' को प्यार करती थी अतएव उससे जलने के कारण उसकी पत्नी 'जूनो' ने उसे समझाया कि वह 'जूपिटर' से एक वरदान माँगे और वह यह कि वह एक दिन अपने पूर्ण वैभव में उसे दर्शन दे। 'सेमेली' ने उसका कहा किया और और जूपिटर ने उसे वरदान दिया, किन्तु 'घनगर्जन के देवता' के अपने असली रूप में आते ही 'सेमेली' की निगाह उस पर न ठहर सकी और वह जलकर भस्म हो गई।

कितनी ही आत्मायें सीढ़ी से उतरती हैं, और त्याग एवं दान-सम्बन्धी किसी-न-किसी कार्य से नीचे के लोकों की ओर जाती हैं।

पर्व बाइस–

दाँन्ते को, सहसा ही, एक ध्वनि सुनाई पड़ती है और वह चौंक-उठता और भयातंकित हो उठता है। उसे इस स्थिति में देखकर 'संत पीटर डैमियन' उसे विश्वास दिलाता है कि स्वर्ग में उसे किसी प्रकार की भी हानि नहीं पहुँच सकती। इसके बाद बियेट्रिस उसका ध्यान कुछ आत्माओं की ओर आकर्षित करती है। इन सीढ़ी से उतर-रही आत्माओं में सबसे अधिक कांतिमान है 'संत बेनेडिक्ट'। यह दान्ते को समझाता है कि कैसे किसी ईश्वरीय योजना को सक्रिय-रूप देने के लिये ईश्वर-भक्त आत्मायें अपना स्वर्गीय-स्थान त्याग देती हैं। वह कहता है कि वह स्वयं (दान्ते) मनुष्यों को सावधान कर देने और यह चेतावनी देने के लिये चुना गया है कि अबसे उनमें से कोई भी स्वर्ग तक पहुँचने का साहस न करे क्योंकि स्वर्ग में प्रविष्ट होने की अनुमति मिलनी असम्भव है। तत्पश्चात् यह संत अपने पृथ्वी के जीवन का वर्णन करता है और चर्चा आते ही दान्ते के समकालीन विलास-प्रिय, पथ-भ्रष्ट मठाधीशों की कटु-आलोचना भी!

× × × ×

इस प्रकार बात समाप्त होते ही 'संत बेनेडिक्ट' अदृश्य हो जाता है। उसके अदृश्य होते ही रहस्यमयी बियेट्रिस सीढ़ियों के द्वारा, तारों के बीच से दान्ते को 'ध्रुव' नामक आठवें प्रदेश में ले आती है। यह लोक 'चेरुबिम' नामक द्वितीय कोटि के देवदूत के द्वारा परिचालित होता है। यहाँ बियेट्रिस घोषित करती है कि चूँकि वे मुक्ति के अंतिम लोक के बिल्कुल समीप हैं अतएव दान्ते की आँखों को निरभ्र आकाश की भाँति निर्मल हो जाना चाहिये और उन पर छाये हुये सारे बादलों को शीघ्र ही छँट जाना चाहिये। इसके बाद वह स्वयं उसकी निगाह पर पड़ा-अंतिम पर्दा भी हटा देती है, और अब उससे आग्रह करती है कि वह नीचे झुककर अभी-अभी पार-किये लोकों पर निगाह डाले और अनुमान करे कि कितना विराट लोक उसके पैरों के नीचे से निकल चुका है। दान्ते उसके आग्रह की रक्षा करता है। वह अपने संसार की हीनता पर मुस्करा उठता है और चन्द्र की मधुर चाँदनी अथवा सूर्य की तेज़ चमक की चिन्ता किये बिना तबतक उन सातों घूमते-हुये स्वर्ग-लोकों पर दृष्टि गड़ाये रहता है, जबतक की सृष्टि की रचना का सारा रहस्य उसकी समझ में नहीं आ-जाता!

पर्व तेईस–

बियेट्रिस अब भी उसके समीप खड़ी है! वह, अंत में, दान्ते को पिछले स्वर्गों के चिन्तन-मनन से दूर ले जाती है और उससे कहती है कि वह आकाश की ओर देखे। वह अपनी दृष्टि ऊपर करता है और ईश्वर की पहली झांकी देखता है। वह यह भी देखता है कि ईसा की माता और अपनी विजय पर फूला न समाता हुआ 'गिर्जा' उसके साथ-साथ चल रहे हैं, जैसे कि वे उसके

शरीर-रक्षक हों ! इस दृश्य से दान्ते की दृष्टि में इतनी चकाचौंध पैदा हो जाती है, इतना अधिक भय और आश्चर्य उसके हृदय और मस्तिष्क में घर कर लेता है कि वह जो कुछ देखता है उसपर देखकर भी विश्वास नहीं कर पाता। किन्तु शीघ्र ही नवों 'म्यूज़ेज़' के कभी-के-संगीत से भी मधुरतर संगीत उसके कानों में रस घोलने लगता है और वह गद्‌गद् हो उठता है। यही नहीं, वह यह भी अनुभव करता है कि इस संगीत के साथ-साथ उसके हृदय और मस्तिष्क का भी विस्तार और विकास हो रहा है।

× ×

दान्ते लक्ष्य करता है कि इसी बीच में ईसा की सहचरी आत्मायें उसकी माता 'मेरी' को लिली की कलियों का हार पहिनाती हैं और सब मिलकर इस 'स्वर्ग की महारानी' का गुण-गान करती हैं !

पर्व चौबीस—

अब दान्ते और बियेट्रिस की भेंट 'संत पीटर' से होती है ! यह श्रद्धा के विषय को लेकर दान्ते की परीक्षा लेना चाहता है और सर्वप्रसिद्ध उत्तर पाता है कि श्रद्धा और आस्था उन सारे उपादानों का सार है जिनकी हम आशा करते हैं, और उन सारी वस्तुओं के अस्तित्व का प्रमाण है जिन्हें हम देख नहीं पाते। यही नहीं कि 'संत पीटर' दान्ते के इस उत्तर का अनुमोदन एवं समर्थन करता है, बल्कि इसके बाद वह कितने ही आध्यात्मिक विषयों पर उससे विचार विनिमय भी करता है ! इस प्रकार दान्ते संत पीटर के नेतृत्व में आगे बढ़ता रहता है।

पर्व पचीस—

इसी समय एक पुण्यात्मा उनके पास आती है ! बियेट्रिस के अनुसार इसका नाम 'संत जेम्स' है। 'संत जेम्स' संत पीटर को अभिवादन करने और बियेट्रिस पर मुस्कराने के बाद रहस्योद्‌घाटन करता है कि वह 'आशा' के विषय पर दान्ते की परीक्षा लेने के लिये ईसा द्वारा भेजा गया है ! इस पर दान्ते दृष्टि ऊँची करता है, सामने के पहाड़ों को भर आँख देखता है, जैसे कि सौन्दर्य के अतिरिक्त इस बार वे उसके उत्तर के भी साधन होंगे ! वह उत्तर देता है कि भविष्य के गौरव, कीर्ति और प्रतिष्ठा की आकांक्षा और अपेक्षा का ही दूसरा नाम आशा है, और यह आकांक्षा और अपेक्षा ईश्वरीय कृपा और विगत पुण्यों का दूसरा रूप है। 'संत जेम्स' उसके इस उत्तर से इतना प्रसन्न होता है कि वह और अधिक चमकने लगता है। इतने में ही 'संत जॉन' आता है जो कि ईसा के हृदय-स्थल पर विश्राम करता रहा है। वह इतना अधिक चमक रहा है कि दान्ते बियेट्रिस की ओर मुड़ता है और जानना चाहता है कि वह कौन है, किन्तु वह अनुभव करता है कि बियेट्रिस उसके पास खड़ी है तो क्या, वह उसे देख नहीं रहा।

पर्व छब्बीस--

शीघ्र ही दान्ते को ज्ञात होता है कि 'संत जॉन' से फूटती हुई ज्योति की किरणों ने उसे थोड़े समय के लिये अंधा कर दिया है। दूसरे ही क्षण 'संत जॉन' उसे सूचित

करता है कि वह दान के विषय पर उसकी परीक्षा लेने के लिये भेजा गया है। इस पर दान्ते दान की ऐसी सुन्दर व्याख्या करता है कि स्वयं स्वर्ग गद्गद् हो उठता है और चारों ओर से 'पवित्र-पवित्र-पवित्र' अथवा 'धन्य-धन्य' की ध्वनि संगीत बनकर उसके कानों में पड़ने लगती है। इस समय बियेट्रिस का अपना स्वर भी स्वर्गीय स्वरों के साथ बज-उठता है। इसके बाद वह उसके आँख से अंतिम आवरण भी हटा देती है और फल यह होता है कि दान्ते तथ्य को एक बिल्कुल नये ढंग से देखने लगता है। वह अनुभव करता है कि उसने इस तरह कभी नहीं देखा-सुना!

अब दान्ते की दृष्टि चौथी आत्मा पर पड़ती है, जिसे वह तुरन्त ही पहचान लेता है। यह मनुष्य-जाति का जनक आदम है। वह उसके समीप आता है और नये सिरे से 'ईडेन' की कथा सुनाता है। इसके बाद वह कहता है कि सृष्टि के ४२३२ वर्ष बाद तक वह नरक में सड़ता रहा और इस लम्बी अवधि के बाद ईसा के कारण उसे नरक से त्राण मिला। यही नहीं, उसका कहना है कि मुक्ति देने के बाद ईसा ने उसे ऐसा सुयोग भी दिया कि वह इस लम्बे समय में हुये अपने वंशजों के भाग्य-परिवर्त्तनों पर भी ग़ौर कर सका!

पर्व सत्ताईस—

इसी क्षण स्वर्गीय संगति के स्वर स्पष्ट हो उठते हैं—'परमपिता धन्य है, उसका पुत्र (ईसा) धन्य है, और धन्य है स्वर्ग का अतिथि, दान्ते! दान्ते सुनता है और हर्ष-विह्वल हो उठता है। वह देखता है कि उसके समीप खड़ी चारों पुण्यात्मायें ज्योति-पुंज की भाँति जगमगा रही है, और स्वर्ग के सारे प्रदेश में शान्ति का मंगलमय राज्य है। इसी समय 'संत-पीटर' अपना रंग बदलता है। वह लोभ और लिप्साप्रियता का घोर खंडन करता है और इस सिलसिले में धर्माचार्यों के उत्तराधिकारियों की बहुत बड़ी आलोचना भी। उसकी समझ में इससे अधिक लज्जा और अपमान की बात क्या हो सकती है कि जो आरम्भिक पोप धर्म और न्याय के लिये हँसते-हँसते बलिदान हो गये उनके वंशज अपने को कुशल शासक भी न प्रमाणित कर सके और कुशासन और कुव्यवस्था के अपराधी ठहराये गये! उसका कहना है कि पोप को अपने वरदान-स्वरूप अधिकारों का प्रयोग उन युद्धों में कभी न करना चाहिये, जिनमें अन्याय और अधर्म की ध्वजा फहराती हो, यानी जो अन्याय और अधर्म के लिये ठाने गये हों और यह कि उसकी प्रतिमा को गिर्जे की विशेष मोहर में ही रहना चाहिये अन्य किसी सांसारिक लेख में नहीं।

अब बियेट्रिस दान्ते को जिब्राल्टर से लेकर बासफ़ोरस तक के पृथ्वी के भूखंड की विस्तृत झाँकी दिखलाती है और, जैसे ही यह माया उसकी आँखों से ओझल होती है, वह उसे उस नवें स्वर्ग में ले आती है! यह स्वर्ग स्वयं् स्थिर और अचंलल होते हुये भी संसार के सारे जीवन और संसार की सारी गति-विधि का उद्गम स्थान है।

पर्व अट्ठाईस—

दान्ते इस स्थान पर अपने चारों ओर की सृष्टि पर तब तक दृष्टिपात करता

रहता है जब तक कि उसके हृदय को स्वर्ग बनानेवाली बियेट्रिस उसकी आँखों से मरण-शीलता का आवरण भी नहीं हटा देती और यह अनुमति नहीं दे देती कि अब वह स्वयं उन नवों स्वर्ग-लोकों का अनुभव करे ! उसका कथन है कि ये सारे लोक ऐसे केन्द्रीय चक्र हैं जो आँखों में चकाचौंध पैदा करने वाले एक विन्दु के चारों ओर निरन्तर घूमते रहते हैं ! इनमें असंख्यक देवदूतों का निवास है, और इनसे प्रतिक्षण स्वर्गीय संगीत मुखर होता रहता है। कहना न होगा कि देवदूत इन स्वर्गीय प्रदेशों के निवासी ही नहीं है प्रत्युत इसके पुरोहित भी हैं।

पर्व उन्तीस—

बियेट्रिस दान्ते के विचारों की उलझन लक्ष्य कर उसकी शंकाओं का समाधान ही नहीं करती, प्रत्युत उसे कितनी ही ऐसी बातें बतलाती हैं जिनका ज्ञान प्राप्त कर वह बड़ा प्रसन्न होता है। इतना ही नहीं वह उसे सचेत करती है कि यदि वह चाहता है कि अन्य पुण्यातात्माओं की भांति उस पर भी ईश्वर की कृपा-दृष्टि हो तो उसे अहंकार और पाखंड से सदा के लिये विदा ले लेनी चाहिये, क्योंकि इनका लेशमात्र भी परमपिता को भक्त से कोसों दूर ले जाता है।

पर्व तीस—

इस समय तक बियेट्रिस का सौन्दर्य इतना निखर-उठता है और पहिले की अपेक्षा इतना अधिक विकसित हो जाता है कि उसका वर्णन करने में दान्ते अपने को असमर्थ पाता है और कहता है कि उसमें शक्ति नहीं है कि वह उसे शब्दों में उतार दे। किन्तु, एक बार फिर, वह अपनी आँखें उसपर गड़ा देता है, और ऐसा करते ही बियेट्रिस की सहायता से दसवें चक्र में पहुँच जाता है। यह विमल कांति से जगमगाता हुआ स्वर्ग का अंतिम और प्रमुख प्रदेश 'गोलोक' है। यहाँ उससे कहा जाता है कि वह उस नदी की भांति ही उसमें भी अवगाहन करे।

× ×

दान्ते अपनी युग-युग की ज्ञान-रूपी तृष्णा को शान्त करने के लिये इस दैवी जल को बार-बार ग्रहण करता है। शीघ्र ही उसकी निगाह स्वर्ग की राज-सभा पर पड़ती है! यह राज-सभा असंख्यक राज सिंहासनों से सुसज्जित है, और इन सिंहासनों पर सारी मुक्ति-प्राप्त, ईश्वर-भक्त आत्मायें विराजमान हैं। ये सारे सिंहासन एक अद्वितीय दीप्ति-केन्द्र (ईश्वर) के चारो ओर इस तरह व्यवस्थित हैं कि लगता है कि एक रत्न-जटित गुलाब इस तरह अपनी पलकें खोल रहा है कि उसपर किसी की निगाह नहीं टिकती!

प इकतीस—

ये सारी हिम-धवल वस्त्र-धारी मुक्तात्मायें इस शाश्वत गुलाब की पंखुरियाँ हैं! इन पंखुरियों पर लालों की भाँति लौ देते हुये देवदूत प्रतिक्षण मंडरा रहे हैं; और, कहना न होगा

कि ज्योंही ये मधुमक्खियों के रूप में इस फूल के गुलाबी हृदय में पैठती हैं उनके जगमग करते हुये चेहरे, उनके सोने के पर और उनके दूधिया आवरण इस दृश्य में कल्पनातीत श्री-भर देते हैं।

दान्ते देर तक आश्चर्य से अवाक् होकर इस दृश्य को देखता रहता है, प्रश्न का उत्तर पाने के लिये बियेट्रिस की ओर मुड़ता है और देखता है कि वह उसके समीप नहीं है, यानी अन्तर्ध्यान हो चुकी है। इसी समय गौरव और वैभव की साकार-रूप एक आत्मा उसके समीप आती है और उससे अनुरोध करती है कि वह आँखें ऊंची कर सिंहासनों की तीसरी पंक्ति को ध्यान से देखे! उसका कहना है कि बियेट्रिस उसे अपने नियत स्थान पर दिखलाई पड़ेगी! दान्ते उत्सुक होकर बताई हुई दिशा में दृष्टि दौड़ाता है। उसकी निगाह तुरन्त ही बियेट्रिस पर जा-ठहरती है! वह उसकी प्रार्थनाओं के बदले में उसे अपनी मुस्कानों की किरणों से नहला देती है। इसके बाद वह मुड़ती है और ज्योति के चिरन्तर आगार की ओर अपना मुँह कर लेती है।

यह आत्मा दान्ते को सूचित करती है कि वह अंत तक उसकी सहायता करने के लिये बियेट्रिस के द्वारा भेजी गई है। वह अपना परिचय भी देती है और कहती है कि वह कुमारी 'मेरी' के दर्शनों के चिर-अभिलाषी 'संत बरनर्ड' की आत्मा है! इस संत को दर्शन तो क्या, अभी-अभी 'मेरी' से वरदान भी मिल चुका है। वह जानती है कि दान्ते भी उसके दर्शन कर बहुत प्रसन्न होगा अतएव वह उसका ध्यान उस रहस्यात्मक गुलाब की प्रखरतम ज्योति-किरणों की ओर आकर्षित करती है और कामना करती है कि वह उसके दर्शन से कृतकृत्य हो!

पर्व बत्तीस—

दान्ते की आंखें चमकने लगती हैं, और वह मेरी को यथास्थान लक्ष्य नहीं कर पाता, अतएव 'संत बरनर्ड' की आत्मा संकेत से उसकी सहायता करती है। अब उसके नेत्र आभार की भावना से खिल उठते है। वह देखता है कि ईव, 'बियेट्रिस,' 'सारा,' 'जूडिथ,' 'रेबेका' आदि 'मेरी' के चरणों में स्थित हैं और धर्माचार्य 'जॉन,' 'संत आग्स्टाइन,' 'संत फ्रैंसिस' और 'संत बेनेडिक्ट' पीछे की ओर उसके समीप खड़े हैं।

× ×

'संत बरनर्ड' की आत्मा एक बार फिर मुखर होती है और दान्ते को समझाती है कि ईसा के शुभागमन में विश्वास करनेवाले लोग इस अलौकिक गुलाब के एक भाग में हैं और कभी-के आ-गये ईसा पर आस्था रखनेवाले लोग दूसरे भाग में! किन्तु अब ये सारी आत्मायें बन्धन मुक्त हैं और यद्यपि भिन्न-भिन्न पदों पर आसीन हैं तथापि, अपने पदों से सर्वथा सन्तुष्ट हैं। इतना कहने के बाद वह एक आकृति दान्ते को दिखलाती है जो ठीक ईसा की तरह है। दान्ते ध्यान से देखता है और तब उसे ज्ञात होता है कि वह ईसा न होकर 'संत जेब्रईल' है। शीघ्र ही वह 'संत पीटर,' 'मोजेज़,' 'संत अन्ना' आदि के साथ 'संत लूशिया' को भी वहीं

बिराजमान देखता है। इसी 'संत लूशिया' की प्रेरणा से बियेट्रिस ने दान्ते को स्वर्ग में आमन्त्रित किया था!

पर्व तैंतीस—

'मेरी' सारे प्रार्थी समुदाय को मुँह मांगा वरदान दे रही है, और कभी-कभी तो, ऐसा भी करती है कि मांग सामने नहीं आ पाती, और उसकी पूर्ति हो जाती है। इसी समय 'संत बरनर्ड' बहुत भावभरे शब्दों में, उससे प्रार्थना करता है कि वह स्वर्गीय ऐश्वर्य की एक हल्की-सी झांकी दान्ते को देख लेने दे! तत्पश्चात यह देख कर कि 'मेरी' प्रसन्न है और प्रार्थना उसके अनुकूल पड़ रही है, वह दान्ते से ऊपर की ओर देखने का आग्रह करता है।

× ×

पाठकों को ध्यान होगा कि थोड़े समय पहले दान्ते की आखों से माया का अंतिम पर्दा भी हटाया जा चुका है, अतएव अपनी विशुद्ध और विमल दृष्टि की कृपा से वह 'त्रिदेव' के क्षणिक दर्शन करता है। यह मूर्ति अलौकिक प्रेम का संयुक्त-रूप है और मानवीय भाव-प्रकाशन के लिये इतनी दुर्लभ और इतनी उदात्त है कि दान्ते घोषित करता है कि वह शब्दों द्वारा व्यक्त होने के लिये बनी ही नहीं!

× ×

अंत में दान्ते पाठकों को विश्वास दिलाता है कि यद्यपि इसके कारण उसकी आँखों में चकाचौंध पैदा हो गई है, तथापि इस अलौकिक छवि से उसका जी अभी भरा नहीं और उसकी अभिलाषा निरन्तर चंचल रहनेवाले सृष्टि-चक्र की भाँति बढ़ती ही जा रही है। इसका कारण भी है, और वह यह कि उसे शक्ति प्रदान करने में उस प्रेम का हाथ है जो कि आकाश सूर्य्य और आकाश के सितारों को जीवन और गति प्रदान करता है! उसकी कामना है कि यह दृश्य सदैव ही उसकी आँखों के आगे रहे!

× ×

इस प्रकार यह महान काव्य समाप्त होता है!

———

अरबी और फ़ारसी महाकाव्य—

ज्योंही कोई अरब ऊँट पर सवार होकर ऊँट की प्रकृति के अनुसार उसके अनगढ़ किन्तु दृढ़ कूबड़ पर इस तरह झुका कि उसका शरीर क़रीब-क़रीब दोहरा हो गया, उसी समय उदास, सुनसान और लम्बे रेगिस्तानों में इस पार से उस पार जाते हुये कारवानों ने उस अरब के कंठ में स्वर ही नहीं प्रत्युत गीतों की भी सृष्टि की। किन्तु इन ऊँट-सवारों द्वारा इस प्रकार रेगिस्तानी राहों में गाई गईं सारी कवितायें बहुत छोटी हैं, न तो वे महाकाव्यों-सी धारावाहिक हैं और न उनकी भाँति वेगपूर्ण! फिर, ये सब मिलती भी नहीं, क्योंकि छठवीं शताब्दी में पहली बार यात्रियों ने अरबी-भाषा को व्यक्त करने के लिये सीरिया की वर्णमाला का सहारा लिया और सब कहीं प्रचलित और प्रिय गीतों के शब्द-बद्ध रूप सुरक्षित रख-छोड़ने की प्रथा आरम्भ हुई, अतएव इस समय के पहले का अधिकांश साहित्य अनुपलब्ध है! कहना न होगा काव्य का लिखित-रूप सामने आते ही कवि को विद्वान, भविष्य-द्रष्टा और न जाने क्या-क्या समझा-जाने लगा, यहाँ तक कि वे जादू जगाने और शत्रु की बरबादी का दिन निश्चित कर देने के लिये 'बलअमी' की भाँति ही घेरे जाने लगे।

इस्लाम के पूर्व की सबसे पुरानी कवितायें सुनहरी स्याही में लिखी जाती थीं और काबा और मक्का में रखवा दी जाती थीं। आज भी अरब इन्हें उसी श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखता है और 'मुअल्लक़ात' से नाम से पुकारता है।

इसमें से अधिकांश कविताओं ने पूर्व में महाकाव्य का रूप धारण कर लिया। इनमें कुछ निश्चित नियमों का पालन किया गया है, और इन सभी कविताओं में कवि ने अनिवार्य-रूप से अपनी कविता का आरम्भ उस स्थान के उल्लेख से किया है जिसे कि वह और उसके साथी पीछे छोड़ आये हैं। इसके बाद उसने स्वयं तो आवश्यक-रूप में शोक प्रकट किया ही है, अपने साथियों से भी आग्रह किया है कि वे रुकें और उन तमाम रेगिस्तान के निवासियों की याद में आंसू बहायें, जो कि अपने बिछुड़े-साथी अथवा पानी की खोज में अपने अन्य मित्रों और स्वजनों से अलग हुये और फिर कभी न लौटे! इसके बाद वह प्रेम के संसार में आता है और तीव्र वासनाओं द्वारा सताये जाने पर हार्दिक क्षोभ प्रकट कर नीले आसमान को छूने की चेष्टा की है। इस प्रकार हमारी बुद्धि और हमारा मन अपनी ओर आकर्षित कर, पुरस्कार की आशा से सामयिक बादशाह, शाहज़ादे या हाकिम का गुणगान कर उसने कविता समाप्त कर दी है। कहना न होगा कि इन बादशाहों, शाहज़ादों और हाकिमों की उदारता ही इनकी जीविका-वृत्ति थी। ऐसे सामन्त युग में सामन्त-यशोगान की प्रथा स्वाभाविक है।

निकट पूर्व में आज भी ऐसे कितने ही लोग मिलते हैं, जिनका व्यवसाय है कहानी कहना, इसके लिये इधर से उधर यात्रायें करना और कविताओं और युग-युग से चली-आनेवाली पौराणिक कहानियों के द्वारा नगरों और खेमों में रहनेवाली जनता का मनोरंजन कर जीवन बिता देना। इन सारी कथाओं में रेगिस्तानी झगड़ों और रेगिस्तानी लड़ाइयों का वर्णन है। ये सभी

'अय्यामेअरब' नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

× ×

अब्बासिया के द्वारा बग़दाद की स्थापना होते ही फ़ारस ने राजनीति में ही नहीं, साहित्य में भी अपना रंग दिखलाना और लोगों को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। किन्तु ख़लीफ़ा-वर्ग के राज्यों की प्रमुख भाषा इस समय भी अरबी थी! अरबी-साहित्य की महानतम कृति 'अलिफ़लैला' है! यह कथा-सूत्र में गुंथी कुछ कहानियों का संग्रह है और इसके लेखक का नाम-आदि सबकुछ लापता है। इसकी कथा-वस्तु का सारांश है यह है कि किसी अरबी बादशाह ने स्त्रियों के त्रिया-चरित्र और उनके दुराचारों से अपनी रक्षा करने के लिये निश्चय किया कि वह प्रतिदिन सुबह एक पत्नी चुनेगा और दूसरे दिन सुबह होते-होते उसे मरवा डालेगा। उसने इस निश्चय के अनुसार कार्य भी किया। अतः उसकी नृशंसता और इस घोर हत्या से तंग आकर दो बहिनों ने उसका अन्त कर देने का संकल्प किया और इस कार्य में अपने जान की बाज़ी लगा-देने की ठान ली! इनमें बड़ी बहिन बादशाह से प्रस्ताव कर उसकी रानी बन गई और रानी बन जाने के बाद उससे गिड़गिड़ाने लगी कि वह उसकी बहन को वह अंतिम रात उसके साथ बिता-लेने की आज्ञा दे दे। राजा मान गया और अपनी बहन का दिल बहलाने के बहाने रानी ने एक कहानी कहना आरम्भ किया, किंतु चालाकी से उसे अधूरा ही छोड़ दिया। उधर बादशाह इस कहानी का बाक़ी हिस्सा सुनने के लिये इतना उत्सुक हो गया कि दूसरा दिन हो गया और नियम के अनुसार उसने उसके मार डालने की आज्ञा न दी! किंतु एक कहानी समाप्त हुई और दूसरी शुरू हो गई! इस तरह वह चतुर कहानी कहनेवाली अपनी कहानियों से अपने पति और अपनी बहिन को पूरे १०१ दिनों तक मन्त्र-मुग्ध करती रही।

इस श्रृंखला की सारी कहानियों का वास्तविक जन्म-स्थान फ़ारस है और ये सभी 'हज़ार अफ़सानें' नामक ग्रंथ में मिलती हैं, जिसका दसवीं शताब्दी में अरबी में अनुवाद हुआ! किंतु कुछ अधिकारियों का दावा है कि इन कहानियाँ का जन्म-स्थान भारतवर्ष है और सिकन्दर की दिग्विजय के कुछ ही वर्ष पहिले वे यहाँ से फ़ारस गईं! जो भी हो यह सब कहानियां इतनी प्रचलित हैं कि सभी सभ्य भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है और, यहाँ तक कि, अब ये गद्यात्मक महाकाव्य कहलाती हैं!

अरब इसके अतिरिक्त भी एक वीर-काव्य को लेकर भी बड़ी-बड़ी डींगें मार सकता है। इसका नाम 'क़ससे आरतार' है! इसका लेखक 'अल असमई' (७३६-८३१), को बतलाया जाता है। इसमें मुहम्मद के अवतार के पहले के अरब इतिहास की सारी प्रमुख घटनाओं का वर्णन है, अतएव इसे 'अरब की इलियड' भी कहते हैं!

× ×

'क़ससे बनहिलाल' और 'क़ससे अबूज़ैद,' ३८ पौराणिक कथा-चक्र के ही एक भाग हैं, और मिश्र में आज भी अत्यधिक प्रचलित हैं!

'शाहनामा' या सम्राटों की कथा—

'शाहनामा' फ़ारसी का प्रमुख महाकाव्य है। इसकी रचना 'अबुल क़ासिम मंसूर' नामक कवि ने की थी! इस कवि की स्वर माधुरी से प्रसन्न होकर उसके स्वामी ने उसे 'फ़िरदौसी' या स्वर्ग के-गायक की उपाधि दी थी। अतएव 'अबुल क़ासिम', 'फ़िरदौसी' के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध है। यह 'अरब का होमर' भी कहा जाता है।

× ×

फ़ारस के शाह महमूद ने, जिसका जीवन-काल अनुमानतः ६२० ई० है, अपने देश की तमाम प्रसिद्ध और प्रचलित कथाओं को पद्य-बद्ध करा-डालने का संकल्प किया और प्रत्येक १००० पदों के लिये १००० स्वर्ण-मुद्रायें देने का वायदा कर यह कार्य 'फ़िरदौसी' को सौंपा। 'फ़िरदौसी' इस सुयोग से बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि उसकी बहुत दिनों की साध थी कि वह एक घाट बनवाये और बराबर बढ़-आनेवाली पास की नदी की हानि से अपने नगर की रक्षा करे, अतएव उसने इस कृपा के लिये शाह को हृदय से धन्यवाद देकर आग्रह किया कि वह उसका यह पारिश्रमिक अपने पास रक्खे और पुस्तक समाप्त होने पर ही उसे इकट्ठा दे!

इस प्रकार कार्य आरम्भ हुआ और साठ हज़ार पदों की यह रचना तैंतीस वर्षों में समाप्त हुई। अब जब शाह के प्रधान मंत्री ने पद गिने तो उसकी नीयत बिगड़ गई, और उसने ६०,००० स्वर्ण मुद्राओं की जगह उतनी ही रजत-मुद्रायें 'फ़िरदौसी' के पास भिजवा दीं। इस पर फ़िरदौसी इतना खीझ उठा कि उसने वह सारी सम्पत्ति सम्पत्ति-लादकर लानेवालों में बाँट दी और एक बड़ी ही अपमानजनक, गंदी कविता लिखकर शाह के पास भेजी! इसके बाद ही वह माज़िनदरान भाग गया, परन्तु यहाँ अधिक दिन न टिका और बग़दाद आ-पहुँचा। यहाँ वह अधिक समय तक इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा और अन्त में फिर तूस लौट आया!

सदियों से कहावत चली आती है कि इस बीच में शाह को अपने महामंत्री की काली-करतूत का पूरा-पूरा पता चल गया, अतएव, यह सुनते ही कि फ़िरदौसी एक बार फिर लौट आया है, शाह ने तुरन्त ही ६०,००० स्वर्ण-मुद्रायें उसके पास भेजीं, किन्तु उसका यह पुरस्कार उसके पास तब पहुँचा जब वह दम तोड़ चुका था और उसकी लाश क़ब्र में दफ़नाई जा रही थी। उसकी पुत्री ने भी आवश्यकता से कहीं अधिक देर से भेजा गया-वह घृणित धन अस्वीकार कर दिया। अंत में उसके एक सम्बन्धी ने वे ६०,००० मुद्रायें लेकर उनसे वह घाट

बनवा दिया जिसे एक लम्बी कामना के बाद भी 'फ़िरदौसी' मूर्तिमान न कर सका था और मर गया था !

× ×

इस प्रकार खोज करने पर पता चलता है कि इन फ़ारसी शाहों अथवा राजाओं ने अपने देश की कथाओं को एकत्रित करने के कितने ही फुटकर प्रयत्न किये, किन्तु इनमें से इने-गिने ही सफल हो सके और कुछ गिनती की कथायें ही फ़ारस लाई जा सकीं क्योंकि अरबों की विजय के समय इनमें से बहुतेरी इधर-उधर भटक कर लुप्त हो गईं।

× ×

यद्यपि कुछ अधिकारियों का दावा है कि फ़िरदौसी का काव्य फ़ारस का पूरा इतिहास है तथापि इसमें अनहोनी और अलौकिक घटनाओं की मात्रा इतनी अधिक है कि यदि इसकी शैली इतनी अपूर्व और आश्चर्यजनक न होती तो इसका अब तक काल के सिर पर चढ़कर अमर रहना असम्भव हो जाता। ख़ैर, कवि का अपना दावा तो यह है कि उसने जो कुछ भी लिखा है उस पर किसी ज्वार-भाटे या मौत की छाया पड़ने से तो रही ही, वह ऐसा भी है कि काल के विस्तृत समुद्र में इस छोर से उस छोर तक फैले हुये अजन्मे-मनुष्य भी उसे पढ़ेंगे और उस पर मनन करेंगे !

× ×

कविता का आरम्भ एक शासक के वर्णन से होता है। यह शासक इतना धनी और सम्पन्न है कि दुर्बुद्धि उससे ईर्ष्या करने लगती है और उसे जीत लेने के विचार से एक शक्तिशाली देव उसके पास भेजती है। इस राक्षस के प्रयत्नों से उस शासक का पुत्र मार डाला जाता है, अतएव पुत्र-शोक न सह पाने के कारण राजा भी अपना दम तोड़ देता है। अब उसका पौत्र उसके सिंहासन पर बैठता है। यह राजा ४० सदियों तक राज्य करता है और इस लम्बे राज्य-काल में एक नई ज़िन्दगी और आग अपनी प्रजा में भर देता है। वह प्रजा को सिंचाई सिखाता है, खेती सिखाता है और सारे पशुओं के नामकरण करता है।

उसके मरने के बाद उसका उत्तराधिकारी पुत्र अपने राज्य के लोगों को कातना और बुनना बतलाता है, किन्तु उधर उसे संहार करने की भावना से वह राक्षस उसे स्वयं पढ़ने और लिखने की कलाओं से उसका परिचय कराता है ! इसके बाद सुप्रसिद्ध फ़ारसी योद्धा जमशेद इस क्रम में आता है। कहा जाता है कि यह ७०० वर्षों तक राज्य करता है और फ़ारस के राष्ट्र को पुरोहित, योद्धा, शिल्पकार और किसान चार वर्गों में बाँट देता है। इस का राज्य-काल फ़ारस का स्वर्ण-युग कहा जाता है, किन्तु इसी समय दुनिया पहिले-पहिल कई भागों में बाँटी जाती है, और परसीपोलिस नामक नगर की नींव पड़ता है ! इस नगर के ध्वस्त, शाही-महल के शेष दो खम्भों पर फ़ारस के राष्ट्रीय-पर्व नौरोज़ को जन्म देनेवाले सम्राट का नाम आज भी अंकित है !

किन्तु इतने महान और आश्चर्यजनक कार्यों में सफलता प्राप्त कर लेने के कारण जमशेद इतना अभिमानी और स्वयंभू हो-उठता है कि वह अपनी ही पूजा करना और करवाना चाहता है। इस पर पड़ोस का एक ज्वालामुखी धूम्र और भस्म उगलने लगता है और अगणित

साँप राज्य भर में फैलकर प्रजा को डसने लगते हैं। अतएव दुर्बुद्धि को मौक़ा मिलता है। वह अरब के राजकुमार ज़ोहाक को प्रेरित करती है और वह जमशेद को भगाकर उसकी गद्दी पर बैठ जाता है। यद्यपि ज़ोहाक सात्विक प्रकृति का परम साधु व्यक्ति है तथापि दुर्बुद्धि उसे अपने वश में कर लेती है और रसोइये के रूप में उसके साथ रहने लगती है।

एक बार यह रसोइया अपने किसी कार्य से ज़ोहाक को खुश कर लेता है और पुरस्कार स्वरूप उसके कंधों के बीच के स्थान को चूमने की आज्ञा चाहता है। राजा कुछ समझ नहीं पाता और उसकी बात मान लेता है। किन्तु जैसे ही रसोइया शाही-पीठ चूमने लगता है, वैसे ही वहाँ से दो साँप निकल पड़ते हैं। ये साँप किसी प्रकार मारे नहीं जा सकते और मनुष्यों के दिमाग़ों को भोजन-रूप में पाने पर ही शान्त और स्थिर रह सकते हैं। कहना न होगा कि इस घटना के बाद से उसे लोग साधारणतया 'साँपोंवाला राजा' कहने लगते हैं।

ज़ोहाक अधीर हो उठता है और अंत में अपनी प्रजा को इन अद्भुत साँपों का शिकार बनाने पर विवश हो जाता है। यह शिकार आरम्भ हो जाता है और प्रति दिन दो मनुष्यों की हत्या होती है। फल यह होता है कि यह क्रम चलता-जाता है और आनेवाले १००० वर्षों में पूरा राज्य वीरान हो जाता है। स्वभावतः सारे फ़ारस-निवासी अपने राजा पर खीझ उठते हैं और जब उसका सत्रहवाँ और अंतिम पुत्र भी साँपों के भोजन के लिये पकड़वा-मँगवाया जाता है तो कावा नामक एक लोहार विद्रोह कर-उठता है। वह अपने चमड़े के अंगे से झंडे का काम लेकर शेष सारे लोगों को अपने चारों ओर जमा कर लेता है और उनसे कहता है कि उसके उस चमड़े के अंगे को अपनी जातीय-ध्वजा मानकर यदि वे उसके नीचे युद्ध करने का संकल्प करें तो वह उनकी भेंट जमशेद के फरीदूँ नामक पुत्र से करा सकता है! उसका कहना है कि उसका जन्म बहुत रहस्यात्मक ढंग से जमशेद के प्रवास के समय हुआ है और उसे ही वास्तव में उनका राजा होना चाहिये! इस पर सारे फ़ारस-निवासी आनन्द से विह्वल हो-उठते हैं और उस झंडे को अपना झंडा मानकर उसके नीचे लड़ने का संकल्प करने के बाद उस लोहार के नेतृत्व में फ़रीदूँ से भेंट करने जाते हैं।

× ×

इधर यद्यपि एक स्नेहमयी गाय ने ही एक रहस्यात्म ढङ्ग से माँ और दाई के रूप में फ़रीदूँ का लालन-पालन किया है तो भी ज़ोहाक उसे कई बार स्वप्न में देखता है! शीघ्र ही उसका भय साकार होता है।

जमशेद का पुत्र फ़रीदूँ अपनी माता-गाय के मरते ही उसकी बड़ी-बड़ी हड्डियों से एक गदा तैयार करता है और इस प्रकार हथियार से लैस होकर अपने देश-वासियों के साथ ज़ोहाक पर हमला करता और उसे हरा देता है। इसके बाद वह ज़ोहाक को लोहे की ज़ंजीरों के द्वारा एक पहाड़ में जकड़वा देता है। यहां सांपों का शिकार हो-गये तमाम लोग-भूत बनकर उसे १००० वर्ष तक सताते रहते हैं।

इस प्रकार फ़रीदूँ अपनी शक्ति से जीते हुए इस राज्य पर ५०० वर्षों तक इस तरह

शासन करता है कि फ़ारस पृथ्वी का स्वर्ग बन जाता है।

इस लम्बे राज्य-काल के अंतिम दिनों में फ़रीदूँ अपने तीनों पुत्रों को पत्नियों की खोज में अरब भेजता है और उनके लौटने पर उनकी शारीरिक और मानसिक परीक्षा लेने के लिये एक परवाले-राक्षस का रूप बनाकर उनका रास्ता घेर लेता है। इस पर सबसे बड़ा लड़का यह कहकर, बहादुरी से, पीछे हट जाता है कि बुद्धिमान और चालाक व्यक्ति राक्षसों से नहीं लड़ा करते, किन्तु उसका छोटा भाई बिल्कुल लापरवाही से बिना अपनी रक्षा की चिन्ता किये, उसका सामना करने के लिये आगे बढ़ता है, और तीसरा, न केवल अपने भाई को बचाने के लिये ही बल्कि व्यावहारिक बुद्धि से इस दैत्य की गर्दन उतार लेने के लिये भी, अपने भाई के साथ अगला क़दम उठाता है। इस प्रकार यह सब देख-समझकर राजा अपना वास्तविक रूप धारण कर लेता है और कहता है कि गोकि वह अपने राज्य को तीन भागों में विभाजित करना चाहता है तो भी फ़ारस और ईरान का सर्व श्रेष्ठ राज्य-भाग वह ईर्ज नामक अपने छोटे पुत्र को ही देगा क्योंकि उसने साहस के साथ-साथ बुद्धिमानी का भी परिचय दिया है।

शीघ्र ही राजकुमारों का विवाह हो जाता है और थोड़े समय बाद ईर्ज नामक छोटे पुत्र के यहाँ एक पुत्री का जन्म होता है! इस कन्या का लालन-पालन उसका बाबा फ़रीदूँ करता है। यथा समय यही पुत्री मनूचेहेर नामक पुत्र की माँ होती है।

अब राज्य का बटवारा होता है और बाक़ी दोनों भाई एक होकर ईर्ज का राज्य-भाग भी उससे छीन लेना चाहते हैं। बात बढ़ जाती है और यद्यपि वह स्वयं मार डाला जाता है, किन्तु उसका नाती मनूचेहेर अपने नाना की मृत्यु का बदला लेने के लिये अपने चचेरे नानाओं को हरा देता और मरवा डालता है। इसके बाद वह स्वयं सिंहासन ग्रहण करता है और अपने प्रिय सेवक को अभी अभी जीते राज्यों में से एक राज्य का शासक बना देता है। यह काले बालों-वाला काला आदमी अपने नये वैभव से फूला नहीं समाता और तबतक उसका पूरा-पूरा सुख भोगता है जबतक उसे यह ज्ञात नहीं होता कि उसके अभी-अभी हुए पुत्र के बाल हिम से श्वेत हैं।

इतना सुनते ही वह उस ज़ाल नामक बच्चे को अभिशाप का जीता जागता अवतार समझकर अलबुर्ज़-पर्वत पर छोड़ आता है और सोचता है कि कुछ ही क्षणों में उसका दम निकल जायेगा। किन्तु वह नहीं जानता कि 'सीमुर्ग़' या' 'ईश्वरीय विहग' नामक सोने के परोंवाली एक अपूर्व बाज़ की मादा इस पहाड़ की चोटी पर रहती है। यही नहीं, बल्कि यहाँ उसने आबनूस और चन्दन का एक घोंसला भी बना रक्खा है, इस घोंसले को सुगन्धित पदार्थों से पाट रक्खा है और उसमें उन सभी प्रकार बहुमूल्य रत्नों का ढेर लगा रक्खा है जिनकी चमक देखकर-देखकर वह फूली नहीं समाती। अतः इस बच्चे के रोने की ध्वनि सुनकर वह नीचे उतरती है, उसे बड़ी सावधानी से अपने शिकारी पंजों से साधकर अपने घोंसले में ले जाती है और अपने दो बच्चों के समीप ही लेटा देती है। यह दोनों बच्चे इस शिशु-राजकुमार से बड़ा स्नेह करते हैं, लेकिन जबतक वह सयाना होकर वह उन रत्नों से खेलने लायक हो-हो उसके बहुत पहले ही वे

विस्तृत आकाश में उड़ने योग्य ले-जाने और उड़ने लगते हैं।

किन्तु ज़ाल के आठ वर्ष के होते ही उसका पिता अपनी भयंकर भूल अनुभव करता है और सोचता है कि उसने बड़ा भारी पाप किया है। इसी समय यह स्वप्न देखकर वह बहुत सन्तोष और सुख लाभ करता है कि उसका पुत्र अभी जीवित है और 'सीमुर्ग़' की देख-रेख में बड़ा हो रहा है। अतएव वह शीघ्र ही उस पहाड़ पर जाता है और उस देवी विहग से अपने पुत्र की भीख मांगता है। इस पर वह सोने के परोंवाली बाज़ की मादा उस बच्चे को एक पर देकर आदेश देता है कि आवश्यता पड़ने पर वह उसे आग में डाल दे। इसके बाद उसे जी भर प्यार करने के बाद वह उसे उसके पिता को सौंप देता है।

अब उसका पिता किशोर ज़ाल का पालन-पोषण करता है, किन्तु थोड़े ही दिनों में अपनी शक्ति और अपनी वीरता के लिये वह इतना प्रसिद्ध हो जाता है कि अब निर्विवाद हो जाता है कि समय आने पर वह संसार का महानतम योद्धा बनेगा।

थोड़े समय बाद अपनी युवावस्था के आरम्भ में ही यह वीर काबुल की यात्रा करता है! यहाँ उसकी निगाह रोदाबा नामक राजकुमारी पर पड़ती है! यह 'राजकुमारी सांपोंवाले' राजा की जाति की है। इधर भूरे बालोंवाले इस युवा योद्धा के आने की सूचना से राज-दरबार में इतनी खलबली मच जाती है कि राजकुमारी उसकी प्रशंसा-मात्र से उससे प्रेम करने लगती है और उससे मिलने को उत्सुक हो-उठती है।

एक दिन राजकुमारी की कुछ दासियाँ ज़ाल के पड़ाव के समीप गुलाब के फूल चुन रही हैं कि ज़ाल एक चिड़िया पर निशाना लगाता है। यह चिड़िया इन दासिओं के बीच आ-गिरती है और इस तरह इन सबको उसके पास पहुँचने का सुयोग मिल जाता है। उधर वह स्वयं भी रोदाबा के सौन्दर्य की इतनी प्रशंसा सुन चुका है कि उसकी दासिओं को अपने समीप पाते ही वह उनसे उसके विषय में कितने ही प्रश्न करता है और उनके चलते समय राजकुमारी के लिये कितने ही रत्न उन्हें देता है। वे इन उपहारों को रोदाबा के पास ले जाती हैं। ये उपहार भेंट की कड़ी बन जाते हैं और राजकुमारी तुरन्त ही ज़ाल को बुलवा भेजती है। वह जाता है और राजकुमारी को खिड़की के नीचे पहुंचकर ऐसे मधुर स्वरों में विहाग गाता है कि राजकुमारी दूसरे ही क्षण बारजे पर आ जाती है और अपने लम्बे-काले केश-पाश नीचे लटकाकर संकेत करती है कि वह इनके सहारे ऊपर चढ़ आये। किन्तु यह सोचकर कि राजकुमारी को किसी प्रकार की चोट न पहुँचे वह उसकी वेणी का सहारा न लेकर एक क्षण बाद ही कमन्द की युक्ति से सरलता से उसके पास पहुँच जाता है। वहाँ यह फ़ारस का 'रोमियो' अपनी इस 'जूलियट' का प्रणय लेकर उसे पत्नी बना लेने की प्रतिज्ञा करता है।

प्रातःकाल इस अज्ञात, रहस्य-संयोग की बात राजा और रानी के कानों तक पहुँचती है। अब वे इस युवा वीर को बुलवाते हैं और भरे-दरबार में चाहते हैं कि वह अपने को राज-कुमारी का अधिकारी सिद्ध करे। इस पर ज़ाल छः पहेलियाँ सुलझाकर अपनी बुद्धिमत्ता का ही परिचय नहीं देता, बल्कि अपनी अन्य योग्यताओं और विशेषताओं के विस्मयजनक उदाहरण भी

उनके सामने रखता है। इसी समय देववाणी होती है कि इस संयोग के परिणामस्वरूप एक ऐसे अभूतपूर्व योद्धा का जन्म होगा जो अपनी मातृ-भूमि की सभी प्रकार मर्यादा बढ़ायेगा। इस प्रकार अब सब भाँति सन्तुष्ट होकर राजा-रानी उसे अपनी पुत्री के साथ विवाह करने की अनुमति दे देते हैं।

विवाह हो जाता है और यह नव दम्पति कितने ही वर्षों तक सुख और आनन्द का जीवन व्यतीत करते हैं कि एक दिन रोदाबा का प्राण संकट में पड़ जाता है। ज़ाल को उस देव-विहग की बात याद है, अतएव वह तुरन्त ही उसके द्वारा दिया गया पर आग में डाल देता है, किन्तु घबड़ाहट के कारण उसका हाथ इस तरह काँप रहा है कि उसका एक कोना ही जल पाता है। फिर भी उसका कोना ही इतना अधिक हो जाता है कि 'सीमुर्ग़' तुरन्त ही आ-पहुँचती है। यहाँ पहुँचते ही वह पहले अपने प्रिय बालक की चिन्ता करती है और फिर उसके कान में जादू का एक ऐसा शब्द फूँक देती कि है उसके द्वारा वह अपनी पत्नी की जान तो बचा ही लेता है, रुस्तम नामक वीर, और शक्तिशाली पुत्र का प्रतापी पिता होना भी उसी समय निश्चित कर लेता है।

यथा समय रुस्तम का जन्म होता है। रुस्तम अभी तक पैदा हुये किसी भी बच्चे से अधिक बली और सुन्दर है। उसे पालन के लिये दस दाइयों की आवश्यकता होती है और माँ का दूध छोड़ते ही वह पाँच पुरुषों के बराबर भोजन करता है। इस प्रकार आठ वर्ष की आयु तक वह इस योग्य हो जाता है कि अपने एक घूँसे से ही किसी भी श्वेत, उन्मत्त हाथी के प्राण हर लेता है। यही नहीं, यह फ़ारसीभीम अपने बचपन में ऐसे कितने ही अनहोने कार्य कर अपने अभूतपूर्व शौर्य का परिचय देता है।

अंत में जब तातारों का सरदार अफ़रासियाब उसके राज्य पर हमला करता है और शस्त्रों से उसका संहार करना चाहता है तो रुस्तम युद्ध में भाग लेने की इच्छा प्रकट करता है। उधर संकट-ग्रस्त फ़ारस-निवासी 'ज़ाल' के पास जाकर इस भयंकर शत्रु का सामना कर उसे हराने की प्रार्थना करते ही हैं कि वह वीर अपने बुढ़ापे की दुहाई देकर क्षुब्ध होकर उत्तर देता है कि अब वह स्वयं तो इस कार्य के योग्य नहीं रह गया, किन्तु उसका पुत्र रुस्तम उसके स्थान पर दुश्मन से लोहा लेगा! इसके बाद रुस्तम को युद्ध-क्षेत्र के लिये विदा करने से पहिले वह चाहता है कि वह अपने लिये कोई उपयुक्त घोड़ा चुन ले। दूसरे ही क्षण सैकड़ों घोड़े उसके सामने लाये जाते हैं और वह उन सब में से रक्ष्श (बिजली) नामक एक ऐसा गुलाबी रंग का बछड़ा चुनता है जिस पर अब तक कोई सवार ही नहीं हो सका है। यह घोड़ा उसके रास हाथ में लेते ही उससे परच जाता है और किसी की आज्ञा पालन करने के नाम पर पहली बार रुस्तम के संकेत पर नाचता है। इसके बाद रुस्तम अपनी गदा सँभालता है और दुर्बुद्धि के द्वारा रण-स्थल में भेजे गये शत्रुओं का सामना करने के लिये प्रस्थान करता है! वह रण-स्थल में पहुँचते ही शत्रु को मार भगाता है और पुराने शाही वंश के कैकोबाद को तख़्त पर बैठालता है।

यह बुद्धिमान कैकोबाद सौ वर्ष तक बड़ी शान्ति राज्य करता है, किन्तु उसका

उत्तराधिकारी-पुत्र कैकाऊस बड़ा मूर्ख प्रमाणित होता है। वह अपने राज्य विस्तार से सन्तोष न कर माज़िनदरान के राज्य को भी जीत लेना चाहता है! माज़िनदरान इस समय दैत्यों के हाथ में हैं, किन्तु एक स्वर से उसका गुणगान सुनकर कैकाऊस उसके लिये इतना ललचा-उठता है कि वह किसी अन्य संकट की चिन्ता नहीं करता!

कैकाऊस का यह प्रस्ताव ज़ाल तक पहुँचता है। ज़ाल उसका घोर विरोध करता है और उसे रोकने का भी यत्न करता है, किन्तु वह एक नहीं सुनता और माज़िनदरान को जीत लेने के लिये कूच कर देता है। यहाँ पहुँचने पर वह हार जाता है और वह दैत्य उसकी और उसकी सेना की आँखें फोड़ने के बाद उन्हें जेलखानों में डलवा देते हैं। किन्तु जैसे ही इस दुदर्शा की सूचना ज़ाल को मिलती है वह तुरन्त ही रुस्तम को इस मूर्ख शासक की सहायता करने के लिये रवाना करता है और कहता है कि यदि उसे ऊबड़-खाबड़ रास्ता पसन्द हो और यदि वह राह की सारी कठिनाइयों का बहादुरी से सामना करने को तैयार हो तो वह उसे एक ऐसा रास्ता बतला सकता है, जो उसे सात दिन में ही माज़िनदरान पहुँचा दे, गोकि यों तो साधारणतया वहाँ पहुँचने में छः महीने लगते हैं और कैकाऊस को वह मंजिल तय करने में छः महीने लगे भी हैं।

स्वभावतः रुस्तम अपेक्षाकृत समीप का छोटा रास्ता अपने लिये चुनता है और रवाना होता है। पहले दिन वह एक जंगली गधे का शिकार करता है, जिसे रात को विश्राम करने के पहिले भून कर खाता है। कुछ भुना हुआ मांस बच रहता है। उसकी सुगन्धि से आकृष्ट होकर एक शेर उसके पड़ाव में आ-पहुँचता है और रुस्तम पर आघात करना ही चाहता है कि उसका साहसी घोड़ा उस पर टूट पड़ता है और अपनी टापों और अपने दाँतों के सहारे उससे तब तक लड़ता रहता है जब तक कि अन्त में हिंसक शेर मर नहीं जाता! इधर शेर मरता है, यह लड़ाई रुकती है और उधर रुस्तम जाग-उठता है। वह एक क्षण में ही सारी परिस्थिति समझ लेता है और इस लापरवाही से अपनी जान संकट में डाल देने के लिये रख़्श को बहुत डांटता है और आदेश देता है कि भविष्य में जब कभी ऐसा अवसर आये वह उसे अपनी सहायता के लिये अवश्य बुला ले!

दूसरे दिन की यात्रा में रुस्तम इधर-उधर भटकते एक भेड़े का पीछा करता है और शीघ्र ही एक पहाड़ी झरने के समीप पहुँच कर प्यास से मरते-मरते बचता है! तीसरी रात को उसका घोड़ा अस्सी गज़ लम्बे एक राक्षस को अपनी ओर आता हुआ देख कर अपने स्वामी को जगाता है, क्योंकि उसे आदेश मिल चुका है कि बिना उसे सूचित किये वह किसी शत्रु पर हमला न करे! वह कितनी ही बार हिनहिनाता है और उसके हर बार हिनहिनाते ही राक्षस अदृश्य हो जाता है। रुस्तम उठता है और आसपास कुछ न देख कर विश्राम में विघ्न डालने के लिये रख़्श की बड़ी भर्त्सना करता है। किन्तु तीसरी बार उसकी दृष्टि राक्षस की अंगारे जैसी आँखों पर पड़ जाती है और वह तुरन्त ही आक्रमण कर उसके प्राण हर लेता है। चौथे दिन और भी महत्वपूर्ण साहस भरी घटनायें घटती हैं और पांचवे दिन रुस्तम जादू के देश से जा रहा है कि उसे एक जादूगरनी मिलती है जो नाना प्रकार के छल-छद्मों से उसे जीत लेना चाहती है। वह

उसे दावत देती है और वह स्वीकर करता है, किंतु ज्योंही वह दावत में मदिरा का पात्र उसकी ओर बढ़ाती है, रुस्तम उससे आग्रह करता है कि ईश्वर के नाम पर वह उसे स्वयं पी डाले! जादूगरनी विवश हो जाती है और उस मदिरा का पान करते ही उसका बनावटी रूप उससे कोसों दूर भाग जाता है। अब रुस्तम उसका सिर उतार लेता है।

छठे दिन रुस्तम किसी ऐसे प्रदेश से निकलता है जहाँ सूरज कभी चमकता ही नहीं। यहाँ उसका बुद्धिमान घोड़ा उसे रास्ता दिखलाता है। इस प्रकार सातवें दिन वह ऐसे प्रान्त में पहुँचता है जहाँ घोर प्रकाश है और जहाँ वह विश्राम करने के लिये लेट-रहता है। इसी समय माज़िनदरान के निवासी उसका अचरज पूर्ण घोड़ा खोलकर ले-भागते हैं! इतने में रुस्तम सो कर उठता हैं और अपना घोड़ा वहाँ-देख कर घबड़ा जाता है, किंतु उसे पता लगता है कि घोड़ा अपने छुटकारे के लिये बराबर लड़ता रहा है। वह उसकी टापों के निशानों का सहारा लेता है और उनका अनुकरण कर शीघ्र हो माज़िनदरान पहुँच जाता है। यहाँ उन राक्षसों से वह इतना भयंकर युद्ध करता है कि वे घोड़ा तो लौटाल ही देते हैं, उसे उस गुफ़ा का रास्ता भी बतला देते हैं जिसमें उसके देश-वासी क़ैदी रक्खे गये हैं।

इस गुफ़ा के सामने पहुँचते ही वह देखता है उससे लड़ने के लिये कितने ही राक्षस तैयार-खड़े हैं। वह शीघ्र ही उन सब का काम तमाम करता है। इसके बाद वह उस फ़ारसी-नरक में प्रवेश करता है, और अपने साथियों से मिलता है। वह उन सब को अन्धा पा कर बहुत खीझ-उठता है और कोई यत्न न देख कर श्वेत दैत्य का रक्त बूँद बूँद कर उनकी आँखों में टपकाता है! फलतः विस्माय की बात है कि वे सब पहले की भाँति ही देखने लगते हैं।

इस भाँति रुस्तम विश्वविजयी की उपाधि प्राप्त करने के बाद अस्थिर-बुद्धि कैकाऊस को उसके राज्य तक पहुँचा आता है। किन्तु वह अपनी पिछली बड़ी भूल से ही सन्तुष्ट नहीं होता और एक के बाद दूसरी भयंकर भूलें करता है, यहां तक कि अपने द्वारे बनाये हुये एक विशेष प्रकार के वायूवान पर चढ़ कर हवा में उड़ने की कोशिश करता है। यह जहाज़ और कुछ न होकर के एक दरी है, जिसके चार कोनों पर चार भूखे बाज़ बंधे हुये हैं! ये बाज़ ऊंचाई पर लटके हुये गोश्त के टुकड़ों लोभ से इस दरी के साथ ऊंचे उड़ने का प्रयास करते हैं। किन्तु एक बार फिर रुस्तम अपने अध्यवसाय और यत्न से इस मूर्ख राजा कैकाऊस की प्राण-रक्षा करता है।

× ×

इसी बीज में पर्यटन करते-करते रुस्तम किसी राजा के दरबार में आ पहुँचता है! इस राजा पुत्री उसकी चर्चा-मात्र से उस पर मोहित हो जाती है और उसकी असावधानी में उसका घोड़ा खुलवा लेती है। रुस्तम बहुत क्रोधित हो उठता है और राजा से अपने घोड़े की मांग करता है। इस पर राजा उसे विश्वास दिलाता है कि दूसरे दिन उसका घोड़ा उसे मिल जायेगा। इसी रात में सुन्दरी राजकुमारी तहमीना सब की आँख बचा कर उसके कमरे में घुस आती है, उसे जगाती है और उसे वचन देती है कि यदि वह उससे विवाह कर लेगा तो उसे उसका घोड़ा निश्चित

रूप से मिल जायेगा। रुस्तम उसके सौन्दर्य और उसकी शालीनता पर इतना रीझ-उठता है कि उसका प्रस्ताव स्वीकार कर उसके आकर्षण में फँस जाता है और-कुछ काल उसके पास ही रहा-आता है।

इसी बीच में मूर्ख शासक कैकाऊस को उसकी सहायता और सेवाओं की आवश्यकता होती है! किन्तु, तहमीना से इस समय लम्बी यात्रा नहीं हो सकती क्योंकि वह गर्भवती है अतएव रुस्तम उससे हृदय से विदा लेता है। चलते समय वह उसे एक अर्द्ध पारदर्शी तावीज़ देता है, जिसपर सीमुर्ग़ की मूर्त्ति बनी हुई है और वह अपनी नव-पत्नी को आदेश देता है कि यह आभूषण वह अपने होनेवाले शिशु को पहना दे।

समय आने पर यह सुन्दरी राजकुमारी मनोहर पुत्र की माता बनती है जिसका नाम वह सोहराब (सूरज की रोशनी) रखती है किन्तु, उसे डर है कि पुत्र-जन्म की बात सुनते ही थोड़े समय बाद रुस्तम आयेगा और युद्ध-विद्या की शिक्षा देने के लिये उसके प्रिय-पुत्र को उससे छीनकर बहुत दूर ले जायगा, अतएव वह पुत्र के स्थान पर पुत्री-जन्म की सूचना उसके पास भेज देती है।.........कहना न होगा कि फ़ारस में लड़कियों को अधिक महत्व नहीं दिया जाता, इसीलिये रुस्तम अपने शिशु के विषय में भविष्य में पूछ-ताँछ नहीं करता और अपने राजा की सेवाओं में इतना अधिक व्यस्त रहता है कि उसे दुबारा अपनी पत्नी से मिलने का अवकाश भी नहीं मिलता। उधर सोहराब बढ़ा होता-रहता है।

थोड़े समय बाद सोहराब सयाना होता है और अपने पिता से मिलने को उत्सुक हो-उठता है। तहमीना को आशंका है कि अपने पिता का परिचय पाते ही सोहराब भी उसकी भाँति ही युद्ध में भाग लेने लगेगा, अतएव वह बहुत दिनों तक उसके पिता और उसके जन्म की बात उससे नहीं बतलाती। किन्तु अंत में वह देखती है कि वह उसे अपने साथ बांधकर न रख पायेगी, अतएव वह उससे सारी कथा विस्तार में बतलाती है।

किशोर सोहराब आरम्भ से ही रुस्तम का अन्ध-प्रशंसक है, अतः अब अपने को उसका पुत्र जान कर गद्गद् हो उठता है और आनन्द से फूला नहीं समाता!

× ×

इधर सारे फ़ारस-निवासी इस मूर्ख राजा से तंग आने के कारण पीछा छुड़ाना चाहते हैं और अब सोहराब चाहता है कि उसके स्थान पर उसका पिता फ़ारस पर राज्य करे अतएव वह तारतारों को फ़ारस के विरोध में सहायता देने का वचन देता है और लड़ाई के मैदान के लिये अपनी माता से विदा माँगता है। उसकी माँ उसे इस चेतावनी के साथ विदा देती है कि वह ध्यान रक्खे और अपने पिता से कभी लोहा न ले। किन्तु इस चेतावनी के बाद भी उसका दिल नहीं मानता और वह सोचती है कि कहीं ऐसा न हो कि सोहराब अपने पिता को न पहिचाने पाये, अतएव वह दो ऐसे स्वामिभक्त सेवक उसके साथ कर देती है जोकि रुस्तम को भली भाँति जानते-पहिचानते हैं।

उधर तातारों का सरदार अफ़रासियाब सोहराब की सहायता का आश्वासन पाकर

बहुत प्रसन्न होता है और अपने सब वीरों को सचेत कर देता है कि फ़ारस की सेना में रुस्तम को देखकर भी कोई सांस न ले और सोहराब को किसी प्रकार का संकेत न करे। वह बड़ी चालाकी का दम भरता है और समझता है कि इस प्रकार अनजाने में पिता पुत्र के द्वारा अवश्य ही मार डाला जायगा। इतना ही नहीं, उसे तो यह भी विश्वास है कि इस प्रकार पिता-पुत्र दोनों से मुक्ति पाकर वह स्वयं फ़ारस का राजा हो जायेगा!

× ×

लड़ाई छिड़ती है और सोहराब को अपने अपूर्व साहस का परिचय देने के लिये कई बार विरोधियों से गुँथ जाना पड़ता है। एक बार तो उसे एमेज़न[१] देश की एक वीरांगना की चुनौती स्वीकार करनी पड़ती है किंतु वह चालाकी से अपने प्राण-बचाकर निकल भागती है! इस बीच में सोहराब के हृदय में यह आशा बराबर बनी रहती है कि कभी-न-कभी तो वह क्षण आयेगा ही जब उसका और उसके पिता का सामना होगा। इसीलिये जैसे ही कोई विशेष शत्रु योद्धा उसके सम्मुख आता है और लड़ाई भयंकर हो-उठती है, वह अपने साथियों की ओर उत्सुक दृष्टि से देखने लगता है और उसका परिचय पाना चाहता है, ताकि यह निश्चित हो जाय कि वह वीर-विशेष रुस्तम ही है!

इसी बीच में अपना खेल बिगड़ता देखकर मूर्ख राजा रुस्तम को बुलवा भेजता है! रुस्तम सारी परिस्थित का ठीक अनुमान कर लेने के लिये जासूस के रूप में तातारों की सेना में प्रवेश करता है। यहाँ उसकी दृष्टि सोहराब पर जा गड़ती है।

वह सोहराब की वीरता की कितनी ही बातें इस समय के पहले भी सुन चुका है, किन्तु इस समय वह उससे इस बुरी तरह प्रभावित होता है कि उसकी प्रशंसा करने पर विवश हो जाता है। इसी समय सोहराब की सहायता के लिये उसकी माँ के द्वारा भेजे गये उन दो सेवकों की दृष्टि रुस्तम पर पड़ती है और वे सोहराब को संकेत करना ही चाहते हैं कि रुस्तम उन दोनों को तलवार के घाट उतार देता है। इस प्रकार कोई ऐसा व्यक्ति वहाँ नहीं रहता जो कि पिता-पुत्र का सामना होने पर पिता को उसके पुत्र का परिचय दे और पुत्र से कहे कि उसका प्रतिद्वंदी और कोई नहोकर उसका पिता रुस्तम है।

× ×

लड़ाई कुछ देर तक चलती रहती है कि सोहराब फ़ारस-निवासियों को द्वन्द-युद्ध के लिये ललकारता है। उसकी अभिलाषा है कि फ़ारसी-वीर एक-एक कर आगे आयें और उससे लोहा लें! वह चाहता है कि इस प्रकार सब को जीतकर वह इतना प्रसिद्ध हो जाये कि उसकी धाक की चर्चा रुस्तम तक पहुँचे, वह उसके पिता आदि का नाम जानने की चेष्टा करे और इस प्रकार दोनों की भेंट हो जाये!

किंतु सोहराब का ऐसा आतंक है कि कोई भी फ़ारसी-योद्धा उसके सामने आने का साहस नहीं करता, प्रत्युत सब-के-सब रुस्तम से अनुरोध करते हैं कि वह स्वयं आगे आये और

[१]एक कल्पनात्मक राष्ट्र जिसमें वीरांगनायें बसती हैं।

उस किशोर का गर्व चूर करे। किंतु रुस्तम डरता है कि कहीं ऐसा न हो कि ऐसा वीर और इतना साहसी नव-युवक अपने विरोधी का नाम सुनते ही हतोत्साहित हो जाय और मैदान से भाग खड़ा हो, अथवा कहीं ऐसा न हो कि उसे अपने ऊपर आवश्यकता से अधिक घमंड हो-उठे कि उसके लिये रुस्तम को भी हथियार ग्रहण करना पड़ा और वह हार जाय, अतएव वह एक दूसरे ही वेश में मैदान में उतरता है !

उधर एक लम्बे-तगड़े, बूढ़े योद्धा को अपनी ओर आता हुआ देखकर सोहराब अजब ढङ्ग से हिल-उठता है। इसी समय उसके हृदय से ध्वनि होती है कि रुस्तम यही है, रुस्तम यही है, अतएव इस प्रकार पूर्व-सूचना पाकर वह उसकी ओर दौड़ता है और बहुत विनीत होकर उससे उसका नाम पूछता है। उधर रुस्तम का हृदय भी इस युवक को देखकर एक अद्भुत कोमलता से भर जाता है और वह मन ही मन स्वीकार करता है कि यदि सोहराब उसका पुत्र होता अथवा उसके एक पुत्र होता जो देखने में सोहराब की तरह होता तो उसे सचमुच ही बड़ी प्रसन्नता होती! उसका विचार है कि उस स्थिति में वह प्रयत्न करता कि वह अपनी चुनौती वापिस ले ले! किन्तु दूसरे ही क्षण वह सँभलता है और सोहराब की उत्कंठा की चिन्ता न कर बहुत दृढ़ता से अपना नाम बतलाने से इन्कार कर देता है! इसके बाद यह देखकर कि वह अपनी हठ पर अड़ा हुआ है रुस्तम उससे कहता है कि वह बेकार की बकबक न कर युद्ध करे !

× ×

युद्ध आरम्भ होता है और आरम्भ के तीन दिनों में शक्ति और रण-कौशल में पिता और पुत्र दोनों ही बराबर उतरते हैं। किन्तु इस बीच में सोहराब रुस्तम की ओर बराबर आकृष्ट होता-रहता है। इसीलिये एक बार गिर पड़ने पर भी वह बूढ़े योद्धा को उठकर सँभल लेने का समय देता है और उस पर आघात नहीं करता। यही नहीं कई बार वह उससे लड़ाई रोक कर तलवारों को म्यानों में रखने का भी आग्रह करता है। दूसरी ओर रुस्तम को भी उसी प्रकार की भावनायें सताती रहती हैं, किन्तु वह उनसे बराबर संघर्ष करता रहता है और अपने विरोधी पर ताने कसते हुये दूने और चौगुने उत्साह से गुँथा-रहता है।

किन्तु पाँचवें दिन जैसे ही रुस्तम सोहराब की ओर बढ़ता है, फ़ारसी जोश के मारे आपे से बाहर हो जाते हैं और रुस्तम-रुस्तम के युद्ध के नारे लगाने लगते हैं। इस प्रियतम नाम की ध्वनि-मात्र से ही सोहराब के हाथ-पैर इस तरह ढीले हो उठते हैं कि न तो वह उसका सामना करने योग्य रह जाता है और न उसका वार बचाने योग्य! फल यह होता है कि वह अपने पिता के घातक प्रहार के साथ ही पृथ्वी पर ढ़ह-पड़ता है।.. ...उसका अंतिम क्षण समीप है, किन्तु वह कराह-कराह कर अपने विरोधी को सचेत करता है कि वह अपनी विजय पर ईमानदारी की छाप लगाकर गर्व न करे, क्योंकि उसके पिता के नाम के अतिरिक्त कोई भी शक्ति उसे इस प्रकार निहत्था न कर सकती थी और उस स्थिति में युद्ध का परिणाम कुछ और भी हो सकता था।

सोहराब का यह वाक्य सुनते ही रुस्तम प्रश्नसूचक दृष्टि से चारों ओर देखता है और

दूसरे ही क्षण उसे ज्ञात होता है कि वह वीर जिसपर उसने इस प्रकार घातक प्रहार किया है उस का, अपना पुत्र है। इसके बादही उसकी निगाह पक्षी के चित्रवाले सोहराब के उस तावीज़ पर पड़ती है और इस प्रकार इस सत्य की पुष्टि भी हो जाती है। अब रुस्तम के संताप और शोक का ठिकाना नहीं रहता! उसका हृदय फटने लगता है और वह अपने मरते-हुये पुत्र पर पछाड़ खाकर गिर पड़ता है।

रुस्तम का क्या रुस्तम तो सोहराब का पिता ही है, सोहराब का घोड़ा रक्श भी उसके लिये फूट-फूटकर रोता है कि वह कितने स्नेह से उस पर सवारी करता रहा है!

× ×

अब रुस्तम अपने पुत्र की प्राण-रक्षा के लिये व्याकुल हो-उठता है और मूर्ख राजा कैकाऊस से वह जादू का लेप मांगता है जो कि युगों से उसके पास है। लेकिन वह राजा लेप देने में आनाकानी करता रहता है कि इसीबीच में सोहराब अपने पिता की गोद में अपना दम तोड़ देता है। शीघ्र ही भग्न-हृदय पिता उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया करता और उसका शव आग की विकराल लपटों को सौंप देता है। इसके बाद वह उसके फूल और अपने सवार से सूना उसका घोड़ा उसकी माँ के पास भेज देता है। उसकी माँ पुत्र-शोक सहन नहीं कर पाती और तुरन्त ही प्राण-त्याग देती है।

× ×

किन्तु हमें बतलाया जाता है कि दूसरी ओर वह मूर्ख राजा इतना भाग्यवान प्रमाणित होता है कि उसके यहाँ स्यावूश नामक एक बड़े योग्य और विशाल-हृदय पुत्र का जन्म होता है। यह बड़ा होता है किंतु इस समय उसकी माँ मर जाती है और उसकी सौतेली माँ उसके विरुद्ध उसके पिता के कान भरती है। अंत में उसके सयाने होते-होते राजा उससे इतनी ईर्ष्या करने लगता है कि वह घर छोड़ देने पर विवश हो जाता है और अब रुस्तम उसका पालन-पोषण करता है। थोड़े दिनों बाद जब वह फिर अपने राज्य में लौटता है उसकी सौतेली माँ उसे मरवा डालने के लिये षडयन्त्र रचती है और अपने पति से शिकायत करती है कि स्यावूश उसे बुरी नज़र से देखता है और उसे अपनी प्रियतमा बनाने की चेष्टा में है। इस पर राजा को इतना क्रोध आता है कि वह अपने पुत्र से आग में कूदकर परीक्षा देने को कहता है। अतएव बड़े-बड़े भट्टे धधकाये जाते हैं और वह सच्चरित्र किशोर उसमें बेधड़क कूद पड़ता है। इस समय दया का देव-दूत और उसकी मृत-माता की आत्मा उसके दायें बायें खड़ी होकर उसे हर प्रकार की हानि से बचाती हैं। अंत में आग के प्रभावों से सभी प्रकार अछूता रहकर वह अपने को निष्कलंक सिद्ध कर देता है। अब राजा अपनी पत्नी पर क्रोध से लाल हो-उठता है कि उसने उसके पुत्र पर झूठा कलंक लगाया। और चाहता है कि वह भी स्यावूश की भांति ही अग्नि परिक्षा देकर अपने कथन की सत्यता प्रमाणित करे। किन्तु स्यावूश अपनी विमाता की निर्बलता जानता है, और बड़ी चेष्टा से उसका पक्ष ग्रहण कर और उसे आग में भस्म होने से बचा लेता है।

इस प्रकार की घटनायें आये-दिन प्रति दिन घटती रहती हैं अतएव अपने पिता के

दरबार से स्यावूश का जी उचट जाता है और वह तातारों के देश में आकर उनके दल का एक सदस्य बन जाता है और शीघ्र ही वह अफ़रासियाब की पुत्री से विवाह भी कर लेता है। किन्तु वह इतना गुणवान है और इस कारण ही इतने अनहोने कृत्य करता है कि उसका ससुर उससे जलने लगता है और उसे मार डालता है। फिर भी, वह उसका नाम चलानेवाले-उसके शिशु का नाश नहीं कर पाता क्योंकि ऐसा अभागा क्षण आने के पहले ही पीरेवीज़ाँ नामक एक दयावान, सज्जन उसे चुरा ले जाता है और उसे एक गरड़िये को सौंप देता है कि वह उसे पाल-पोस कर बड़ा करे!

कुछ वर्षों बाद अफ़रासियाब को पता लगता है कि उसका नाती अभी जीवित है, अतएव वह उसे मार डालने की योजना बनाता है, किन्तु उसका दयावान संरक्षक अफ़रासियाब को विश्वास दिलाता है कि वह बड़ा-मूर्ख है और उसे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकता! यद्यपि उसे इस संरक्षक की बात पर पूरा विश्वास नहीं होता तो भी वह उस के ख़ुसरो नामक बालक को बुलवा-भेजता है। इसी बीच में वह दयावान संरक्षक उसे सारा भेद बतला देता है। फलतः अपने नाना के दरबार में आनेपर उसके सवालों के जवाब में वह ऐसे-ऐसे ऊट-पटांग और बेहूदे जवाब देता है कि अफ़रासियाब सन्तोष से फूल-उठता है कि वह सचमुच ही जड़ है!

यह किशोर युवा होता है और जवान होते ही कुछ राजद्रोहियों का नेतृत्व इतनी सफलता से करता है कि अपने नाना को गद्दी से ही नहीं उतार देता, बल्कि वह फ़ारस का राज्य भी एक बार फिर जीत लेता है! इस-राज्य पर उसके पूर्वजों के नाते उसका स्वाभाविक अधिकार है। इसके बाद वह फ़ारस में कितने ही वर्षों तक राज्य करता है, और अंत में इस दुनिया से इतना अधिक ऊब-उठता है कि फ़ारस के मंगलमय देवता आमुज़ से प्रार्थना करता है कि वह उसे अपनी शरण में लेकर अपने हृदय में स्थान दे! इस पर वह देवता उसे स्वप्न देता है कि जैसे ही उसके राज्य की सुव्यवस्था और उसके उत्तराधिकारी की घोषणा हो जायेगी, उसकी प्रार्थना स्वीकृत होगी, अतः अब वह सारे आवश्यक प्रबन्ध करने के बाद दूसरी दुनिया के लिये प्रयाण करता है। इस समय वह अपने अनेकानेक मित्रों को अपने साथ आने से रोकता है क्योंकि वह जानता है कि वह राह उनके लिये बड़ी कठिन साबित होगी। फिर भी उसके कुछ सेवक उसके इस आदेश का पालन न कर उसका अनुसरण करते हैं और शीघ्र ही एक ऐसे स्थान पर पहुँचते हैं जहाँ इतनी कड़ी सर्दी पड़ती है कि वे ठंड से जम कर बर्फ़ हो जाते और मर जाते हैं। इस प्रकार कैख़ुसरो फिर अकेला हो जाता है और अपनी यात्रा पर आगे बढ़ता है, जहाँ से फिर कभी नहीं लौटता!

कैख़ुसरो का चुना हुआ उत्तराधिकारी बड़ा न्याय-प्रिय राजा साबित होता है, किन्तु वह भी शीघ्र ही अपने इस्फ़न्दयार नामक पुत्र से जलने लगता है। यह इस्फ़न्दयार बड़ा पराक्रमी और महान योद्धा है और अपनी योग्यता और कौशल के कारण रुस्तम की भाँति ही युद्ध में सात बार विजयी होता है। यह भी देवों, भेड़ियों और शेरों से लोहा लेता और परोंवाले बड़े-बड़े मायावी राक्षसों और अनेकानेक भूत-प्रेतों को अपने वश में कर लेता है।...एक बार उसे पता

चलता है कि आजासप नामक राक्षसों के राजा ने अपनी दो बहिनों को क़ैद कर रक्खा है। इतना सुनते ही वह उन्हें छुड़ाने के लिये चल पड़ता है किन्तु वह जानता है कि केवल शक्ति से ही वह उस सुरक्षित प्रदेश में प्रविष्ट न हो सकेगा अतएव कुछ वीरों को अपने सीने में छिपाने के बाद वह एक व्यापारी का रूप धारण करता है और चतुरता से राक्षस-राज के राज्य में प्रविष्ट होता है। यहाँ पहुँचते ही वह अपने शत्रुओं को नशे में चूर कर देता है और फिर अपने सीने से छिपे हुये सिपाहियों की सहायता से अपने कार्य में सफलता प्राप्त करता है।

किन्तु एक दिन उसका पिता उसे रुस्तम को दरबार में बांध लाने का आदेश देता है। यह कार्य इस्फ़न्दयार को इतना अप्रिय लगता है कि वह रुस्तम के पास जाकर उससे सारी स्थिति बतला देता है और अपनी परवशता और निर्बलता के लिये दुःख प्रकट कर कहता है कि यदि वह स्वेच्छा से न जाना चाहेगा तो उसे अपनी शक्ति का सहारा लेना पड़ेगा। किन्तु रुस्तम उसकी धमकी में नहीं आता और दृढ़ता से कहता है कि उसका बन्दी बनना या उसके पिता के दरबार में जाना असम्भव है। इस पर दोनों योद्धाओं में युद्ध होता है और संध्या को रुस्तम और उसका घोड़ा इतनी बुरी तरह घायल हो जाते हैं कि इस्फ़न्दयार को इस बात का पूरा विश्वास हो जाता है कि दूसरे दिन उनका लड़ाई में भाग लेना असम्भव है!

फिर भी, अपने घायल पुत्र को देखते ही बूढ़े ज़ाल को उस अधजले अलौकिक पर की याद हो-आती है और वह उसे आग में डाल देता है। दूसरे ही क्षण 'सीमुर्ग' आ-उपस्थित होती है और अपने सुनहले पर के स्पर्श-मात्र से घोड़े के सारे घावों को भरने के बाद रुस्तम की कोख में गड़ा-हुआ भाला अपनी चोंच से खींच-निकालती है। इस प्रकार अपने स्नेही पुत्र को भला-चंगा करने के बाद वह अदृश्य हो जाती है अब रुस्तम और उसका घोड़ा दोनों इतने स्वाभाविक और इतने स्वस्थ हो जाते हैं कि दूसरे दिन फिर लड़ाई के मैदान में नज़र आते हैं।

इस बार इस्फ़न्दयार रुस्तम के प्रहार सम्हाल और सह नहीं पाता, नीचे आ जाता है और दम-तोड़ते-तोड़ते उससे क्षमा मांगता है और घोषित करता है कि उसकी मृत्यु का सारा पाप रुस्तम पर न हो कर उसकी पिता की घृणा एवं ईर्ष्या प्रधान प्रकृति पर है, जिसके कारण ही उसे उसके वरुद्ध हथियार उठाना पड़ा। अन्त में वह उसे अपना पुत्र सौंप कर प्रार्थना करता है कि वह उसकी देख-रेख करे! उत्तर में बूढ़ा योद्धा रुस्तम उसकी प्रार्थना को अपना पवित्र कर्त्तव्य समझता है और जब तक जीता है उसके पुत्र की भलाई के लिये कुछ उठा नहीं रखता।

×　　　　+

रुस्तम विधि का यह विधान जानता है कि इस्फ़न्दयार की हत्या करने वाला बड़ी गंदी मौत मरेगा अतएव वह हर प्रकार के संकटों का सामना करने के लिये थोड़ा-बहुत तैयार है, किन्तु वह क्या जाने कि उसका सौतेला, छोटा भाई ही उससे इतना जलने लगा है कि तलवारों और भालों से पटी हुई सात खाइयों के द्वारा उसने उसे मार डालने की योजना बनाई है, और वे सारी खाइयाँ उस रास्ते में खोदी जा रही है, जिससे हो कर वह अभी-अभी अपने राजा से आशीर्वाद और सम्मान प्राप्त करने जाने वाला है!

शीघ्र ही वह मृत्यु के उस पथ पर चलता है। उसका घोड़ा रख़्श आगे बढ़ते ही उसे लिये-दिये पहली खाई में भहरा पड़ता है कि रुस्तम एड़ लगाता है और वह फिर किसी भाँति बाहर निकल आता है। किन्तु पहली खाई से मुक्ति पाते ही वह दूसरी और तीसरी खाइयों में भहरा कर लुढ़क पड़ता है, फिर भी वह निडर-घोड़ा किसी प्रकार गिरता-पड़ता आगे बढ़ता रहता है कि सातवीं खाई के सिरे पर पहुँचते-पहुँचते वह और उसका स्वामी भीषण रूप से घायल हो जाते और अचेत हो जाते हैं।

अब रुस्तम को इस स्थिति में देख कर उसका कपटी, छली, अनाचारी, सौतेला भाई उसके समीप आता है और यह निश्चय कर लेना चाहता है कि वह जीवित है कि मर गया! इस प्रकार उसके समीप आते ही रुस्तम उससे धनुष-बाण के लिये गिड़गिड़ाता है और कहता है कि वह घायल हो गया तो क्या है, उसकी कामना है कि अपने अंतिम क्षण तक वह अपने राज्य की जंगली जानवरों से रक्षा करे। अतएव बिना किसी प्रकार का कोई संदेह किये वह धनुष-बाण उस खाई में फेंक देता है और इनके अन्दर पहुँचते ही रुस्तम धनुष पर बाण चढ़ाकर उसे ऐसी भयानक और यम की-सी दृष्टि से देखता है कि वह डर के मारे दौड़ कर एक पेड़ के पीछे जा-छिपता है किन्तु अन्यायी पर उचित ढंग से क्रुद्ध रुस्तम की राह में कोई वस्तु बाधक नहीं होती और वह ऐसा सधा हुआ निशाना लगता है कि तीर पेड़ के तने को चीरता हुआ उस धूर्त्त के कलेजे को बुरी तरह छेद देता है। इस प्रकार हत्यारा अपनी कायरता पूर्ण चालाकियों का दंड भोगता है!

× ×

अंत में रुस्तम अन्यायी से बदला लेने का सुयोग देने के लिये ईश्वर को धन्यवाद देता और अपने स्वामिभक्त घोड़े के समीप ही अंत में प्राण त्याग देता है!

× ×

इधर अपने पुत्र की मृत्यु का शोक-समाचार पाते ही ज़ाल उन्मत्त हो-उठता है और अपनी सेना को आदेश देता है कि क़ाबुल की ईंट-ईंट उखाड़-फेंकी जाये! इसके बाद वह रुस्तम का शव प्राप्त करने की चेष्टा करता है और उसका और उसके प्रिय घोड़े का शव मिलते ही बड़ी पवित्रता से उन दोनों को सीस्तान में समाधिस्थ करता है। कहना न होगा कि इस स्थान पर ऐसी दिव्य समाधि बनवाई जाती है जिसे आज भी चांद-सूरज आँखें फाड़-फाड़कर देखते हैं।

ब्रिट्रिश-द्वीप-समूह के महाकाव्य

एक युग था, कि यूनानी यूनान के पश्चिम में रहनेवाली जातियों को 'केल्टस्' नाम से पुकारते थे, किंतु रोम, स्विटज़रलैंड, जरमनी, बेलजियम और ब्रिट्रिश द्वीप-समूह के निवासियों की ही गिनती इस जाति में करते थे ! फिर भी कहा जा सकता है कि कितनी हो विभिन्न जातियां इस एक केल्ट-जाति में सम्मिलित थीं, जिनमें सबकी अपनी-अपनी भाषायें थीं और सबके थे अपने-अपने रीति-रिवाज़ ! अनुमान किया जाता है कि ब्रिट्रिश और आयरिश नामक ऐसी ही दो जातियाँ बहुत आरम्भ में इंग्लैंड और आयरलैंड में जा बसीं और तब तक फूलती फलती रहीं जब तक कि हर-आये-दिन होने वाले संघर्ष से उनकी शान्ति भंग न हुई।

ये केल्ट्स ड्र्यूडिक मतावलम्बी थे अर्थात् ये धार्मिक जीवन पसन्द करते थे और पादरियों और न्यायाधीशों का विशेष आदर करते थे ! इनके पुरोहित वे कवि चारण और भाट होते थे जो धार्मिक कर्त्तव्यों, सामाजिक नियमों और वीर-कथाओं को पद्य-पद्ध करने में ही कुशल न होते थे, प्रत्युत उनके पाठ में भी पारंगत होते थे।

रोमन राज्य के चार सौ वर्षों में इग्लैंड के केल्टस् ने अधिकांशतः रोमन-सभ्यता स्वीकार कर ली किंतु आयरिश और उनके स्वजन, स्कॉच-लोगों पर इस सभ्यता का बहुत कम प्रभाव पड़ा ! इस कारण आयरलैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स में ही प्राचीनतम साहित्य की झाँकी मिलती है, क्योंकि ईसाई धर्म की स्थापना के बाद छठवीं शताब्दी तक केवल इन्ही देशों के चारण अधिकारी रह कर न्यायाधीश का कार्य करते रहे ! यद्यपि सुना जाता है कि संत पैट्रिक ने इन आयरिश चारणों की बड़ी भर्त्सना की और इन जंगली मूर्तिपूजकों को मंत्र के द्वारा भूत-प्रेत जगाने से रोकने की भरसक चेष्टा की, फिर भी ये अपनी संस्कृति का मोह न छोड़ सके और अपनी प्राचीन विशेषताओं से अलग न हो सके। ये अपने सिर के बीच का थोड़ा सा स्थान मुँड़वा कर अपने विशेष पद की अनवरत घोषणा करते रहे ! इनमें भी वे चारण जो सारंगी पर अपनी रचनायें गा सकते थे, उन चारणों से अपेक्षाकृत अधिक ऊँचे समझे जाते थे जो जादू-जगा कर भूत-प्रेत के आवाहन में ही अपना सारा समय बिता देते थे ! किंतु ये सब अपनी कविताओं सामाजिक नियमों के पद्यों और मन्त्रों के मौखिक पाठ-मात्र करते थ, क्योंकि किसी प्रमाण के अभाव में यह आवश्यक-रूप से मानना पड़ता है कि ईसाई धर्म के जन्म के पूर्व तक इनमें से किसी ने भी अपनी रचना को लिखित रूप नहीं दिया !

× ×

आयरलैंड की सभी वीरतापूर्ण कथाओं का एक चक्र मान लिया गया है ! इस चक्र का मध्य विंदु है किसी अज्ञात द्वारा रचित 'कैटिल आफ़ कूली' या 'कूली के पशु' ! इसमें बताया गया है कि कैसे आयरलैंड की महारानी 'मैव' के एक रहस्यपूर्ण, भूरे बैल को पाने के लिए अपने पति के ही विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर लेती है और कैसे इसका प्रधान नायक 'कुचुलेन' अकेले युद्ध कर 'मैव' के पति 'अलस्टर' के राज्य की रक्षा करता और विशेष यश लाभ करता है। इस चक्र की लगभग तीस कथायें आज भी जीवित हैं जो केल्टिक-पुराणों की कितनी ही मनोरंजक कहानियों को प्रकाश में लातीं और नायकों और नायिकाओं के जन्म से लेकर मृत्यु तक के जीवन का पूर्ण चित्रण करती हैं।

इस चक्र के बाद आयरिश-साहित्य ने 'फ़ेनियन' या 'ओइसियैनिक' कविताओं और कहानियों को लेकर एक दूसरे महाकाव्य-चक्र की कल्पना की है। इन सब का चरित्र-नायक 'फ़िन' या 'फ़िंगल' नामक वह वीर है जो तीसरी शताब्दि में कुछ किराये के टट्टुओं का नेतृत्व करता है। इसके कवि-पुत्र 'आइसिन' की एक-आध कवितायें 'बुक ऑफ लीन्स्टर' में मिलती हैं। कहना न होगा कि बारहवीं और मध्य पन्द्रहवीं शताब्दि में इस चक्र में विशेष जीवन संचार हुआ और फिर अट्ठारहवीं शताब्दि तक यह खूब विस्तृत और विकसित होता रहा। इसी समय इसमें एक नई कहानी जोड़ी गई !

× ×

आयरलैंड के कुछ आरम्भिक कवियों के नाम उसके इतिहास में आज भी सुरक्षित हैं। उदाहरण के लिए 'पादरी फ़ायेन्स' और 'डोलेन फ़ोगेल' के नामों की ओर विशेष संकेत किया जा सकता है। ये 'पादरी फ़ायेन्स' वह सुप्रसिद्ध पद्यकार हैं जिसने संत पैट्रिक की जीवनी को पद्य-बद्ध करने का प्रयत्न किया था और जो आज भी उसी प्रकार जी रही है; और यह 'डोलेन फ़ोगेल' वह ख्यातनामा कवि है जिसकी एक कविता ११०६ में संकलित 'बुक ऑफ़ दि डन काउ' में आज भी प्राप्य है।

तेरहवीं शताब्दि तक के अधिकांश उपरोक्त कवि और चारण स्कॉटलैण्ड को भी अपना जीवन क्षेत्र मानते रहे। यहाँ तक कि बहुत समय तक स्कॉटलैण्ड में रहने के कारण इसी समय का एक कवि 'स्कॉचमैन' की उपाधि से विभूषित भी हुआ !

× ×

पन्द्रहवीं शताब्दि के बाद आयरिश साहित्य का ह्रास आरम्भ होते ही सारी आयरिश कवितायें ज्यों की त्यों स्कॉच भाषा में ढाल दी गईं और इस प्रकार 'गैलिक साहित्य' की नींव पड़ी ! यह साहित्य 'रिफ़ार्मेशन'[1] के समय तक दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति करता रहा। केवल मौखिक काव्य-पाठ का आधार लेकर इस साहित्य के उदाहरणों की खोजकर उनको प्रकाश में लाने का और उन्हे 'पोयम्स-आफ ओशियन' के नाम से अंग्रेज़ी भाषा में संकलित करने का सारा श्रेय जेम्स

---

[1] सोलहवीं शताब्दि का महत्वपूर्ण, धार्मिक आन्दोलन

मैक्फ़रसन नामक एक पहाड़ी को है ! यद्यपि इसने अपनी कृति को अनुवाद-मात्र माना है तथापि उसकी काफ़ी आलोचना ही नहीं हुई, प्रत्युत उसे 'साहित्यक बटमार' का फ़तवा तक दे दिया गया और कहा गया कि उसमें प्रतिभा का अभाव तो है ही, ज्ञान की कमी भी साफ़ नज़र आती है जब कि ऐसे फुटकर पदों को अमर और दृढ़ रूप देने के लिए ज्ञान परम आवश्यक है।

× ×

वेल्श (वेल्स के निवासी) और सब कुछ होने के साथ-साथ एक काव्यात्मक जाति भी हैं। इसे 'टैलीसिन', 'एन्यूरिन', 'ब्लवार्ख हेन' और 'मालिन' आदि अपने चार कवियों पर विशेष अभिमान है। इन सब की रचनाओं में महाकाव्यों के गुण तो मिलते ही हैं, उनमें 'आरथूरियन-चक्र' के कुछ चरित्रों का उल्लेख भी मिलता है। यही नहीं, कुछ पद्य-बद्ध ऐतिहासिक और रोमांटिक कहानियां-भी इन वेल्सवासियों के अधिकार हैं। कहा जाता है कि इनके मूल-रूप के लुप्त हो जाने के बहुत समय बाद तक इनका काव्यात्मक रूप विशेषतया लोकप्रिय और प्रचलित रहा ! ऐसी ग्यारह कहानियों का अनुवाद 'शारलाट गेस्ट' नामक एक महिला ने किया है। इस संग्रह का नाम 'मैबीनोगिअन' है, जो कि 'मैबीनोगी' का बहुवचन है। 'मैबीनोगी' उस असर कथा को कहते हैं जिसका अध्ययन और मनन प्रत्येक चारण के लिये आवश्यक हो यानी चारण कला में सिद्धि प्राप्त करने लिये जिसका सहारा लेना अनिवार्य ही नहीं नियम भी है। इनमें से कुछ का सम्बन्ध महान 'आरथूरियन-चक्र' से है, क्योंकि 'आर्थर' दक्षिणी वेल्स का विशेष लोक-प्रिय चरित्र-नायक है और यहाँ के कई प्रसिद्ध स्थानों के साथ उसका और उसके दरबार का नाम आज भी जुड़ा हुआ है।

यद्यपि 'आर्थर' सम्बन्धी ऐतिहासिक सामग्री उतनी ही कम मिलती है जितनी कि रोलैंड विषयक तो भी इन दोनों को चरित्र-नायक मानकर इतने महाकाव्य रचे गये है कि उन्हें ठीक-ठीक समझने के लिये चक्रों में बांट देना आवश्यक हो गया है ! इस प्रकार इन महाकाव्यों के कितने ही चक्र हैं। अधिक कुछ ज्ञात न होने पर भी इन महाकाव्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सम्भवतः आर्थर एक छोटी-सी सेना का नेता था, जो धीरे-धीरे उन्नति करता रहा और एक बार प्रधान सेनाध्यक्ष बन-बैठा, दूसरी बार सम्राट के नाम से प्रसिद्ध हुआ और तीसरी और अंतिम बार सारे ब्रिटेन का अधिपति बन-गया !

आर्थर सम्बंधी यह कथायें 'दक्षिणी वेल्स' से 'कार्नवाल' आईं और 'कार्नवाल' से 'आर-मोरिका' पहुँचीं, जहाँ इन्हें सदा के लिये चक्रों में बांट दिया गया। इसके बाद जब-तब इनमें नई-नई कथायें जुड़ती रहीं और ये सम्पन्न होती रहीं कि अंत मे 'होली ग्रेल' की पौराणिक कथा भी इनमें आ मिली ! 'होली ग्रेल' का जन्म-स्थान 'प्रोवेंस' है ! ये यहीं से चारण-यात्रियों के द्वारा ब्रिटेन में आईं और प्रचलित हुईं।

× ×

इस प्रकार 'केल्टिक' तन्तुओं और अंग्रेज़ी साहित्य पर उनके प्रभाव का वर्णन करने के

बाद [1]'ट्यूटनों' के आक्रमणों की चर्चा नितान्त आवश्यक है, क्योंकि अंग्रेज़ी-विचार, अंग्रेजी भाषा, अंग्रेजी आचार-विचार और अंग्रेजी रहन-सहन सब कुछ मूल-रूप में 'ट्यूटन' ही है। यहाँ इन आक्रमणों के इतिहास से हमारा को प्रयोजन नहीं, हमें तो केवल इतना जानना है कि ये आक्रमणकारी सुगठित भाषा और सुगणित साहित्य अपने साथ लाये, जिसे पैर जमते ही उन्होंने जन-समूह पर लाद दिया। अतएव इस समय के प्राप्य काव्यों में केवल 'ब्यूवुल्फ़' ही ऐसा सजीव, उत्तरी, अंग्रेजी महाकाव्य है, जो मूल-रूप में 'डेनिश' है और जो बड़े-बड़े सामन्तों के घरों में गाया जाता रहा है। इसके अतिरिक्त 'फ़िन्सबर्ग' और 'वाल्डेयर' की कुछ राष्ट्रीय कवितायें भी हमें मिलती हैं जो हम लोगों के समय तक जीती चली आई हैं।

'यहाँ हैवलॉक दि डेन', 'किंग हॉर्न', 'वीव्ज ऑफ़ हेमडेन' और 'गाई ऑफ़ वारविक आदि चारों कथाओं का उल्लेख भी आवश्यक है, जो बाद में प्रचलित गद्य-रोमांसों में ढाल दी गई! इसी समय गहन राष्ट्रीय-जागृति ने 'दि बैटिल ऑफ़ मैलडन' या 'ब्रिकनॉथ्स डेथ' को जन्म दिया। यह वह पुरानी काव्य गाथा है जो कि आग में जल जाने के पूर्व ही सौभाग्य से प्रकाशित हो चुकी थी। इसमें कवि ने बतलाया है कि कैसे ९३ जहाजों के साथ 'वाइकिंग ऐनलैफ़' इंग्लैंड आया, कैसे उसने समुद्री किनारों को ढहा दिया और कैसे वह अंत में हार कर युद्ध में खेत-रहा!

'कैडमन' इंग्लैंड का सबसे पहला ईसाई-कवि है जिसने प्रेम या युद्ध के गीत गाने के बजाय धार्मिक ग्रंथों की व्यापक व्याख्या की और सृष्टि का ऐसा जीता-जागता वर्णन किया कि कहा जाता है कि मिल्टन ने उससे प्रेरणा ग्रहण की, जैसा कि उसके पैराडॉइज लॉस्ट के कितने ही पदों से बिलकुल स्पष्ट भी है। 'कैडमन' कितनी ही कविताओं का रचयिता माना जाता है जिनमें 'जेनेसिस' 'एग्जोडस' और 'डैनियल' प्रमुख हैं। यद्यपि साधारणतया इसने बाइबिल की कथा-वस्तु का ही सहारा लिया है, फिर भी 'जेनेसिस' के आरम्भ में देवदूतों के पतन का विशद् वर्णन है। अतः यह कहना सत्य है कि मिल्टन के कथानक के सबसे अधिक चिन्तात्मक अंश इसी वर्णन की देन हैं।

इसके बाद 'केनेवुल्फ' कृत 'क्राइस्ट', 'जूलियाना,' 'एलेनी' और 'ऐंड्रियाज' नामक महाकाव्य क्रम में आते हैं। ये सभी अलंकृत पद्य के अच्छे उदाहरण है। इन सबमें 'एलेनी' विशेष महत्वपूर्ण है। यह चौदह पर्वों में विभाजित है और इसमें 'समाज्ञा हेलेना' द्वारा 'क्रॉस' की खोज से सम्बन्धित कथा पर प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात 'गिल्डाज़' और 'नेन्नियस' की 'हिस्टोरिया ब्रिटोनम' सम्मुख आती है। यह वह पहला ग्रंथ है जिसमें ट्राय से भागे हुये लोगों का इंग्लैंड और आयरलैंड में आ-बसने का, सम्भवतः, पहला काल्पनिक वर्णन है और जिसमें आर्थर के महान कृत्यों और 'मरलिन' नामक एक चारण की भविष्य वाणियों का उल्लेख है। अतएव इसमें काल्पनिक कहानियों के वे तन्तु निश्चित रूप से मिलते हैं जिन्होंने विकसित होकर 'मानमाउथ के जिओफ़्रे' द्वारा लिखित 'हिस्ट्री ऑफ़ ब्रिटेन' का रूप धारण कर लिया। यों तो 'जिओफ़्रे' का कथन है कि उसने अपनी सामग्री एक ऐसे प्राचीन ग्रंथ से एकत्रित की है जो लुप्त हो चुका है।

---

[1] जर्मनी के आदिम-निवासी जो आर्य थे और जिनमें स्कैंडिनेवियनों की भी संख्या काफ़ी थी—

इस सामग्री के अतिरिक्त एक और भी बहुत मनोरंजक और महत्वपूर्ण कथा-चक्र उपलब्ध है। इस कथा चक्र का सम्बन्ध स्वर्ग के एक पत्र से है जिसमें रविवार के दिन बरते-जानेवाले धर्माचरणों की शिक्षा दी गई है। किंतु जहाँ एक ओर धार्मिक-कथाओं के कई चक्र मिलते हैं वहीं दूसरी ओर सांसारिक कथाओं का भी अभाव नहीं है, जिनमें सिकन्दर का अरस्तू को पत्र, 'दि वन्डर्स ऑफ् दि ईस्ट' ('पूर्व के आश्चर्य') और 'दि स्टोरी ऑफ़ एपोलोनियस ऑफ़ टायर', ('टायर के एपोलोनियस की कथा') आदिसर्वप्रमुख हैं।

+ ×

पर नार्मनों की विजय के बाद फ्रेंच इंगलैंड की साहित्यिक भाषा बनी। इसी समय आधुनिक रोमांस का जन्म हुआ और फ्रांस और ब्रिटेन के कितने ही विषयों और शार्लमॉन और आर्थर की कथाओं से सम्बंधित बहुतेरे रोमांस चक्र अस्तित्व में आये! इसी समय 'मानमाउथ' के 'जिओ फ्रे' ने खुल कर अपनी कल्पना का सदुपयोग किया और ब्रिटेन के आरम्भिक इतिहास की सामग्री प्रस्तुत की। यह तथाकथित इतिहास और कुछ न होकर वास्तव में गद्यात्मक रोमांस है, जिससे अगली पीढ़ियों के कितने ही कलाकारों को प्रेरणा और साहित्य-वस्तु मिली। इसी समय 'वेस' और 'लेयामन' के 'रोमां दि ब्रुत' अलग-अलग मनोहर रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। ये दोनों कलाकार अपनी रचना में हमें सूचित करते हैं कि ब्रिटेन 'ब्रुत' या 'ब्रूटस' शब्द से बना है और यह 'ब्रुत' या 'ब्रूटस' एक ट्राय से भागे हुये शरणार्थी का नाम है जो कि प्रायम के परिवार का सदस्य था। इतना ही नहीं, बल्कि ये हमें आर्थर और ब्रिटेन के और दूसरे आरम्भिक राजाओं का इतिहास भी बतलाते हैं।

× +

बारहवीं शताब्दि के अंतिम वर्षों में 'आर्थर' का यश अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा, उससे अनुप्राणित साहित्य अन्तराष्ट्रीय सम्पत्ति बन गया और कितने ही बाहरी कवि भी उसे अपनी रचनाओं से सम्पन्न करने में लग गये! इस समय तक 'आर्थर' के हाथ में ब्रिटेन के अतिरिक्त स्वप्न या परी-देश की बाग-डोर भी आ गई थी। इसके बाद आर्थर की जीवनी आर्थर की पौराणिक कथा बन गई और फिर उसका प्रचार सर्वत्र हो गया।

यह १२०० से १५०० तक का समय तुकान्त रोमांसों का युग कहा जाता है। इस युग में सारे लोक-प्रिय और प्रचलित कथा- चक्र नये सांचे में ढाले गये और उनका विस्तार किया गया! इसी समय यूनानी और लैटिन महाकाव्यों का सर्व-साधारण के लिये अनुवाद किया गया और साहित्य और कला का अन्तराष्ट्रीय आदान-प्रदान चल पड़ा। इस प्रकार अन्य देशों के रोमांसों के साथ-साथ हुआं दि बोरदोओर दि फ़ोरसन्स आफ् आयमन' जैसे फ्रेंच-रोमांसों के कितने ही प्रशंसक ब्रिटेन में पैदा हो गये, यहाँ तक कि अपने 'एमिड समर नाइट्सड्रीम' के कुछ चरित्रों को शेक्सपियर ने 'हुआं दि बोरदों' जैसे एक फ्रेंच रोमांस के रंग में रंग डाला! इसी समय किसी देश-भक्त कवि ने सिकन्दर के प्रचलित रोमांस की जड़ उखाड़-फेंकने के लिये 'रिचर्ड कर दि लिआन यानी 'शेर-दिल-रिचर्ड' के रोमांस का विकास और प्रचार किया। इसमें लेखक ने बतलाया कि कैसे इस राजा ने शेर को पछाड़ कर उसका कलेजा निकाल लिया और यह उपाधि प्राप्त की।

इस प्रकार ऐसे कितने ही रोमांस रचे गये जिनमें पूर्व की मादकता और माधुरी है, जादू की अनदेखी, मनोहर दुनिया है और प्रेम के हरे-भरे संसार का निश्छल प्रदर्शन है। कहने को तो इस युग में वीर और प्रेम-काव्य का ही प्राधान्य रहा है, किन्तु धार्मिक या अन्य प्रकार के कथानकों का भी अभाव नहीं रहा है, वे जहाँ-तहाँ सफलता से प्रयोग में लाये गये हैं।

× ×

अब चॉसर का युग आया और इस नये कवि के साथ नई भाषा तो आई ही, नये कथानक भी साहित्य-जगत में चमकने लगे! यद्यपि उनका व्यक्तित्व और सौन्दर्य उनकी कथा-वस्तु के अनुरूप दूसरे लेखकों की देन है, तथापि 'चॉसर' की 'कैन्टरबरी टेल्स' सूक्ष्म महाकाव्य हैं। यों तो 'नाइट्स टेल' (वीर-गाथा) या 'ट्रवाइलस और क्रेसिडा' आदि सभी कथानक प्रशंसनीय महाकाव्यों के उपादानों से भरे पड़े हैं।

'चॉसर' के बाद 'स्पेंसर' हमारा दूसरा महाकवि है। 'फ़ेयरीक्वीन' इसका रूपक महाकाव्य है जो कि अभाग्यवशात् अधूरा ही रह गया—यद्यपि यह 'ऐरिऑस्तो' और दूसरे इटैलियन कवियों से स्पष्टतया प्रभावित है तथापि इसके असाधारणतया मनोहर चित्रों में प्रकृति और आदि-सृष्टि के दूसरे उपादानों के दिल की धड़कनें साफ़ सुनाई देती हैं और सचमुच ही इसके रूपकमय कथानक से काव्य के सौष्ठव में चार चांद लग गये हैं।

इनके अतिरिक्त दो और महत्त्व पूर्ण, किन्तु कम प्रचलित, महाकाव्य हैं जिनका उल्लेख करना आवश्यक है। ये हैं 'विलियम वारनर' कृत ऐतिहासिक महाकाव्य 'ऐलबियन्स इंग्लैंड' ('ऐलबियन का इंग्लैंड'-१५८६) और 'सेमुयल डैनिगल' रचित 'सिविल-वार्स' (गृह-युद्ध-१५६५) ! यही नहीं, बल्कि 'ड्रैटन' ने भी गृह-युद्धों के कथानक को लेकर 'दि बैरन्स वार' नामक महा काव्य की रचना की और इसके बाद-'पोलियाल्बियन' नामक वर्णन-प्रधान, देश-भक्तिपूर्ण एक दूसरा महाकाव्य लिख डालने का संकल्प किया, जिसमें उसने सारे इंग्लैंड की यात्रा की और सारी असंख्यक, प्रचलित कहानियों का मनोरंजक वर्णन किया !

'ड्रैटन' के अतिरिक्त 'अब्राहम काउले' ने भी एक महाकाव्य रचा। यह 'डेविडेइस' या 'डेविड के कष्ट' शीर्षक महाकाव्य चार भागों में विभाजित है ! इसके आरम्भ में स्वर्ग और नरक में हो-रही उन दो न्याय-सभाओं का वर्णन किया गया है जो कि इस योग्य-व्यक्ति के जीवन पर विचार करने के लिये बुलाई गई थीं।

'काउले' के बाद 'ड्राइडेन' का नाम सम्मुख आता है। 'ड्राइडेन' केवल एक अनुवादक ही न था, बल्कि उसने 'आर्थर' सम्बंधी एक महाकाव्य की रूप-रेखा भी सामने रक्खी थी। लगभग इसी समय 'पोप' भी 'ब्रुट' पर एक महाकाव्य लिखने की बात सोच रहा था, किन्तु उसका संकल्प पूरा न हो सका और वह 'इलियड' के अनुवादक के रूप में ही, अपेक्षाकृत, अधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध बना—रहा।

× ×

यद्यपि 'कीट्स' बहुत थोड़ी उम्र में ही मर गया, फिर भी, उसकी कई महत्त्वपूर्ण कृतियाँ हमारा ध्यान बरबस अपनी ओर खींच लेती हैं। 'एन्डिमियन' एक पूर्ण और पौराणिक महाकाव्य

है, 'हाइपेरियन' दूसरा किन्तु आंशिक महाकाव्य है और 'ईसाबेल्ला' एक पुराने रोमाँस का नवीन रूपान्तर है।

'कीट्स' के समकालीन 'शैली' ने भी महाकाव्यात्मक पदों से ओत-प्रोत कवितायें लिखीं जिनमें 'एलैस्टर' या 'स्पिरिट ऑफ़ दि सॉलिट्यूड', 'दि रिवोल्ट ऑफ़ इस्लाम', 'एडोनेइस' और 'प्रॉमिथ्यूज़-अनबाउन्ड' आदि विशेषतया उल्लेखनीय हैं। दूसरी ओर 'बाइरन' और 'स्कॉट' ने भी ऐसी कितनी ही कवितायें लिखीं जो महाकाव्यों के अधिकाधिक समीप हैं।

'कॉलेरिज' की 'दि ऐनशियेन्ट मैरिनर' नामक की प्रसिद्ध कविता को भी कभी-कभी प्रधान महाकाव्य कहा जाता है, यद्यपि यह माना जाता है कि उसकी 'क्राइस्टाबेल' पुराने 'रोमां-कल्पनादि पूर्वचर, का ही दूसरा रूप है।

× ×

'सदे' ने 'आरमिडिस[1] डि गाउल' और 'पालमेरिन'[2] नामक दो काव्यात्मक रोमांसो का अनुवाद कर बड़ा यश कमाया। यही नहीं, प्रत्युत उसने एक ओर तो 'थलाबा' और 'दि कर्स-आफ़ केहामा' नामक पूर्वी महाकाव्य रचे और दूसरी ओर 'मैडॉक', 'जोन ऑफ़ आर्क' और 'रोडेरिक' नामक अंतिम गोथों पर ऐसी कवितायें लिखी जिन्हें महाकाव्य के गुणों से अलंकृत कहने में शायद ही किसी अधिकारी को कोई आपत्ति हो?

'मूर' यद्यपि गीतकार था तथापि लाला रुख़ नामक पूर्वी महाकाव्य का रचयिता माना जाता है।

अब 'मैकाले' और 'ले हन्ट' पर दृष्टि जा टिकती है। 'मैकाले' की अनेकानेक कृतियों में से, कम-से-कम, 'लेज़ आथ ऐंशियेंट रोम' में तो महाकाव्य का रंग है ही और इसी प्रकार 'ले हन्ट' की 'स्टोरी ऑफ रिमिनी' में भी।

'मैथिउ आरनल्ड', 'स्विनबर्न' 'विलियम मॉरिस' और 'सर लेविस मारिस' की ओर भी प्रायः संकेत किया जाता है। 'आरनल्ड' और 'स्विनबर्न' दोनों ने ही 'ट्रिस्ट्रैम' के कथानक से लाभ उठाया है और शेष दोनों ने पुरानी सर्वकलीन प्रचलित कथाओं से प्रेरणा ग्रहण की है।

पीछे 'आर्थर' और उससे सम्बंधित कथा-चक्रों की काफ़ी चर्चा हो चुकी है, किन्तु 'आई डिल्स आफ़ दि किंग' (राजा के चारगाह) की रचना कर आर्थर की कथा को नवीनतम और सर्वाधिक कलात्मक रूप देने का सारा श्रेय 'विक्टोनियन-युग' के राष्ट्र-कवि 'टेनिसन' को ही है। कुछ आलोचक उसकी 'एनॉक आरडेन' को पारिवारिक महाकाव्य का सुन्दर उदाहरण मानते हैं।

इधर के लेखकों में कुछ फुटकर उपन्यासकारों को गद्यात्मक-महाकाव्यों का लेखक बतलाया जा रहा है। अब, अन्त में 'टामस वेस्टवुड', 'श्रीमती ट्रास्क' और 'स्टीफ़ेन फ़िलिप्स' की चर्चा भी आवश्यक जान पड़ती है। 'टामस वेस्टवुड' ने दि क्वेस्ट आफ़ दि सैंग्रियल की रचना मनोहर पद्यों में की है, 'अन्डर किंग कान्स्टैंटाइन' 'आयूरियन चक्र' को 'श्रीमती ट्रास्क' की महत्वपूर्ण देन है; और 'फ़िलिप्स' 'यूलिसीज़' और 'राजा एलफ्रेड' के गुणगायक के रूप में हमारे आदर का पात्र है।

[1]एक वीरता-प्रधान स्पेनिश रोमांस। [2]पुर्तगाल का एक महाकाव्य।

पृथ्वी का स्वर्ग—'ईडेन'

'पैराडाइज़ लॉस्ट–'

पर्व एक–

मिल्टन आरम्भ में सूचित करता है कि वह त्रिशंकु नहीं बनना चाहता वरन् उसकी कामना है कि वह मनुष्य के प्रति किये गये ईश्वर के सारे व्यवहारों को न्याय-संगत ठहराये। इसके बाद वह कहता है कि मनुष्य का पतन उस शैतान-साँप के कारण हुआ जो कि अपने साथियों के साथ स्वर्ग से निकाल दिया गया था और जिसने स्वर्ग से बदला लेने के विचार से मनुष्य-जाति की जननी को पाप करने के लिये उभारा था!

कवि का कथन है कि यह पिशाच आकाश से तलहीन खाड़ी में फेंक दिये जाने के बाद अस्फॉल्ट की धधकती हुई एक झील में जा-रुकता है! यहाँ बीते हुये सुख के क्षणों की याद और इस स्थान की चिरन्तन-यातना के कारण उसका दम घुटने लगता है और वह अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाता है कि अन्धकार में भी लपटों की ज्योति के सहारे उसकी आँख उन सभी लोगों पर पड़ती है जो उसकी भाँति ही ईश्वरीय-न्याय के शिकार हुये हैं और भयानक यातना भोग रहे हैं! यह दृश्य देखते ही वह घोर घृणा से भर-उठता है और अजेय इच्छा-शक्ति से तनकर ईश्वर के सामने कभी न झुकने और कभी न आत्म-समर्पण करने के पक्के इरादे के साथ प्रतिज्ञा करता है कि वह जब तक स्वयं् स्वर्ग का स्वामी न बन जायेगा, ईश्वर से बराबर लड़ता रहेगा। उसे पूरा विश्वास है कि उसके साथी उसे धोखा न देंगे!

उस शैतान के पास ही जलती हुई चिकनी मिट्टी पर उसका साहसी-साथी बियेलज़ेबब[1] पड़ा हुआ है। वह ईश्वर के पीछे पड़ने और फलस्वरूप और घोड़ दण्ड पाने से डरने के कारण शैतान के प्रस्ताव का समर्थन नहीं करता! किंतु शैतान उसे समझाता है कि निर्बल बनना सारे दुःखों और संकटों का आवाहन करना है, अतः उन्हें दुर्बलता से पीछा छुड़ाकर कुछ कर डालने के बाद ही मर-मिटने की बात सोचनी चाहिये, इस तरह तड़प-तड़प और कलप-कलप कर नहीं। इसके बाद वह उससे ईश्वर की योजनाओं में अपनी टांग अड़ाकर उसके मनोरथों पर पानी-फेर-देने का आग्रह करता है! इसी समय निगाह ऊँची करने पर वह अनुभव करता है कि ईश्वर ने पापियों को सज़ा देनेवालों को वापिस बुला लिया है! यही नहीं, वह यह भी देखता है कि गंधक

---

[1] एक पतित देवदूत-

की वर्षा रुक गई है और बिजली उन पर आकाश ढा-देने से हाथ खींच-चुकी है। अतएव, वह इस सुयोग से लाभ उठा कर अग्नि की उस झील से केवल स्वयं ही नहीं उबरना चाहता, प्रत्युत अपने साथियों की मुक्ति और उनकी क्षति-पूर्ति के लिये भी कुछ उपाय करना चाहता है और चल पड़ता है।

अब बिछुड़ती हुई लपटों के बीच, एक पास की पहाड़ी की ओर लम्बे डग भरता हुआ शैतान अपने चारों ओर घूरता है और चीख़-पुकार से भरे हुए इस स्थान के अंधकार की तुलना जगर-मगर करती हुई स्वर्ग की उस अलौकिक कान्ति से करता है, जिसका कि वह अब तक अभ्यासी रहा है। किन्तु इस भयानक विरोधाभास के रहते भी वह इस नतीजे पर पहुँचता है कि स्वर्ग में ग़ुलामी करने से नरक में राज्य करना कहीं अच्छा है। इसके बाद ही वह बियेलज़ेबब को पतित देवदूतों को बुलाने का संकेत करता है।

बियेलज़ेबब उसके आदेश का पालन करता है और उन सारे देवदूतों को पुकारता है जो कि उस झील पर पड़े हुये हैं और जो उतने ही सघन हैं जितनी कि 'वैलॉमब्रोसा'[1] के सोतों पर बिछी हुई पतझरी-पत्तियाँ। वे उसकी बोली सुनते हैं, सोते हुए पकड़े-गए सन्तरियों की भाँति ही हड़बड़ाकर उठ-बैठते हैं और प्रभु के चरणों पर शीश झुकाने के पूर्व मिश्र को तहस-नहस कर देने वाले टिड्डीदल की भाँति ही अगणित संख्या में नरक की छत के चारों ओर अपने पर फड़फड़ाते हैं। इनमें 'मिल्टन' कितनी ही अलौकिक-आत्माओं का भी वर्णन करता है जिनकी कि बाद में पैलेस्टाइन, मिश्र और यूनान आदि में पूजा भी हुई! इस समय कवि को शैतान की पृथ्वी की ओर झुकी हुई आँखें देख कर उसकी स्वर्ग में स्वाभिमान से चमकती हुई आँखें याद आ जाती हैं। इसके बाद वह बतलाता है कि वे देवदूत इस प्रकार शैतान की ध्वजा का अभिवादन करते हैं कि उनके नाद से नरक का वह प्रदेश ढह पड़ता है और इस प्रदेश के अतिरिक्त भी 'अशान्ति' और 'चिरन्तन रात्रि' का दिल दहल उठता है। उन सब की युद्ध-पताकायें हवा में फरफरा रही हैं कि वे स्वभावतः फैल जाते हैं और अब भी एक इतना बड़े और इतने शक्तिशाली दल को अपनी इच्छा पर निर्भर देखकर शैतान का हौसला बहुत बढ़ जाता है और वह घमंड से फूला नहीं समाता!

यद्यपि इस समय शैतान यह अनुभव करता है कि आकाश को उसका कहा करने के लिये विवश कर ये पतित देवदूत स्वर्ग को एक प्रकार का दंड ही दे रहे हैं, तथापि यह बात उसे बहुत नहीं खटकती वरन् उसकी बुद्धि को छूती हुई सी निकल जाती है। वह घोषित करता है कि उनके द्वारा मोल लिया गया संघर्ष न तो अनुचित है, न अप्रिय और न कम शानदार; बल्कि यह कि हार जाने पर भी वे एक बार फिर यत्न कर अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त कर सकते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि वह उन सब को सुझाता है कि अब वे अपने शत्रु की शक्ति का अनुभव कर रहे हैं और समझ रहे हैं कि उसे शक्ति से जीतना उनके वश के

[1] फ़्लोरेंस के पूर्व की प्रसिद्ध घाटी और मठ-

बाहर की बात है, अतएव उन्हें 'सर्वशक्तिमान्' के द्वारा अभी-अभी बनाई गई नई दुनिया को बरबाद कर अपनी शक्ति का परिचय देना चाहिये, क्योंकि आत्मसमर्पण तो ऐसी दुर्बलता है जिसकी वह कल्पना ही नहीं कर सकता !

अब पतित देवदूत अपने रहने के योग्य उपनिवेश बनाने के लिए, 'मैमन'[1] के निर्देशन में, पास की पहाड़ियों की खानों से सोना निकालते हैं, उनसे ईंटे बनाते हैं और उनकी सहायता से शैतान और उसके सरदारों की राजधानी 'पैन्डिमोनियम' का निर्माण करने में जुट-जाते हैं ! वे पहिले बड़ी शीघ्रता से सुविधाजनक बड़े कमरे को पूरा करते हैं और उसे दीपों से इस प्रकार सजाते हैं कि वह जगमगा उठता है। इसके बाद अपने सहायकों के साथ शैतान उस बड़े कमरे में प्रवेश करता है, दूसरे पतित देवदूत बौनों के रूप में उसकी छत के नीचे इकट्ठे होते हैं और महान परामर्श आरम्भ होता है।

पर्व दो—

शैतान आँखों में चकाचौंध पैदा करने वाले एक रत्नजटित सिंहासन पर आसीन है और अन्य सरदार उसे चारों ओर से घेरे हुये बैठे हैं। वह अपने अनुयायिओं को सम्बोधित कर घोषित करता है कि सब से ऊँचा पद प्राप्त करने के लिये उसकी उन सबसे अधिक हानि हुई है और चूंकि वह उन सबसे अधिक कष्ट सहन करता-रहा है अतएव किसी को उससे या उसके सर्व-प्रमुख अथवा सर्व-प्रधान होने से जलन नहीं होनी चाहिये !

इतना कहने के बाद वह अपने साथियों का अगला इरादा जानना चाहता है कि मोलॉक नामक देवदूत ईश्वर के विरुद्ध लड़ाई छेड़-देने के पक्ष में अपना मत देने के बाद एक इतना जोशीला भाषण देता है कि सारे उपस्थित लोगों की भुजायें लड़ने के लिये फड़क उठती हैं। बेलियल या बियेलज़ेबब, जो कि गंदी से गंदी बात को तर्क-संगत एवं सुन्दरतर रूप देने में पूर्णतया समर्थ हैं, अपने साथियों से आग्रह करता है कि चूँकि वे सर्वशक्तिमान की महान शक्ति का परिचय पा चुके हैं और जानते हैं कि वह बड़ी सरलता से उनकी सारी योजनायें मिट्टी में मिला सकता है अतएव उन्हें लड़ने की जगह छल-छद्म से ही काम लेना चाहिये ! फिर भी, बात यहीं समाप्त नहीं होती और दूसरी ओर से 'मैमन' का स्वर गूँज-उठता है। वह न तो युद्ध के पक्ष में है और न कपट-जाल के, प्रत्युत वह तीसरा ही प्रस्ताव सामने रखता है कि चूँकि इस प्रदेश में सोना-चाँदी और सारी धन-सम्पदा बही-बही फिर रही है, अतएव उन्हें सब कुछ भूलकर केवल सम्पदाओं और ख़ज़ानों की तहें लगाने में ही सन्तोष करना चाहिये !

किंतु पतित देवदूत 'माइकेल' की तलवार की काट से डरते हैं, इसलिए ही सब की बातें सुन लेने के बाद बियेलज़ेबब के प्रस्ताव का हृदय से समर्थन करते हैं, उसे प्रयोग में लाने की बात सोचते हैं और कहते हैं कि वे हाल की रची-गई नई दुनिया में और आराम से बसने की चेष्टा

---

[1] धन के देवता

करेंगे और देखेंगे कि ऐसा सम्भव भी है या नहीं ? इस पर शैतान उत्सुक दृष्टि से उनकी ओर देखता है कि उनमें से कोई आगे आये और इसके लिये आवश्यक योजना बनाने और उसे कार्य-रूप में परिणित करने का सारा बोझ अपने ऊपर ले ले। किंतु यह देखकर कि स्वेच्छा से कोई आगे नहीं आ रहा है शैतान घोषित करता है कि सबसे कठिन और सबसे संकटपूर्ण काम तो वास्तव में उसकी सम्पत्ति है और उसका अधिकार है, और ऐसा अनुचित भी नहीं है क्योंकि वह ऐसे ही कार्यों के लिये बना ही है। इसके बाद वह उन सबको चेतावनी देता है कि वे पूरी तरह चौकन्ने रहकर निगरानी करें, ताकि इस बीच में कोई और संकट उन पर न आये।

इस प्रकार मन्त्रणा समाप्त होती है। अब पतित देवदूत नरक में स्वाभाविक रूप से आकर अत्र-तत्र-सर्वत्र फैल जाते हैं। उनमें से कुछ कितने ही गुप्त-स्थान ढूँढ निकालते हैं, जहाँ बड़ी-बड़ी नदियाँ हैं, आग और बर्फ़ के प्रदेश हैं और अति भयानक राक्षस हैं, दूसरी ओर कुछ पूर्वज्ञान, इच्छा, नियति और दर्शन के दूसरे प्रश्नों पर तर्क-वितर्क कर अपना समय व्यतीत करते हैं, और जो शेष बचते हैं वे कीर्त्तन में भाग लेते हैं।

इस बीच में शैतान अपनी भयंकर यात्रा पर चल देता है और सीधे नरक के फाटकों पर आता है, जिनके सम्मुख दो विकराल और घोर डरावने यमदूत खड़े हैं। इनमें से एक कमर तक स्त्री है और ऊपर एक परवाला अजगर, और दूसरा भयावना अस्थि-पंजर मात्र, जिसके सिर पर शाही ताज है और हाथ में एक चमचमाता हुआ भाला! यह अस्थि-पंजर-मात्र शैतान को अपनी ओर आता देखकर उसे मार डालने की धमकी देता है कि शैतान भी उससे लोहा लेने को तैयार हो जाता है, किंतु इसी समय वह स्त्री उन दोनों के बीच में आ जाती है और यह प्राणघातक युद्ध बरका देती है। इसके बाद वह अपना परिचय देती है कि वह उसी शैतान की बेटी दुष्कृति या पाप है, जिसने एक बार अपने पिता से ही अनुचित यौन-सम्बन्ध स्थापित कर 'मृत्यु' नामक पुत्री को जन्म दिया है और जो अब इतनी सबल हो गई है कि वे दोनों मिलकर भी उसे किसी प्रकार जीत नहीं सकते। इतना कह चुकने के बाद द्वार खोलने की बात आने पर वह अपनी असमर्थता प्रकट कर कहती है कि उसमें द्वार खोलने की शक्ति नहीं है। किंतु शैतान फिर भी अनुरोध करता है और वचन देता है कि यदि वह उसे केवल उन द्वारों से होकर गुज़र जाने देगी तो वह उसे और उसकी पुत्री को नई दुनिया में मनमाने ढङ्ग से जीवन बिताने का पूरा अवसर देगा। इतना सुनते ही वह कुँजी लाकर उन भारी-भरकम फाटकों को इस प्रकार खोल देती है कि कोई नारकीय शक्ति उन्हें कभी भी दुबारा बन्द नहीं कर पाती।

अब इन चौड़े फाटकों से शैतान भीतर प्रवेश करता है कि दूर से ही उसकी दृष्टि 'अशान्ति' पर पड़ती है जहाँ गर्मी और सर्दी, नमी और ख़ुश्की अपने-अपने प्रभुत्व और आधिपत्य के लिये एक दूसरे से झगड़ रही हैं। कहना न होगा कि यही वह स्थान है जहाँ विप्लव और मोह के तत्वों के बीच से होकर शैतान को उस स्थान तक पहुँचना है, जहाँ वह बन्दी बना लिया जायेगा।

× ×

इसके आगे का वर्णन सचमुच ही बड़ा चित्रात्मक और सजीव है। कवि बड़े कलात्मक ढङ्ग से बतलाता है कि कैसे कभी परों और कभी पैरों के सहारे लम्बी-लम्बी चहरदिवारियाँ और गहरी-गहरी खाइयाँ पार करता हुआ शैतान धीरे-धीरे उस स्थान की ओर बढ़ता है जहाँ 'अशान्ति' और 'रात्रि' सिंहासनों पर विराजमान उस दुनिया को लेकर विचारों में उलझी हुई हैं जो कि सोने की जंजीर के द्वारा स्वर्ग से नीचे की ओर लटकी हुई है। शैतान उनके समीप पहुँचता है और उन्हें सम्बोधित कर बड़ी सहानुभूति और समवेदना प्रकट करता है कि वे दोनों ओर से मारी गईं—एक ओर तो पतित देवदूतों का निवास स्थान 'टारटरस' उनके हाथ से निकल गया और दूसरी ओर नई दुनिया के ज्योति-प्रदेशों से भी उन्हें हाथ धोना पड़ा। इतना कहने के बाद वह ईश्वर के मनोरथों को विफल कर उनका यह राज्य-भाग उन्हें फिर से सौंप देने का प्रस्ताव करता है कि उनकी बाँछें प्रसन्नता से खिल उठती हैं और वे उसे शीघ्रता से पृथ्वी की ओर पहुँचा देती हैं। यहाँ धूर्त्ततापूर्ण प्रतिहिंसा और अभिशाप से बुरी तरह अंधा होकर शैतान बड़ी ही मनहूस घड़ी में आगे पैर बढ़ाता है।

पर्व तीन—

पाठकों को ज्ञात होगा कि इस महाकाव्य की रचना के बहुत पहले ही 'मिल्टन' की आँखें उसे धोखा दे चुकी थीं और ज्योति की किरणें उसके अन्धकारमय जगत से हमेशा के लिये विदा ले चुकी थीं, अतएव इस स्थल पर 'ज्योति' को स्वर्ग की पुत्री मानकर वह बड़े कारुणिक ढङ्ग से उससे सहायता की भीख माँगता है, ताकि दूसरे अन्ध-कवियों और भविष्य-द्रष्टाओं की भाँति वह भी अपनी उस दुनिया का विशेष सजीव, सफल और कुशल वर्णन कर सके जो कि सदैव ही उसके मानस की आँखों के आगे रहती-आई है। तदन्तर वह चित्रित करता है कि कैसे नीचे की ओर घूरते समय विचार-मग्न, चिन्तित 'परमपिता' की दृष्टि संसार या नव-निर्मित नरक और बीच के चौड़े दरार पर पड़ती है जहाँ अंधी और पवित्र वायु के मध्य में स्थित शैतान इधर-उधर मंडरा रहा है।

दूसरे ही क्षण ईश्वर अपने सारे भक्तों और अपने एक-मात्र पुत्र को अपने समीप बुलाता है। ईश्वर के इस पुत्र के स्वर्ग में आने के कारण ही शैतान ने विद्रोह किया है। अतएव ईश्वर उसे सम्बोधित कर उसके प्रतिद्वंदी की ओर संकेत करता है और कहता है कि शैतान बदला लेने पर तुला-बैठा है, किन्तु वह नहीं जानता कि इसका कुपरिणाम स्वयं उसे ही भोगना पड़ेगा। इसके बाद वह कहता है कि देवदूतों का पतन उनकी अपनी दुर्बुद्धि के कारण हुआ है और एक बार पतित होने पर उनकी मुक्ति की कोई भी आशा नहीं हैं, किंतु दूसरी ओर 'मनुष्य' का पतन शैतान से छले जाने के कारण ही होगा और इस प्रकार वह मर जायेगा, किंतु तो भी यदि कोई दूसरा उसके पापों का दंड भोग लेगा तो ऐसा नहीं है कि वह कभी भी क्षमा न किया जाय, और कभी भी उसकी मुक्ति न हो, प्रत्युत यह कि वह एक-न-एक दिन क्षमा कर ही दिया जायेगा और उसकी मुक्ति भी हो ही जायगी।

पर,कोई भी देवदूत इतना महान नहीं है कि मनुष्य के त्राण के लिये इतना बड़ा त्याग कर सके, अतएव 'स्वर्ग' इस विषय में मौन ही रहा-आता है। परन्तु शीघ्र ही 'ईश्वर का बेटा', जिसमें कि ईश्वरीय प्रेम की पूर्णता का निवास है, यह देखकर कि यदि उसने हस्तक्षेप न किया तो मनुष्य का अस्तित्व ही मिट जायेगा, घोषणा करता है कि वह 'मनुष्य' के लिये अपने को मृत्यु के हाथों सौंप देने को तैयार है। फिर भी, वह ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह उसे अँधेरी क़ब्र में ही न छोड़ दे, बल्कि विजयी के रूप में क़ब्र से बाहर आने की आज्ञा दे-दे ताकि वह पाप, मौत और नरक से मुक्त हुई सारी आत्माओं का नेतृत्व कर उन्हें स्वर्ग में ला सके.........।

'ईश्वर के बेटे' का यह प्रस्ताव सुन कर देवदूत उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते। पिता-ईश्वर उस पर प्यार भरी दृष्टि डाल कर उसका आत्म-त्याग स्वीकार करता है और घोषित करता है कि वह यथासमय पृथ्वी पर अवतार लेकर मनुष्य-जाति के प्रथम पिता का स्थान ग्रहण करेगा, और जिस प्रकार 'आदम' में सब लोग खो गये उसी प्रकार उसके हृदय में निवास करने वाले सारे लोग पापों से, अथवा पापों का भोग भोगने से बच जायेंगे। इतना ही नहीं, प्रत्युत अपने 'बेटे' की आसक्ति और भक्ति देख कर वह बहुत प्रसन्न होता है और उसे वचन देता है कि वह सदैव ही उसकी-अपनी बराबरी से राज्य करेगा और इस प्रकार मनुष्य-जाति के भाग्य का फ़ैसला भी।

तदनन्तर ईश्वर स्वर्गीय विभूतियों की ओर मुड़ता है और उन्हें अपने नये स्वामी की आराधना का संकेत करता है। इस पर सारे देवदूत अपने चिर-विकसित फूलों और सोने के मुकुटों को सिर से उतार कर श्रद्धा और भक्ति से ईसा के सम्मुख नमन् करते हैं, और 'ईश्वर के-बेटे' को 'मनुष्यों का मुक्ति-प्रदाता' घोषित कर 'पिता और पुत्र' का गुणगान करते हैं।

इधर देवदूत इस प्रकार व्यस्त हैं और उधर शैतान 'अशान्ति' से होकर शीघ्र ही एक ऐसे स्थान से निकलता है जहाँ 'मूर्तिपूजा', 'अन्धविश्वासों' और 'मिथ्याभिमानों' का निवास है। इनमें प्रत्येक को निकट भविष्य में दंड मिलने वाला है। इसके बाद वह स्वर्ग को जाने वाली सीढ़ी के पास से होकर संसार को जाने वाले पथ की ओर पैर बढ़ाता है और उस तक पहुँचने के लिये कितने ही रास्तों की धूल फाँकता हुआ 'सूर्य्य' में पहुँचता है। यहाँ वह ठहर कर दम लेना चाहता है और एक लम्बे, छरहरे, जवान-देवदूत का रूप बना कर श्रेष्ठतर देवदूत 'यूरियल' से कहता है कि सृष्टि के समय अनुपस्थित रहने के कारण वह अब नई दुनिया को देखना और ईश्वर के प्रति सम्मान प्रकट करना चाहता है। इस पर घमंड से सिर ऊँचा कर कि उसने वह सारा दृश्य देखा है, 'यूरियल' विस्तार में वर्णन करता है कि कैसे ईश्वर की वाणी से अन्धकार मिट गया, कैसे सारे ठोस देखते-देखते नक्षत्रों में बदल गये और कैसे अपने-अपने लिये पूर्व निश्चित ग्रह-पथों के चारों ओर घूमने लगे। इसके बाद 'यूरियल' इशारे से शैतान को नव-निर्मित पृथ्वी दिखलाता ही है कि वह दुष्टात्मा उस ओर बहुत उत्सुक होकर वेग से बढ़-चलता है।

पर्व चार—

यहाँ मिल्टन कामना करता है कि उसकी वाणी इतनी व्यापक हो जाये कि वह हमारे आरम्भिक जननी-जनक को भावी संकटों से सचेत ही न कर सके बल्कि उन पर टूटनेवाले संकट

के पहाड़ों से उनकी रक्षा भी कर सके। तदन्तर वह वर्णन करता है कि कैसे विद्रोही नरक हृदय में लेकर शैतान उस पहाड़ी से स्वर्ग में झाँकता है जहाँ कि वह अभी-अभी उतरा है। इस समय यह विचार उस पर बुरी तरह हावी है कि वह स्वर्ग और नई पृथ्वी दोनों से वंचित कर दिया गया है, अतएव इस बात पर एक बार उसकी आँखें भयानक क्रोध से लाल हो उठती हैं, और दूसरी बार हार्दिक क्षोभ के कारण उसके चेहरे का रंग उड़ जाता है। इस प्रकार क्रोध और क्लेश की गहरी अनुभूतियों के कारण उसकी आकृति इतनी विकृत हो-उठती है कि 'यूरियल' ये सारे परिवर्त्तन और मुख-मुद्रायें लक्ष्य कर उसके पीछे-पीछे उड़ने लगता है और पहली बार संदेह करता है कि सम्भव है कि यह कोई नरक का भागा हुआ पापी हो!......

अब कल्पना को पूरी छूट देकर अचरजभरे 'ईडेन' का चित्रण करने केबाद 'मिल्टन' बतलाता है कि कैसे बीच की दीवाल को पार कर शैतान 'ईडेन'[1] की सीमाओं में उतर जाता है और एक भयानक समुद्री चिड़िया के रूप में एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ जाता है। यहाँ उसकी दृष्टि निरावरण राजसी वैभव से सुसज्जित ईश्वर-जैसी दो मूर्त्तियों पर पड़ती है। ये दोनों आदम और ईव हैं। आदम ध्यान और शौर्य का अवतार है तो ईव कोमलता और शोभा की साकार प्रतिमा! ये दोनों एक पेड़ के नीचे बैठे हैं और पृथ्वी के सारे पशु उनके चारों ओर शान्तिपूर्वक मंगल मना रहे हैं। ये आदम और ईव ही वे जीव हैं जो कि स्वर्ग में शैतान के पिछले स्थान की पूर्ति करनेवाले हैं, अतएव शैतान उन्हें देखकर विस्मय करता है और उनकी सुख-शांति मिटा कर उन्हें शोक और दुख कें हाथों सौंप देने का दृढ़ संकल्प करता है। वह यह सारा दुष्कार्य सर्वथा तर्कसंगत समझता है क्योंकि अपने विचार से वह अपने और अपने साथियों के और सुख से बस जाने के लिये ही यह सबकुछ कर रहा है। फलतः वह एक बार एक पशु का रूप धारण करता है और दूसरी बार एक दूसरे पशु का। इसके बाद वह अदृश्य रूप से आदम और ईव के समीप पहुँचता है और उनकी सारी बातचीत कान लगा कर सुनता है।

यहाँ शैतान को कितनी ही बातों का पता चलता है और उनके साथ यह भी कि ईव के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब पहली बार आँख खोलते ही अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाने पर उसने फूल-पौदे देखे, पानी में अपनी परछाईं देखी और एक अज्ञात वाणी सुनी जिसकी आज्ञा का उसने पालन भी किया। इस वाणी ने उसे उसके साथी से मिला देने का वचन देकर यह बतलाया कि उसका वह सहचर उसको माँ को एक मानवी का रूप देगा। किंतु इस प्रकार-मिले-रूप ने यह प्रमाणित कर दिया कि वह अभी अभी पानी में देखे गये-रूप की अपेक्षा कहीं कम आकर्षक है, अतएव उसने उल्टे-पैरों लौटने का इरादा किया ही कि आदम ने उसे अपनी अर्द्धांगिनी के रूप में अंगीकार कर लिया। उस समय से अबतक वे दोनों इस उपवन में आनन्द से रहे-आये हैं! यहाँ एक विशिष्ट पेड़ के फल को छोड़ कर शेष हर वस्तु उनकी इच्छा की अनुगामिनी रही है।

[1]पृथ्वी पर स्थित आदम और ईव का निवास-स्थान, एक अलौकिक बाग-पृथ्वी का स्वर्ग।

इस प्रकार शैतान को इस रहस्य का पता चलता है कि हमारे प्रथम माँ-बाप आदम और ईव को एक विशेष पेड़ के फल खाने की मनाही है। अतएव वह उन्हें यह विश्वास दिलाने की बात सोचता है कि भले-बुरे का ज्ञान होते ही वे ईश्वर के बराबर हो जायेंगे। उसका विचार है कि इस प्रकार उल्टा-सीधा समझाकर वह उन्हें ईश्वरीय आदेश का उल्लंघन करने के लिये विवश कर देगा, और वे उस विशिष्ट पेड़ का फल खाने को ललचा उठेंगे। इस तरह के विचार बुद्धि में आते ही उसे अपना अभीष्ट सिद्ध-हुआ दीखता है और वह इन विचारों को कार्य-रूप में परिणित करने के लिये चोर की भाँति चल देता है।

× ×

इसी बीच में देवदूतों का मुखिया स्वर्ग के पूर्वी द्वार के समीप उन देवदूतों का निरीक्षण करता है जो कि स्वर्ग की सीमाओं पर रात भर पहरा देने के लिये अपने-अपने स्थानों से निकल कर बड़ी प्रसन्नता से स्वर्ग की हर दिशा में बढ़ रहे हैं। इसी समय सूर्य्य की किरण पर हवा में उड़ता हुआ 'यूरियल' 'जेबरियल' के समीप आता और उसे सूचित करता है कि स्वर्ग से वहिष्कृत कोई ईश्वर-विरोधी पापी नरक से निकल-भागा है, जिसे उसने स्वयं दोपहर को स्वर्ग के फाटकों के पास देखा है। इस पर 'जेबरियल' उसे विश्वास दिलाता है कि इस प्रकार का कोई भी प्राणी उन फाटकों से नहीं निकला, फिर भी यदि कोई पापी अपनी सीमाओं से आगे बढ़कर इस प्रदेश में आ गया है तो, किसी भी रूप में क्यों न हो, प्रातःकाल तक निश्चित रूप से पकड़ जायेगा! इतना सुनते ही 'यूरियल' सूर्य-तल के अपने नियत-स्थान पर लौट आता है कि चितकबरी गोधूली चुपके-चुपके पृथ्वी पर बिछ जाती है। दूसरे ही क्षण 'जेबरियल' देवदूतों के दल-के-दल विरोधी दिशाओं में तैनात करता है और अपने दो सहकारियों को विशेष-रूप से आदेश देता है कि वे जायें और शत्रु की टोह लें!

× ×

अब प्रार्थना का समय होता है। आदम और ईव प्रार्थना में भाग लेने के बाद विदा हो रहे हैं कि ईव आदम से प्रश्न करती है कि तारे रात में ही क्यों आकाश में चमकते हैं जब कि वे सो जाते हैं और उनका सुख नहीं ले पाते। पाठकों को यह जानकर सन्तोष होगा कि ईव के सारे ज्ञान का श्रोत आदम ही है। अतएव आदम उसका प्रश्न सुनता और उत्तर देता है कि अन्धकार के प्रसार, विस्तार और प्रभुत्व में टांग अड़ाने के लिये ही तारे आकाश में जगमगाते हैं। यही नहीं, वह उसे विश्वास दिलाता है कि उनके सो जाने पर देवदूत उनकी रखवाली करते हैं और उसका प्रमाण यह है कि उसने आधीरात के समय प्रायः उनकी वाणी सुनी है। इसके बाद वे अपने निवास के लिये स्वर्गीय-माली के द्वारा चुने गये अपने कुँज में प्रवेश करते हैं। इस कुंज में अनेक मोहक फूल खिलते हैं और कोई पशु, पंछी या कीट इसमें प्रवेश करने का साहस नहीं करते!

उधर 'इथूरियल' और 'जेफ़ॉन' नामक देवदूत शत्रु की खोज करते-करते इस कुँज में पहुँचते हैं और देखते हैं कि एक मेढक ईव के कान के पास दुबक कर बैठा हुआ है और

भाँति-भाँति के मायावी कौशल से उसकी विचार-शक्ति तक पहुँचने की चेष्टा कर रहा है।

यह देखते ही 'इथूरियल' उसे अपने भाले से छूता है और वह अधम जीव राक्षस का रूप धारण कर लेता है क्योंकि 'इथूरियल' के भाले की यह विशेषता है कि उसके स्पर्श-मात्र से सारी भ्रामक वस्तुयें अपने सच्चे और यथार्थ रूप में आ जाती हैं। 'इथूरियल' उसे तुरन्त ही पहिचान लेता है और उससे पूछता है कि वह कैसे निकल भागा और इस स्थान पर किस लिये आया। इस पर शैतान घमंड से उत्तर देता है कि कोई समय था कि शायद ही किसी में उससे इस प्रकार के अपमानजनक व्यवहार करने का साहस होता, उसका नाम पूछने की आवश्यकता तो कब और किसे पड़ती! शैतान के इतना कहते ही 'जेफ़ॉन' अपने इस पूर्व अध्यक्ष 'लूसिफ़र' को तुरन्त ही पहिचान लेता है और उसके विगत यश और उसकी विगत प्रभुता का यह विकृत और धूमिल रूप देखकर बड़ा दुखी हो-उठता है। अब दोनों देवदूत बन्दी के रूप में उसे 'जेबरियल' के पास लाते हैं। 'जेबरियल' इस क़ैदी को पहिचान लेता है और वह भी उसके पिछले तेज और वैभव के उस विकृत, म्लान रूप की आलोचना कर खेद प्रकट करता है। इसके बाद पास आ जाने पर वह शैतान को सम्बोधित करता है और प्रश्न करता है कि उसने निश्चित बन्धन क्यों तोड़े। इस पर शैतान उग्र हो उठता है और चुनौती सी देता-हुआ कड़े स्वर में उत्तर देता है कि निकल भागने की चेष्टा समान-रूप से सभी बन्दी किया करते हैं क्योंकि यातना किसी को भी नहीं रुचती, किंतु यदि ईश्वर की इच्छा है कि वह उन सबको अधम और पतित कहकर युग-युगों तक यानी चिरन्तन काल तक कारावास में सड़ाता रहे तो उसे द्वारों की सुरक्षा का और कड़ा प्रबन्ध करना चाहिये, उनपर और कड़ी निगरानी रखनी चाहिये! किंतु, 'जेबरियल' पर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता और वह उसे चेतावनी देता है कि उसकी आज्ञा का उल्लंघन कर उसने अब अपना दण्ड सात गुना कर लिया है। इस प्रकार 'टारटरस' से भाग निकलने पर भी शैतान की मुक्ति का कोई लक्षण नहीं दीख पड़ता, उसका यातना और दन्ड से पीछा नहीं छूटता।

अब 'जेबरियल' उस पर व्यंग्य करता है कि क्या उसके सहकारी यातना झेलने में उस से अधिक अभ्यस्त हैं या वह उन्हें भी धोखा देकर सदैव के लिये छोड़ आया है। इस पर शैतान की आँखें क्रोध से लाल हो उठती हैं और वह डींगें मारने लगता है कि लड़ाई में भयानकतम होने के कारण केवल उसमें ही इतना साहस रहा है कि वह यह यात्रा करे और निश्चित करे कि उन सबके रहने के लिये कोई और अधिक सुखदायक स्थान मिल सकता है कि नहीं। किंतु चूँकि इस उत्तर के सिलसिले में शैतान अभी-अभी कही-हुई अपनी ही बात का दूसरे वाक्य से विरोध करता है, अतएव देवदूत उसे झूठा और पाखंडी ठहराता है और उसे यह कहकर भाग जाने का आदेश देता है कि यदि वह दुबारा स्वर्ग के पास झाँक भी गया या छिपा हुआ पाया गया तो उसे घसीट कर नरक की तलहीन खाड़ी में ही न डलवा दिया जायेगा बल्कि उसे ज़ंजीरों से जकड़ भी दिया जायेगा ताकि वह दुबारा न भाग सके! इस धमकी के कारण शैतान में इतनी घृणा जाग जाती है और वह दूसरों के प्रति इतना अविचार शील हो उठता है कि देवदूतों का चेहरा क्रोध सेआग की भांति लाल हो उठता है, वे उसे चारों ओर से घेर लेते हैं और अपने

भालों से मार डालने को तैयार हो जाते है। शैतान ऊपर की ओर दृष्टि करता है! वह देखता है कि स्वर्ग का पलड़ा भारी है अर्थात् यह कि लड़ाई की बात उठाकर वह अपनी ही जान ख़तरे में डालेगा, अतएव वह क्रोध में भर कर भाग खड़ा होता है।

कहना न होगा कि रात की मिटती हुई परछाइयाँ भी शैतान के साथ ही चली जाती हैं।

पर्व पाँच—

उषा की आँखें खुलती हैं और उसके साथ ही आदम की भी! वह स्वयं तो बड़ी स्फूर्ति का अनुभव करता है किन्तु दूसरी ओर देखता है कि उसकी सहचरि के गाल बुरी तरह तमतमाये हुये हैं और वह सब तरह अस्त-व्यस्त है। वह अधीर हो उठता है और उसे जगाता है! उसे पता चलता है कि उसने कोई स्वप्न देखा है जिसमें किसी अज्ञात ध्वनि ने उससे हठ किया कि वह उठे और उपवन में घूमे। इसके आगे ईव बतलाती है कि कैसे इस ध्वनि के कारण वह कितने ही पेड़ों के नीचे से होती हुई उस पेड़ के नीचे आ-खड़ी हुई जिसका फल खाना पाप है। यहाँ उसने एक परदार आकृति देखी जिसने उससे अनुरोध किया कि वह ज्ञान के वरदान का अपमान न करे और उस पेड़ के सेव का स्वाद चखे! यद्यपि इस सुझाव-मात्र से डर के मारे उसके हाथ-पैर ठंडे पड़ गये, फिर भी वह स्वीकर करती है कि उसने उसका कहना मान लिया क्योंकि उसने उसे विश्वास दिलाया कि एक बार उस फल का स्वाद पाते ही वह देवदूतों के भाँति ही आकाश में उड़ने लगेगी और सम्भव है कि सुयोगवशात् उसकी भेंट ईश्वर से भी हो जाय! अतएव इस विशेषाधिकार से लाभ उठाने की भावना उसमें इतनी बलवती हो उठी कि जैसे ही फल उसके ओठों से लगाया गया उसने उसे चख लिया और जैसे ही उसने उसे चखा वह ऊपर उठी किंतु फिर नीचे की ओर गिरने लगी कि इसके बाद ही आदम ने अपने हाथ के स्पर्श से उसे जगा दिया!

अब आदम अपनी संकटापन्न पत्नी को सान्त्वना देता है और उसे उपवन में लाता है कि वे अनावश्यक-रूप से सघन पेड़ों की डालें काटने और एक पेड़ से दूसरे पेड़ की लताओं को रचाने और संवारने में लग जाते हैं। इधर ये पति-पत्नी इस प्रकार व्यस्त हैं कि ईश्वर 'रैफ़ेल' नामक श्रेष्ठतर देवदूत को बुलाता है और उसे सूचित करता है कि शैतान नरक से छिप कर भाग निकला है और मानव के अपार आनन्द में बाधा डालने के लिए किसी प्रकार 'ईडेन' में जा पहुँचा है। इसके बाद वह उसे उसी क्षण पृथ्वी पर जाने का आदेश देकर कहता है कि वह आदम से मिले, उससे उसी तरह बात करे जैसे कि एक मित्र दूसरे मित्र से करता है और इस प्रकार शैतान की सारी कृतियों की चर्चा कर उसे सावधान कर दे कि शेष उसके वश की बात है, वह चाहे तो अपने सुखमय जीवन की इतिश्री कर दे और चाहे तो उसे स्थायी रूप दे-दे। किन्तु ईश्वर का कथन है कि उसे सचेत करना बहुत आवश्यक है अन्यथा अपनी इच्छा से पाप करने पर भी मनुष्य अपना सारा दोष उसी के सिर मढ़ेगा और उसका विरोध कर उलाहना देगा कि उसे पहिले से किसी प्रकार की चेतावनी क्यों नहीं दी गई!

देवदूत संकीर्त्तन में निमग्न हैं कि 'रैफ़ैल' उनके समीप से निकल कर सुनहले द्वार से होता हुआ विशाल सीढ़ियों से उतरता है और उड़ना आरम्भ कर देता है। शीघ्र ही यह षटपंख, श्रेष्ठतर देवदूत पृथ्वी पर पहुँचता है। इस समय ऐसा लगता है जैसे कि इसके रंग-बिरंगे इन्द्र-धनुषी पर स्वर्ग के अपने रंगों में डुबो दिये गये हैं।

इस देवदूत को देखते ही आदम ईव से अपने मन के थोड़े से फल इकट्ठे करने को कहता है। इधर इतना सुनते ही ईव आतिथ्य-सत्कार के लिये जल्दी-जल्दी फल बटोरने लगती है कि उधर आदम देवदूत के स्वागत के लिये आगे आता है। आदम जानता है कि वह देवदूत कोई ईश्वरीय सन्देश देने के लिये ही उसके पास आ रहा है।

देवदूत समीप आता है और ईव के अभिवादन का उत्तर उस सम्बोधन से देता है जिसका कि बाद में 'मेरी' के लिये प्रयोग हुआ! इसके बाद वह आदम के निवास-स्थान में जाता है! यहाँ वह आदम के साथ भोजन करता है और यह स्वीकार करता है कि स्वर्ग में देवदूत केवल आध्यात्मिक भोजन करते हैं, यद्यपि मनुष्य की सी इन्द्रियाँ उनके पास भी हैं!

थोड़ी देर बाद आदम को ज्ञात होता है कि अब वह उससे जो चाहे सो पूछ सकता है, केवल उन विषयों की चर्चा नहीं कर सकता जो कि थोड़े समय के लिये दबा दिये गये हैं। इस पर आदम उसके इस प्रकार कष्ट कर पृथ्वी पर आने का कारण जानना चाहता है। देवदूत उत्तर देता है और उसके वाक्यों से आदम यह निष्कर्ष निकालता है कि उसका और उसकी पत्नी का आनन्दमय जीवन संकट में हैं। किंतु 'रैफ़ैल' उसे आश्वासन देता है कि वह जब तक ईश्वर की आज्ञा का पालन करता रहेगा तब तक उस पर किसी प्रकार की आँच न आ सकेगी। इसपर भी उसे अपने भाग्य का चुनाव स्वयं ही करना चाहिये, क्योंकि स्वतन्त्रता देवदूतों की भाँति ही मनुष्य होने के नाते उसका भी जन्म-सिद्ध अधिकार है।

तत्पश्चात आदम स्वर्ग के समाचार जानना चाहता है और प्रश्नसूचक दृष्टि से 'रैफ़ैल' की ओर देखता है, किन्तु 'रैफ़ैल' उत्तर देने का विचार सामने आते ही यह नहीं सोच पाता कि वह कैसे देवताओं के लिये भी अबोधगम्य उपादनों को इस तरह समझा-दे कि वे मनुष्य की सीमित समझ में आ जायें और, यह कि, कुछ बातें रहस्य भी हो सकती हैं, जिनकी चर्चा सम्भव है न्यायसंगत न हो! फिर भी, यह समझ कर कि स्वर्ग की सारी घटनाओं की संक्षिप्त रूप-रेखा-मात्र का ज्ञान करा देना अधिक अनुचित नहीं है, वह आदम को बतलाता है कि कैसे ईश्वर ने 'बेटे' की सृष्टि की और इस सृष्टि के बाद देवदूतों को आदेश दिया कि वे उसका अभिवादन कर उसकी पूजा करें! इसके बाद वह कहता है कि 'लूसिफ़र' इस घटना से बहुत क्रुद्ध हुआ क्योंकि स्वर्ग में ईश्वर के बाद वह स्वयं ही सर्वश्रेष्ठ और सर्वपूज्य माना जाता रहा है। अब रात होते ही 'लूसिफ़र' स्वर्ग के उस प्रदेश में आया जिसकी सुरक्षा का भार उसी पर रहा है और यहाँ आते ही उसने 'बियेलज़ेबब' से उस ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने का प्रस्ताव किया, जो कि अपने क्रीत-दासों की भाँति ही उनसे अपने पुत्र का सम्मान कराना चाहता है। यही नहीं, बल्कि इस तर्क के सहारे कि इस प्रकार धीरे-धीरे उन सब को दास बना लिया जायेगा, शैतान स्वर्ग के

एक-तिहाई लोगों को ईश्वर के विरुद्ध उभाड़ने में सफल हो गया और वे परमपिता के विरुद्ध ज़िहाद बोलने को तैयार हो गये, किन्तु उसके एक 'ऐबडियल' नामक अनुयायी ने उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों पर विश्वास नहीं किया। कहना न होगा कि ईश्वर का विरोध करने के प्रस्ताव-मात्र से उसका शरीर घृणा से आग की भाँति जलने लगा और शैतान को जी-भर बुरा-भला कह लेने के बाद ईश्वर के कानों तक सारा षड़यन्त्र पहुँचा देने के इरादे से उसने अपने साथियों से विदा ली। इन सारे विश्वासघातियों में केवल 'ऐबडियल' ही एक विश्वसनीय और स्वाभाविक देवदूत प्रमाणित हुआ, किन्तु शैतान और उसके अन्य साथियों को उसका यह रूप बहुत खला और, जैसे ही वह उनके समीप से निकला, ऐसा लगा कि वे उसे अपनी घृणा के अपार समुद्र में डुबा देंगे।

किंतु ईश्वर को 'ऐबडियल' की चेतावनी की क्या आवश्यकता, क्योंकि सर्वदर्शी होने के कारण उसने उसके पहुँचने के बहुत पहले ही सब कुछ देख-समझ लिया। इतना ही नहीं, प्रत्युत उसने अपने पुत्र ईसा को संकेत भी किया कि अहंकार का शिकार होकर 'लूसिफ़र' स्वयं उसके विरुद्ध विप्लव की बात सोच रहा है।

पर्व छः—

'रैफ़ैल' कहता रहता है कि यद्यपि 'ऐबडियल' ने बड़ी तेज़ गति से यात्रा की तो भी ईश्वर-विरोधी देवदूतों के प्रदेश और स्वर्गीय सिंहासन के बीच की मंज़िल तय करने में उसे सारी रात लग गई। चूंकि 'स्वर्ग' को उसके द्वारा लाये गये सन्देश की जानकारी पहले से थी, अतएव स्वर्गीय देवदूतों ने उसका बड़ी प्रसन्नता से स्वागत किया और उसे राज-सिंहासन तक पहुँचा दिया! ·····।

अब ईश्वर ने 'माइकेल' को सम्बोधित किया और आदेश दिया कि वह सर्वशक्तिमान से स्वर्ग का राज्य छीन लेने के इच्छुक, मैदान में लड़ने के लिये तैयार शत्रुओं की संख्या के बराबर ही एक सेना तैयार करे और उसका नेतृत्व कर लड़ाई के मैदान में उसका सामना करे! यही नहीं, बल्कि परमपिता ने उसे यह भी आदेश दिया कि 'लूसिफ़र' का घमंड चूर कर वह उसे 'टारटरस' की खाड़ी में झोंक दे, जिसका अग्नि मुख उसे अपने में आत्मसात् कर लेने लिये तुरन्त ही फैल जायेगा। अब दूसरे ही क्षण 'स्वर्ग' रण-दुंदभी के तीखे निनाद से गूँज उठा और देवदूतों की संख्यातीत सेनायें ईश्वर और उसके 'पुत्र' के लिये लोहा लेने के विचार से एकत्रित होने लगीं। दूसरी ओर वे पतित देवदूत भी, जिनका यश अभी तक धूमिल नहीं हुआ था, दल बना कर विरोधी-पक्ष के सम्मुख आये। इस समय सूर्य के समान चमकते हुये रथ पर सवार होकर शैतान उन सब के आगे बढ़ा और उस पर दृष्टि पड़ते ही 'ऐबडियल' ने यह देख कर आश्चर्य ही नहीं किया कि वह अब भी देखने में देवताओं-सा ही लगता है, बल्कि उसे सचेत भी किया कि उसे शीघ्र ही अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा। किंतु बदले में शैतान ने उसे विश्वासघाती की उपाधि देते हुये अपने हृदय की सारी घृणा

उस पर उड़ेल दी। 'ऐबडियल' ने इसकी ज़रा भी चिन्ता न की क्योंकि उसका विश्वास था कि वह ईश्वर की सेवा में स्वतन्त्र शैतान से भी कहीं अधिक मुक्त था।

तत्पश्चात् विरोधी-पक्षों का आमना-सामना होते ही कितनी ही देर तक दोनों परस्पर व्यंग्य करते रहे और तब कहीं युद्ध आरम्भ हुआ। किंतु 'ऐबिडियल' के पहले तीर पर ही शैतान पीछे ही नहीं हटा प्रत्युत प्रायः धरती पर ढह पड़ा। परन्तु जैसे ही 'ऐबडियल' ने उसे जीत लेने का दावा किया, वह तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ, अपने सैन्य-दल में लौटा और उसे शत्रु को मुँहतोड़ जवाब देने का आदेश देने लगा!........

इसके बाद इतना भयंकर युद्ध हुआ कि सातों स्वर्ग झनझना उठे। निस्सन्देह इस युद्ध में कितने ही ऐसे अपूर्व वीर-कृत्य हुये जिन्हें हम कभी भी भुला न सकेंगे और उसका कारण यह है कि शैतान वीरता में उस 'माइकेल' से किसी भाँति उन्नीस नहीं बैठा जिसने अपनी दो फलवाली तलवार के एक वार से ही सारी शत्रु-सेना का सफ़ाया कर दिया! किंतु यह नियम है कि देवदूतों को घाव लगे नहीं कि पुरे, अतएव जो एक बार आहत होकर गिरे वे दूसरे ही क्षण फिर भयंकर युद्ध में जुट गये और एक वह क्षण भी आया जब 'माइकेल' की तलवार से शैतान की बगल में ऐसा गहरा घाव हो गया कि उसने पहली बार पीड़ा अनुभव की! उसे इस प्रकार गिर-गया देखकर उसके साथी उसे लड़ाई के मैदान से दूर उठा ले गये। परन्तु वह शीघ्र ही चंगा हो गया क्योंकि प्रत्येक अंग की संजीवनी शक्तियाँ पूर्णतया विनष्ट होने पर ही मर सकती हैं अन्यथा नहीं। इस बीच में अपने महानतम शत्रु को सामने न पाकर 'माइकेल' ने 'मोलॉक' पर हमला किया और दूसरी ओर 'यूरियल' 'रैफ़ैल' और 'ऐबडियल' दूसरे शक्तिशाली विरोधियों का सत्यानाश करने पर तुल गये, जिन्होंने ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने का दुस्साहस किया था।

इसके बाद यह वर्णन करने के बाद कि लड़ाई का मैदान टूटे हुये कवचों और रथों से उमड़ चला, 'रैफ़ैल' विरोधी-देवदूतों की सेना की अधीरता और घबराहट का चित्र खींचता है कि कैसे शैतान ने अपनी सेना लौटा ली ताकि दूसरे दिन शत्रु के दाँत खट्टे करने के लिये वह आवश्यक विश्राम कर ले!...

रात्रि की शान्ति में शैतान ने अपने साथियों से परामर्श किया कि यह भलीभाँति जानलेने पर कि शत्रु किसी भाँति स्थायी-रूप से आहत नहीं हो सकते, क्या किया जाय कि दूसरे दिन के युद्ध में उन्हें और अधिक सफलता मिले। इस पर कुछ दैत्यों ने पूर्ण विश्वास के साथ यह अनुभव किया कि और अधिक सफल शस्त्रों के मिलते ही वे कुछ विशिष्ट सफलता की आशा कर सकते हैं! इसके बाद जैसे ही उनमें से एक ने तोप ढालने का प्रस्ताव किया सब लोगों ने प्रसन्नता से उसके प्रस्ताव का समर्थन किया!

कहना न होगा कि शैतान के निर्देशन में शीघ्र ही कुछ देवदूतों ने पृथ्वी से धातु उपलब्ध की जिसने कि गलाये और सांचे में ढाले जाने के बाद उनके द्वारा इच्छित विनाश के यन्त्र का सच्चा रूप-धारण कर लिया! इसी बीच दूसरे लोगों ने लड़ाई के अन्य शस्त्रास्त्र बनाये

फल यह हुआ कि सबेरा होते-होते उनके पास कई अमोघ शस्त्र जुट गये। किंतु जैसे ही युद्ध के लिये वे आगे बढ़े उन्होंने वे सब नये अस्त्र-शस्त्र अपनी भीड़ में छिपा लिये !

इस प्रकार दूसरे दिन के धावे में, सहसा ही, शैतान के साथी एक किनारे हो गये और तोपों के सहारे अप्रत्याशित विनाश की तैयारी करने लगे। शीघ्र ही तोपें आग उगलने लगीं और ईश्वर-भक्त देवदूत बहुत बड़ी संख्या में धराशायी हो गये ! किंतु इनके इस प्रकार गिर जाने के बाद भी तुरन्त ही दूसरे देवदूत बहादुरी से उछलते हुये आगे आये और उनका स्थान ग्रहण करने लगे ! अब अपनी तोपों का चमत्कार देखकर शैतान और उसके साथी स्पष्ट-रूप से आनन्द मनाने लगे। दूसरी ओर यह देखकर कि उनके अपने अस्त्र-शस्त्र तोपखाने का सामना करने के लिये बिल्कुल बेकार हैं, सद्देवदूत बड़ी-बड़ी पहाड़ियाँ उठाकर अपने शत्रुओं पर फेंकने लगे और शीघ्र ही शैतान और उसके सारे साथी पहाड़ों के नीचे दब गये। वास्तविकता तो यह है कि यदि ईश्वर इस धार्मिक क्रोध के विस्फोट की रोक-थाम न करता तो वे सारे पिशाच निश्चित-रूप से इस तरह पहाड़ियों से लाद दिये जाते और इतने गहराई में गड़ जाते कि फिर कभी दुबारा नज़र भी न आते !

× ×

तीसरे दिन सर्वशक्तिमान परमपिता ने घोषणा की कि चूँकि दोनों सेनायें शक्ति में बराबर हैं, अतएव जब तक वह लड़ाई में हाथ न डालेगा लड़ाई कभी भी न रुकेगी !...... .. इस विचार से उसने अपने एकमात्र पुत्र ईसा को बुलाया और आदेश दिया कि वह रण में जाकर उसके अपने अस्त्र वज्र का प्रयोग करे ! इस पर ईसा ने, जो कि अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिये सदैव ही तत्पर रहता है, पिता का आदेश सिर-माथे लिया और द्वितीय कोटि के देवदूतों द्वारा खींचे जानेवाले रथ पर सवार होकर तुरन्त ही रण-क्षेत्र की ओर प्रस्थान किया। इस समय उसकी विजय के दर्शनाभिलाषी दो सहस्र संत भी उसकी सेवा में उसके साथ हो लिये। कहना न होगा कि उसे रण की ओर आता हुआ देखकर सद्देवदूत आनन्द से गद्गद् हो-उठे, किंतु धूर्त देवदूत हृदय में बुरी तरह डर गये, यद्यपि पीठ दिखाकर भाग खड़े होना उनकी समझ में नहीं आया और उन्होंने ऐसा करने में घोर लज्जा का भी अनुभव किया !

× ×

'ईश्वर के बेटे' रणक्षेत्र में पहुँचते ही ने अपनी दया से दीप्त आकृति क्रोध-मुद्रा में परिवर्तित कर ली और अपने साथ के देवदूतों से कहा कि वे ध्यान से देखें कि कैसे वह अकेला इतने सारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। अब ईसा ने इस प्रकार शत्रुओं पर बिजली के वज्रों का प्रहार किया कि उन्हें पिछले दिन की भाँति ही पहाड़ों की आवश्यकता अनुभव हुई ! वे कामना करने लगे कि वे पहाड़ उन्हें पूरी तरह ढँक लेते और इस प्रकार इन वज्रों से उनकी रक्षा करते ! अब इस ईश्वरीय अस्त्रों की सहायता से ईसा ने बड़ी निर्दयता से शैतान और उसके साथियों को स्वर्ग की सीमाओं से परे, तलहीन खाड़ी के सिरे तक खदेड़ दिया। यही नहीं, बल्कि उन्हें उसमें ढकेल कर उसने आँखों में चकाचौंध पैदा करनेवाली बिजली के कौंधों के साथ दल-के-दल

गरजते हुये बादल भी उनके पीछे भेजे! किंतु इस समय उसने दयापूर्वक वज्रों का प्रहार बन्द कर दिया! वह विरोधियों को केवल स्वर्ग के बाहर खदेड़-देना चाहता था, उन्हें सदैव के लिये मिटा देना नहीं!

इस तरह कानों को बहरा कर देनेवाली चीत्कार के साथ शैतान और उसके साथी शून्य में झोंक दिये गये और नौ दिन बाद आग से भरी झील पर उनके पैर टिके! कहना न होगा कि बहुत दूर तक खदेड़ देने के बाद 'ईश्वर के बेटे' ने विजयी के रूप में स्वर्ग में प्रवेश किया। इस समय संतों ने स्तुतियों और प्रशस्तियों का गायन कर उसका हार्दिक स्वागत किया!

× ×

स्वर्ग की लड़ाई का वर्णन समाप्त होता है। अंत में 'रैफ़ैल' आदम को सूचित करता है कि यही पतित देवदूतों का नेता शैतान उसके आनन्दमय जीवन से बुरी तरह जलता है और इसीलिये उसे ईश्वर के साथ विश्वासघात करने के लिये उभाड़ने की एक योजना बना रहा है, क्योंकि वह चाहता है कि वह भी उसकी तरह चिरन्तन यातना भोगे!

पर्व सात—

इसके बाद आदम की प्रार्थना पर 'रैफ़ैल' सृष्टि-रचना का वर्णन करता है। वह कहता है कि चूँकि शैतान ने स्वर्ग के एक-तिहाई निवासियों को इस प्रकार बहका दिया, अतएव ईश्वर ने एक नई जाति की रचना करने का निश्चय किया, ताकि वहाँ के देवदूत उसके राज्य में आकर बस जायँ और उसके राज्य के रिक्त-स्थान की पूर्ति कर दें! इतना कहने के बाद 'रैफ़ैल' और सरल शब्दों में अपने भाव व्यक्त करता है और आदम को समझाता है कि कैसे एक दिन स्वर्ग के फाटकों से निकल कर ईसा अपरिमित और असीम खाड़ी के समीप आया और कैसे उसे देख कर उसके मन में यह भाव आया कि उसके तत्वों से वह एक सुन्दर वस्तु की सृष्टि करे! इसके बाद 'रैफ़ैल' आगे कहता है कि उसने सृष्टि का घेरा बनाने के लिये ईश्वर के शाश्वत कारखानों में तैयार किये गये परकालों से काम लिया और इस प्रकार सृष्टि की सीमायें निर्धारित कीं, जो कि मध्य-विन्दु से बराबर दूरी पर हैं! तदनन्तर उसने उस तलहीन खाड़ी पर बैठ कर संजीवनी उष्णता का संचार करना आरम्भ किया और यह वह तब तक बराबर करता रहा जब तक कि अशान्ति के सारे रचना-तन्तु अपना-अपना निश्चित स्थान खोजने नहीं लगे, और जब तक कि अपने केन्द्र पर अपने-आप सधी पृथ्वी स्वर्ग से नीचे लटकने नहीं लगी! इसके बाद गहराई से एक ज्योति का विकास हुआ जो पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ने लगी। इस ज्योति को देखते ही परमपिता ने उसके मंगलमय होने की घोषणा की!

दूसरे दिन सृष्टिकर्ता ने आकाश की सृष्टि की, तीसरे दिन जल और शुष्क स्थल की विभाजन रेखा खींची और चौथे दिन पृथ्वी को पेड़-पौदों से ढक दिया, जिनमें से प्रत्येक ने उन बीजों को जन्म दिया जिनके सहारे वह अपनी विशिष्ट जाति और प्रकार का प्रचार और प्रसार

कर सका ! अब दिन और रात पर राज्य करने के लिये सूर्य्य और चन्द्र की रचना हुई और इसके बाद अंधेरे और उजाले का अन्तर स्पष्ट करने के लिये तारों की ! तदनन्तर पाचवें दिन ईश्वर ने चिड़ियों और मछलियों का निर्माण किया और उन्हें आदेश दिया कि वे तब तक अंडे देती रहें जब तक कि पृथ्वी उनसे भर न जाये। अंत में छठें दिन उसने सारे पशुओं और रेंगनेवाले जीवों में प्राण फूँके और वे पूर्ण-विकसित और हाथ-पैर से सम्पूर्ण होकर पृथ्वी से बाहर आये ! किंतु इन सब पर राज्य करने के लिये अब भी एक बुद्धि एवं तर्क-सम्पन्न प्राणी का अभाव था, अतएव ईश्वर ने मिट्टी से एक अपने ही रूप का मनुष्य बनाकर मनुष्य के नासिका-रन्ध्रों के द्वारा उसमें सांस फूँक दी ! इस प्रकार उसने मनुष्य और उसकी पत्नी, आदम और ईव, की रचना कर उन्हें आशीर्वाद दिया कि वे फलें-फूलें, संतान पैदा कर पृथ्वी को आबाद करें और पृथ्वी के प्रत्येक जीवधारी पर राज्य करें। इतने अधिक गुणी जीवों को जन्म देकर ईश्वर ने अब उन्हें स्वतन्त्र छोड़ दिया कि वे स्वर्ग की प्रत्येक वस्तु का उपभोग कर उसका आनन्द लें, किंतु केवल बुराई और भलाई वाले पेड़ के फल न खायें, क्योंकि जिस दिन वे उसे अपने ओठों से लगायेंगे, उसी दिन मर जायेंगे।

अब सृष्टिकर्त्ता का कार्य समाप्त हो गया और वह स्वर्ग को लौटा। यहाँ सातवें दिन उसने और दूसरे देवदूतों ने कोई काम न कर केवल विश्राम किया।

पर्व आठ–

इधर आदम और 'रैफ़ैल' की बातचीत चल रही है और ईव उधर कुछ दूरी पर खड़ी है, क्योंकि एक तो उसमें इन दोनों के संलाप में हस्तक्षेप करने का साहस नहीं है, दूसरे वह जानती है कि उसके जानने योग्य सब कुछ उसका पति उसे बतला ही देगा।

इसी बीच अपनी और अधिक उत्सुकता को शान्त करने के लिये आदम पूछता है कि कैसे सूरज और तारे अपने ग्रह-पथों के चारों ओर इतनी शान्ति से चक्कर लगाते हैं ! 'रैफ़ैल' उत्तर देता है कि यों तो स्वर्ग ईश्वर की पुस्तक है, जिसमें मनुष्य उसकी अचरजभरी कृतियों का विस्तृत वर्णन पढ़ सकता है तो भी किसी को विभिन्न ग्रह-पथों की दूरी की जानकारी कराना सरल काम नहीं है। इतना कह कर 'रैफ़ैल' क्षण भर को रुकता है, किंतु फिर भी आदम को उनका थोड़ा-सा परिचय देता है कि तीव्रगति वाला सूर्य्य भी प्रातःकाल स्वर्ग से रवाना होकर केवल दोपहर तक ही 'ईडेन' पहुँच पाता है। इसके बाद वह पृथ्वी के तीन परिभ्रमणों का वर्णन करता है, छः उप-ग्रहों के कार्य बतलाता है और आदम को विश्वास दिलाता है कि ईश्वर उन सब को अपने हाथ में रखता है और सब के लिये अलग-अलग रास्ते और अलग-अलग गतियाँ स्वयं निर्धारित करता है !·········

अब आदम की बारी आती है और वह 'रैफ़ैल' का मनोरंजन करने के लिये उसे अपनी आत्म-कथा सुनाता है। वह उससे अपने विस्मय की चर्चा करता है कि कैसे एक फूलों से भरी हुई पहाड़ी के किनारे, सहसा ही, उसकी आँख खुली और आकाश, जंगलों और सोतों

को उसने पहिली बार देखा। वह कहता है कि जब धीरे-धीरे उसे स्वयं अपना और अपनी शक्तियों का परिचय प्राप्त हुआ, पशुओं के नाम ज्ञात हुये और स्वर्गीय स्वामी ने पृथ्वी के स्वर्ग, 'ईडेन' में ले जाकर उसे बीचोंबीच में खड़े पेड़ को कभी न छूने का आदेश दिया तो वह आश्चर्य से अवाक् रह गया। इसके बाद वह अपने एकाकीपन का वर्णन कर कहता है कि सारे जीव-धारियों को अपने-अपने जोड़ों के साथ जाते देख कर उसने सृष्टिकर्त्ता से शिकायत की कि आख़िर वह ही क्यों अकेला रहे! इस पर उसे गहरी नींद आ गई और उसकी इस अचेतन अवस्था में उसके पार्श्व से एक हड्डी निकाली गई! इस हड्डी से ईव का निर्माण किया गया। अब सृष्टिकर्त्ता ने स्वयं उसका ईव से संयोग कराया जो कि उसकी ही हड्डी और उसके ही मांस की मांस यानी उसके अपने ही शरीर का अंश है! इस प्रकार भेद भरी बातें बनाकर 'आदम' बड़े चाव से अपने आनन्दमय दाम्पत्य-जीवन की चर्चा करता है और बिना किसी प्रकार की कला के अर्थात् बड़े सीधे सादे ढंग से 'रैफ़ैल' से प्रश्न करता है कि क्या देवदूत भी विवाह करते हैं और क्या उसकी भाँति ही वे भी विवाह में दे दिये जाते हैं। 'रैफ़ैल' तुरन्त ही उत्तर देता है कि प्रेम स्वर्ग में इस तरह विचारों का परिष्कार और हृदयों का विस्तार करता है कि वहाँ पूर्ण आनन्द की प्राप्ति के लिये आध्यात्मिक-सगाई के अतिरिक्त और किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं पड़ती।

अब यह देखकर कि सूर्य्य डूबने ही वाला है, 'रैफ़ैल' आदम से विदा लेता है और स्वर्ग को लौट पड़ता है। दूसरे ही क्षण मानव-जाति का पिता अपनी पत्नी से जा मिलता है। वह बहुत देर से उसका प्रतीक्षा कर रही है।

पर्व नौ—

यहाँ कवि हमें सचेत करता है कि चूंकि 'ईडेन' में अधम अविश्वास घर कर गया है इसलिये अब मनुष्य और देवदूतों में और अधिक बातचीत न होगी और इसीलिये अब उसके काव्य में करुण-रस विशेषतया लक्ष्य किया जा सकेगा।

इसके बाद 'मिल्टन' वर्णन करता है कि कैसे 'जेबरियल' के द्वारा 'ईडेन' से निकाल दिये जाने के बाद शैतान सात दिनों और सात रातों तक बिना किसी प्रकार के विश्राम के पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काटता रहता है और कैसे आठवें दिन भूमि के अन्दर स्थित नदी के मार्ग से कोहरे का रूप धारण कर फिर 'ईडेन' में प्रवेश करता है। यहाँ वह एक चिड़िया के रूप में अच्छाई और बुराई के ज्ञान वाले पेड़ पर जा बैठता है और एक वीभत्स सांप के रूप में आदम और ईव के समीप पहुँचने का निश्चय करता है। इस प्रकार वह अपना बदला चुकाना चाहता है, यद्यपि वह पूरी तरह जानता है कि इन सारे दुष्कृत्यों का भोग उसे स्वयं ही भोगना होगा। अतएव एक सांप को सोता हुआ देखकर शैतान उसके शरीर में प्रवेश कर जाता है और, इस आशा से कि आदम और ईव कहीं-न-कहीं अकेले-अकेले मिल ही जायेंगे, उपवन की पगडंडियों पर रेंगने लगता है। उसकी धारणा है कि इस प्रकार एक-एक कर उन दोनों का काम तमाम करना अधिक सरल और युक्तिसंगत होगा।

सबेरा होता है, आदम और ईव जगते हैं और नित्य की तरह ही प्रार्थना करने के बाद अपने उपवन की ओर चल पड़ते हैं। किंतु ईव हठ करती है कि जब वे साथ-साथ काम करते हैं तो बातें करने लगते हैं और इस प्रकार ध्यान बँटाकर एक दूसरे के काम में बाधा डालते हैं, अतएव, जब तक दोपहर न हो और भोजन के लिये वे एक-दूसरे से न मिलें, वे अलग-अलग अपना-अपना काम करें। यद्यपि आदम को इस प्रकार अपनी प्रियतमा से बिछुड़ने में आपत्ति और संकोच है, तथापि वह कुछ समय बाद ईव के तर्कों के सामने झुक जाता है और वे अलग-अलग काम करने लगते हैं।

अब उपवन में रेंगते हुये सांप की दृष्टि ईव पर पड़ती है। वह बिल्कुल अकेली गुलाबों से घिरी हुई खड़ी है। अतएव वह यह सोच कर बहुत प्रसन्न होता है कि अब अवसर है और वह पहिले-पहिल उस पर ही अपना हाथ साफ़ कर सकता है! ईव को वह अपेक्षाकृत दुर्बल प्राणी समझता है और उसका ऐसा समझना उचित भी है। यद्यपि ऐसा नहीं है कि इस समय वह किसी प्रकार की पीड़ा अनुभव नहीं करता फिर भी वह उसकी ओर बढ़ता है और उसे मानव-सुलभ वाणी में सम्बोधित करता है। वह पहले विस्मित होती है, किंतु दूसरे ही क्षण ही प्रश्न करती है कि यह कैसे सम्भव है कि कोई पशु उससे संलाप करे। इस पर वह शैतान-सांप उसे उत्तर देता है कि पहले वह भी दूसरे पशुओं के समान ही गूँगा था, किन्तु जैसे ही उसने एक विशेष फल चखा वह पहले की अपेक्षा अधिक ज्ञानवान ही नहीं हो गया, प्रत्युत वाग्शक्ति से भी सम्पन्न हो गया और मनुष्य की भाँति ही बोलने लगा! अतएव, यह सोच कर कि वह फल उसके लिये भी उतना ही लाभकारी प्रमाणित हो सकता है और इस प्रकार वह अपने सहचर के, अनुमानतः, और बराबर हो सकती है, ईव स्वयं भी उसे चखना चाहती है। वह उस सांप के पीछे-पीछे उपवन के मध्य-भाग में आती है। किन्तु, जैसे ही शैतान उस निषिद्ध पेड़ की ओर संकेत करता है, वह हिचक कर पीछे हट जाती है। इस पर साँप उसे विश्वास दिलाता है कि ईश्वर की मनाही का यह मतलब कभी नहीं है कि उसका पालन भी किया जाय। इतना ही नहीं, वह तर्क करता है कि उसने भी वह फल चखा है, किन्तु इस पर भी वह जी रहा है, और जी ही नहीं रहा प्रत्युत जीवन की शक्तियों से और अधिक सम्पन्न हो गया है।

अब ईव को साँप की बातों पर पूर्ण विश्वास हो जाता है। इस प्रकार वह अपने-प्रयास में सफल होता है और उसे उस निषिद्ध पेड़ के फल तोड़ने और खाने को प्रेरित करता है!

कहना न होगा कि जैसे ही वह उस फल को अपने ओठों से लगाती है प्रकृति अनेकानेक संकेतों से उसे आगामी संकट में आगाह करती है। इसी समय साँप शीघ्रता से रेंग कर एक बार फिर झाड़ी में जा-छिपता है और ईव को उस फल के स्वाद में अपूर्व हर्ष और सुख का अनुभव होता है। इसके बाद वह पेड़ की सुरक्षा का संकल्प करती है और इस संकल्प-विकल्प में पड़ जाती है कि क्या यह उचित है कि यदि उसके पति का उसके व्यक्तित्व में कुछ अन्तर लक्ष्य कर सकना सम्भव हो तो वह स्वयं उसे सब कुछ बतला दे और उससे उस अपूर्व आनन्द की चर्चा कर दे, जिसकी प्राप्ति उसे अभी-अभी हुई है।

बात यहीं समाप्त नहीं होती। ईव आदम को इतना प्यार करती है कि वह उसके बिना न जीना पसन्द करती है और न मरना, अतः अब वह सोचती है कि कहीं ऐसा न हो मृत्यु के कारण उसका और आदम का विछोह हो जाय। यद्यपि इसपर वह पहले विश्वास करने को तैयार नहीं है तथापि यह विचार सम्मुख आते ही वह दृढ़ संकल्प करती है कि वह आदम को भी वह फल खिलाकर ही छोड़ेगी!

अब ईव शीघ्रता से आदम के पास जाती है और उसे बड़े भाव पूर्ण शब्दों में समझाती है वह पेड़ वैसा तो नहीं है जैसा कि ईश्वर ने चित्रित किया है, क्योंकि एक साँप ने इसका फल खाया और उसे खाते ही वह इस प्रकार बात चीत करने लगा कि वह स्वयं भी उसका स्वाद लेने को ललचा उठी!...! इतना सुनते ही आदम भय और संताप से बौखला-उठता है क्योंकि अब उसे अपनी पत्नी का पतन और विनाश निश्चित-से मालूम होते हैं। अब उसके सामने एक ही प्रश्न है कि वह बिना उसके जियेगा कैसे! किन्तु इतना सब कुछ सोचने और समझने पर भी आदम हैरान है कि उसकी पत्नी शत्रु के पहिले हमले का ही शिकार हो गई! इस प्रकार संताप का पहला ज्वार कुछ देर चलता है कि वह अपनी पत्नी के दुर्भाग्य में भागी होने का संकल्प करता है और सोचता है कि वह भी उसके साथ ही मर जायेगा। अंत में वह ईव का दिया हुआ फल स्वीकार करता है और एक बार फिर प्रकृति कुपित हो-उठती है, क्योंकि आदम और किसी धोखे में न आकर केवल ईव के स्नेह के कारण ही उस फल को खाने के लिये तत्पर होता है—

इस भाँति उस पेड़ का फल खाते ही दोनों पर उसके दुष्प्रभाव प्रकट होते हैं और उनमें वासना जाग उठती है! वासना उनके लिये एक सर्वथा नवीन अनुभव है! इस प्रकार उनके भोलेपन का अन्त हो जाता है।

दूसरा दिन होता है और मनुष्य को मिटा देने वाली लज्जा में नहाये हुये से आदम और ईव अपने कुंज के बाहर आते हैं। इस समय बुराई और भलाई के नये ज्ञान के सहारे आदम सारा अपराध अपनी पत्नी के सिर मढ़ कर सिर धुनता है कि वे अब कभी भी ईश्वर के दर्शन न कर सकेंगे। इसके बाद वह अपने नंगे शरीरों को ढकने के लिये पत्तियों के कपड़े बुनने का प्रस्ताव करता है। अब यह प्रथम दम्पति अंजीर के पेड़ों से आवरण-वस्त्र तैयार करने के लिये एक झाड़ी छिप जाते हैं! वे इन्हें अपने चारों ओर लपेट लेते हैं और एक दूसरे को जी भर भला बुरा कहते हैं और निश्चय नहीं कर पाते कि वास्तव में किसके कारण उनका आनन्दमय जीवन सदा के लिये सपना बन गया।

पर्व दस—

इसी बीच में पहरा देने वाले देवदूत स्वर्ग में जाते हैं और ईश्वर को ईव के पतन की सूचना देते हैं। ईश्वर इन्हें एक बार फिर विश्वास दिलाता है कि उसे पता है कि शैतान का प्रयत्न विफल न होगा और मनुष्य का पतन हो जायेगा। इसके बाद वह निर्णय देता है कि चूँकि

मनुष्य ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है अतएव उसे दंड दिया जायेगा और यह कार्य मनुष्य का मध्यस्थ, उसका पुत्र ईसा करेगा क्योंकि वह इस काम के लिये सबसे अधिक उपयुक्त है ! पृथ्वी की भांति ही स्वर्ग में भी अपने पिता की आज्ञा का पालन करनेवाला ईसा विदा होता है और चलते समय प्रतिज्ञा करता है कि वह और जो कुछ करेगा वह तो करेगा हो, दया से न्याय का हृदय पिघलाने, के यत्न भी करेगा ताकि ईश्वर का मंगलकारी रूप सर्वथा स्पष्ट हो जाये ! इसके बाद, वह टूटी कड़ी जोड़कर, शैतान के भाग्य का निर्णय कर उसे भी समुचित दंड देने की बात कहता है !

× ×

इस तरह स्वर्ग के प्रवेश-द्वारों तक देवदूतों के द्वारा पहुँचाये जाने के बाद मुक्तिप्रदाता-ईसा अकेले पृथ्वी पर उतरता है। यहाँ वह संध्या के शीतल क्षणों में उपवन में आ-पहुँचता है और आदम और ईव को बुलाता है। वे उसकी बोली सुनते ही अपने गुप्त-स्थान से बाहर आते है। आदम लज्जा से दृष्टि नीची कर भेद खोलता है कि उनके इस प्रकार छिपने का कारण उनका नंगापन है। कहना न होगा कि उसके ये शब्द ही उसे अपराधी ठहराते हैं और ईसा प्रश्न करता है कि क्या उन्होंने निषिद्ध वृक्ष का फल खाया है ! इस पर आदम आज्ञोल्लंघन से इन्कार करने में अपने को असमर्थ पाता है और स्वीकार करता है कि अपने न्यायाधीश के सम्मुख खड़े होते समय वह अजब संकल्प-विकल्प का अनुभव कर रहा है क्योंकि या तो वह अपराध अपने सिर ले-ले जो कि असत्य है या वह अपनी पत्नी को को सारे अपराध के लिये उत्तर-दायी ठहराये जब कि दूसरी ओर उसकी रक्षा करना उसका परम धर्म है। फिर भी, वह कहता है कि ईव ने उसे फल दिया और उसने खा लिया। इतना सुनते ही न्यायाधीश कड़ा-पड़ता है और आदम से पूछता है कि क्या उसकी पत्नी की आज्ञा उसके लिये अलंध्य थी, क्या यह आवश्यक था कि वह अपनी पत्नी की आज्ञा का पालन करता ही ! इस प्रश्न के बाद वह उसे यह याद दिलाकर कि पुरुष स्त्री पर शासन करने के लिये बना है, स्त्री पुरुष पर हुकूमत करने के लिये नहीं बनी, उसका अपराध घोषित करता है कि उसने निषिद्ध पेड़ का फल चखकर ईश्वर की आज्ञा का ही उल्लंघन नहीं किया बल्कि उसी के बराबर दूसरा अपराध यह भी किया है कि वह अपनी पत्नी के हठ के सामने झुक गया ! अब वह ईव की ओर मुड़ता है और चाहता है कि वह अपने अपराध के विषय में कुछ कहे। पर ईव का चेहरा लज्जा से झुक जाता है और वह स्वीकार करती है कि उसने वह फल अवश्य खाया किन्तु सारा अपराध उस सांप का था जो कि उसे तबतक बराबर छलता और बहकाता रहा जबतक कि उसने वह फल अपने ओठों से लगा नहीं लिया !

इस प्रकार दोनों अपराधियों की बातें अलग-अलग सुनकर न्यायाधीश प्रमुखतर-शत्रु साँप का दंड घोषित करता है, किन्तु उसके शब्द गूढ़ और रहस्यपूर्ण-से लगते हैं क्योंकि अबतक मनुष्य ईश्वरीय विधानों को समझने का अधिकारी नहीं बन सका है। अब वह ईव को सम्बोधित कर भविष्यवाणी करता है कि उसे बड़े दुर्दिनों में अपने बच्चों का लालन-पालन करना होगा और अबसे वह अपने पति की इच्छा की अनुगामिनी और दासी होकर रहेगी। अंत में

ईसा आदम के भाग्य का निर्णय करता है कि भविष्य में उसे अपने शरीर का पसीना बहाकर अपनी जीविका चलानी पड़ेगी, क्योंकि इस क्षण के बाद पृथ्वी उसके लिये कोई ऐसे फल न पैदा करेगी जिसके लिये उसे परिश्रम न करना पड़े।

इस भांति अपना न्याय सुनाने के बाद न्यायाधीश मृत्यु-दन्ड अनिश्चित समय के लिये स्थगित करता है और हमारे इन प्रथम माता-पिता पर दयाकर उन्हें पशुओं की खालें पहनाता है ताकि वे उस वायु का आघात सह सकें जिसका वे निकट भविष्य में अनुभव करेंगे।

× ×

इसी बीच में लौटते हुये शैतान की झांकी पाने के लिये 'दुष्कृति' और 'मृत्यु' नरक के खुले हुये रास्ते से बाहर दृष्टि दौड़ाती हैं। अंत में प्रतीक्षा करते-करते थककर 'दुष्कृति' 'मृत्यु' को सुस्त बैठे रहने के दुर्गुण समझाती है और प्रस्ताव करती है कि शैतान तो किसी भाँति असफल हो ही नहीं सकता अतएव तलहीन खाड़ी पर उसकी दिशा का अनुकरण कर एक सड़क का निर्माण किया जाये ताकि पृथ्वी से नरक और नरक से पृथ्वी आने-जाने का कार्य सरल हो जाय! 'मृत्यु' उसके इस प्रस्ताव का हृदय से समर्थन करती है क्योंकि वह इस बीच में एक विनाशकारी दुर्गन्धि का अनुभव करती है और पृथ्वी पर पहुँचकर सारे जीवधारियों का शिकार करना चाहती है। अब ये दो भयंकर सत्तायें बड़े साहस का परिचय देती हैं और थोड़े ही समय में नरक के प्रवेश-द्वारों से नव-निर्मित संसार की सीमाओं तक पत्थर और अस्फॉल्ट की एक दृढ़ सड़क बनाकर तैयार कर देती हैं।

'दुष्कृति' और 'मृत्यु' पुल का काम देनेवाली इस सड़क को बना कर पूरा भी नहीं कर पातीं कि शैतान, जो कि अब भी देवदूतों से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है, उड़ता हुआ उनकी ओर आता है। कहना न होगा कि ईव को बहकाने के बाद वह वहीं उपवन में छिपा-रहा है और उसी स्थिति में उसने न्यायाधीश की तीनों घोषणायें सुनी हैं। वह भी औरों की भाँति ही अपना दण्ड नहीं समझ पाया है और उल्टा समझ-बैठा है कि सारी मानवता उसके वश में है। यही नहीं, बल्कि अपने साथियों को यह शुभ सूचना सुनाने के लिये ही वह शीघ्रता से नरक के निम्न प्रदेश 'हेडीज़' को लौट पड़ा है।

अब 'दुष्कृति' और 'मृत्यु' से उसकी भेंट होती है। उनसे मिलते ही ऐसी चातुराई से ऐसी सुन्दर सड़क बनाने के लिये वह उन्हें बधाई देता है, और दूसरे ही क्षण आदेश भी कि वे दुनिया में जायँ और जो चाहें करें। इसके बाद वह उनकी बनाई सड़क पर वेग से बढ़ता है क्योंकि वह अन्य पतित देवदूतों को भी सारी घटना से परिचित करा देना चाहता है।

शीघ्र ही वह अपने अभीष्ट स्थान के समीप आता है और देखता है कि उसके आदेश के फल स्वरूप ही कुछ देवदूत इस प्रदेश की रखवाली कर रहे हैं! किन्तु जब यह शैतान उनके देखते-देखते एक सेवक के रूप में उनके बीच से निकल कर अपने राज्य की राजधानी-'पैन्डिमोनियम' पहुँच जाता है तब कहीं उन्हें अपने अधिपति के आने की सूचना मिलती है। अब, यह जान कर कि वह एक बार फिर उनके बीच में आ गया है, वे सारे दैत्य गगनभेदी नाद से

उसका स्वागत करते हैं। इस पर शैतान विचित्र प्रभावशाली मुद्रा बना कर उन्हें शान्त होने का आदेश देता है और फिर अपनी यात्रा, अपनी सफलता और उस सुगम पथ का वर्णन करता है जो कि 'दुष्कृति' और 'मृत्यु' ने तैयार कर दिया है और जिसके कारण अब वे अबाध सुविधा से सर्वत्र पहुँच सकते हैं! फिर भी उनके साथियों की तृप्ति नहीं होती और उनकी उत्सुकता को शान्त करने के लिये वह विस्तार में बतलाता है कि किस तरह उसने ईव को लोभ और लालच का शिकार बनाया! इसके बाद वह कहता है कि अभिशप्त और पतित होने पर भी वह किसी प्रकार भयभीत या अधीर नहीं है। इतना सुनते ही शैतान के अनुयायी ऊँचे स्वर से उसकी प्रशंसा करना चाहते हैं, किन्तु अनुभव करते हैं कि वे सब साँप की तरह फुफकार रहे हैं और सर्प-योनि में बदल दिये गये हैं। अतएव अब परदार अजगर के रूप में शैतान उन सबको एक पास के कुंज में ले आता है। यहाँ वे सब पेड़ों पर चढ़ जाते हैं और 'सोडम'[1] के सेवों का भोजन करते हैं। ये सेव देखने में सुन्दर हैं किन्तु खाने में राख के स्वाद के अतएव इन्हें खाते ही उन सब का मुँह बिगड़ जाता है। कहना न होगा कि उनका यह कृत्य प्रदर्शन का रूप धारण कर लेता है जो 'लोभ की वर्षगाँठ' पर प्रतिवर्ष किया जाता है। ·····

इसी बीच में 'दुष्कृति' और 'मृत्यु' 'ईडेन' में प्रविष्ट हो जाती है और, चूँकि मनुष्यों पर हाथ नहीं लगाने पाती अतएव छोटी-छोटी झाड़ियों, फूलों-फलों और अन्य जीवों का भक्षण करना आरम्भ कर देती हैं, जैसे कि ऐसा करना उनका अधिकार होने के नाते सर्वथा उचित भी हो। दूसरे ही क्षण ईश्वर रहस्योद्घाटन करता है कि यदि मनुष्य उसकी आज्ञा का उल्लंघन न करता तो नव-निर्मित संसार को यह दुर्दिन इन अत्याचारियों के हाथों कभी न देखने पड़ते, किन्तु चूँकि बात उल्टी ही हो गई है, अतएव अब वहाँ इनका तबतक पूरा बोलबाला रहेगा जबतक कि उस का 'पुत्र' स्वयं इन्हें 'हेडीज़' तक खदेड़ न देगा। इस पर देवदूत सर्वशक्तिमान के विधानों की प्रशंसा कर कहते हैं कि वे सदैव ही न्याय संगत होते हैं और ईसा का गुणगान करते हैं कि मनुष्य जाति का त्राण करने के लिये ही उसका अवतार हुआ है!

अब परमपिता आदेश देता है कि सूर्य की गति में ऐसा परिवर्तन हो जाय कि पृथ्वी पर क्रम से एक बार गरमी का राज्य हो और एक बार सर्दी का—इस प्रकार जाड़ा गर्मी का अनुसरण करे। यही नहीं, वह यह भी चाहता है कि अपनी ज़रा-सी झुकी धुरी के कारण पृथ्वी उपग्रहों के अशिव और घातक दुष्प्रभावों की शिकार हो, भयानक अंधड़ों और तूफ़ानों के द्वारा उजड़े और वीरान हो, और ऐसी हो जाय कि वहाँ के शान्त जीवधारी ईर्ष्या की ज्वाला से अपने-आप झुलसने लगें।······

ईश्वर के आदेशों का पालन होता है और इन सब के अनुभव से आदम को पूर्ण विश्वास हो जाता है कि ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन ही निस्सन्देह-रूप से इन सब का कारण है।

---

[1]सीरिया का एक प्राचीनतम नगर जिसके सेवों को बाहर से सुन्दर किन्तु अन्दर से राख का माना गया है।

अब उसे अपनी करनी पर इतना पश्चात्ताप होता है कि उसे ईश्वर की आज्ञा के अनुसार संतति-सृष्टि और संतति-विस्तार की भावना ही भयानक प्रतीत होने लगती है।......अब वह कितनी ही देर तक मन-ही-मन भुनभुनाता रहता है, किंतु थोड़ी देर में उसे बोध होता है कि उसे यह दंड देकर न्याय ही किया गया है, अन्याय नहीं, क्योंकि वह बुराई और भलाई दो में से किसी एक का चुनाव करने को पूर्ण स्वतन्त्र था, यह उसका अपना अपराध है कि उसने बुराई को ही अपने लिये चुना। अतः यह सत्य उसे कुछ भी सान्त्वना नहीं देता कि उसे न्याय के बाद तुरन्त ही अपना दण्ड नहीं भुगतना पड़ा, बल्कि अब तो वह चाहता है कि मृत्यु आये और उसके सारे पश्चात्तापों का अंत कर दे। दूसरी ओर, ईव अपने पति को इस प्रकार संतप्त देख कर विदग्ध हो-उठती है और न्यायाधीश को ढूँढ़ कर उससे प्रार्थना करती है कि वह कृपा कर ऐसा करे कि पाप का सारा दंड अकेले उसे ही भोगना पड़े। किंतु पत्नी के इस आत्म-त्याग के विचार-मात्र से आदम द्रवित हो उठता है और उत्तर देता है कि वे दोनों एक हैं और इस नाते एक-दूसरे के दुर्भाग्य में हाथ-बंटाना उनका अपना धर्म है।......

कुछ समय बाद एक दूसरा विषय उठ-खड़ा होता है और ईव ऐसी सन्तानों को जन्म देना अनुचित और आपत्तिजनक समझती है, जिनकी हर सांस एक नया संकट होगी और जिनकी हर चेतना एक नूतन मृत्यु! पर, आदम उसे सावधान करता और कहता है कि पश्चात्ताप और आज्ञा-पालन के द्वारा ही वे अपने न्यायाधीश का क्रोध शान्त कर उसे प्रसन्न कर सकते हैं, और किसी तरह नहीं।

पर्व ग्यारह—

इस प्रकार आदम और ईव आत्म-दंशन और पश्चात्ताप के दिन काट रहे हैं कि उनके प्रति सहानुभूति से भर कर मुक्ति-प्रदाता ईसा 'ईडेन' आता है। इस समय वे दोनों उससे इस प्रकार प्रार्थनायें करते हैं कि वह उन्हें 'परमपिता' के सम्मुख उपस्थित करता और कहता है कि ये उसके दया-रूपी वृक्ष के पहिले फल हैं।

कहना न होगा कि ईसा इतने प्रभावशाली और हृदय-बेधी ढंग से इन दोनों का पक्ष ग्रहण करता है कि ईश्वर वचन देता है और कहता है कि यदि वे हृदय से अपना अपराध स्वीकार कर लेंगे तो वे क्षमा के पात्र समझे जायेंगे और क्षमा कर दिये जायेंगे। किंतु उसका यह दृढ़ निर्णय है कि इस बीच वे पृथ्वी के स्वर्ग 'ईडेन' से बहिष्कृत रहेंगे। अतएव वह 'माइकेल' और दूसरे निम्न-कोटि के देवदूतों को आदेश देता है कि वे दिन-रात उनकी रखवाली करें, ताकि ऐसा न हो कि या तो शैतान दुबारा नई दुनिया में घुस आये या ये मानवीय पति-पत्नी फिर से कुँज में जाकर जीवन के पेड़ के फल खा लें और मृत्यु के दंड को बचा जायें।

अब इस स्थान से दूर ले जाने के पहिले 'माइकेल' आदम को उसकी जाति का भविष्य बतलाता है और इस बात पर बहुत ज़ोर देता है कि मुक्ति के बीज वह स्वयं ही बोयेगा। इस बीच में ईश्वरीय आज्ञायें मिल जाती हैं और श्रेष्ठतर देवदूत आदम और ईव के साथ पृथ्वी

पर आता है ! यहाँ सबेरा होने पर आदम और ईव एक बार फिर अपने कुँज से बाहर आते हैं, जैसे अनिश्चित समय के लिये उससे दूर रहने के लिये ही ! रात्रि ने आदम को कुछ विश्राम दिया है, अतएव इस समय वह अपनी पत्नी को सम्बोधित कर कहता है कि अब उन्हें सन्तोष के साथ उतना परिश्रम करना चाहिये जितना कि अधिक-से-अधिक उनके निर्बल और गिरे हुये शरीरों के द्वारा सम्भव है । उसके मतानुसार अपनी भूलों पर पछताने का केवल यही एक मार्ग है और इसी प्रकार वे अपना मृत्यु-दंड स्थगित कराने में सफल हो सकते हैं ।......! दूसरे ही क्षण वे आवश्यक कर्त्तव्यों में व्यस्त रहने के लिये चल-देते हैं किंतु रास्ते में देखते हैं कि एक बाज़ किसी चिड़िया का पीछा कर रहा है और जंगली जानवर एक दूसरे का शिकार कर रहे हैं । इस पर आदम अधीर हो-उठता है और इन अपशकुनों का अर्थ लगाने लगता है कि सहसा ही उसकी दृष्टि अपनी ओर आते हुये किसी तेजपूर्ण प्रकाश पर पड़ती है ! वह ईव को सूचित करता है कि कोई सन्देश उनके पास आ रहा है । आदम का अनुमान सही उतरता है क्योंकि शीघ्र ही प्रकाश के इस आवरण से 'माइकेल' बाहर आता है । अब आदम ईव को हट जाने का संकेत कर माइकेल का स्वागत करने के लिये आगे बढ़ता है ।

देवदूत स्वर्गीय पदाधिकारी के वेश में आदम के पास आता है और आदम को सूचित करता है कि, गोकि उसका मृत्यु-दंड अनिश्चित काल के लिये स्थगित कर दिया गया है फिर भी, वह ईडेन में न रह सकेगा ! भविष्य में वह संसार में निवास करेगा और अपनी जन्म-दायी पृथ्वी को जोते-बोयेगा ! इतना सुनते ही आदम स्वर्ग के इन निर्णयों पर आश्चर्य और चिन्ता से अवाक् हो-उठता है । उधर ईव, जो अदृश्य रह कर भी सब कुछ सुनती रहती है, 'ईडेन' के छूट जाने के विचार-मात्र से अधीर हो-उठती है और फूट-फूटकर रोने लगती है । किन्तु देवदूत उसे धीरज बँधाता है और आँसू पोंछने का आग्रह कर उसके कर्त्तव्य की ओर संकेत करता है कि वह अपने पति का अनुसरण करे और पति जहाँ भी जाये वह वहीं अपना स्वर्ग समझे और अपना नया घर बसा ले !

इस समय, आदम 'माइकेल' से प्रश्न करता है कि क्या यह सम्भव न है कि वह लगातार प्रार्थना और पश्चात्ताप के द्वारा ईश्वर को अपना निर्णय बदल देने के लिये विवश कर दे ताकि वह उसे 'इडेन' में ही रहने दे क्योंकि वह अपनी संतान को वह स्थान दिखलाने का बड़ा इच्छुक है जहाँ उसने पहिले-पहिल अपने सृष्टिकर्त्ता के दर्शन किये और उससे अनेक बार संलाप भी !'माइकेल', यह उत्तर देकर कि वह ईश्वर को हर जगह पा सकता है, आदम को अपने पीछे-पीछे आने का संकेत करता है । इस बीच में वह कुछ ऐसा करता है कि ईव गहरी नींद में सो जाती है ।

इस प्रकार इधर ईव अचेतन रहती है और उधर 'माइकेल' आदम को पृथ्वी का सारा सौन्दर्य और भी दिखला और समझा-देने की बात सोचता है !

'माइकेल' आदम की आँखों में जीवन के कूप के पानी की तीन बूँदें डालने के बाद उसे एक पहाड़ी पर ले आता है और भविष्य में पृथ्वी पर घटने वाली सारी

घटनाओं की एक झाँकी उसे दिखलाता है! पहले केन[1] और ऐबल[2] आदम की आँखों के आगे से निकलते हैं, किन्तु मृत्यु इस अंश तक उसकी समझ में न आने वाली वस्तु सिद्ध होती है कि 'माइकेल' को उसे उसका अर्थ समझाना पड़ता है। इस पर आदम यह सोच कर सिहर उठता है कि उसके पतन के कारण ही ऐसी भयंकर सत्ता दुनिया में आई। यही नहीं बल्कि, जैसे ही देवदूत उसे मानव-जाति के सारे आगामी संकटों से परिचित कराता है और कहता है कि इनमें अधिकांश का कारण मनुष्य का तामसी-जीवन ही होगा, उसका हृदय एक बार फिर भय और चिन्ता से काँप उठता है। किन्तु दूसरे ही क्षण वह यह प्रतिज्ञा कर सन्तोष की साँस लेता है कि यदि ऐसा है तो वह आहार-विहार पर संयम रखने की पूरी चेष्टा करेगा! इस पर भी 'माइकेल' उसे सचेत करता है कि उसके इस प्रकार संयत होने पर भी मृत्यु के आगे-आगे दौड़ कर उसके आने की पूर्व-सूचना देने वाली वृद्धावस्था तो उसके जीवन में आयेगी ही!

इस प्रकार स्वयं सारी घटनाओं का केन्द्र-विन्दु बन कर आदम[3] सारे उपादानों को देखता-समझता रहता है कि नोआ के समय की प्रलंयकारी बाढ़ उसकी आँखों के आगे आती है! वह देखता है कि वह अपने लिये तो एक बड़ी नाव तैयार कर रहा है किन्तु उसके अन्य वंशज बाढ़ में बेबसों-से बहे जा रहे हैं! अतः वह विलाप करने लगता है। इस पर 'माइकेल' उसे विश्वास दिलाता है कि उनमें से ईश्वर-भक्त आत्माओं का बाल भी बाँका न होगा, बल्कि यथासमय उनके द्वारा एक ऐसी जाति पृथ्वी पर जन्म लेगी जो ईश्वर के आज्ञाकारी पुत्रों का साकार-रूप होगी!

इसी समय एक कबूतर और इन्द्र-धनुष देख कर आदम कुछ शान्त होता है! उसे सान्त्वना देने के लिये 'माइकेल' परमपिता की योजना की चर्चा करता है और कहता है कि इस संसार के विनष्ट होते ही परमपिता नये आसमानवाली एक नई धरती की सृष्टि करेगा, जहाँ हर ओर केवल न्याय का ही राज्य होगा, अतएव इस समय के रात-दिन, बीज बोने के विभिन्न काल और फ़सलें काटने के विभिन्न क्षण अस्थायी होने के नाते कुछ अधिक महत्व नहीं रखते।

पर्व बारह—

एक संसार के विनाश और दूसरे संसार के पुनर्निर्माण का चित्र खींचने के बाद 'माइ-केल' आदम को दिखलाता है कि कैसे आदमी मैदान में आ-बसेगा और कैसे मिट्टी-गारे की

[1]-[2]-आदम के दो पुत्र जिन्होंने एक दूसरे को इसलिये मार डाला कि उनके विचार से परम-पिता एक को अधिक प्यार करता था और दूसरे को कम!

[3]पवित्र, बूढ़ा ईश्वर भक्त, जिसे सृष्टि का विनाश करते समय परमपिता ने आदेश दिया कि वह अपनी पत्नी और अपने ३ पुत्रों के साथ एक बड़ी नाव में स्थान ग्रहण करे और सृष्टि की हर चीज़ का एक जोड़ा अपने साथ रख ले। ईश्वर की कामना थी कि उस नाव के प्राणियों के अतिरिक्त सारा संसार प्रलय में विनष्ट हो जाय!

सहायता से एक मीनार खड़ी कर स्वर्ग तक पहुँचने की चेष्टा करेगा ! इस पर आदम बड़ा असंतुष्ट और अप्रसन्न होता है कि उसकी जाति के लोग ईश्वर को चुनौती देंगे। किन्तु 'माइकेल' उसे विश्वास दिलाता कि विधि के विधान के विरुद्ध कुछ भी करने के विचार-मात्र से उसकी वर्तमान घृणा बहुत ही मंगलमय है। इसके बाद वह उसे धीरज बंधाता है और बतलाता है कि कैसे एक ऐसा पुण्यात्मा पुराने जगत से नये जगत में लाया जायेगा जिसके पुण्यकृत्यों के कारण ही सारे राष्ट्रों और सारी मानव-जाति का त्राण होगा !

इस पुण्यात्मा का नाम अब्राहम[1] बतला कर माइकेल उसके जीवन, उसके बन्दी-जीवन, उसकी विदाई और रेगिस्तान में बीतनेवाले ४० वर्षों का सविस्तार वर्णन करता है। इसके बाद वह आदम का ध्यान 'सिनाई पर्वत' पर स्थित 'मोज़ेज़'[2] की ओर आकृष्ट करता है। आदम देखता है कि उसके सामने अनेकों विधान फैले-पड़े हैं, और वह उनकी सहायता से इने-गिने ईश्वर भक्तों के लिये पूजा के विधान निश्चित कर रहा है। आदम नियमों की इतनी बड़ी संख्या पा आश्चर्य प्रकट करता है ! उत्तर में 'माइकेल' बात स्पष्ट करता है कि पाप के कितने ही रूप होते हैं, और निश्चित आत्म-त्यागों के रक्त से कहीं अधिक मूल्यवान रक्त बहा कर ही पापों का समुचित प्रायश्चित किया जा सकता है अन्यथा नहीं !

× ×

अब 'माइकेल' आदम को समझाता है कि कैसे लोग पहले न्यायाधीशों के संरक्षण में रहेंगे और फिर राजाओं के अनुशासन में। तत्पश्चात वह 'ईश्वर के बेटे ईसा' की चर्चा कर बतलाता है कि थोड़े समय बाद वह 'डेविड' और कुआँरी-माँ के बेटे के रूप में उच्चतम स्वर्ग से पृथ्वी पर अवतरित होगा। 'माइकेल' का कथन है कि उसके शुभागमन की सूचना देने के लिये एक तारा सहसा ही आकाश में उदय होगा ! इस सितारे से पूर्वी विद्वान पथ-प्रदर्शक का काम लेंगे। ईसा अखिल पृथ्वी पर राज्य करेगा और साँप-रूपी शैतान, 'दुष्कृति' और 'मृत्यु' पर विजय प्राप्त करेगा ! 'माइकेल' के ये शब्द आंशिक रूप में रहस्यात्मक-भविष्य-वाणी का भेद खोलते हैं, अतएव आदम की आँखें आनंद से चमकने लगती हैं ! किन्तु, वह यह नहीं समझ पाता कि ऐसे पराक्रमी और विजयी की ऐड़ी पर साँप प्रहार कैसे करेगा और उस पर उसका प्रभाव कैसे और क्या पड़ेगा ! 'माइकेल' कहता है कि शैतान को नीचा दिखलाने के लिये ईसा मृत्यु को वरण करेगा और इस प्रकार स्वयं मर कर और फिर से न्याय के दिन सजीव होकर प्रमाणित कर देगा कि पृथ्वी पर घृणित और निन्दनीय समझ जाने के बाद भी परम पिता के नाम पर आस्था रखनेवालों पर पाप और मृत्यु का कोई भी स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता ! उसका कथन है कि अन्त में उसके कारण ही अन्य पापात्मायें भी अपने-अपने पापों से मुक्त हो जायेंगी और इसके बाद उनका पथ-प्रदर्शन कर ईसा इन्हें उच्चतम स्वर्ग में ले जायेगा ! इस समय यह सुन कर कि

[1]ईसा का बाबा

[2]महान संत जिसे ईश्वर से धर्माचरण सम्बन्धी १० निर्देश प्राप्त हुये !

अंतिम स्वर्ग उसके अभी-अभी छूट-रहे स्वर्ग से कहीं अधिक आनन्द-प्रदाता होगा, आदम आनन्द से फूला नहीं समाता और घोषित करता है कि यदि उसके अपराध का फल इतना महान हुआ तो उसके पश्चात्ताप की कटुता सचमुच ही कम हो जायगी !

इसके बाद 'माइकेल' ईसा की मृत्यु और उसके दुबारा आगमन के बीच के समय का उल्लेख करता है और कहता है कि इस समय वह अपने 'त्राता' को प्रेम करने वाले लोगों के साथ संसार में वास करेगा और समयासमय शैतान के हमलों का सामना करने में उनकी सहायता भी। इस प्रकार अपने मोह और लोभ के रहते भी कितनी ही पुण्यातायें मोक्ष लाभ कर स्वर्ग में पहुँचेगी और वहिष्कृत देवदूतों का स्थान ग्रहण करेंगी ?

× ×

अब 'माइकेल' नहीं चाहता कि 'आदम' कुछ और प्रश्न करे, कुछ और जानने की इच्छा करे, अतएव वह उसे धैर्य, संयम और प्रेम के सहारे अपना ज्ञान बढ़ाते रहने का आदेश देता है और यह कह कर बात समाप्त कर देना चाहता है कि यदि उसने उसके आदेश का पालन किया तो पृथ्वी का स्वर्ग 'ईडेन' उसके हृदय पर राज्य करेगा ! इसके बाद वह 'ईडेन' के चारों ओर पहरा देते हुये देवदूतों की वायु में झूल-रही, लपलपाती हुई तलवारों की ओर संकेत करता है और आदम से कहता है कि समय हो गया है और अब उसे अपनी पत्नी को जगा कर उसे भी उन सारे विषयों से परिचित करा देना चाहिये जिनका ज्ञान उसे अभी-अभी प्राप्त हुआ है।......

ईव आँखें खोलती है और उन्हें सूचित करती है कि ईश्वर ने उसे एक स्वप्न देकर बड़ा ढाढस बँधाया है और इस आशा से उसका हृदय भर दिया है कि यद्यपि वह स्वयं पापी और कुपात्र है तथापि उसकी सन्तान परमपिता की आज्ञाकारी होगी और इसीलिये सभी प्रकार सुखी और सम्पन्न भी !

× ×

अंत में देवदूत आदम और ईव का हाथ पकड़ कर उन्हें पूर्वी द्वार से संसार में ले आता है। इस समय वे दोनों बराबर मुड़-मुड़ कर पीछे की ओर देखते हैं और अपने 'ईडेन' को अपनी आँखों में लेना चाहते हैं। वे लक्ष्य करते हैं कि आग-सी तलवार से सुसज्जित एक देवदूत उस उपवन की रखवाली कर रहा है।

इस प्रकार अपने दुर्भाग्य पर स्वाभाविक रूप से आँसू बहाते हुए, एक दूसरे का हाथ अपने हाथ में लेकर वे इस जगत में आ पहुँचते हैं और विश्राम के स्थान की खोज करते हैं !

कहना न होगा कि इस समय 'सर्वशक्तिमान' ही उनका पथ-प्रदर्शन करता है।